प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

मुद्रक : शंभुनाथ वाजपेयी, राष्ट्रभाषा मुद्रण, काशी

प्रथम संस्करण, ११०० प्रतियाँ, संवत् २०१६

मूल्य ६)

ग्रंथमाला का परिचय

जयपुर राज्य के अंतर्गत इणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट नृसिंहदासजी के पुत्र बारहट बालाबख्शजी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायँ जिसमें हिंदी साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १९२२ में ५०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

प्रकाशकीय वक्तव्य

नागरीप्रचारिणी सभा काशी की बारहट बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला ने अपने क्षेत्र में जो सेवा की है उसका मूल्य हिंदी जगत् जानता है। इस ग्रंथमाला के अंतर्गत अब तक निम्नलिखित नव ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

१. बाँकीदास ग्रंथावली भाग १ संपादक—श्री पं० रामकर्ण जी

२. बीसलदेवरासो—संपादक—श्री सत्यजीवन वर्मा

३. शिखरवंशोत्पत्ति—संपादक—श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा

४. बाँकीदास ग्रंथावली भाग २—संपादक श्री रामनारायण दूगड़

५. ब्रजनिधि ग्रंथावली—संपादक श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा

६. ढोलामारू रा दूहा—संपादक श्री रामसिंह जी

७. बाँकीदास ग्रंथावली भाग ३—संपादक श्री मुरारिदान

८. रघुनाथ रूपक गीतारो—संपादक महताबचंद खारैड

९. राजरूपक—संपादक श्री० रामकर्ण जी

इस ग्रंथमाला का यह दसवाँ ग्रंथ है।

यद्यपि आरंभ में इस पुस्तक का आयोजन सभा की बिड़ला ग्रंथमाला के अंतर्गत किया गया था तो भी इस ग्रंथमाला के अधिक उपयुक्त होने के कारण सभा ने इसका प्रकाशन इसी ग्रंथमाला के अंतर्गत करना अधिक उपादेय समझा।

श्री अगरचंद जी नाहटा की साहित्यसेवा से हिंदी जगत् परिचित है। उन्होंने विशेष श्रम तथा धैर्यपूर्वक इस ग्रंथ का संपादन कर इस ग्रथमाला को श्रीमय करने का सद्प्रयत्न किया है। सभाशृंगार वर्णक ग्रंथ है जो निम्नांकित दस विभागों में संकलित है:—

विभाग १—देश, नगर, वन, पशुपक्षी, जलाशय, नदी, समुद्र वर्णन।

विभाग २—राजा, राजपरिवार, मंत्री, चक्रवर्ती, रावण, राजसभा, आस्थान मंडप, गज, अश्व, शस्त्र, युद्ध आदि का वर्णन।

विभाग ३—स्त्री पुरुष वर्णन ।
विभाग ४—प्रकृति वर्णन ।
विभाग ५—कलाएँ और विद्याएँ ।
विभाग ६—जातियाँ और धंधे ।
विभाग ७—देव वेतालादि ।
विभाग ८—जैन धर्म संबंधी ।
विभाग ९—सामान्य नीति वर्णन ।
विभाग १०—भोजनादि वर्णन ।

इस वर्णक में न केवल भेद प्रभेदों एवं नामावलियों का विस्तारपूर्वक उपयोगी वर्णनमात्र है अपितु इसमें साहित्यिक सौंदर्य की अलंकृत शैली का भी यत्र-तत्र दर्शन होता है। साथ ही परिशिष्ट के रूप में 'रत्नकोष' और 'राजनीति निरूपण' नामक दो संस्कृत ग्रंथों को देकर संपादक ने इसकी उपयोगिता का विस्तार किया है। इस विशिष्ट उपयोगी वर्णक संग्रह के प्रकाशन में कुछ अनावश्यक विलंब अनेक कारणों से हुआ तो भी यह व्यवधान इसे इस रूप में प्रकाशित करने में कुछ अंशों तक सहायक भी सिद्ध हुआ है। आशा है इस उपयोगी ग्रंथ का आदर होगा।

सुधाकर पांडेय
प्रकाशन मंत्री

आषाढ १, २०१९
1962

—०—

भूमिका

श्री अगरचन्द जी नाहटा विख्यात शोधकर्ता विद्वान् हैं। उनके द्वारा संपादित सभा-शृंगार ग्रन्थ सांस्कृतिक शब्दावली की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। सभा-शृगार के नाम से कई हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं जिनका उल्लेख सपादक ने प्रति-परिचय शीर्षक के अ तर्गत किया है। श्री भोगीलाल साडेसरा ने स्व-सपादित वर्णक-समुच्चय नामक ग्रन्थ में सभा-शृगार की एक प्रति का प्रकाशन किया है [१]। उसकी सामग्री का समावेश भी यहाँ हुआ है।

सभा-शृगार उस प्रकार का साहित्य है जिसे वर्णक-साहित्य का नाम दिया गया है और जो अभी कुछ ही वर्ष पूर्व से साहित्यकों के दृष्टि-पथ में विशेष रूप से आया है। इस साहित्य का सम्बन्ध किसी वस्तु के उस परिनिष्ठित वर्णन से है जिसे सार्वजनिक रीति से आदर्श वर्णन के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था। इस प्रकार के वर्णन कवि और कलाकार दोनों के लिये सहायक होते हैं, एवं श्रोता और वक्ता दोनों को इस प्रकार के वर्णनों में वस्तु का ज्वलन्त चित्र प्राप्त हो जाता है। अतएव दोनों ही उसमें रुचि लेते हैं; जैसे किसी राजा और उसकी राजसभा का वर्णन अथवा सोलह शृगारों से सजी किसी रूपवती नायिका का वर्णन, अथवा वृक्ष, पुष्प, फल, सरोवर, पक्षी आदि की समृद्धि से रमणीय किसी उद्यान का वर्णन। इस प्रकार की वस्तुओं का वर्णन अनेक व्यक्ति अपनी अपनी रुचि के अनुसार भी कर सकते हैं जिनका एक दूसरे से भिन्न होना सभव है। किन्तु यदि कई वर्णनों की तुलना की जाय तो उनमें एक सदृश परिपाटी का विकास होता हुए दिखाई पड़ेगा। ऐसे ही पल्लवित वर्णनों को यदि एक आदर्श वर्णन के रूप में ढाल दिया जाय तो उसका वह परिनिष्ठित रूप कालान्तर में रूढिगत बन जाता है। यही इस प्रकार के वर्णनो की पृष्ठभूमि है जिसका भारतीय साहित्य की सस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रश एव देशी भाषाओं की कृतियों में प्राचीन काल से ही प्रमाण उपलब्ध होने लगता है।

इस प्रकार के वर्णन के लिए वर्णक शब्द प्राचीन जैन आगम शास्त्र में पाया जाता है जिसे प्राकृत भाषा में 'वण्णओ' कहा गया है। उदाहरण के लिए—

१—भोगीलाल जी साडेसरा, वर्णक-समुच्चय, भाग १ पृ० १०५-१५६, प्राचीन गुर्जर ग्रथमाला, महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

तेणं कालेणं तेणं समयेणं राया होत्था (वण्णओ)। धारिणी नाम देवी होत्था (वण्णओ) । चम्पा नाम नयरी होत्था (वण्णओ) इत्यादि ।[1] यहां कोष्ठक में वण्णओ लिख देने से राजा रानी या नगरी का जो आदर्श वर्णन प्रचलित था उसी को ग्रहण किया जाता था और ग्रन्थों की प्रतिलिपि करते समय उसे बार बार दोहराने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी । यह प्रथा कुछ उस प्रकार की थी जिसे वैदिक मन्त्रों का पाठ करते समय गलन्त कहा जाता था । ऋक् प्रातिशाख्य (१०।१६) के अनुसार ऐसे शब्दों या वाक्यों की संज्ञा जो कई बार दोहराए जाँय 'समय' थी । इस प्रकार के संगठित वर्णन या समय वाची शब्द पदपाठ में छोड़ दिए जाते थे और एक गोल बिन्दु से उनका संकेत बना दिया जाता था जिसके कारण उन्हें गलन्त कहने लगे । किन्तु गलन्त पाठ में उन सब शब्दों को यथावत् दोहराना आवश्यक होता था[2] । श्वेताम्बर जैन आगम अपने वर्णकों के लिए प्रसिद्ध हैं । उन सबका एक अच्छा संग्रह अलग पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाए तो वह भी इस प्रकार के साहित्य की रोचक कड़ी सिद्ध होगी । देवर्धिगणि क्षमाश्रमण के निर्देशन में जैन आगमों का जो संस्करण वलभी में तैयार हुआ था और जो इस समय उपलब्ध है उसमें वर्णकों का जो परिनिष्ठित रूप प्राप्त होता है वह कुछ तो अवश्य ही प्राचीन काल से मूल रूप में आया होगा· किन्तु हमारा अनुमान है कि गुप्त कालीन संस्कृति के समृद्ध वर्णनों की छाप भी उस पर लगी होगी, जैसा संस्कृत त्रिपिटक साहित्य के संकलन के समय भी हुआ । सांस्कृतिक शब्दावली के विभिन्न स्तरों की छानबीन की दृष्टि से इस प्रकार का अनुसंधान उपयोगी हो सकता है ।

वर्णक के लिये ही वर्ण शब्द गुप्तकालीन संस्कृति में प्रयुक्त होने लगा था । 'मूल सर्वास्तिवाद विनय पिटक' के अंतर्गत प्रव्रज्यावस्तु नामक ग्रन्थ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है — मृष्टाभिधायी स माणवः तेन तथा तथा मध्यदेशस्य वर्णो भाषितो यथा ते माणवका. सर्व एव मध्यदेशगमनोत्सुका. संवृत्ता.[3];–अर्थात् वह विद्यार्थी बड़ा मधुरभाषी था । उसने जैसे जैसे दक्षिणा-

---

[1]—प. ल. वैद्य, ए नोट ऑन दी वर्णकाज़ (वर्णकों पर एक टिप्पणी), आल इण्डिया ओरियन्टल कान्फरेन्स, काशी अधिवेशन लेख संग्रह, भाग २, पृ० ४७२–४७३ ।

[2]—जी. जी. कार्णिक, ऋग्वेद पाठ में गलन्तों की समस्या, ओरियन्टल कान्फरेन्स, नागपुर अधिवेशन लेख संग्रह, पृ० ३९ ।

[3]—मूल सर्वास्तिवाद विनय वस्तु, भाग ३ खण्ड ४, प्रव्रज्यावस्तु, पृष्ठ १३, गिलगित मैनुस्क्रिप्ट्स, कलकत्ता ।

पथ के छात्रों के सामने मध्यदेश का वर्णन सुनाया वैसे वैसे दक्षिण के वे सब छात्र मध्य देश चलने के लिए उत्कठित होते गए। वर्णक के अर्थ में वर्ण शब्द का यह प्रयोग तेरहवीं शती के सगीतरत्नाकर नामक ग्रथ में भी पाया जाता है। उसमें 'वर्ण कवि' का उल्लेख है जिसका अर्थ टीकाकार कल्लिनाथ ने 'वर्णना कवि' किया है। शार्ङ्गदेव की सम्मति में वस्तु कवि श्रेष्ठ और वर्ण कवि मध्यम माना जाता था (वरो वस्तुकविर्वर्णकविर्मध्यम उच्यते, सगीत रत्नाकर भाग १ पृ० २४५)। यह स्पष्ट है कि तेरहवीं शती के आसपास के भारतीय साहित्य में प्रायः सभी क्षेत्रीय भाषाओं में वर्ण कवियों की धूम थी। उसी का एक रूप अवहट्ट के सदेशरासक और विद्यापति की कीर्तिलता में प्राप्त होता है। दोनों के वर्णन वर्णक शैली के हैं, यद्यपि शब्दावली की दृष्टि से उनमें अपनी ताजगी भी पाई जाती है। कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठक्कुर (१४ वीं शती का प्रथम भाग) कृत प्राचीन मैथिली भाषा के वर्णरत्नाकर नामक ग्रन्थ में वर्ण शब्द वर्णन, वर्णना या वर्णक के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। श्री सुनीतिकुमार चटर्जी ने ज्योतिरीश्वर के ग्रन्थ का सम्पादन किया है। वह ग्रन्थ इस प्रकार के साहित्य में शिरोमणि कहा जा सकता है। उसमें लगभग साढे ६ हजार शब्द हैं जो सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान हैं और मध्यकालीन भारतीय सस्कृति का, विशेषतः तुर्क युग में राजा और प्रजा की रहन-सहन का भरापूरा चित्र उपस्थित करते हैं। उस ग्रन्थ की सामग्री पर आश्रित एक बडे शोध निबन्ध की आवश्यकता है। वस्तुतः समग्र भारतीय वर्णक साहित्य की सामग्री को लक्ष्य में रखते हुए यदि अनुसंधान कार्य किया जाय तो कोश निर्माण और सास्कृतिक परिचय दोनों के लिये बहुत लाभ हो सकता है।

प्राचीनकाल से ही साहित्यकारों ने परिनिष्ठित वर्णकों को अपना उपजीव्य बना लिया था, जैसा बाण कृत हर्षचरित और कादम्बरी से प्रकट होता है। जंगल या बागबगीचों के वर्णन के लिये वृक्ष और पुष्प पक्षी आदि की लगभग एक सी ही घिसी-पिटी सूचियाँ काम में लाई जाती थीं। उद्यान-क्रीडा और सलिल-क्रीडा, घोड़े और हाथियों के भेद और उनकी चालों के भेदों के वर्णन का भी एक परिनिष्ठित रूप प्राप्त होता है। पर अच्छे कवियो की उन्मुक्त कल्पना के लिये हमेशा ही मौलिकता का अवसर रहता था। हमारा अनुमान है कि अन्य भाषाओ का मध्यकालीन साहित्य भी वर्णक शैली से प्रभावित हुआ था। गुजराती भाषा के मामेरु काव्यों में दान दहेज मे दिये जाने वाले वस्त्र और सामान की यथासंभव विशद सूचिया समाविष्ट की गई। प्रेमानन्द कृत मामेरू मे इसकी छाप स्पष्ट है। जायसी के

पद्मावत काव्य में अनेक वर्णन वर्णक शैली से प्रभावित हैं। इसमें घोडों और वस्त्रों की एवं वृक्षों और पुष्पों की सूचियाँ वर्णक साहित्य की दृष्टि से रोचक हैं। और भी दो स्थानों पर पद्मावती के रूप-वर्णन एवं विवाह-खंड में नायक नायिका का विलास-वर्णन अथवा आरम्भ में गढ और नगर वर्णन—इन पर यदि तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाय तो वर्णक शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ेगा।

यह प्रसन्नता की बात है कि वर्णक साहित्य क्रमशः अब सामने आ रहा है। भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में वर्णक ग्रन्थों की रचना हुई होगी, यह तथ्य युग युग के भारतीय साहित्य की विकास परम्परा के अनुकूल ज्ञात होता है। अतएव यह आवश्यक है कि जहाँ तक संभव हो प्रत्येक भाषा के वर्णक साहित्य को वहाँ के विद्वान प्रकाश में लाएं। जैसा श्री सुनीति बाबू ने लिखा है, बंगला भाषा में राय बहादुर श्री दिनेशचन्द्र सेन को इस प्रकार का साहित्य कथा बाँचने वाले कथकों से प्राप्त हुआ था। मध्यकालीन वर्णक साहित्य का सर्वोत्तम प्रकाशन अभी तक गुजराती भाषा में हुआ है। श्री मुनि जिनविजय जी ने अपने प्राचीन गुजराती गद्य सन्दर्भ नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत पृथ्वीचन्द्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास (कर्ता श्री माणिक्यचन्द्र सूरि, वि० सं० १४७८) का प्रकाशन किया था। यह भी एक विशिष्ट वर्णक ग्रन्थ है और वर्ण रत्नाकर के साथ तुलना करने से स्पष्ट विदित हो जाता है कि मध्यकालीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि कितनी दूर तक एक सदृश थी। जीवन की एक जैसी रहन सहन प्रत्येक प्रदेश में छाई हुई थी। इसी ग्रन्थ में ८४ हाटों की सूची सुरक्षित रह गई है। भारत की ९६ करोड ग्राम संख्या का उल्लेख भी इस ग्रन्थ में है जैसा स्कन्द पुराण के महेश्वर खण्ड के अन्तर्गत कुमारिका खण्ड में भी उल्लेख आया है (षण्ण-वत्येव कोट्यः ग्रामा, ३।१९३९)। जिस समय यह संख्या लिखी गई उस समय भारतवर्ष में भूमि एवं अन्य स्रोतों से समस्त राष्ट्रीय आय का अनुमान ९६ करोड कार्षापण किया जाता था।

वर्णकों के संग्रह की दृष्टि से श्री साडेसरा द्वारा संपादित वर्णक-समुच्चय, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें लगभग १२ वर्णक मुद्रित हैं। आरम्भ में विविध वर्णक नामक १०० पृष्ठों का १ वर्णक ग्रन्थ है जिसमें ये सूचियाँ महत्त्वपूर्ण हैं—राज लोक, पौर लोक, राजवर्णन (पृष्ठ १३-१४), नगर वर्णन (पृष्ठ २१-२२), देश सूची (पृष्ठ २८-३०, इनमें भी ९६ करोड ग्राम का उल्लेख है), नगर प्रासाद वर्णन (पृष्ठ ३२), ३६ राजकुली (पृष्ठ ३३), वस्त्र सूची (पृष्ठ ३४-३५), जिसमें

१०० से अधिक वस्त्रों के नाम हैं), कलशान्त प्रासाद वर्णन (पृष्ठ ३६-४०), जिन मन्दिर (पृष्ठ ४८-७१), राजलोक, पौरलोक चक्रवाल (पृष्ठ ४६) वस्तु पाल-तेजपाल विरुद (पृष्ठ ५५), आस्थान मंडप वर्णन (पृष्ठ ७२), अश्व सूची (पृष्ठ ६२), समुद्र में प्रवहण भग का वर्णन (पृष्ठ ६७, इस प्रकार का एक अत्यन्त विशद वर्णन नायाधम्मकहा, अध्याय ६ में भी आया है)। इसी ग्रन्थ में सभा शृगार का भी एक सस्करण ५० पृष्ठो में प्रकाशित हुआ है जिसकी सामग्री नाहटा जी ने ले ली है। उसकी प्रतिलिपि सवत् १६७५ में की गई थी। साडेसरा जी के तीसरे सग्रह वर्ण्य वस्तु वर्णन पद्धति में भी देशों (पृष्ठ १६५) की सूची और उनकी ग्राम संख्या महत्त्वपूर्ण है जिसमें भारत के बाहर के महाभोट, सिंहल, चीन, महाचीन देशों के नाम भी हैं। चौथे प्रकीर्ण वर्णक में १८ करों के नाम रोचक हैं। (पृष्ठ १७०)। पाचवें सग्रह का नाम जिमणवार परिधान विधि है जिसमें ३६ प्रकार के लड्डू, अनेक मिष्ठान्न भोज्य सामग्री एव लगभग २०० वस्त्रों के नाम हैं (पृष्ठ १८०-१८१)। यह प्रति १६७५ सवत् (ई० १६१८) में जहाँगीर के काल में लिखी गई थी। अतएव मुगल काल के आरम्भ में जितने वस्त्र इस देश में बनने लगे थे और जो बाहर से मगाए जाते थे उनकी बहुत ही बडी सूची उस सग्रह में प्राप्त हो जाती है। यह सूची सभवतः किसी सम्राट के वस्त्र भण्डारी की सहायता से प्राप्त की गई होगी। साडेसरा जी ने अपने सग्रह के परिशिष्ट १ में प्रयागदास नामक किसी लेखक के कपडाकुतूहल नामक ग्रन्थ का मुद्रण किया है जिसका एक नाम कपडा-बत्तीसी भी था। दूसरे परिशिष्ट का नाम क्रयाणक वस्त्र नामावली है जिसमें ३६० किराने की वस्तुओं के नाम, ६८ वस्त्रों के नाम और १४२ आभूषणों के नाम हैं। साडेसरा जी के वर्णक—समुच्चय के अन्त में अकारादि सूची नहीं है। सभवतः ग्रन्थ के दूसरे भाग में वे उसे प्रस्तुत करेंगे। किन्तु उस ग्रन्थ में सकलित सामग्री गुजराती भाषा तक सीमित न होकर हिन्दी के विद्वानों के भी बहुत काम की है।

नाहटा जी द्वारा संगृहीत सभा-शृगार में ऐसी ही उपयोगी सामग्री का एकत्र संकलन हुआ है। इसके १० विभाग हैं। जो वर्ण्य विषय के अनुसार इस प्रकार हैं—

विभाग १—पृ० १—२८ देश, नगर, वन, पशु-पक्षी, जलाशय, नदी, समुद्र वर्णन।

विभाग २—पृ० २६—८६—राजा, राजपरिवार, मन्त्री, चक्रवर्ती, रावण, राजसभा, आस्थानमंडप, गज, अश्व, शस्त्र, युद्ध आदि का वर्णन।

नाहटाजी ने इस संग्रह में जिस प्रकार से विषय का विभाग किया है वह उनका अपना है। वर्णन संग्रहों को यथावत् न छाप कर उनमें से एक जैसे विषयों का संकलन कर दिया है। इन विभागों का कुछ परिचय आवश्यक है।

पहले विभाग में जो विषय संकलित हैं उनमें देश नामों की चार सूचियाँ हैं (पृ०, ३५)। पहली सूची में १५१ नाम हैं। पुराणों के भुवन कोशों की जनपद सूचियाँ प्रसिद्ध हैं। उनमें से मूल सूची का संकलन पाणिनि काल में हुआ होगा। उसके बाद गुप्तकाल में उससे बड़ी एक दूसरी सूची तैयार हुई जो बृहत्संहिता और मार्कण्डेय पुराण में पाई जाती है। इस सूची के भी युगानुसार और संस्करण बनते रहे, जिनमें से एक गुर्जरप्रतिहार युग के महाकवि राजशेखर ने काव्यमीमांसा में उद्धृत की है। उसके बाद तुर्क युग की सूची पृथ्वीचन्द्रचरित में मिलती है। उस समय की सूची में ९८ देशों के नाम गिनाए जाते थे। वर्णरत्नाकर में भी यह सूची रही होगी किन्तु अब वह अंश खण्डित हो गया है। सभा-शृंगार की यह सूची मुगल काल में संगृहीत हुई होगी। इसमें नए और पुराने नामों की मिलावट है। पुराने नामों में शक, यवन, मुरुण्ड, हूण, रोमक, काम्बोज, काण्व आदि हैं। ताईक (संख्या १४४) नाम ताजिक देश के लिये है। भारत से बाहर के देशों की सूची पर-द्वीप नाम के अन्तर्गत अलग दी गई है, जिसमें हुर्मुज, मक्का, मदीना, पुर्तगाल, पीगु, रोम, अरब, बलख, बुखारा, चीन, महाचीन, फिरंग हबस आदि के नाम तो ठीक हैं, किन्तु दीव, घोघा, डाहल, मलबार, चीउल, मुल्तान, जम्मू, आबू और ढाका के नाम इस देश के ही हैं। १।६ के अन्तर्गत जो संख्याएँ है उन्हें देशों की उपज कहना ठीक नहीं। वे उसी प्रकार की ग्राम संख्याए है जिनका उल्लेख ऊपर आ चुका है। सूची १।८, १।९ में नगरों के नाम हैं जिनमें कुछ नए और कुछ पुराने मिले हुए हैं। १।११ से १।२४ तक नगर वर्णन सम्बन्धी वर्णक महत्व-

पूर्ण है। १।२१ और १।२२ में ८४ चौहट्टों की दो सूचियां महत्वपूर्ण हैं। इनकी एक सूची पृथ्वीचन्द्रचरित्र में भी प्राप्त हुई थी, जो नाहटा जी की पहली सूची से बहुत मिलती है। पृष्ठ १६ पर स्वयंवर मण्डप का वर्णन करते हुए पञ्चरगी देवाशुक के बने हुए ऊलोच (शामियाने) के उल्लेख के अतिरिक्त तलियातोरण उठाने का भी वर्णन है। यह एक विशेष प्रकार का दोमजला तोरण होता था जिसे स्थापत्य की परिभाषा में तलकतोरण कहते थे। पृथ्वीराज-रासो के लघु संस्करण मे जिसका सम्पादन पंजाब के श्री बेणीप्रसाद शर्मा ने किया है इसी का बिगडा हुआ रूप तिलङ्गा तोरण हमें प्राप्त हुआ था। पृ० १८-२१ पर अटवी वर्णन नौ प्रकार से संगृहीत हैं। उसके बाद वृक्ष नामों की छः सूचियाँ हैं। इस प्रकार की सूचियाँ वन वर्णन के साथ संस्कृत साहित्य में भी प्रायः मिलती हैं। विशेषतः महाभारत और पुराणों में वृक्षावली की लम्बी सूचियों के द्वारा ही वन वर्णन करने की प्रथा थी। वृक्षों के प्राचीन नामों मे सहकार कुषाण-गुप्त युग का शब्द था। मूल महाभारत के स्तर में उसे न होना चाहिए था। नन्दन वन के वर्णक की वृक्ष सूची मे वह पडा हुआ है, जो इस बात का संकेत है कि वह परिनिष्ठित वर्णन गुप्तकाल में किसी समय जोडा गया। सरोवर वर्णन के भी तीन प्रकार दिए हैं (पृ० १२६)। इनमें शतपत्र, सहस्रपत्र के अतिरिक्त कमल के लिये लक्षपत्र हमें पहली ही बार प्राप्त हुआ है। नदी नामों के अन्त में लिखा है कि १४ लाख ५६ हजार नदियाँ लवण समुद्र में मिलती हैं। यद्यपि स्कन्द पुराण के नागर खण्ड में हमें उल्लेख मिला था कि केवल गङ्गा ही ६०० नदियों को लेकर समुद्र मे मिलती है फिर भी प्रस्तुत संख्या अब तक की प्राप्त संख्याओं में सबसे बड़ी है[1]।

विभाग २ के अन्तर्गत राजा के वर्णन के लगभग १५ प्रकार दिए हैं। पहले वर्णन में गौड, भोट, पाचाल, कन्नड, ढूंढाड़ (जयपुर), बावर (सौराष्ट्र) चोड, दशउर (दशपुर मालवा), मेवाड, कच्छ, अंग आदि देशों की समृद्धि या विभूति पर शासन करने का उल्लेख है। पृष्ठ ३६ पर अष्टादश द्वीप कीर्ति विख्यात एवं एकोनविंशति पत्तनों के नायक विशेषण मध्यकालीन प्रतापी चोल सम्राटों के विशाल सामुद्रिक राज्य और दिग्विजय से लिए किए गए अभिप्राय थे। पृष्ठ ४३ पर चक्रवर्ती के वर्णन में अनेक संख्याओं का उल्लेख है जिनमें ९६ कोटि ग्राम संख्या भी है जिनकी व्याख्या ऊपर आ चुकी है। रानी,

---

[1]—शतानि नव संगृह्य नदीनां परमेश्वरी। तथा गङ्गाभिधा या तु सैव प्राक् सागरं गता।

राजकुमार के वर्णन सामान्य कोटि के है। किन्तु राजसभा के छः वर्णन (पृष्ठ ५८-५६) महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सामग्री से भरे हुए है जिनकी व्याख्या विस्तार की अपेक्षा रखती है। सिगरणा (श्रीकरण का मुख्य मंत्री जिसे आजकल की भाषा में गृह मंत्री कहेंगे) और वेगरणा (व्ययकरण का अर्थमंत्री) मध्यकालीन सचिवों के नाम थे। साहणिया या साहणी (अश्वसाधनिक) नामक अधिकारी था। राजसभा के पाँचवें वर्णन में उसे महामसाणी (=महासाहणी=महासाधनिक) कहा गया है। इसी प्रसग मे थैयावत शब्द उल्लेखनीय है। नाहटाजी ने सूचित किया है कि राज दरबार में ताम्बूल आदि देने वाला सम्मानित व्यक्ति थैयावत कहलाता था। श्रीपालचरित में इसका उल्लेख है। पृष्ठ ६३-६४ पर तीन वार लोहे के महाकाय मोगल का उल्लेख है। हमारे लिए यह नया शब्द है और प्रतोली और कपाट के प्रसंग मे इसका अर्थ परिघ या दृढ़ अर्गला होना चाहिए। गज वर्णन के ६ प्रकार और अश्व वर्णन के ७ प्रकार संगृहीत हैं। इनमें स्तागप्रतिष्ठित विशेषण हाथी के लिये प्राचीन पाली और संस्कृत साहित्य मे भी आता है। अश्वों के नाम रग एवं देशों के अनुसार रक्खे जाते थे जिनकी पर्याप्त नई सामग्री इन सूचियों में है। पृष्ठ ७० पर सेराह, हलाह, उराह, आदि नाम अरबी फारसी परम्परा के थे। वोरिया या वोर घोड़े का उल्लेख जायसी में भी आया है। पृष्ठ ७३-८५ पर युद्ध वर्णन के ७ प्रकार मध्यकालीन वीरकाव्यों की रूढ शैली पर है।

विभाग ३ में स्त्री पुरुषों का वर्णन है। इसमें सत् पुरुषों के गुणों की सूची एवं सज्जन दुर्जन का परिचय रोचक है। इसी प्रकार पृष्ठ ६६ पर उत्तम स्त्रियों की गुण सूची भी सुन्दर है। पृष्ठ ११३-१४ पर मालवा, मेवात, मेवाड, दक्षिण और गुजरात की स्त्रियों के नामों की सूची पहली ही बार साहित्य में देखने को मिलती है।

विभाग ४ में प्रकृति वर्णन का सग्रह है जिसमें प्रभात, सध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय और छः ऋतुओं के वर्णनों का संग्रह है। साहित्य मे वसन्त, वर्षा और शरद् के वर्णन तो प्राय. मिलते है, पर ग्रीष्म के वर्णन कम पाए जाते हैं। बाण के हर्षचरित मे ग्रीष्म का बहुत ही उदात्त और मौलिक वर्णन पाया जाता है। यहाँ उन्हालो या उष्णकाल के तीन वर्णन है। जैसे बावन पल की तोल का सोने का गोला दहकना हो वैसे ही सूर्य तप रहा था—यह कल्पना नई है। बावन तोले माल गलाने का मुहावरा ही मध्यकाल में चल गया था, जैसा ५२ तोले पाव रत्ती इस लोकोक्ति मे सुरक्षित हैं। पृष्ठ १२४ पर वर्षा के कारण पटशाल के टपकने का उल्लेख हैं। पटशाल पट्टशाला का रूप है जो राजप्रासाद के

आस्थान मडप या आस्थायिका के लिये होना चाहिए जहाँ पाट या सिंहासन रहता था। किसानों को कई बार कर्षणीलोक कहा गया है। इसी प्रकरण में कलिकाल के भी कई वर्णन हैं। कलि वर्णन मध्यकालीन साहित्य का एक अभिप्राय ही बन गया था। प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी में कई कलियुग चरित्र मिलते हैं। बान कवि ने संवत् १६७४ में एक कलियुग चरित्र की रचना की थी। उससे २०० वर्ष पूर्व सवत् १४८६ में हीरानन्द सूरि ने कलिकाल रास लिखा था। गोस्वामी जी ने उत्तरकाण्ड में कलिधर्मों का बहुत अच्छा वर्णन किया है। वैसे तो गुप्तकाल से ही इस प्रकार के कलिचरितों की रचना होने लगी थी। विष्णुपुराण में सर्वप्रथम कलिचरित का सन्निवेश हुआ है। लोक्माया बहुल, अल्प मगल, यही इन कलिमलों का सार था। आउखा स्तोक, निवाणिजा लोक अर्थात् आयुर्बल थोडा हो गया और लोगों का व्यवसाय धन्धा जाता रहा यही कलि प्रभाव है। रामचरितमानस का कलिवर्णन उसी परम्परा मे है।

विभाग ५ में कला और विद्याओं की सूचियाँ हैं। इस प्रकार की अन्य कई सूचियाँ सस्कृत साहित्य मे भी मिलती हैं। उनके साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिये ये सूचियाँ उपयोगी हैं। प्राचीनकाल की अनेक विदग्ध गोष्ठियों में इन कलाओं की आराधना की जाती थी, जैसे वक्रोक्ति, काव्यशक्ति, काव्यकरण, वचनपाटव, वीणा, कथाकथन, अङ्कविचार, प्रश्न-पहेलिका, अन्ताक्षरिका आदि विषय मनोवनिोद के साधन थे। पृष्ठ १४० पर ४७ राग-रागिनियों की सूची है और पृष्ठ १४१ पर बाजों के नामों की दो बडी सूचियाँ हैं। पृष्ठ १४० पर बद्ध नाटक में ३२ अभिप्रायों द्वारा सपादित नाट्य विधि का उल्लेख है जो जैन-परम्परा में प्रसिद्ध हो गई थी और जिसका विस्तृत वर्णन रायपसेनिय सूत्र में आया है। पृष्ठ १४२ पर लिपियों की ३ सूचियाँ हैं जिनमें कुछ नाम तो काल्पनिक और अनेक नाम वास्तविक जीवन से लिये गए हैं, जैसे नागरी लिपि, लाट लिपि, पारसी लिपि, हमीरी लिपि, (अमीर या तुर्की सुल्तानों की लिपि), मरहठी लिपि, चोडी (चोल देश की तमिल लिपि), कुकुणी, कान्हडी, सिंहली, कीरी (कीर या टक्क देश की टक्की लिपि)।

विभाग ६ में जाति और धन्धों की उपयोगी सूचियाँ हैं। इनमें ३६ पौनि या नेगियों की नामावली भी है जिनका उल्लेख साहित्य में आता है। अनेक पेशेवर जातियों के नाम रोचक हैं जैसे दोसी (दूष्य या वस्त्र का व्यवसाय करनेवाले), पारखि (रत्नों की परीक्षा करनेवाले), पटउलिया (पटोला बुननेवाले), भोई (सस्कृत भोगी, हाथियों के अधिकारी), वेगरिया (सस्कृत वैकटिक, रत्न तराश), परीयट (बरहठा या धोबी जिसे देशी नाममाला में परीयट्ट कहा

गया है), तुंडे (संस्कृत-सौचिक या दर्जी), ताई (संस्कृत त्रायी या आरक्षक, रक्षा करनेवाला पुलिस अधिकारी) इत्यादि। एक सूची में ८४ प्रकार की वणिक जातियों के नाम हैं और दूसरी में ३४ प्रकार के ब्राह्मणों के। राजपूतों के ३६ कुलों की सूची वर्णरत्नाकर के समान यहाँ भी है। यह पुरानी सूची थी। कालान्तर में जब और भी जातियाँ राज्याधिकार सम्पन्न हुई तब एक दूसरी बड़ी सूची संकलित की गई जिसमें ७२ राजकुलों की गिनती थी। यह सूची भी वर्णरत्नाकर (पृष्ठ ६१) में है। ३६ कुलों की सूची के अन्त में कुली शब्द है, ७२ वाली के अन्त में नहीं। पहले अपने आपको सत् क्षत्रिय (वत्सराजकृत किरातार्जुनीय नाटक), सुक्षत्रिय (श्रीधरदासकृत सदुक्तिकर्णामृत, २६०) या शुद्ध क्षत्रिय (य. कोऽपिवा साहसी लोके यस्यास्ति वा क्षत्रियतावदाता, पृथ्वीराज विजय, ६।२२४) मानते थे। राजतरंगिणी में भी ३६ क्षत्रिय कुलों का उल्लेख आया है (७।१६१७) जिससे ज्ञात होता है कि ३६ कुलों की कोई एक सूची बारहवीं शती से पहले अस्तित्व में आ चुकी थी। इन सूचियों की ऐतिहासिक परख से बहुत से तथ्य हाथ लगेंगे। पृष्ठ १५१ पर साहूकार के कई विरुदों में एक 'छत्तीस वेलाउल विख्यात' भी है जिसका तात्पर्य यह था कि बड़े साहूकारों की कोठियाँ या लेन देन के सूत्र ३६ वेलाउल या समुद्र तटवर्ती पत्तनों के साथ जुड़े रहते थे और उनके साथ उनके हुण्डी-परचे का भुगतान चलता रहता था।

संवत्सर मुद्रा कणहार विरुद भी किसी महत्त्वपूर्ण तथ्य का व्यंजक है। सम्भवतः नये वर्ष के आरम्भ में संवत्सर सूचक व्यापार-मुद्रा या भाव-ताव का आरम्भ करने का श्रेय रखने वाले शिरोधार्य महाजन के लिये यह विरुद था। इसी प्रकार कडाह समुद्र विरुद भी ध्यान देने योग्य है। कटाह-द्वीप के पूर्वी समुद्र या द्वीपान्तर के साथ व्यापार करने का प्राचीन गुप्तकालीन संकेत इसमें बच गया था।

विभाग ७ में देवी देवता आदि का वर्णन है। पृष्ठ १६३ पर श्रेष्ठि के वर्णन में कहा गया है कि उसके यहाँ लक्ष्मी के निधान कलश रहते हैं और लाख धन के सूचक दीप जलते हैं एवं करोड की सूचक ध्वजाएँ फहराती हैं। श्रेष्ठिप्रवहणयात्रा के वर्णन में देशान्तर के योग्य भाण्ड या माल को देशान्तरोचित क्रियाणा कहा गया है और कूपदण्ड या मस्तूल के लिये कुआखम शब्द है।

विभाग ८ में जैन धर्म संबंधी वर्णकों का संग्रह है। समवसरण के वर्णन में रत्नमय पीठ, प्राकार, कौशीश, चार प्रतोली द्वार, देव प्रतीहार, सुवर्ण स्तम्भ

मणिमय कुम्भ, रत्नमय तोरण, चन्दनमाला, छत्र, पुतली, मगरमुख, ध्वजा, पीठ, सिंहासन, पादपीठ, आतपत्र छत्र, चँवर, भामण्डल, धर्मचक्र, देवदुन्दुभि, इन्द्र-ध्वज आदि पारिभाषिक शब्दावली ध्यान देने योग्य है । इसके बाद जिन-वाणी, जिनोपदेश, तपभावना, धर्म माहात्म्य, युगलिया सुखवर्णन, श्रावक आदि के वर्णक है । पृष्ठ २११-२१२ पर ८४ गच्छो के नामो की सूची है और अन्त मे चतुर्दश स्वप्नो के वर्णन हैं । १४वे स्वप्न मे निर्धूम अग्निशिखा को सदाज्वाला युक्त ऊर्ध्वमुखी धक-धक करता हुआ वैश्वानर कहा गया है । सर्वान्त मे लक्ष्मी देवी और उनके पद्मसरोवर में खिले मुख्य कमल का बहुत ही भव्य वर्णन है ।

विभाग ६ मे सामान्य नीतिपरक वर्णको का संग्रह हैं । यह समस्त प्रकरण अत्यन्त सुपाठ्य और बुद्धि की चतुराई से भरा हुआ है । द्रामड़ का सकेत शेरशाह-अकबरकालीन मुद्रा से है (कहाँ द्रम्य या दाम कहाँ रुपया) । पृष्ठ २५६ पर चचल मन के वर्णक मे उपमानो की लडी पढते हुए चित्त प्रसन्न हो जाता है—चञ्चल मन ऐसा है जैसे हाथी का चञ्चल कान, पीपल का पान, संध्या का वान, या दुहागिन (परित्यक्ता) का मान, मिट्टी का घाट, वादल की छाँह, कापुरुप की बाँह, तृणो की आग, दुर्जन का राग, पानी की तरग और पतग (लकडी) का रग । पृष्ठ २५८–५६ पर विशिष्ट पदार्थों के वर्णक मे वस्तुओ का उल्लेख ध्यान देने योग्य है—सोरठी गाय, मरहठी वेसर आवू तणउ देवडो (आवू के जैन मन्दिर), पाटण तणो सेवडो (पाटन के श्वेताम्बर यति), वाराणसीउ धूर्त । इसी प्रसग मे ३६० प्रकार के किरानों को उत्तम और ३६ नाणक को अच्छा कहा गया है । ३६० किरानो की सूची साडे-सरा के वर्णक-समुच्चय के परिशिष्ट २ मे सौभाग्य से बच गई है । ३६ नाणक या सिक्कों को श्रेष्ठ मानने का कारण सभवत यह था कि ३६ दाम या ताँबे के पैसों का एक चाँदी का रुपया माना जाता था । विशेष पदार्थों मे (२५६–२६०) निम्नलिखित ध्यान देने योग्य हैं :—

चतुराई गुजरात की, वासा हिन्दुस्तान का,
चूडा हाथी दाँत का, चौहट्टो की भीड दिल्ली की,

देवल आवू का, रूपा (चाँदी) जावर का इत्यादि । अपने वर्ग में विशिष्ट पदार्थों का उल्लेख करते हुए वस्त्रों में नेत्र वस्त्र की प्रशसा की गई है । 'भला क्या' इस सूची में भी अनेक उल्लेख बढिया है, जैसे—कच्छ की घोड़ी भली, पाग खाँगी (टेढी) भली, सेज चित्रशाली भली, कोरणी कोरी भली (अर्थात् नक्काशी या उकेरी चारो ओर गोल कोरी या उकेरी हुई नक्काशी अच्छी समझनी चाहिए ।

विभाग १० में मंगल, वर्द्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्र, अलंकार, धातु-रत्न आदि के वर्णन हैं। पृष्ठ २८१ पर वर्द्धापनक के अन्तर्गत ही तलिया तोरण का उल्लेख है जो पृष्ठ १६ पर भी आया है। जैसा ऊपर कहा है यह संस्कृत तलक-तोरण का रूप था। पृष्ठ २८२ पर धात्रियों की संख्या पाँच कही गई है। दिव्यावदान आदि बौद्ध संस्कृत ग्रन्थों में अंकधात्री क्षीर-धात्री, क्रीडा-धात्री और मल-धात्री ये चार नाम आते हैं। यहाँ अन्तिम के स्थान पर मज्जन-धात्री और मंडन-धात्री नाम आए हैं। बाल-क्रीडा-वर्णन के मुख्य अभिप्राय सूर-सागर के विशद वर्णनों की संक्षिप्त सूची के समान हैं। विवाह समय नामक वर्णक में (पृ० २८३) घड़े सहित घृत मोल लेने का उल्लेख है जो उस युग का स्मरण दिलाता है जब पचास साठ वर्ष पहले तक गाँवों में घी मोल, घड़े आदि मिट्टी के पात्रों में भरकर रक्खा जाता था। घाघरमालि से तात्पर्य बड़े और बजने घुँघरुओं की उस माला से है जो घोड़े, खच्चर आदि के गले में डाली जाती थी और जिसे गढ़वाल में आज भी घाँघरयालो कहते हैं। भोजन के प्रसंग में रसोई के चार वर्णक संगृहीत हैं। लगभग २८ पृष्ठों में यह सामग्री अत्यन्त विशद है और इसमें मध्यकालीन साहित्य में प्रयुक्त भोजन संबंधी शब्दों का एक पूरा भांडार ही मिलेगा। 'जिम महब्भूत गाडू तिम लाडू' (पृष्ठ २८३) उल्लेख ध्यान देने योग्य है। गाडू का अर्थ गडुवा या लोटा है जिसे यहाँ बड़े लड्डू का उपमान कहा गया है। विद्यापति की कीर्तिलता में भी गाडू शब्द आया है (खणयक तुप भै रहइ गारि गाडू दे तबहीं, द्वितीय पल्लव, अर्थात् तुर्क के मुँह में जब निवाला अटक जाता है तब वह गडुवे से पानी मुँह में उँडेल लेता है)। महब्भूत या महाअद्भुत गाडू सम्भवतः उस प्रकार के लोटे को कहते थे जिसके पिटार पर दस अवतारों का अंकन किया जाता था। सम्भवतः यहाँ उन बड़े लड्डुओं का प्रसंग है जिन्हें मगद के लड्डू कहते हैं। पकवानों में खाजा नामक मिठाई की उपमा महल के छज्जे से दी गई है (पृष्ठ २८३, २८६)। इस मिठाई का चलन अब बन्द हो गया है किन्तु ज्ञात होता है कि मध्य युग में फूले हुए बहुत बड़े सतपुड़े खाजे बनाए जाते थे। वस्तुत इस प्रकरण में अनेक प्रकार के लड्डू, मोंडे, फल, मेवा, चावल, मसाले, मिठाई आदि के नाम हैं जिनकी व्याख्या के लिये पूरे शोध-निबन्ध की आवश्यकता होगी। वर्ण-रत्नाकर और वर्णक-समुच्चय की सामग्री के साथ तुलना करने से इन नामों पर प्रकाश पड़ने की सम्भावना है। इन शब्दों में अपभ्रंश युग की भाषा की परम्परा भी ध्यान देने योग्य है, जैसे पारिहेटि महिसि तणउ दूधु (पृष्ठ २८४) इस वाक्य में पारिहेटि शब्द गौ न की संज्ञा थी जिसे हेमचन्द्र ने देशीनाममाला में परिहट्टी कहा है (देशी०

६।७२)। पृष्ठ ३०३ पर लड्डुओ के दो वर्णक है और पृष्ठ ३०४ पर सूँखडी या मिठाई के तीन वर्णकों में अनेक नाम भाषा के इतिहास की दृष्टि से रोचक है, जैसे इमरती के लिये पुराना नाम मुरकी था जो दो वर्णकों में पढा है और पद्मावत में भी प्रयुक्त हुआ है। भारतीय भोजन और पकवानों का इतिहास अभी नहीं लिखा गया यद्यपि वैदिक युग से लेकर आज तक की तत्सम्बन्धी सामग्री बहुत अधिक है। उदाहरण के लिये इन सूचियों में बरसोला शब्द कईबार आया है। यह एक प्रकार का खाँड का लड्डू होता था जो पानी में डालते ही गल जाता था। नैषधचरित में इसे वर्षोपल कहा है। अब इसका चलन कम हो गया है। पृष्ठ ३१० पर फल-मेवों की सूची में भी बिजोरा के साथ बरसोला नाम आया है। इससे ज्ञात होता है कि मिठाई के अतिरिक्त नीबू की तरह के किसी फल के लिये भी यह शब्द प्रयुक्त होने लगा था। सुगन्धित वस्तुओं की सूची में मोगरेल, चॉपेल, जाचेल, केवडेल, करणेल, इन पॉचो शब्दों का अन्त का 'एल' प्रत्यय तैल-वाचक है। ये शब्द मोगरा चम्पा, जाही, केवडा और करना (एक प्रकार का श्वेत पुष्प) नामक फूलों से सुवासित तेलों के नाम थे।

पृ० ३११-३१४ पर वस्त्रों के पॉच वर्णक अत्यन्त रोचक हैं। इनमें पाँचवीं सूची में लगभग १४० वस्त्रों के नाम हैं जो ऊपर उल्लिखित वर्णकसमुच्चय की सूची के समान महत्त्वपूर्ण हैं। इन सूचियों में भैरव शब्द कई बार आया है जो आईन-अकबरी के अनुसार एक वस्त्र का नाम था। बीसलदेव रासो मे भैरव की चोली का वर्णन है, जो आइन से लगभग २०० वर्ष पुराना उल्लेख होना चाहिए। मसज्जर अरबी मुशज्जर का रूप है जिस पर शजर या पेड़-पौधों की बूटियॉ बनी रहती थीं। पोपटिया, जैसा नाम से प्रकट है, तोते की बूटी से छपे वस्त्र को कहते थे। नारी कुजर वस्त्र का नाम भी नारी कुञ्जर भाँति की छपाई के कारण ही पडा था। कमलबन्ना (कमल के रंग का), मूँगबन्ना (मूँगिया रंग का), गंगाजल, चक्रवटा (चक्र की छाप से छपा हुआ), सेत्रुंजी (शत्रुंजय, सौराष्ट्र का बना हुआ), पाम्हड़ी (स० पद्मपटी, कमल बूटी से छपा हुआ), हंसवेडि (हसपटी), गजवेडि (गजपटी), प्रवालिआ (मूँगिया लाल रंग का वस्त्र), कोची (कोच बिहार का बना हुआ), गौडीया (गौड, बगाल के वस्त्र सभवतः जिन्हें जायसी ने पडुआ के बने पंडुवाए वस्त्र कहा है), सुनारगामी कपूरधूली, लोवडी (स० लोमपटी) पट्टकूल, मेघाडम्बर, खीरोदक, पैठाणी (पैठण या प्रतिष्ठान का बना हुआ) आदि नाम सस्कृत प्राकृत परम्परा के हैं जो मध्यकालीन संस्कृति में सुविदित रहे होंगे। आगे चलकर

महमूदी, सिरीबाफ, जरबाफ, तानबाफ, कमखाब, सूसी आदि मुसलमानी युग के नाम भी पुरानी सूचियों में जुड़ते रहे जैसा वर्णरत्नाकर, वर्णकसमुच्चय और सभाशृंगार में पाया जाता है। इनमें कई नामों की अब ठीक पहचान ज्ञात नहीं है।

इस ग्रन्थ के परिशिष्ट रूप में जो रत्नकोष और राजनीतिनिरूपण नामक दो संस्कृत ग्रन्थ मुद्रित किये गए हैं उनमें भी मध्यकालीन जीवन की बहुविध सामग्री का उल्लेख आया है। हमें प्रसन्नता है कि ग्रन्थ की उपादेयता बढाने के लिये श्री नाहटा जी ने उन्हें इस संग्रह में संकलित कर लिया है क्योंकि जितनी भी इस प्रकार की बिखरी हुई सामग्री प्रकाश में लाई जा सके स्वागत के योग्य है।

इस प्रकार इस विशिष्ट वर्णन संग्रह का कुछ संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से इसकी विशेष छानबीन की आवश्यकता है। हिन्दी साहित्य में यह एक नया क्षेत्र है। प्रयत्न करने पर इस प्रकार के और भी ग्रन्थ मिलने की संभावना है। हम श्री नाहटा जी के अनुगृहीत हैं कि उन्होंने परिश्रम पूर्वक इस प्रकार के उपयोगी साहित्य की रक्षा की।

काशी विश्वविद्यालय
६-४-१९५९

वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रस्तावना

विश्व अनंत वस्तुओं का भंडार है जहाँ प्रतिपल अनेक प्रसग बनते रहते है। उन वस्तुओं और घटनाओं को हम सभी देखते एवं जानते हैं पर उनका ठीक से वर्णन करना विरले ही व्यक्तियों के लिये सभव है। इसीलिये कहा गया है—'कहिवो सुनिवो देखिबो, चतुरन को कछु और'।

वस्तुओं और प्रसंगों को वर्णन करने की एक कला है। किसी बात का वर्णन करते समय उसका तादृश चित्र सा खड़ा कर देना तो बडे महत्त्व की बात है ही पर उसे सुदर शब्दों में दृष्टांतों और उपमाओं के साथ वर्णन करना यह उससे भी अधिक महत्त्व की बात है। भारतवर्ष में प्राचीन काल मे वर्णनकला की परपरा पाई जाती है। प्राचीन जैन आगमों से तो यह भली भाँति सिद्ध है। वैसे तो सभी आगमों में जब भी नगर, राजा, वनखड, उद्यान, चैत्य आदि का प्रसंग आया है, वहाँ उनका बडे सुदर ढंग से वर्णन किया गया है। पर उववाइ (औपपातिक) नामक उपांग सूत्र में तो वर्णनो का संग्रह विशेष रूप से पाया जाता है और अन्य आगमो में नगर, राजा आदि का वर्णन—'उववाइ सूत्र के जैसा जान लेना या कहना' इस प्रकार का मिलता है। इन वर्णनों में सास्कृतिक सामग्री प्रचुर रूप से संगृहीत है जिसके सबध में मैंने एक स्वतंत्र निबध में दिशानिर्देश किया है और पटना से प्रकाशित 'साहित्य' नामक पत्र में 'जैन आगमों की वर्णन शैली' का सक्षिप्त परिचय भी प्रकाशित किया गया था।

वर्णनसंग्रह के दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ—जैन आगमों की वह परपरा परवर्ती साहित्य में भी पाई जाती है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश काव्यों और कुछ गद्यग्रंथों में भी कवियों एवं विद्वानों ने विविध प्रसंगों में नगर, राजा रानी, ऋतु आदि का वर्णन किया है। प्राचीन राजस्थानी और गुजराती में वह परंपरा और भी विकसित रूप में पाई जाती है। मैथिली और महाराष्ट्री भाषा के भी 'वर्णरत्नाकर' एवं 'वैजनाथ कलानिधि' इस परंपरा की व्यापकता को सूचित करते हैं। इनमें से वर्णरत्नाकर को तो काफी प्रसिद्धि मिल चुकी है पर 'वैजनाथ कलानिधि' का विवरण अब से २३ वर्ष पूर्व पत्तनस्थ प्राच्य

जैन भडांगारीय ग्रंथसूची के पृष्ठ ७४ से ७६ में प्रकाशित होने पर भी इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की ओर अभी तक विद्वानों का ध्यान नहीं गया। इस ग्रंथ की ११५ पत्रों की एक प्रति सघवी पाडे के जैन भडार में है। ग्रथ अभी तक अप्रकाशित होने से इसका थोड़ा सा अंश पाटण भंडार सूची से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

आतां नगरवर्णन

आटालिया, ऊपरीया, सालीया, गजद्वारें, राजद्वारें खडकीद्वारें, वाइलवाडे, चौकिया, मनोरम विलासमुरें।

प्रसिद्ध सिद्धांचे निवेश

बौद्धाचे विहारा, जिनाचीं जिनालयां, कनकशाला, टकशाला, होमशाला, अध्ययनशाला, गीतनृत्य वाद्यशाला, जेणशाला, चित्रशाला, धर्मशाला, मद्यशाला, हस्तिशाला, ब्रह्मशाला।

अनेक मठ मढिया

'करुआडें नडें चौकीया धवलहारें वसुआरें मालवधें कोचनि बर्द्धे कोठारें, कोटिआ, कड़ी, घोडौ डी, [क] लहस, दुआले आवासणिया। सिंपणहारी, उधूतपताकासहस्र (स्र) प्रकटिते, उत्तगगिरि शिखरमकारें देवतायतनें, चतुष्पथें २ विचित्र चित्रित सभा मडप। स्वर्णकलशालंप्रासादसहश्रु (स्रु)। जैसे—गगन सरोवर कनककमलमुकुलीं अलकृत, मयूर, पारावत, चकोर, राजहस। तेया चित्रां प्रासादावरि इतश्चेतश्च संचरतेति आकाशसरोवरीं जलविहंगमा ब्राह्मणभवनीं ऋचा यज्ञ सामाचे उद्‌घोष सायंप्रातरग्निहोत्र हवने मंगलप्रकासक होमधूम। सुरभिपरिमलालकृत श्रीमंत भवनीं बहकते अगरुधूम। क्रय-विक्रय व्यवहारीं, ससभ्रम हट्टशाला प्रदेश। ठाईं ठाईं सतीसां दंडायुधां वे सरांवाचे या गरुडी। तांडवलास्यमेदें। भावकां नटांसि पात्र परिपाठ वाचीं अभ्यासस्थानें। गोववते आगसरादींविश्रसाला। घट-प्रासादसाधकां देसी मार्गसाधनें। तत वितत घन सुषिर वाद्य वादका सरावांचीं एकांतस्थानें परमप्रवोधा नंदनिर्भरां मुनीं वेद्याख्यान मठ राठलि वांसिह वारीं डावियें ऊजिवीये भुजे तीं तीं भूमींचीं भूविलासिणिचीं धवलहारें।' इसके बाद सभा आदि के वर्णन हैं।

वर्णन प्रकार—वर्णन करने की प्रणाली में मुख्यतया दो बातों की ओर हमारा ध्यान जाता है अर्थात् प्रधानतया वर्णनों को दो प्रकारों में विभाजित

कर सकते हैं (१) भेद प्रभेदों एवं नामावलियों का विस्तार (२) वस्तु और घटना का छटाकार अलंकृत शैली में चित्रण। इसमें तुकांत प्रासयुक्त गद्य की प्रधानता इसकी रोचकता में चार चाँद लगा देती है। छंद के बंधन से मुक्त होने पर भी तुकांत और प्रासयुक्त वर्णन शैली बहुत ही मनोहर एवं आकर्षक है। प्रस्तुत संग्रह में उपरोक्त दोनों प्रकार के वर्णन पाठकों को देखने को मिलेंगे।

दो अन्य राजस्थानी वर्णनसंग्रह ग्रंथ—इस ग्रंथ में सगृहीत सभी वर्णन जैन विद्वानों के लिखे हुए हैं पर जैनतर लेखकों ने भी ऐसी कुछ रचनाएँ की हैं जिनमें से दो राजस्थानी रचनाएँ 'खीची गगेव नींबावतरो दो-पहरो और राजान राउतरो बात वणाव' मेरे विद्वान् मित्र श्री नरोत्तमदास जी स्वामी संपादित राजस्थान पुरातत्वोन्वेषण, प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से राजस्थानी साहित्यसग्रह भाग १ में प्रकाशित हो चुकी हैं। ये दोनों ही रचनाएँ किसी चारण विद्वान् की लिखी हुई प्रतीत होती हैं। इनमें प्राप्त होनेवाले वर्णन बहुत ही सुंदर और सांस्कृतिक दृष्टि से बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। बात वणाव का अर्थ है कि बात किस तरह बनानी अर्थात् कहनी व लिखनी चाहिए। राजस्थान में हजारों बातें (वार्ताएँ, कथा कहानियाँ) बड़े चाव से कही सुनी जाती रही हैं। बातों को अच्छे ढग से छटादार शैली में कहनेवाले व्यक्तियों को राजाओं ठाकुरों आदि के यहाँ बड़ा संमान तो मिलता ही था पर जनसाधारण में भी उनका बड़ा आदर था। यद्यपि सैकड़ों राजस्थानी बातें लिखित रूप में भी मिलती हैं पर मौखिक रूप से कहने का ढग बड़ा ही अनोखा और निराला होता है जो कि लिखित रूप में प्रायः नहीं पाया जाता। फिर भी कई बातों में कई प्रसंग बड़े सुंदर रूप से लिखे हुए मिलते हैं।

वर्णकों के प्रति आकर्षण—वर्णकों के प्रति मेरा आकर्षण बाल्यकाल से है जब मैं ८-१० वर्ष का था तो पर्युषणों में कल्पसूत्र सुनने के लिये पिताजी आदि के साथ व्याख्यान में जाया करता था। कल्पसूत्र की लक्ष्मी-वल्लभी टीका कल्पद्रुम कलिका में कई जगह राजस्थानी भाषा के सुंदर वर्णक हैं जिन्हें सुनकर मुझे बड़ा आनंद मिलता था। टीकाकार लक्ष्मी-वल्लभ ने ऐसे वर्णकों को 'वागविलास' ग्रंथ से उद्धृत करने की सूचना दी है अतः उस वागविलास ग्रंथ को प्राप्त करने की बड़ी उत्कंठा हो आई पर कई वर्षों तक उसका कोई अनुसंधान नहीं मिल सका।

अब से करीब ३० वर्ष पूर्व बड़ौदा ओरियंटल सिरीज से प्रकाशित 'प्राचीन गुर्जर काव्यसंग्रह' और मुनि जिनविजय जी संपादित 'प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ' में संवत् १४७८ में माणिक्यचंद्रसूरि रचित 'पृथ्वी चंद्र चरित्र' अपर नाम 'वाग्विलास' नामक ग्रंथ देखने को मिला तो बड़ी प्रसन्नता हुई। पर इस ग्रंथ में लक्ष्मीवल्लभगणि ने 'वाग्विलास' के जो वर्णन कल्पसूत्र की टीका में दिए हैं वे प्राप्त नहीं हुए, इसलिये टीका में उल्लिखित 'वाग्विलास' नामक रचना और कोई होनी चाहिये इस धारणा के साथ उसकी शोध में लगा रहा।

संग्रह का प्रयत्न—महाकवि समयसुंदर की रचनाओं के अनुसंधान के प्रसंग से जब बीकानेर के हस्तलिखित जैन ज्ञानभंडारों की प्रतियों का अवलोकन शुरू किया तो सर्वप्रथम 'कुतूहलम्' नामक एक छोटी सी सुंदर वर्णनोंवाली रचना मिली। उसके बाद संवत् १७६२ की लिखी हुई 'सभा-शृंगार' (नंबर ३) की एक प्रति प्राप्त हुई। इन दोनों की नकलें करवा के रख ली गई। तदनंतर सन् १९५० में जैसलमेर की द्वितीय यात्रा में १६ वीं शताब्दी की लिखी हुई एक अपूर्ण प्रति बड़े उपाश्रय के यति लक्ष्मीचंद जी के पास देखने को मिली। अपूर्ण होने से इस रचना का कोई नाम ज्ञात नहीं हुआ। पर पत्रों के प्रत्येक उपांत में 'मुत्कलानुप्रास' नाम लिखा हुआ था। प्राप्त ८ पत्रों में १०८ वर्णन प्राप्त हुए पर बहुत खोज करने पर भी इसकी पूरी प्रति प्राप्त नहीं हुई।

जैसलमेर से बीकानेर लौटते समय मुनि पुण्यविजय जी के पास जैसलमेर पधारे हुए डा० भोगीलाल साडेसरा और डा० जितेंद्र जेतली से सर्वप्रथम मिलना हुआ तो उन्हें अनुरोध करके बीकानेर साथ ले आया। प्रसंग-वश डा० साडेसरा से यह ज्ञात हुआ कि उनके पास भी वर्णनों की एक विशिष्ट प्रति है। तो मैंने उनसे वह प्रति भी मँगवा ली। ४० पत्रों की वह महत्वपूर्ण प्रति भी अपूर्ण थी। सन् १९५१ के मार्च में ही मैंने उसकी प्रतिलिपि करवा ली। उसके बाद जोधपुर जाने पर वहाँ के केसरियानाथ जी के भंडार में सभाशृंगार (नंबर १) के १८ पत्रों की एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई इसमें १५८ वर्णन थे। इन सब प्रतियों व रचनाओं के आधार से 'राजस्थान भारती' में 'कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य ग्रंथ' नामक लेख प्रकाशित किया। जिसमें उपरोक्त रचनाओं के कुछ चुने हुए वर्णन प्रकाशित किये गए। माननीय वासुदेवशरण जी अग्रवाल को उपरोक्त रचनाओं की

प्रतिलिपियाँ देखने को भेजी तो आपने इन्हें महत्वपूर्ण समझकर संपादित कर देने को लिखा। नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से इस ग्रंथ के प्रकाशन में भी अग्रवाल जी का मुख्य हाथ रहा है।

इसी बीच बीकानेर के खरतर आचार्य गच्छ के ज्ञानभंडार से कुशलधीर रचित सभा कौतूहल की ६ पत्रों की एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई। आगरे जाने पर विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर से सभाश्रृंगार (नंबर १) जो पहले अपूर्ण मिला था उसकी संवत् १६७१ की लिखी हुई पूरी प्रति मिली और पाटोदी दिगंबर मंदिर, जयपुर से भी उसकी एक प्रति प्राप्त हो गई। इस तरह वह रचना तो पूरी की जा सकी। सौजन्यमूर्ति आगमप्रभाकर मुनिवर्य पुण्यविजय जी को लिखने पर उन्होंने पाटण भंडार से 'सभाश्रृंगार (नंबर २) की ६ पत्रों की प्रति संवत् १६७७ की लिखी भिजवा दी। जयपुर जाने पर मुनि जिन-विजय जी के संग्रह में खरतर गच्छीय कविवर सूरचंद्र रचित 'पदैक विंशति' नामक महत्वपूर्ण अज्ञात ग्रंथ की ६८ पत्रों की अपूर्ण प्रति अवलोकन में आई तो उसे भी साथ ले आया। मूल ग्रंथ संस्कृत में है पर उसमें प्रसंग प्रसंग पर राजस्थानी के गद्यवर्णन स्वर्ण आभूषण में जड़ाव की तरह सुनियोजित हैं। अतः उन सब वर्णनों को अलग से छाँटकर लिखवा लिया गया। उसके बाद मुनि पुण्यविजय जी और जयपुर के दिगंबर भंडार तथा विनयसागर जी के संग्रह की प्रतियाँ प्राप्त होती गई और कुछ अपने संग्रह की प्रतियों का भी उपयोग किया। चितौड़ जाने पर यति बालचंद्र जी के संग्रह से १ पत्र में लिखा हुआ सभाश्रृंगार ले आया। भारतीय विद्या भवन से जिनविजय जी के संग्रह के सभाश्रृंगार की प्रति मँगवाई। बड़ौदा, पूना आदि से भी प्रतियाँ मँगवाई गईं। इस तरह २५-३० प्रतियों को प्राप्त करके इस ग्रंथ को तैयार किया गया है।

आवश्यक स्पष्टीकरण—यहाँ यह भी बतला देना आवश्यक है कि जब मैं इस ग्रंथ की तैयारी में लगा हुआ था तो डा० भोगीलाल जी सांडेसरा से सूचना मिली कि वे भी एक 'वर्णक समुच्चय' ग्रंथ तैयार करने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसलिये उनके संग्रह की जो प्रति मँगवाई थी उसका उपयोग मैं अपने ग्रंथ में नहीं करूँ। अतः उस प्रति के वर्णनों का इस ग्रंथ में उपयोग नहीं किया गया। यद्यपि उसके बहुत से वर्णन सभाश्रृंगार आदि अन्य संग्रहों में प्राप्त होने से मेरे इस ग्रंथ में भी आ चुके हैं पर कुछ वर्णन ऐसे भी रह जाते हैं जो सांडेसरा जी की प्रति में ही थे, अन्य प्रतियों

में नहीं। सादेसरा जी का वह वर्णक समुच्चय ग्रंथ महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा से प्रकाशित हो चुका है। उनमें प्रकाशित सभाश्रृंगार तो मुझे प्राप्त सभाश्रृंगार (नंबर १) ही है। अतः 'वर्णक समुच्चय' के प्रथम भाग में सांडेसरा जी की प्राप्त प्रति में पत्रांक २ न मिलने से पाठ त्रुटित रह गया था, उसको मैंने उन्हें भेजकर वर्णक समुच्चय भाग २ में प्रकाशित करवा दिया है। इस दूसरे भाग में प्रथम भाग के वर्णकों का सांस्कृतिक अध्ययन और शब्दसूचियाँ प्रकाशित की गई हैं जो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

अपूर्ण प्रतियाँ—काफी खोज करने पर भी सभा कुतूहल, पदैक विंशति, मुत्कलानुप्रयास की पूरी प्रतियाँ कहीं से भी पूरी नहीं हो सकीं और न लक्ष्मीवल्लभी टीका में उल्लिखित 'वागविलास' ग्रंथ ही अभी तक प्राप्त हुआ। इसलिये उसके अनुसंधान एवं प्रकाशन का कार्य अब भी बाकी रह जाता है।

सभाश्रृंगार नामक संस्कृत ग्रंथ—संस्कृत में भी सभाश्रृंगार नामक एक पद्यबद्ध ग्रंथ प्राप्त हुआ है जो अंचलगच्छ के कल्याणसागरसूरि के शिष्य द्वारा रचित है। इस ग्रंथ की ४प्रतियाँ देखने को मिली हैं। जिनमें से नित्यमणि जीवन लायब्रेरी, कलकत्ता की प्रति की नकल परिशिष्ट में देने को भेज दी गई थी, पर जब तक वह अन्यत्र प्रकाशित हो गई । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर (पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर) और बड़ौदे आदि के जैन भंडारों की प्रतियों का भी उपयोग नहीं किया जा सका। 'सभा तरंग' नामक एक संस्कृत पद्यबद्ध ग्रंथ की एक प्रति आमेर भंडार से मँगवाई गई थी और भंडारकर ओरियंटल इन्स्टीट्यूट पूना में भी इसी नाम वाले ग्रंथ की २ प्रतियां हैं पर उनका उपयोग इस ग्रंथ में करना आवश्यक नहीं प्रतीत हुआ क्योंकि उनकी वर्णनशैली भिन्न प्रकार की है।

जैनेतर संस्कृत रचनाओं में गीर्वाण पद मंजरी और गीर्वाण वाणमंजरी क्रमशः वरद भट्ट और ढुंढिराज के रचित, वर्णक पद्धति की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इनमें से एक की प्रति हमारे संग्रह में भी है। ये दोनों रचनाएँ डा० उमाकांत साह द्वारा संपादित होकर जर्नल ऑफ ओरियंटल इन्स्टीट्यूट भाग ७ नंबर ४ (जून १९५८) के अंक में प्रकाशित हो चुकी हैं।

परिशिष्ट—परिशिष्ट नंबर १ और २ में दो और महत्त्वपूर्ण रचनाएँ दी गई हैं जिनमें से प्रथम 'रत्नकोष' नामक ग्रंथ तो बहुत ही प्रसिद्ध रहा है।

उसकी हमारे संग्रह और बड़े ज्ञानभंडार की प्रति से पहले प्रेस कापी तैयार की गई पर उसके बाद अनूप संस्कृत लायब्रेरी की ४ प्रतियाँ और मँगाकर देखी तो उनमें काफी पाठभेद मिला। पर उन सब पाठभेदों का देना संभव न होने से केवल उनमें जो विशेष वस्तु प्रकारों के नाम मिले हैं उन्हीं की सूची दे दी गई है। परिशिष्ट नंबर २ में राजनीति निरूपण नामक संस्कृत ग्रंथ दिया गया है। वह मुगलकालीन शब्दों एवं संस्कृत पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। इस रचना की एक मात्र प्रति जैन भवन, कलकत्ते की लायब्रेरी से मिली है। परिशिष्ट की सामग्री प्रतिपरिचय छपने के बाद तैयार की गई इसलिये उसमें इन रचनाओं की प्रतियों का परिचय नहीं दिया गया है।

उपयोग—वर्णकों का उपयोग ग्रंथों में किस प्रकार किया जाता है इसका सुंदर उदाहरण 'पृथ्वीचद चरित्र' और 'पदैक विंशति' ग्रंथ हैं। एक ही वर्णन को, भिन्न भिन्न लेखकों ने कुछ घटा बढ़ा कर भी लिखा है। कुशल धीर ने पुराने वर्णनों में किस तरह अपनी ओर से कुछ मिलाकर परिवर्धन किया है इसकी कुछ सूचना इस ग्रंथ में प्रकाशित 'सभा कुतूहल' के वर्णनों से पाठकों को मिल जायगी। फुटकर पत्रों में भी ऐसे वर्णन लिखे मिलते हैं। जिनमें प्रकाशित वर्णकों से कुछ भिन्नता है, पर उन सब वर्णनों के उपयोग से यह ग्रंथ काफी बड़ा हो जाता है।

[1]**नवीन उपलब्ध ग्रंथ**—अभी अभी मेरे भ्रातृपुत्र भँवरलाल को 'आभाणक रत्नाकर' नामक ग्रंथ का प्रथम खंड प्राप्त हुआ जिसमें बहुत सी कहावतों के साथ कुछ ऐसे वर्णनों का भी प्रारंभ में संग्रह किया गया है। इससे मालूम होता है कि वर्णकसंग्रहों का व्यापक प्रचार था और ऐसे अनेक संग्रह समय समय पर तैयार होते रहे हैं। खोज करने पर और भी ऐसी मूलयवान सामग्री अवश्य मिलेगी। सभाशृंगार की तो अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं।

वर्णनसंग्रहों के नाम—वर्णन करने की प्रतिभा प्रत्येक व्यक्ति में समान रूप से पाई जाना संभव नहीं इसलिये कुछ प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों ने वर्णनों के संग्रहग्रंथ तैयार कर दिए, जिनको अन्य लोगों ने अपनी रचनाओं में यथाप्रसंग स्थान दिया। ऐसे वर्णनसंग्रहों का नाम सभाशृंगार, वागविलास, वर्णना सार, सभा कौतूहल, आदि रखे गए।

---

१. दे० मरुभारती वर्ष ८।

प्रस्तुत ग्रंथ का संपादन—इनमें से जितने ऐसे ग्रंथ राजस्थानी गद्य में प्राप्त हुए उनकी प्रतियों को कई ज्ञानभंडारों से मँगवाकर विषय वार वर्गीकरण करके इस ग्रंथ में दिया गया है। पहले ऐसी रचनाओं को मूल रूप में अलग अलग प्रकाशित करने के लिये उनकी प्रतिलिपियाँ की गईं पर बहुत से वर्णन एक दूसरी रचना में समान रूप से मिलते थे इसलिये उस रूप में प्रकाशित करने से बहुत अधिक पुनरावृत्ति होती। अतः पुनरावृत्ति न होने और उपयोगिता को बढ़ाने के लिये प्रत्येक वर्णन को अलग अलग लिखवाया गया फिर समान वर्णनवालों का पाठ मिलान कर पाठभेद लिखा गया और उन्हें क्रमबद्ध करके १० भागों में विभाजित किया गया। इस कार्य में कई महीनों तक कठिन परिश्रम करना पड़ा। इसलिये ग्रंथ को तैयार करने में अधिक समय लग गया और फिर मुद्रण में भी देर होती रही। फिर भी पाठकों के समक्ष इस रूप में रखते हुए, किंचित् संतोष का अनुभव होता है।

आभार—इस कार्य में श्री भँवरलाल नाहटा, ताराचंदजी मेठिया, नरोत्तमदास जी स्वामी और श्री बदरी प्रसाद जी साकरिया से बड़ी सहायता मिली है। श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने भूमिका लिखकर मुझे बहुत उपकृत किया है। श्री चद्रसेन जी मोरल ने इसके साहित्यिक सौंदर्य पर लिखा है। ना० प्र० सभा काशी ने इसे प्रकाशित किया है। एतदर्थ सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

अगरचंद नाहटा



सभा श्रृंगार का साहित्यिक सौंदर्य

वर्णकसाहित्य में विभिन्न वस्तुओं के वर्णन का संग्रह होता है। इसी प्रकार का एक संग्रह 'सभा शृगार' है जिसे 'वर्णन संग्रह' भी कहा गया है। यद्यपि डा० साडेसरा ने भी अपने ग्रंथ में सभा शृंगार का समावेश किया है[1] पर वह वर्णन एक ही संग्रह का है और अधूरा है जिसका त्रुटित अंश उन्होने बाद में प्रकाशित किया है।[2] वह आकार में भी छोटा है। प्रस्तुत 'सभा शृगार' को श्री अगरचंद जी नाहटा ने अलग अलग ५ 'सभा शृंगार' के वर्णनों की कई प्रतियों के आधार पर संकलित किया है। इन पॉचों का तथा विभिन्न प्रतियों का परिचय ग्रंथ के अंत में दे दिया गया है।[3] डा० साडेसरा ने 'वर्णक समुच्चय' (भाग १) नामक ग्रंथ में जो वर्णक संग्रह दिया है वह महत्त्वपूर्ण है पर नाहटा जी के 'सभा शृंगार' की विशेषता यह है कि उन्होंने सभा शृगार के पाँचों संग्रहों को ज्यों का त्यों नहीं छापा है बल्कि उन्होंने समान विषयों को अलग अलग करके एक जगह प्रकाशित किया है। साथ ही डा० साडेसरा द्वारा प्रकाशित 'सभा शृंगार' के अंश को उन्होने छोड़ दिया है।

'सभा शृंगार' निम्नलिखित १० विभागो में विभाजित है—

१. देश, नगर, वन, पशु-पक्षी, जलाशय

२. राजा, राजपरिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

३. स्त्री-पुरुष वर्णन

४. प्रकृति वर्णन [प्रभात, संध्या, ऋतु आदि]

५. कलाएँ और विद्याएँ

---

१. डा० भोगीलाल ज० सांडेसरा, वर्णक समुच्चय, भाग १, पृ० १०५–१५६

२. डा० भोगीलाल ज० सांडेसरा, वर्णक समुच्चय, भाग २, पृ० १२०–१२३

३. श्री अगरचंद नाहटा—सभा शृंगार, परिशिष्ट २, पृ० १–४

६. जातियाँ और धंधे
७. देव, वेताल आदि
८. जैन धर्म सम्बन्धी
९. सामान्य नीति वर्णन
१०. भोजनादि वर्णन

वर्णकसाहित्य में वस्तुओं के विभिन्न नामरूपों का वर्णन होता है। इस प्रकार का वर्णन लेखक के ज्ञानभंडार की तो सूचना देता ही है, साथ ही पाठक या श्रोता भी उससे अपने ज्ञान की वृद्धि कर लेता है। इन वर्णनों के द्वारा पाठक के समक्ष एक चित्र उपस्थित हो जाता है और वह वर्ण्य विषय को सरलता से ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार का परिनिष्ठित और रूढ़िगत रूप हमारे मस्तिष्क की बौद्धिक चेतना को तो उद्‌बुद्ध करता है पर वह हमारे हृदय की मार्मिकता को सजग करने में अधिकांशतः असमर्थ रहता है। पर वर्णकसाहित्य के सभी लेखक समान नहीं होते। उनमें से कुछ कविहृदय होते हैं और उचित प्रसंग पाकर उनका अंतर भावुकता के साथ विषय का चित्रण करने लगता है। 'सभा शृंगार' भी इसका अपवाद नहीं। इसमें अधिकांशतः वस्तुओं के नामरूपों का ही वर्णन है पर कहीं कहीं काव्यछटा के भी दर्शन होते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से सभा शृंगार का 'युद्धवर्णन' उत्कृष्ट है। इसमें स्वाभाविकता के साथ साथ रसमग्न करने की शक्ति है। यह वर्णन या तो लेखकों ने पूर्व ग्रंथों के आधार पर किया होगा अथवा यह भी संभव है कि उनमें से किसी की व्यक्तिगत अनुभूति इसमें अभिव्यक्त हुई हो। ग्रंथ में ७ युद्धवर्णन हैं। इनमें परस्पर कुछ न कुछ समानता होते हुए भी भिन्नता है। प्रथम युद्धवर्णन के आरंभ में दोनों दलों की सेना के मिलने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ उसका चित्रण किया गया है। जब दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गईं तो चारों ओर रेत ही रेत छा गई। उससे अंधकार हो गया और वातावरण की धूमिलता के कारण अपने पराये का भी ज्ञान न रहा। इसके बाद युद्ध का वर्णन किया गया है। कहीं कहीं आरंभ में युद्ध के वाद्य बजने और वीरों के सजने का वर्णन है यथा चतुर्थ युद्धवर्णन में—

वीर मादल वाज्या, सूर साज्या।
जय ढक वाजी, नीसत नीकली गया ताजी।
त्रंबक त्रहत्रहायइ, नेजा लहलहायइ।

कहीं कहीं युद्ध में भाटों द्वारा वीरों को उत्साहित करने का भी वर्णन है। द्वितीय युद्धवर्णन सबसे विस्तृत है और उसमें संघर्ष का जो चित्रण है वह काल्पनिक प्रतीत नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु के ताण्डव-नृत्य को अपने सामने देखकर ही लेखक ने लेखनी उठाई हो। सेना के व्यूह बनाकर खड़े होने के बाद युद्ध के बाजे बजे और रण आरंभ हुआ। धनुष से निकलकर तीर मस्तकों से जा टकराए। खाडे ऐसे चल रहे थे मानो वर्षा की झड़ी लगी हुई हो। वीर एक दूसरे को काटने लगे। कई वीर सिर कट कर गिर जाने पर भी लड़ते रहे। कइयों की तलवारें टूट गईं। कायर लोग भागने लगे। इस प्रकार के युद्ध को देखकर वीर युद्धोन्माद से भर गए पर कायर कॉपने लगे—

> भाजेवा लागा धनुर्दंड।
> जाएवा लागा शिरः खंड।
> पड़ेवा लागी खाडा तणी झड़।
> बजेवा लागी सुत्रट तणी काटकड़।
> नाचेवा लागा भड़ कबंध।
> फोटिवा लागा धज विंध।
> त्रुटेवा लागा खड्गफल।
> नासेवा लागा कायर दल।
> इसइ संग्रामि सुभट गाजइ।
> कायर थर थर धूजइ।

कहीं कहीं हाथी, घोड़ों और रथों की तैयारी और सृष्टि पर पड़नेवाले उनके प्रभाव की व्यंजना ध्वन्यात्मक ढंग से की गई है—

> रथ थडहडइ, रण काहल त्रडत्रडइ।
> गजेंद्र गडगडइ, घोडे पाखर पडइ।
> पृथिवी चलचलइ, समुद्र झलझलइ।
> शेष सलसलइ, सूर सामला हलफलइ।

यद्यपि युद्धवर्णनों से पूर्व 'सभा शृंगार' में शस्त्रवर्णन अलग से दिए हुए हैं पर इन युद्धवर्णनों से भी अनेक प्रकार के शस्त्रों का वर्णन किया गया है जो लड़ाई के समय काम में लाए जाते थे। यदि किसी युद्धवर्णन का आधार

ऐतिहासिक घटना हो तो उसका वास्तविक स्वरूप समझने में भी सहायता मिलती है, यथा ७ वें युद्धवर्णन से जो कालिकाचार्यकथा से लिया गया है। इसमें कालिकाचार्य का गर्द्दभल्ल के साथ युद्ध का वर्णन है। युद्ध आरंभ होने से पूर्व जीते जी मैदान न छोड़ने की सौगंध ली गई —

आमल पाणी कीधा, माजण रा सूंस लीधा।

पर जब युद्ध में कालिकाचार्य और उसके दल की विकट मार पड़ी तो विपक्षी दल के लोगों की जो दशा हुई उसका वर्णन इस प्रकार किया गया है —

फाचलि मीर, नखइ तीर।
लागी खडा खड़, वागी भड़ाभड़ि।
गर्द्दभल्लरी फौज भागी, सवल लीक लागी।
जे हूँतो सेनानी, ते तो धूरसी थयो कानी।
जे हूँतो कोटवाल, तेचो भागतो ततकाल।
जे हूँतो फौजदार, तिणरै माथै पड़ी मार।
जे हूता चौरासीया, ए दाते त्रिण लीया।
जे हूँता खवास, तीए जीव वा री मुंकी आस।

युद्धवर्णनो के पूर्व विभिन्न प्रकार के शस्त्रों, गज, अश्व, ऊँट, रथ आदि का वर्णन किया गया है। शस्त्रों के वर्णन जहाँ सूचीमात्र हैं वहाँ गज, अश्व, ऊँट आदि के वर्णन में उनकी विभिन्न जातियों व आकृति का भी वर्णन किया गया है।

नायिका के अंगों का, उसके आभरणों का और सुष्ठु स्वभाव का वर्णन शृंगार रस की निष्पत्ति में सहायक होता है। पर सभा शृंगार में सुस्त्री के अतिरिक्त कुस्त्री के जो वर्णन हैं वे रति के स्थान पर जुगुप्सा भाव उत्पन्न करते हैं। विरहिणी के दो वर्णन हैं। दोनों में ही वियोगिनी की मानसिक दशा के साथ उसकी उद्वेगजनित क्रियाओं का वर्णन किया गया है। विरहदशा में भोजन से विरक्ति हो जाती है और सब प्रकार के शृंगार विरहिणी को अंगारवत् प्रतीत होते हैं। चंद्रमा की शीतल चाँदनी उसके लिये वृष राशि के सूर्य के समान दग्धकारी हो जाती है। वियोग की आग से उसका शरीर जलता है और सहेलियों का साथ उसे नहीं सुहाता —

किसी एक विरहिणी हुई ?
विरहावस्था, आहारि ऊपरि करइ अनास्था।
सर्व शृंगार, मानइ अंगार।
चंद्र तपइ पान, ध्या भिवतान।
विरहानल प्रज्वलइ अंगु, सखी तन स्यूं विरंग।

विरहिणी अपने हार को तोड़ रही है, हाथों के वलयों को मरोड़ रही है, गहनों को तोड़ रही है, कपड़े उतारकर ढेर लगा रही है, किंकिणी की ध्वनि अच्छी नहीं लगती अतः उसे अलग कर रही है। वह अपने मस्तक और वक्षस्थल पर प्रहार करती है, बालों को बिखेर रही है और धरती पर लोट कर आँसुओं से अपने कंचुक का भिगो रही है —

हार त्रोड़ती, वलय मोड़ती।
आभरण भांजती, वस्त्र नावती।
किंकिणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती।
वक्षस्थल ताड़ती, कुचूड फाड़ती।
केश कलाप रोलावती, पृथ्वी तली लोटती।
आँसू करी कंचुक सींचती, डोडलो दृष्टि मींचती।

विरह विलाप का वर्णन करते हुए प्रेमी के विभिन्न विशेषणों का प्रयोग किया गया है —

हा कांत !
हा हृदयविश्रांत !
हा प्रियतम !
हा सर्वोत्तम !
हा सौभाग्यसुंदर !
हे प्रेमपात्र !

स्त्रीस्वभाव का जो वर्णन किया गया है उसमें 'त्रियाचरित्र' को ध्यान में रखकर नारी के चरित्र की अस्थिरता का मनोवैज्ञानिक ढंग से उद्घाटन किया गया है। स्त्री के कामों की गणना तो निम्न जाति की स्त्री के कार्यों को ध्यान में रख कर की गई है पर उसके जो नाम लिखे गए हैं वे केवल आभिजात्य वर्ग और रानियों के नाम हैं। हाँ विभिन्न प्रांतों की स्त्रियों के नामों का वर्णन अवश्य स्थानगत विशेषता लिए हुए है। पुरुषवर्णन में

उसके विभिन्न अंगों के सौंदर्य का चित्रण किया गया है और अनेक गुणों की सूची दी गई है। दुष्ट व्यक्ति के स्वभाव का चित्रण कर संग न करने योग्य पुरुष का स्पष्ट परिचय दे दिया गया है।

सभा शृंगार के वर्णनों पर मध्ययुगीन सामंती वातावरण का स्पष्ट प्रभाव है। राजाओं के अनेक प्रकार देकर उनके विभिन्न चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। कहीं वीर, कहीं उदार, कहीं न्यायी, कहीं दानी, कहीं यशस्वी और कहीं इन सबका समवेत रूप लिए हुए राजा का वर्णन है। राजाओं का केवल उदात्त रूप ही नहीं है, उनके अहंकारी रूप, कोपातुर रूप, रूठे हुए रूप आदि भी दिखाए गए हैं। राजकुमारों, रानियों और मंत्रियों का भी एकाधिक बार वर्णन किया गया है। पौराणिक नरेशों में राम, रावण, वासुदेव आदि का वर्णन है। राजसभा का वर्णन तो विस्तृत है ही, राज्य के अंगों और कई अन्य कर्मचारियों का भी परिचय दिया गया है।

प्रथम विभाग में देशों के नाम देने के बाद जो नगरों का वर्णन किया गया है वह कई जगह तो विशेष नगरों का है, जैसे पृष्ठ ८ पर नगरवर्णन संख्या ६ में उज्जयिनी का वर्णन है। लेकिन यह वर्णन भी किसी काल-विशेष का वास्तविक वर्णन न होकर लोकाश्रित है। इसीलिये विक्रमादित्य की विभिन्न लोककथाओं में आनेवाले विभिन्न नाम इसमें हैं। कई वर्णनों में यद्यपि नगर का नाम नहीं दिया हुआ है पर उस वर्णन से नगर की समृद्धि और सुव्यवस्था का ज्ञान होता है—

> नगर ने विषै खुस्याली दीसै छै—
> भरिया दीसै हाट, अनेक स्वर्णमय घाट।
> मोकली पोली वाट, चालै घोड़ा तणा थाट।
> लोक नै नहीं किसो उचाट।

नगरवर्णन के अंतर्गत चौरासी चौहटों का नाम दो जगह है। इनसे बाजार में मिलनेवाली विचित्र वस्तुओं और उनके विक्रेताओं के नामों का पता चलता है। निश्चय ही चौरासी चौहटे किसी बड़े नगर में ही संभव हैं। यहाँ पाई जानेवाली भीड़ इतनी अधिक है कि मनुष्य धीरे धीरे चलते हैं। भीड़ के कारण लोग एक दूसरे का बिलकुल स्पर्श करते हुए चलते हैं। भीड़ के कारण साँस लेना भी कठिन है। भीड़ इतनी अधिक है कि एक तिनका भी नीचे नहीं गिर सकता। नजर घुमाकर, पीछे मुड़कर, देखना

कठिन है। यदि थाली फेंकी जाय तो वह सब लोगों के सिरों के ऊपर ही तैरती रहे, नीचे न गिरे—

चौरासी चौहटा भीड़, मनुष्य शनै शनै फिरै।
हिइ हिइं दलै, हारइ हार त्रूटै।
पूठैं पूठ मिलै, बाहे बाह घसाइ।
सास न लिवराइ, धड़ाधड़ हुईं।
तिणखलो धरती पड़ि न सकै, दृष्टि फेरवी न सकै।
थाली माथा ऊपर तरै, इम अनेक भीड़ हुई।

नगरवर्णन के उपरात वहाँ के लोगों का, घरों का, प्रासाद का वर्णन किया गया है और बाद में अनेक प्रकार के वृक्षों, पक्षियों, चतुष्पदों, कीटों व पर्वतों के नाम गिनाए गए हैं। इनका वर्णन प्रायः रूढ है। इनके बाद सरोवर व पनघट का वर्णन करके नदियों व समुद्रों के नाम देकर इस विभाग को समाप्त किया गया है। सरोवरवर्णन में तो विशेष रमणीयता नहीं है पर पनघट का जो चित्र अंकित किया गया है वह स्वाभाविक होने के साथ साथ आकर्षक भी है। राजस्थान मे जहाँ पानी का अभाव होने के कारण दूर दूर से जल लाना पड़ता है, इस प्रकार का दृश्य किसी भी पनघट पर देखा जा सकता है। पानी भरने के लिये भीड़ हो रही है। कोई तेजी से दौड़ रही है, कोई सिर पर बेहड़ा रख रही है, कोई किसी से टकराकर गिर रही है। कभी कोई स्त्री दूसरी स्त्री की साड़ी भिगोकर उल्टे उसी से लड़ रही है। मोटे अंगवाली तो गाली दे रही है और दुर्बल अंगवाली वैसे ही अप्रसन्न हो रही है। सास भी बाद में उन्हे बुरा भला कहती है—

बईरां नी भीड़, हुइ पीड़, त्रूटैं चीड़।
एक ऊतावली दोडे छै एक माथै बेहडूं चोहडे छै।
लूंगुडु ते माथैं ओढें छइं, बेहडों ते फीडे छइं।
एक एक नै अडै छइं घडाधड पडै छइं।
माहो माहि लडे छइं॥
हवें नान्ही लाडी, चीखल थी पड़ैं आडी।
बीजी नी भींजाइ साडी, ते माटेइ करे राडी।
सोक सोक नी करइ चाडी, ढीले जाडी।
खीजें माडी, सासूइं पाछी ताडी॥

पनघट का अंतिम दृश्य तो ध्वन्यात्मक सौंदर्य लिए हुए है। विभिन्न आभूषणों के नाद को लेखक ने अनूठी व्यंजना से व्यक्त किया है—

> घूघर ते घमके छै, पायल ते ठमके छै।
> वेहइ अरघट्ट, वर्णक गट्टगट्ट।
> वाजै अणवट्ट, आवे दट्टवट्ट॥
> एहवैं पणघट्ट।

प्रकृति के प्रति आदिम युग से ही मानव का सहज आकर्षण रहा है। प्रभात और संध्या नित्य होते हुए भी प्रति दिन की नवीनता से युक्त रहते हैं पर इनका मनोहारी रूप नागरिक जीवन के व्यस्त वातावरण में प्रतीत नहीं होता। सभा शृंगार में प्रकृतिवर्णन के अंतर्गत प्रभात, संध्या, रात्रि आदि का जो वर्णन किया गया है वह मुस्लिम काल का है और उसमें प्रभात, संध्या आदि का प्राकृतिक सौंदर्य नहीं है बल्कि तत्तद् कालों में जगत् के विभिन्न प्राणियों पर पड़नेवाले प्रभाव का वर्णन है। अँधेरी रात का वर्णन नागरिकता लिए हुए है। लेखक की दृष्टि अधिकांशतः शृंगार-परक होने के कारण वह गणिका, जार, दूती आदि के चतुर्दिक् चक्कर लगाती रही है।

ऋतुवर्णन में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत आदि का वर्णन है। वसंत का एक ही वर्णन है। उसमें ऋतुराज के आगमन के समय कोयल की कूक, मंजरित आम्र, उल्लसित अशोक, विकसित चंपक कली आदि का वर्णन और लोक पर उसका प्रभाव दिखाया गया है। ग्रीष्म के ३ वर्णन हैं। प्रथम के आरंभ में राजस्थान की उस भीषण गर्मी का वर्णन है जब चारों ओर लू चलती है, धूप के कारण नंगे पैर जमीन पर चलने से पैर जलने लग जाते हैं, पेड़ों के पत्ते जलकर गिर जाते हैं। जलाशय सूख जाते हैं और पनिहारनें पानी के लिये लड़ती हैं, लोग काम पर नहीं जा पाते, गला सूख रहा है, सब छाया की शरण ग्रहण कर रहे हैं—

> लू वाजै छै, शीत लाजै छै।
> पग दाझै छइ, तावड़ो तपै छइं।
> रुख पात झड़ै छइं, रुख पवनै पड़ै छइं।
> पणिहारी पाणी माटि लड़ैं छइं, वावकूआ सुकै छइं।

लोग काम चूकैं छइं, पंथीमार्ग भूकै छइं।
तावड़ो लुकैं छइं, कंठ सूकैं छइं।

पर इसके उत्तरार्द्ध में गर्मी से बचने के लिये आभिजात्य वर्ग द्वारा प्रयुक्त उपकरणों का वर्णन है। वर्षा काल के ५ वर्णनों में लगभग समानता है। लगभग सभी में काली घटा उमड़ने का, धारासार वर्षा का, मेढकों के बोलने का, जलप्रवाह बहने का, पथिको की यात्रा रुकने का वर्णन है। कहीं कहीं वर्षा से मकान गिरने, छप्पर टपकने, हरियाली होने, मोर नाचने, किसानो के हल चलाने आदि का वर्णन भी है।

'सभा शृंगार' में अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है। गद्यमय तुकात होने के कारण अनुप्रास तो लगभग सर्वत्र ही मिलता है। कहीं कहीं उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलकार भी आए हैं। 'सभा शृंगार' का विषय और उसका उद्देश्य बौद्धिकता से सबधित होने के कारण जो अलकार आए हैं वे सहज रूप से ही आ गए हैं। राजसभा में बैठे हुए राजा की शोभा का वर्णन करते हुए निम्न प्रकार से उपमा दी गई है—

सभा माहि राजा बइठा थको सोमइ छै ते केहवो—
अक्षर माहि जिम ओंकार, मत्र मांहि ह्रींकार।
गंधर्व माहि तुवर, वृक्ष माहि सुरतरु।
सुगंध माहि जिम कपूर, ओत्सव माहि जिम तूर।
वस्त्र माहि जिम चीर,·········
वाजित माहि जिम त्रंभा, स्त्री माहि जिम रंभा।
शास्त्र मांहि जिम गीता, सती माहि जिम सीता।
देव माहि जिम इद्र, ग्रहा माहि जिम चंद्र।
द्वीप माहि जिम जंबू द्वीप, प्रदीप माहि जिम रत्न प्रदीप।

'सभा शृंगार' किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कई वर्णन ग्रंथों का समूह है अतः उसमें भाषा का भी एक रूप नहीं है। कहीं संस्कृत, कहीं अपभ्रश, कहीं व्रजभाषा, कहीं गुजराती और कहीं मारवाड़ी का रूप होने के कारण पाठक के लिये भी यह आवश्यक हो जाता है कि वह उपर्युक्त भाषाओं का ज्ञाता हो अन्यथा उसे वर्णनो को सम्यक् प्रकार से समझने में कठिनाई हो सकती है। कहीं कहीं अरबी फारसी के भी शब्द आए हैं। ऐसे शब्द विशेषतः मुस्लिम काल से प्रभावित वर्णनसूचियों में हैं।

'सभा शृंगार' उस वर्णकसाहित्य की एक बहुमूल्य कड़ी है जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देशी भाषाओं में अपनी एक दीर्घ परंपरा बनाए हुए है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने कई उदाहरण देकर बताया है कि इस प्रकार के वर्णकसाहित्य के प्रमाण प्राचीन काल से ही उपलब्ध होने लगते हैं।[1] हिंदीसाहित्य का विद्यार्थी पृथ्वीराजरासो, पद्मावत, सूरसागर आदि ग्रंथों की वर्णनसूचियों से तो परिचित है पर अभी वर्णकसाहित्य की इस विशाल पृष्ठभूमि की ओर विद्वानों का ध्यान कम गया है। श्री नाहटा जी ने बड़े श्रम से जो वर्णन संग्रह तैयार कर हिंदीसाहित्य के विद्वानों के सामने प्रस्तुत किया है उससे इन नये क्षेत्र में कार्य करने की अन्य विद्वानों को भी प्रेरणा मिलेगी, ऐसी आशा है।

— चंद्रदान चारण

भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर।

---

1. हिंदुस्तानी, भाग २१ अंक १ [जनवरी–मार्च १९६०] में 'वर्णक-साहित्य' शीर्षक लेख।

प्रति-परिचय

सभाश्रृंगार नं० १

संकेत — स्पष्टीकरण

(स० १)=सभा श्रृंगार नं० १—इसकी दो पूर्ण और दो अपूर्ण, कुल चार प्रतियाँ प्राप्त हुईं, जिनका परिचय—

(१) विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर, आगरा की प्रति। शुद्ध। पत्र २ से १६, पंक्ति १५, अक्षर ४८ से ५०, ले० १७वीं का पूर्वार्द्ध।
अंत—इति सभा श्रृंगार वचन चातुरी ग्रंथ समाप्तः।

(२) पाटोदी दि० मंदिर, जयपुर—
पत्र २०, पंक्ति १७ अक्षर ५२
लेखन सं० १६७१ वर्षे आह मासे शुक्ल पक्षे ३ दीतवार। लेखक साह दासू सुतेन। मा. सारंगपुर वास्तव्य।

(३) केशरियाजी मंदिरस्थ खरतरगच्छ भंडार, जोधपुर। डा. १५, पोथी १६६, पत्र १८, पं० १५, अक्षर ४८, वर्णन १५८ वां चालू, फिर अपूर्ण। शुद्ध। लेखन काल १७ वीं शती।
प्रारम्भ के पत्र में पीछे से लिखा गया है 'व्याख्यान पद्धति वचनिका।'

(४) (अ० पु०) मुनि पुण्यविजयजी संग्रह—
पत्र ६ से १५, पंक्ति १७ अक्षर ६५ (आदि के ५ पत्र नहीं) लेखन काल १७ वीं शती।
अंत में—"स्त्री गुणाः ४२" के बाद ग्रंथ का नाम व प्रशस्ति नहीं है। पुरुष की ७२ कला से पूर्व "इत्युपदेश लेशः समाप्तः मिति भद्रं शुभं भवतु ॥छ॥" लिखा है अतः वही समाप्ति संभव है।
मुनिजी ने प्रति के कवर पर 'पदार्थ वर्णना' नाम लिखा है।

सभा श्रृंगार नं० २

(सं० २)=इसकी एक ही प्रति मुनि पुण्यविजयजी से प्राप्त हुई। इसके वर्णन अन्यों से भिन्न व मौलिक है। मंगलाचरण श्लोक में इसका नाम "वर्णन सार" दिया है।

प्रति=पाटन भंडार। डा० २६४ नं० १२६४० पत्र ६, (अंत का एक पृष्ठ रिक्त, पत्र ५½ लिखे), पंक्ति २१, अक्षर ५३।

अंत—'इति सभा शृंगार ग्रंथ लवलेशोयं। लिपिकृतः संवत् १६७१ वर्षे आश्विन व० ८ दिने मगल। छः॥

सभाशृंगार नं० ३

(स० ३)=इसकी दो पूर्ण और तीन त्रुटित (अंश रूप) प्रतियाँ मिलीं।

१—मोतीचंद खजानची संग्रह। पत्र १२ की अपूर्ण प्रति। अन्य एक गुटका सं० १७६२ के लिखित से नकल करवाई थी उसे बहुत वर्ष होने से स्मरण नहीं, वह कहाँ का था।

ले० प्र० इति सभा शृंगार सम्पूर्ण। सवत् १७६२ वर्षे फाल्गुन सुदी सतम्या तिथौ भृगुवारे, गणि महिमाविजयेन लिपिकृता श्रीरस्तु। श्लोक ग्रन्याग्रन्थ ७५६। ए ग्रन्थ सख्या जायते।

२—भांडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, की प्रति नं० ६७१ सन् १८६६ से १६१५ का संग्रह। इसमे नं० १ प्रति के 'अंधारी रात' वर्णन तक का प्रसग आया है। नं० १ में इसके बाद कुछ वर्णन और है।

अंत इस प्रकार है—इति सभाशृंगार सपूर्णम्। स० १७८१ वर्षे जेठ सुदी ७ चद्रवासरे। लिखितम् बर्हानपुर नगरे। शुभमवतु॥

सभाशृंगार नं० ४

(सं० ४)=उपाध्याय विनयसागरजी संग्रह कोटा की प्रति, पत्र १०, पंक्ति १७, अक्षर ४२। इसके प्रारंभिक वर्णन तो सभाशृंगार नं० ३ के ही हैं। पीछे के स्वतंत्र हैं और वे अधिकतर जैन संबंधित ही हैं। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार हैं:—इति सभाशृंगारहार सपूर्णम्। लिखितं गणि उत्तमकुशलेन श्री आमेठ नगरे श्री पार्श्व प्रसादात्। प्रति १६वीं शताब्दि की लिखी हुई है। भारतीय विद्याभवन, बंबई से मुनि जिनविजयजी संग्रह की प्रति पीछे से मिली, जिसमें प्रारंभिक अंश ही था और नई लिखी हुई थी इसलिये उसका उपयोग नहीं किया गया।

सभाशृंगार नं० ५

(सं० ५)=चित्तौड़ के यति बालचंदजी के संग्रह से १ पत्र १८ वीं शती का सभाशृंगार के नाम का मिला था, जिसमे कुछ वर्णन थे।

(सू०)=खरतर गच्छीय कविवर सूरचंद रचित 'पदैकविंशति' नामक ग्रंथ के ६८ पत्रों की अपूर्ण प्रति मुनि जिनविजयजी से प्राप्त हुई थी। मूल ग्रथ संस्कृत में है, पर बीच-बीच में प्रसगानुसार राजस्थानी भाषा में वर्णन दिये गये हैं। प्रति १७ वीं शती के उत्तरार्द्ध की, अर्थात् रचना के समकालीन लिखित है। ग्रथ अपूर्ण अवस्था में मिला है, अतः पूर्ण प्रति के मिलने पर और भी बहुत से सुदर वर्णन प्राप्त होगे।

कु०=१८ वीं शताब्दि के कवि कुशलवीर रचित सभा कुतूहल की भी अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई है। इसके बहुत से वर्णन तो पदैकविंशति के ही हैं। उसमें कुशलवीर ने बीच-बीच व अंत मे कुछ पक्तियाँ बढा दी हैं। उन पक्तियों में कहीं 'वीर' कहीं 'कुशलवीर' नाम भी निर्देश किया है। पत्र ६ पक्ति १७ अक्षर ७०, प्राप्त वर्णनो की सख्या ३६ है। पत्रो के परस्पर चिपक जाने से कहीं-कही अक्षर नष्ट हो गये हैं। यह ग्रथ कितना बड़ा था, पूर्ण प्रति मिलने पर ही विदित हो सकता है।

कौ०='कोतुहलम्' इसकी प्रतिलिपि बहुत वर्षों पूर्व श्री भँवरलाल द्वारा की हुई हमारे सग्रह में थी। इसमें २५ वर्णन हैं, जो स्वतत्र, मोलिक और सुदर हैं। अत में इति 'कौतुहलम्' लिखा होने से इसको यह सज्ञा दी हुई है। यथास्मरण प्रति १८ वीं शताब्दि की लिखी हुई थी।

मु०='मुत्कलानुप्रास' जैसलमेर के यति लक्ष्मीचदजी के सग्रह में १६ वीं शताब्दि के लिखे हुए ७ पत्र प्राप्त हुए जिनमे १०८ वर्णन हैं। इस प्रति के बोर्डर में 'मुत्कलानुप्रास' नाम लिखा हुआ था। वैसे है यह अपूर्ण ही। इसके कई वर्णन संस्कृत में हैं और कई राजस्थानी में। उपलब्ध प्रतियो मे यह प्राचीनतम है। इसकी पूरी प्रति प्राप्त होना आवश्यक है। पत्र ८ पक्ति १८ अक्षर ६२।

पु० अ०=आगम प्रभाकर मुनि पुण्यविजयजी द्वारा यह प्रति प्राप्त हुई। यह १६ वीं शताब्दि की लिखित है। इसके ६ पत्र ही मिले, जिनमे भी बीच का १ पत्र नहीं था। ग्रंथ अपूर्ण होने से 'पु० अ०' सज्ञा दी गई।

का०=कालिकाचार्य की गद्य भाषा कथा से केवल वर्षा और युद्ध के दो ही वर्णन लिये गये हैं।

पु०=इस प्रति का १ पत्र मुनि पुण्यविजयजी से प्राप्त हुआ था।

इन प्रतियों में से सभा शृगार न० २ और सभा कुतूहल के प्रारभ में ही मगलाचरण श्लोक मिलते हैं। अन्य प्रतियो में मगलाचरण का अभाव है। इन दोनों प्रतियों के मगलाचरण नीचे दिये जा रहे हैं—

सभा-शृंगार नं० २

मंगलाचरण

॥६०॥ ऐं नमः ॥ पंडित श्री दयाकुशलगणि गुरुभ्यो नमो नमः ।

सर्व-जीव-निकायस्य, सर्वथापि हितप्रदाः ।
सुरासुर-नरैः स्तुत्या, जैनी जयति भारती ॥१॥
कोविदा देशिनं किंचित्, दृष्ट शास्त्रेषु किन्चन ।
किंचेचात्ममति-जात, वर्णनासार[1] मुच्यते ॥१॥

सभा- कुतूहल (कुशलधीर)

प्रणम्य पार्श्वं प्रकट-प्रभावं, आनंद-कंदोदय-वारिवाहं ।
सुरासुराधीश-नताङ्घ्रियुग्ममनन्तकीर्ति महिमानिधानं ॥१॥
नत्वा गुरून् प्रकट-पुण्यरसातिरेकान् लोक प्रमोदकरणं वितनोमि शास्त्रं ।
चंचच्चमत्कृति-विधायकमातलोक मान्य मनोरथवरद्रुमबीजकल्पम् ॥२॥
सम्यक् सभाकुतूहलमिदमधिकरसं तनोमि गुरु शक्त्या ।
दृष्ट्वा शास्त्र-समूहं सानुप्रासं यथाबुद्धि ॥३॥
नगर-नरेश्वर-राज्ञी-मन्त्र्यादिपदार्थ-वर्णन-विशिष्टम् ॥
वार्त्ता प्रबन्ध सयुतमेतन्मोदयतु जन-चित्त ॥२॥

नोट—सभा शृंगार नं० १ से ५ की भिन्न-भिन्न प्रतियों के सूचक संकेत इस प्रकार हैं—

जो०=सं० १ जोधपुर प्रति
पु०=सं० २ पुण्यविजयजी प्रति
पू०=सं० ३ भा० रि० इ० पूना की प्रति
वि०=सं० ४ विनयसागरजी प्रति
चि०=सं० ५ चितौड़ प्रति

जै०='मुत्कलानुप्रास' की प्रति जैसलमेर की होने से कहीं-कहीं 'मु' के स्थान 'जै' संकेत भी लिखा गया है।

१—वर्णनसार की एक भाय प्रति भा० रि० इन्स्टी० पूना से और प्राप्त हुई थी पर देरी से मिलने के कारण उसका उपयोग नहीं किया जा सका।

अनुक्रमणिका

विभाग १— देश, नगर, वन, पशु पक्षी, जलाशय

विभाग २—राज, राज परिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

विभाग ३—स्त्री पुरुष वर्णन

विभाग ४—प्रकृति वर्णन, प्रभात, संध्या, ऋतु आदि

विभाग ५—कलाएँ और विद्याएँ

विभाग ६—जातियाँ, धंधे और व्यक्ति नाम

विभाग ७—देव, वेताल, शाकिनी, सिद्ध, व्यक्ति तथा व्यक्तिकथादि वर्णन

विभाग ८—जैनधर्म संबंधी वर्णन

विभाग ९—सामान्य नीति वर्णन

विभाग १०—भोजनादि वर्णन

(मंगल, वर्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्रालंकारादि)

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग १

देश, नगर, वन, पशु-पत्ती, जलाशय

देश-नाम १

१ अग
२ वंग
३ कलिंग
४ तिलंग
५ मग
६ गौड
७ चौड
८ कर्णाट
९ लाट
१० पाट
११ राष्ट्र
१२ महाराष्ट्र
१३ कीर
१४ काश्मीर
१५ सौवीर
१६ आभीर
१७ चीन
१८ खुरसाण
१९ टशाण
२० गूर्जर
२१ वर्जर
२२ बर्बर
२३ शर्बर
२४ बंगाल
२५ नेपाल
२६ पचाल
२७ कुणाल
२८ जहाल
२९ जागल
३० डाहल
३१ कौशल
३२ सोसल
३३ सिंहल
३४ हिमाचल
३५ मरुस्थल
३६ कुशस्थल
३७ पुंसस्थल
३८ कुरू
३९ जंगल
४० दिल (ल्ली!) मडल
४१ जालंधर
४२ लोहित
४३ किरात
४४ तामलित
४५ पारिजात
४६ वरूट
४७ मट्ट
४८ शकट
४९ नलदतट
५० लोहतट
५१ समुद्रतट
५२ मेदुपाट
५३ वैराट
५४ भोट
५५ महाभोट
५६ नगरकोट
५७ वागड
५८ कामरू पीठ
५९ छोकाण
६० केकाण

६१	कुकण	९१	उड्डीयाण	१२१	मिल्लिन्द्र
६२	टक्क	९२	गुडीयाण	१२२	पुल्लिद्र
६३	तटक्क	९३	वगलाण	१२३	क्रौंच
६४	कान्यकुब्ज	९४	खान	१२४	भ्रमरक
६५	कावोज	९५	चद्रकुमार	१२५	कोय
६६	भाडेज	९६	मलवार	१२६	चचका
६७	श्रीरज	९७	समुद्रपार	१२७	शक
६८	मगध	९८	छप्पर	१२८	यवन
६९	मध्य	९९	सक्खर	१२९	उड
७०	अध्य (दे० १३६)	१००	भक्खर	१३०	मरुंड
७१	वध्य	१०१	काय	१३१	ओड
७२	पारसकूल	१०२	गोढ	१३२	भेडक
७३	शक्कूल	१०३	पक्कण	१३३	भित्तक
७४	वेलाकूल	१०४	आखयक	१३४	कुलाद्य
७५	खस	१०५	हूण	१३५	क्रोध
७६	खास	१०६	रौमक	१३६	अन्ध्रय
७७	काछ	१०७	पारस	१३७	द्रविड
७८	सिंधु	१०८	द्रुमिल	१३८	चि (वि?) ल्लल
७९	सवालख	१०९	लकुस	१३९	आरोष
८०	सूरसेन	११०	वक्कुस	१४०	डोंब
८१	पोक्काण	१११	आमापक	१४१	मरुक
८२	गघहार	११२	अनद्य	१४२	साल्व
८३	वहलीक	११३	लास	१४३	कारव
८४	वल्ल	११४	मेदर	१४४	तायिक (तासिक)
८५	राम	११५	मठ	१४५	सारस्वत
८६	मोष	११६	मौष्ट्रिक	१४६	वाल्हीक (दे० ८३)
८७	मलय	११७	आरव	१४७	तुरुष्क
८८	चूलिका	११८	कुहण	१४८	कालम्र
८९	स्वर्णभूमिका	११९	केकय	१४९	कुतल
९०	मोग्गर	१२०	रौरव	१५०	फिरग
				१५१	सौराष्ट्र इत्यादि सू.प.

२ देशनाम (२)

अग, अनग, किलिग, तिलग, । अंग, भंग, अंगाल, वच्छ, वत्स, विदेह, वैराट, कर्णाट, लाट, धाट, भोट, महाभोट, कोशल, कामरु, काश्मीर, कुकण, कच्छ, केकी, गोड, तोड, वहस, अअस, हबस, मालव, मागध, मरुस्थल, मेवात, मेवाड, मरहट्ट, राष्ट्र, सौराष्ट्र, पचाल, पारकर, सिध, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, इत्यादिक देश नाम । (स २)

३ देश—नाम (३)

गौड, द्रविड, मालवउ, नेपाल, जगल, अग, वग, तिलग, हर्मुज, गुर्जर, राष्ट्र, महाराष्ट्र, कुरु, काश्मीर, राट, लाट, धाट, कर्णाट, मेदपाट, भोट्ट, महाभोट्ट, विदेह, ऊच्च, मूलथाण, कुंकुण, चीण, महाचीण, खुरसाण, सवालख, सिंधु, ढोरसमुद्र, महरठा, नमियाड, कनूज, महाकनूज, अकज, अवज, कुरक, कोरटक, कौशिक, पाणीपथ, पाडवा, मरुस्थल । (स० १)

४ देश—नाम (४)

अग, वग, कलिंग, मगध, माधर ।
मालव, विदर्भ, वाल्हीक । हूण, लूण ।
उडीयाण, आनर्त, त्रिगर्त्त ।
सोरठ, मरहट । कुकण, कस्मीर ।
कीर, गूर्जर, जालधर । गोड, वूड, कर्णाट
लोट, भोट । कान्यकुब्ज, काबोज
बर्बर, वगाल नेपाल, भाहल, सिंहल
चीण, महाचीण इत्यादि देश ॥१०॥ (मु०)

५ पर-द्वीप-नाम (५)

हरमज, वक्खार[1], गोहा, सवाकीन, कौची, मक्का, मदीना, मूसम, पुरतकाल, पेगू[2], दीव, घोघा, डाहल, मलवार, चीउल, पर्थेगु, मुलतान, जावू, आबू, ढाको, रोम, साम, आरब वलख, बुखार, चीण, महाचीण, फिरंग, हबस, इत्यादिक परद्वीपनाम (स०३)

१—वरका (ववरण) २—पींगु

६—देशों की उपज (१)

७२ (लक्ष) गाजण[1], ३४ (लक्ष) कनूज, १८ लक्ष वाणू मालवउ
६ लक्ष गौड, ६ कारू, ६ डाहालू,
७० सहस्र गुजरात, ६ सहस सोरठ[2], ४० जेजाहुत,
२४ सहस गगापरू, २१ लाड देस, १४ सहस व्यालकुकुण[3] नमियाड[4]
स० १

७—नगरादि-पर्याय

नगर, निगाम, ग्राम, आगर, पुर पाटण, खेट कब्बड, मडब, दोपण, द्रोण-मुख, सबाध, सनिवेश, आश्रम, उद्यान, द्वीप, बदर इत्यादि पृथिवी।

८—नगर-नाम

द्वारावती, देवपुर, दसोर[5], देवकौपत्तन[6], सौरीपुर, सुदर्शनपुर, सामेरी, कावेरी, कुन्दनपुर, कोसबी[7], कोसल, काशी, कोगाल[8], कोइलपुर, कनकपुर, काकदी, विनीता, विशाला, वाराणसी, दल्लि, अहिछत्ता, अयोध्या, अवंती, एलचपुर, पावा, पाटलीपुर, चदेरी, चंपावती, गधार, गजपुर, गधिलावती, भद्दिलपुर, भरुच, तिलकपुर, त्रबावती, मथुरा, हथिणापुर इत्यादिक मोटा नगर। स० ३

९—नगर-नाम (२)

आगरो	उजैण	उदैपुर	ईडर
आवेर	अजमेर	अहमदाबाद	अवरगाबाद
दिल्ली	दोलताबाद	दरियाबाद	दीव
फतियाबाद	दसोर	गोधा	गोलकुड
लाहोर	लखमीपुर	वर्हानपुर	बहादुर पुर
बिजापुर	बूदी	राजमहल	राजनगर
भागनगर	खभाति	सूरति	पाटण
पटणू	जेसलमेर	विकानेर	सागानेर
योधपुर	जालोर	नागोर	मेडतूं
मलकापुर	मुरादाबाद	साहज्याबाद	फत्तेपुर

इत्यादि नगर छै।

---

१ ७२ लक्षण गाजणउ, २ ५५ सहस सोरठ, ३ १४ सहस चाल कुकुण ४ प्रमुख देशा। ५ दसौर, ६. पाटण ७ कुलाल, कोपालाणा, ८ वलभी।

१०—नगर-वर्णन (१)

देवकुल विभूषित, सप्तभूमिक धवलहर अलकृत सविस्तर तर हट्टश्रेणि विराजित, समस्त क्रियाणक विश्रामभूमि, कूप, वापि सरोवर सनाथ। प्राकारवेष्टित, खातिका दुर्ग। इसउ नगर नगरी।

११—नगर वर्णन

महा मनोहर

हिमगिरि शिखरानुकारिए प्रसाद करि सुन्दरु।
प्राधान प्राकार करि परिकलितु,
वापी कूप प्रपा तटाक आराम करि अति शोभितु।
धनदयक्षानुकारि, धनवते व्यवहारिए करि शोभायमानु। झात्कार
एव विधु द्वादश तूर्य निर्घोषि निरुपमु
चउहि दिशि द्वारि, प्रतोली द्वार। अनिवार शत्राकरि।
तेही करि सविभ्रमु स्वर्ग्य समानु, अतिहि प्रधानु
रत्नपुर इसइ नामि नगर ॥ २ ॥

(मु०)

१२—नगर-वर्णन (३)

यत्र खल तैलिका पणेषु, गुप्तिः शुक सारिका पुंजरेषु।
उपसर्ग निपातो व्याकरणेषु, कंटकापद्मनालेषु।
मारि' सारिषु, बन्ध. पुष्पेषु।
चिन्ता काव्येषु, व्यसन दानेषु।
आकाक्षा कीर्त्तिषु ···· ·, तुच्छता वधूना मध्य भागेषु,।
चपलता लीलावतीनां नयनेषु, दण्डः छत्रेषु,।
वक्रता कामिनीना भ्रूयुगेषु। निम्नता वनता नाभीषु, मौरव्यर्य वाद चर्चाषु।
पुरन्दर, पुरी सहोदरु।
क्वचित्कथा कथ्यमान, चिन्तन कथानकु।
क्वचिद्वाद वृन्दारकारब्ध वाद, क्वचिन्नाटक प्रस्तावनाकर्ण्यमान मर्द्दल निनद।
क्वचिद्विविध वधू विधीयमान धवल मगलाचारु, क्वचिद्वणिक जनोद्यम द्यमान क्रयाणकः।
क्वचिद्विजय मगलोद् घोष्यमान वेदोद्गारः एव विध नगर (मु०)

१३—नगर-वर्णन (४)

पत्तन, विशाल, पथिकशाल, निरपवाद प्रसाद, नाना प्रकार सत्रूकार। तिरस्कृत त्रिविष्टप, प्रपा मडप, अगाधोदर सोदर सरोवर, पृथ्वीमडल मडन। लक्ष्मी सकेत निकेतन, रमणी जन निधान। विद्वज्जन कृतावस्थान शत्रु सघातानाकलनीय। ईति अनीति अखडनीय। (स० १)

१४—नगर-वर्णन (५)

नगर ने विषै खुश्याली दीसैछै—
भरिया दीसैहाट, अनेक स्वर्णमय घाट।
मोकली[1] पोली वाट, चालै घोडा तणा थाट।
लोक नै नही किसो उचाट[2]।
जिहा पुण्य विशाल, तिसी ही पोसाल, जिहा छात्र पढै चौसाल।
पाणी पिइ सुभावि, तिसी वावि।
देखता आणद हुवा, तिसा कुवा
मोटैमड, पद्मवन खड।
जिमा रग कीजै खाडि, तिसी माहि वाडि
जिहा शीतल फुरकै पवन, तिसो पाछलि वनि।
इम अनेक प्रकार सोभैछै।—(स० ३)

१५—नगर-वर्णन (६)

उज्जयिनी-वर्णन
जिहा सिप्रा नदी विराजमान, महाकाल प्रासाद शोभमान।
हरसिद्धिदेवी निवास, चउसिट्टि योगिनी सविलास[3]।
आगीया वेताल स्थान, कउडीया जूयारी अहिठाण।
खापरा चोर प्रबल बात, गईदमा मसाण विख्यात।
अनेक देव देवी होइ यात्र, प्रबल सिद्ध पुरुष वसइ पात्र।
सिद्ध वड भूषित परिसर, युगादि नगर।
महा मनोहर हिमगिरि शिखरानुकारीए प्रमादे करी सुदर।
(जिहा)[4] विक्रमादित्य नरेश्वर, (जिहा) साक्षात् पुरदर।

---

१ मोकलि पोली वाट २ लोक नै किसो उचाट ३ विलास, ४ जिहा

प्रधान प्राकारि करी परिकलित, जिहा-वसइ लोक सम्मिलित।
वापी कूप तटाक आरामि करी अति शोभित, पर दलि करि अक्षोभित।
धनद यक्षानुकारिए व्यवहारिये करी शोभायमान।
स्वस्व क्रिया सावधान, जन वसइ प्रधान[1]।
कीजइ षडदर्शन विचार, परमार्थि आत्मज्ञान अधिकार।
चिहुँ दिसि च्यारि प्रतोलीद्वार, अनिवार, सत्रागार।
अति प्रधान, स्वर्ग समान।
ठामि ठामि फूल पगर, इस्यउ[2] उज्जयनी नाम नगर। सू०

कुशलधीर संकलित 'सभा कुतूहल' में परिवर्द्धित पाठ—

द्वादश तूर्य निर्घोष पडित वड सुजाण वड कोष।
धनधान्य समृद्ध, त्रिभुवन मइ प्रसिद्ध।
आराम जलाश्रयादि रम्य, परचक्र अगम्य।
अनेक देवकुल सकुल, नाचइ रगइ प्रमादाकुल।
मेदनी शृंगार, वसइ वर्ण अढार।
अति ऊचा आवास, पूजइ सहु आस।
वसइ जिहा पडित, हट्ट श्रेणि मडित।
जिहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विशाल वाडी।
जिहा पढइ छात्र चउसाल, तिहा इसी अनेक लेसाल।
अति वूडी धर्मसाल, नगर नइ विचाल।
वखाणइ आवइ गुरु समीपइ वाल-गोपाल।
मधुर वाणीयइ पढ गुरु धरम उपदिसे विशाल।
श्रावक पडिकमइ उभइ काल, अतीचार टाल।
जिहा अध्यात्मी जोगी दृढ, तिसा महाकाय मढ।
रग विमासीउ लीये वाद, तिसा पुष्कल प्रासाद।
जिहा माहि गुरुआ भवन, वाहिर गुरुआ उपवन।
माहि मनुष्य दरव्य, वाहर पंखीयातणा लख्य।
माहि वसइ भोगी, वाहिर वसइ योगी।
माहि चउरासीहट्ट श्रेणि, वाहिर अरहट्ट श्रेणि।
ठाम ठाम फूल फगर, इसउ धीर कहइ उजेणी नगर॥

---

१ मनुष्यनउ, कुण जानइ गान (इतना पाठ अधिक है) २ इसउ वीर कहइ उज्जेणी नगर।

१६—नगर वर्णन (७)

समस्ति स्वस्तिक पुरं नाम पुर। यत् कीदृशं—
पृथ्वी तिलकावमान। सर्व सौंदर्य निधान।
लक्ष्मी जन्मावास। सरस्वती निवास।
धवल देव कुल मंडित। पर चक्र अखंडित।
अतुल धवल गृह विभूषित। कु कवि अदूषित।
विकट हट्ट माला मालित। सदा सुठक्कर पालित।
उतुंग प्रथुल प्राकार परिवेष्टित।
अगाध परिखा वलय। सर्वाश्चर्य निलय।
वापी कूप मंडित परिसर। चिहुंगमे दृश्यमान सरोवर।
उद्यान वाटिका अभिराम। मनोज्ञ दृश्यमान विविधाराम।
जनित दुर्जन क्षोभ। सज्जन जनित शोभ।
पुरुष रत्नोत्पत्ति रत्नाचल। कुलवधू कल्पलता कनकाचल।
जीणइ नगरि देवगृह मेरु शिखरोपमान। धवलहर सुरविमान समान।
हाथीआ ऐरावण अनुकरइ। अश्व उच्चैश्रव अनुकरइ।
वृषभ शिव वाहनानुकारि। रथ सूर्यानुकारि।

८४ चोहटा—जीणइ नगरि गंधिका पण कुत्रिका पण, सौवर्णहट्ट, दोसीहट्ट।
सूत्रहट्ट। कर्पासहट्ट। धान्य हट्ट। घृतहट्ट। तैल हट्ट।
मणिकार हट्ट। कांदविक हट्ट। लोहकार हट्ट।
प्रमुख चउरासी चउहट्टा। अतिहि मोटा।

पीठ—तथा वलद पीठ। शास्त्र पीठ। काठ पीठ प्रमुख अनेक पीठ।

शाला—तंतु वाय शाला रजक शाला। चर्मकार शाला। पिंजारकशाला।
प्रमुख अनेक शाला।

निवासी—तथा महा सार्थवाह। इभ्य श्रेष्ठि। व्यवहारिक। दौपिक। नैस्तिक।
प्रमुख अस्तोक। कविअणलोक।
तथा सुवर्णकार। कांस्यकार। दंतकार। लोहकार। शिल्पकार।
रथकार। सूत्रधार। सूपकार। चित्रकार। कुंभकार। मालाकार
रूप प्रमुख वसइ।
ताम्रहट्टा। सीताहटा प्रमुख दोसइ।
ठामि ठामि सत्राकार। अनेक दोसइं देणहार।

वर्ण—यत्र वर्णव्यवस्था । नागर ज्ञातीय । श्रीमाल ज्ञातीय । डीडवाल । सडेरवाल । जालंधरीय । सत्यपुरीय । प्रमुख ब्राह्मण ।
सोम वंशीय । सूर्यवंशीय । हरिवंशीय । उग्रकुली । भोग कुली । नोलकीय गुहिल्ल । उच । परमार । प्रतिहार । चौलुक्य । सकल प्रमुख क्षत्रिय । शिल्पकार । स्वर्णकार ।···प्रमुख वैश्य वर्ण । प्रमुख, सौद्र । तथा काव्यकार । पदानुसारि लाक्षणिक । प्रामाणिक प्रमुख पडित मडित । तथा अजन सिद्ध । गुटिका सिद्ध, योग सिद्ध, चूर्ण सिद्ध । लेप सिद्ध । पादुका सिद्ध । मत्र सिद्ध । विद्या सिद्ध । वचन सिद्ध । प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ । जेणि दीठइ उत्तम ना मन विकसइ ।

वृक्ष लतादि—तथा । त्रिक । चतुष्क । चत्वर । रमणीय । हिंताल ताल । तमाल । मालूर । खर्ज्जूर । अर्जुन चदन । चपक । वकुल । सहकार । काचनार । निंब । कदब । जबु । जंबीरक । कणवीर । वानीर । कपित्थ । अश्वत्थ / करुण । वरुण । धव । खदिर । पलाश । अकुल्ल । सरल । सल्लकी । नाग । पुन्नाग । नागर । वल्लि । मल्लिक । यूथिका । मालती । माधवी लता । मडपाभिराम । परपरा विराजमान परिशर । गगाफेनदी फेनपट्टलसद्द प्राकार पाडुर ।

यत्र नगरे । जड़ता । सरस्सु । नमनुजमनस्सु । खलस्तैलिका पर्णेषु । गुप्तिः शुक सारिका पजरेषु । 'उपसर्ग निपाता व्याकरणेषु । कटकाः पद्म नालेषु । बधः काव्येषु । दडश्छत्रेषु । कुटिलता कामिनामलकेषु । निसता वनिता नाभीषु । चपलता लीलावती लोचनेषु । चिंता शास्त्रेषु । व्यसन दानेषु । मौखर्य वादचर्याषु । धन कनक समृद्ध, पृथ्वी तल प्रसिद्ध । अत्यत रमणीय, सर्वजन स्पृहणीय ।

जिहा वाडा, वाडी, कूआ, परब । तलाव । आराम । गढ । देहरा । विहार । सत्रागार । कोष्टागार । भाडागार । धउलहर । पिंडहर । जोगहर । मोगहर । पीटणो हर । पडवा । पटसाल । अघहटा । फडहटा । माडवी । दड कलस । आमलसारा । तोरण । वदनमाला भलकइ । पचवर्ण पताका फरकइ ।

तिहा नगर मध्ये किसा लोक वसइ । भणइराय राणा । मडलीक । महाधर । मउड़धर । सामत । सेलुत । वर वीर । राउत । पायक । डिडिमायन ।

भया मत। पटायत। फलह कार। छुरीकार। नलिकार। कुंतकार। खागडीआ। सावलिआ। जेठी। यंत्रवाह। जालंधर। प्रभृति राजवर्ग।

अनइ व्यवसाईआ किसा—सोनी। गाधी। दोसी। नेस्ती ताहत्र। साह। सेठि। सोणावई। पडसूत्रीआ। कंसारिआ। वीजउरीआ। खजूरिआ। कणसरा। भणसरा। मयारा। मणीयार। सुतार। सूत्रधार। तूनारा। बंधारा। चीताहारा। लुहार। नाचकर। भोज कर। कवीअर। करीअ वेश्यादि वत। योगि। भोगि। विरागी। नट। विट। खुट। खरट। लाट। मीठा। जूगवं सिगार। वातहडा। रसिक। रगाचार्य। एइसे। मागणहार मंडित। पाचमइ व्यवसाईआ। व्यवसाईआ माहिं वर्त्तइ। एवं विधनगर प्रवर्त्तइ॥ छ॥ (स० २)

१७—नगर-वर्णन (८)

गढ, मढ, पोल, पगार, मंदिर, मालीया, सेरी, चोहटा, चोक, चच्चर, चोतरा, गली, गोचर, घर बार, बारणा, कागुरा, कोरणी, वइठक, बारी, खाल, खूणा, खूंट, पुट, पछिल, गोख, गवाक्ष, वोंकडसाला, दानसाला, देहरा, उपासरा एहवु नगर सोमे छे। (स० ३)

१८—नगर-वर्णन (९)

(विषम प्रवेश)

नगर पाखती कटक वन, एकुमार्ग अगाधि खाई, अभगु प्राकारु। अनै अनादिकालीन आबद्ध मूल, परचक्र अगम्य, थिर सन्निवेशु, विषम प्रवेशु॥

(पु० अ०)

१९—नगर-वर्णन (१०)

चौरासी चौहटा, बहोत्तरि पावटा, अनेक शत ... वावि नही गावि। कमल खडे करि कोटडी कमाडि, अति मनोहर, सप्तभूमिका धवलहर। जिसी नगर लदनी तली प्रलव वेणि, तिसी हट्ट श्रेणि। अति सुंदर प्रधान राज मदिर। (स० ५)

२०—नगर-वर्णन (११)

नगरि—जहि ८४ चौहटा ८४ टाडा, ८४ देवकुल, ८४ शाला, ८४ वावि, ८४ कूआ, ८४ सरोवर, ८४ आराम, किंबहुना ८४ स्थानक। (पु० अ०)

२१—नगर-वर्णन (१२)

[चौहटा— नाम]

१ सोनीहटी	२ नाणावटहटी	३ जवहरी हटी	४ सुगधियाहटी ।
५ फोफलिया	६ सूत्रियाहटी	७ पटसूत्रियाहटी,	८ घीया ।
९ तेलहरा	१० दताग	११ वलियार	१२ मणिहार हटी ।
१३ ढोती	१४ नेस्ती	१५ गाधी	१६ कपासी
१७ फडिया	१८ फूलहटी	१९ एरंडिया	२० रसणिया
२१ प्रवालिया	२२ त्राम्बहडा	२३ साखहडा	२४ पीतलगरा
२५ पन्नागरा	२६ सोनार	२७ सीसाहडा	२८ मोती प्रोया
२९ सालवी	३० मीणाहरा	३१ चूनाहरा	३२ कूटारा
३३ गुलियारा	३४ परीयटा	३५ घाची	३६ मोची
३७ सूई	३८ लोहटिया	३९ लोढारा	४० चीतारा
४१ लखारा	४२ कागलिया	४३ मद्यपहटी,	४४ वेश्याहटी
४५ पणगोला	४६ गाछा	४७ माडभूजा	४८ भाइसाइत
४९ मलिननापित	५० चोखा नापित	५१ पाटीवणा	५२ त्रागडिया
५३ वहित्रा	५४ काठपीठिया	५५ चोखावटिया	५६ पत्रसागिया
५७ सूखडिया	५८ साथरिया	५९ टउढिया	६० मूजकूटा
६१ सरगरा	६२ भरथारा	६३ पीतलहडा	६४ कसारा
६५ खासरिया	६६ पाथरिया	६७ तेरमा	६८ वेगडिया
६९ वसाह	७० साथूत्रा	७१ पेरुत्रा	७२ श्राटिया
७३ दालिया	७४ मजीठिया	७५ साकरिया	७६ साबूगर
७७ लोहार	७८ सुथार (सूत्रधार)	७९ वणकर	८० तम्बोली
८१ कदोई	८२ वुद्धिहटी	८३ कुत्रीकं पणहटी	८४ तूनारा

(संग्रह फलसे)

२२—नगर-वर्णन

—:चौरासी चौहट्टे:—

१ अकीक हट्ट	२२ चितेरा	४३ पस्ताक	६४ लखेर
२ अफीण	२३ चोलावटी	४४ पाननी	६५ लुहार
३ अमल	२४ छीपा	४५ प्रवाल	६६ लूण
४ इधण	२५ जवाहर	४६ फड	६७ लोहनी

५ कडव
६ कपास
७ कसेग
८ कदोई
९ कागल
१० काछी
११ कापड
१२ कीलिका
१३ कुमकार
१४ कुडिया
१५ गलियार
१६ गघर्व्व
१७ गधी
१८ गाघ्या
१९ गुलनी
२० घात्रीनो
२१ घीवटी
२६ जीर्णशाला
२७ जोड़ा
२८ तलावट
२९ तूनारा
३० त्रापडिया
३१ दात
३२ दूध
३३ टोरावली
३४ टोसी
३५ नाग्ग
३६ नापित
३७ नालिकेर
३८ निस्ती
३९ नीराग
४० पटुआ
४१ पट्टकुल
४२ परीपद
४७ फूल
४८ फोफलीय
४९ बंकर
५० बलियार
५१ बाजित्र
५२ त्रिघरा
५३ वेश्य
५४ त्रंग्रक
५५ भडभूंजा
५६ भरतार
५७ भागुड़ा
५८ मॅसा
५९ मणियार
६० मंजी
६१ मांडविया
६२ मोची
६३ रंगरेज
६८ शस्त्र
६९ षामर
७० पीनर
७१ षेडागर
७२ सकह
७३ सतूआरा
७४ सरहिआ
७५ सराणिया
७६ साकर
७७ साथरिया
७८ सिलाव
७९ सुई
८० सुनार
८१ सुवर्ण
८२ सुषडी (सुखडी)
८३ सूत्र
८४ सूत्रहार

(नाहर जी को प्राप्त प्राचीन पत्र से)

२३ नगर वर्णन (१४)

भीड़

मुड मुडि फूटइ[1], खुरु खुरि त्रुटइ।
हियउ हियइं टलियइ, पूठि पूठइ मलियइ।
बाहु बाह घासइ, ऊसासु निसासु नासइ।
तिलु पड़उ खिरइ[2] नहीं, पर दृष्टि फिरइ नहीं। इसी वहुस ॥

(पु० अ०)

२४ नगर-वर्णन (१५)

चौरासी चौहटा भीड, मनुष्य शनै शनै फिरै।
हिइं हिइं टलै, हारइ हारत्रूटै

१—समदं नउट मउडिद फूटउ, हारिहार तूटइ २—खिसइ (स० ?)

पूठें पूठ मिलै, बाहें बाह घसाइ ।
सास न लिवराइ, धडाधड हुई ।
तिणखलो धरती पडि न सकै, दृष्टि फेरवी न सकै ।
थाली माथा ऊपर तरै, इम अनेक भीड हुई ।

२५ नगर लोक-वर्णन (१६)

सकल कला कलितु । सर्व शास्त्र विशारद । अनागत त्रितैलितु स्वभाव सरलः प्रियालाप तरलः परदोष वार्त्ता विरल । दुस्थित जन दयालु, धर्म श्रद्धालु । परस्त्री सभोग भीरु, पयः पवित्रित शरीरु । प्रतिबन्ध बन्धुर व्यवहार, नयानुवुद्ध बुद्धि व्यापार । सत्पथ विज्ञ, सर्वज्ञ शासनाभिज्ञ । एव विध लोकु ॥१०५॥ (मु०)

२६ धवल गृह वर्णन

स्वर्णमय प्रकार, अतिमनोहराकार ।
विचित्र कलिकाइ शाल मान, सहस्र सोपान ।
समस्त जन मनोहरु
ते कि चद्रमा किरण धवलितु कि छोहि करी कलितु । स्फुटित कोल घटितु ।
कि मुक्ताफल राशि निर्म्मित । इसउं धवल गृह निर्मल ॥६३॥ (मु)

२७ जिन प्रासाद

लेवा हींडीइ जगि जसवादु, तउ माडावीइ प्रासादु ।
पुण्य नउ भारउ, एकासी आगुल गभारउ ।
सूत्रधारि घाट नइ विषइ नथी कीधी मउली, कउलीवटि सहित कउली ।
अतिहि प्रचण्डु, आखा मंडप अखण्डु ।
किसु एक नवचउकिउ, जाणे सृष्टिकर्त्ता आपहणी किउ ।
सुघट पणइ केतलउं एक वखाणउ, आगलि गूढ मंडप मडाणउ ।
अहर्निशि अभगु, रग मडप नउ रगु ।
चिहु चउवीसी नी विगति, पाखलि जगति ।
मूर्त्तिवंती कला बहुत्तरि, देहसी देहुरी बहुत्तरि ।
सुवर्ण्य दड कलसि अलंकरी, ध्वजा परहरी ।
हिमाचल श्रीमरु, सूलिगउ शिखरु ।

जाणे मेरु पर्वत श्रृंगु, एहवउ ऊपरि स्वर्णमय कलश नउ रंगु ।
लोह घटातु, लक्ष्मी गंजातु ।
धर्म ध्वजातु चिहु पखेर कोटरी, कोसीसे करी आकाशि अड़ी, सुधा करि धवलितु ।
विविध घाटि करी तारूआर, एवं विध जिन विहारु ।
सकल पराइ करी महा स्फूर्ति, माहि माडी वीतरागनी मूर्त्ति ।
परिगर करी शोभायमान, छत्र त्रय करी नइ विराजमान ।
आठ मागलिक मडाणा छइ, पुण्यवत पूजा करइ छइं ॥
प्रासाद वर्णन ॥ २६ ॥ जै० (मु०)

२८ स्वयंवरा मंडपु—

चउदिसि माच, हेठि रत्नमय भूमिका, स्वर्णमय स्तभ,
ऊपरि पचवर्ण देवाशुक तरणा ऊलोच,
तलिया तोरण ऊमविया, स्वेत चगर लवाविया,
फूलमाला लावावी, सिखरि आरीसा झलकइ,
गगनि चिंछ पताका झलहलइ,
अच्छारायणु, इसउ जसउ देव निमियउ तिस्यु मडपु । (पु० अ०)

२९ वाडी वर्णन

बीजउरी नां अखाडा, नीबुइना वृक्ष लक्ष, नवरग नारंगि ।
द्राख मंडप, जोइवाजिससी जंबीरि, दीठी हाथ उपशमइ तिसी दाडिमि फूल्या फणस करणी नी कोटि केलि वृक्ष असख्य अनेक विध आंबा रूढ़ि रायणि चारु वृक्ष रसाल नक्षय लगइ वाधीना नीलिएरि पान वारी प्रगटक खारिक खजूरि वडोरि बोरि फूटी फोफलणी गूंद नरीना गंजा इसी वृक्ष अलंकारी वाडी ॥ ३५ ॥ (मु०)

३० आराम-वर्णन (१)

नारिंग, लवंग, प्रियंग ।
पूफ, पुन्नाग, नाग, मागधी ।
धव, अर्जुन, सर्ज, खर्ज ।
खजूर, बीजपूर, कृतमाल, तमाल ।
नक्त माड, प्रियाल, ताल, हताल, श्रीताल ।
चंपक, सहकार, तगर, अगर ।

खदरी, बदरी, कदंब, निम्ब ।
जंब, जंबीर, वानीर, कणवीरु ।
रुक्षा, अक्ष, प्लक्ष, अला ओवट, कुटज ।
पटोली, पनस, वेतस ।
पलास, सल्लकी, अकोल, किंकिल ।
नागवल्ली, गिरिकर्णिका, कर्णिकार, सिंदुवार, मंदार ।
कोविदार, कल्हार, दाडिमी, करुणा, वरुणा ।
कपित्थ, अपत्थ, किंकिरात, पारिजात ।
पटाजा, सपूला, मालती, पद्मस्थल ।
पद्म तिलक, बकुल प्रभृति वनु ।
पुष्पित, फलितु, मंजरितु, पल्लवितु ।
स्निग्धच्छाया, सश्रीक, साड्वलं, निचय, पत्र बहुल ।
परिमल पवित्र सपुष्प सफल, अनेक पथिक विश्राम मूर्त्ति ।
विविध पक्ष कुलाचार, दृष्टि आनंदक ।
मन संतोषक, एवं विध प्रधान वृक्षा ॥ ६५ ॥ (मु०)

३१ आराम-वर्णन (२)

सच्छायु महाकायु लताकीर्ण द्रुम संकीर्ण पल्लवितु कन्दलितु पुष्पितु फलितु सजनु शीतलु साड्वलु इसउ उद्यान वनु । (पु० अ०)

३२ सुगंध वृक्ष नाम (१)

जाई, जूही, जासूल, नाग, पुनाग, चंपो, दमणो, वालो, वेल, पाडल, कुंद, मचकुंद, केतकी, केवडो, मोगरो, मालती,[१] मरुओ, गुलवास, सेवत्री, शतपत्र, सहस्रपत्र, सहकार प्रमुख एहवूं वन छै ।

तेहना फल केहवा छइ ?

रुडा, रगीला, मीठा, मधुरा,[२] फूटरा, फरहरा, पाका, पड़वाडा सुंहाला, सुगंध, सुकोमल, सदाकर, फूल, फल, पत्र, माल, प्रवाल, पल्लव, मकरंद, मंजरि पराग, परिमल, छाया, सोहामणी । एहवूं वन तिहा स्त्री क्रीड़ा करै छै ।

३३ सुगंध वृक्ष नाम (२)

कणयर प्रवर
कुद, मुचकुद ।

१—गुलाब २— खाटा । प्रति (कौ) में अंकित नामों के बाद ये नाम विशेष हैं ।

जाइ, जूही । वेल, वउंला
निरुपम निरवाली । सेवत्री नासइ
मनोज मल्लिका राज गिरी नी रचना ।
फूल्या चपक रहित शोक । कुम्हलित केतकी ।
मनोहर माडणीया अगथीया असख्य
कउतिगा वणा कोरटक इत्येव मादल पुप्प वृत्ता (२३) (मु०)

३४ सुंगध वृत्त नाम (३)

कुसुम—
चम्पक, राज चम्पक, विचकिल, स्वर्ण जूथिका
केतकी पुन्नाग, मालती जाप कुसुम कुन्द, मुचुकुंद
मंदार दमनक, कुरुवक शतपत्र बंधुजातिका पारिजात
हरिचंदन, कल्पवृत्त प्रमुख कुसुम समूह तेहि रम्यु । (पु० अ०)

---

३५ सुगंध वृत्त नाम (४)

मरुयउ
देखिवा जिसी देव गंधारि सविशेष सुरहि
विविध वालउ गधि विमणउ, दमणउ ।
बहु विध वाबची, त्रिभुवन विख्यात तुलसी ।
एवं विधि पात्री ॥ ३४ ॥ (मु०)

३६ अटवी-वर्णन (१)

अरण्य, उजाड, झाड़, वाल, माल, जल, थल नदी, निवाण, नाल, खाल, खेड़, खोह, वांका, विषमा, गिरि, गोवर (गह्वर) इत्यादि ।

३७ अटवी वर्णन (२)

॥ अटवी वर्णक ॥ रौद्र घोर भयंकर ।
मनुष्य रहित । अनेक स्वापद सहित ।
किहां इक शिवा फूत्कार । घूहड़ तणा घू घू शब्द कार । सिंह तणा सिंहनाद ।
वाघ तणा गुंजारव । सुअर तणा घर घरा रव ।
वानर फूत्कार करइ । चित्र कबरकइ । वेताल किलकिलइं । दावानल प्रज्वलइं ।
भील गीत गाइ । कष्टि चलाइं । रीछ तणा समुदाय । चरू तणा घाट ।
साहसीक तणा हृदय कंपइ । कातर कोइ उभउ न रहइ ॥
इति रौद्र महाटवी ॥ छ ॥

३८ अटवी वर्णन (४)

अटवी—अथाऽटवी वर्णनं । अनेकोत्कट वृक्ष गहन । विविध व्याल शार्दूल । काल कंकाल । वेताल । क्षेत्रपाल । शाकिनी । डाकिनी योगिनी । यक्ष । राक्षस । गधर्व विद्याधर । खेचर । भूत । प्रेत । पिशाच । क्रीडादिक करि । कोलि डंब्र डंब्र । श्मशान भिल्ल कर्बर । शबर । तस्कर । शबर । सरभ । कासर । व्याघ्र । सिंह । शृगाल । वृक । शूकरादि । स्वापद । रौद्राकार । घूक । शिवा । फेतकार । डाकिनी । डमर डात्कार । यक्ष राक्षस महा हुंकार ॥ एवं विधा अटवी ॥ छ ॥ (स० २)

३९ अटवी वर्णन (५)

जिहा सिवातणा फेत्कार,[१] घूक तणा घूत्कार ।
व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ आट नइ घाट ।
लाघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, वेडि विलाउ धुरकइ ।
वेताल किलकिलइ,[२] दावानल प्रज्वलइ ।
रीछ साचरइ, वीरूलणा यूथ विस्तरइ ।
वेडी रा साढ आडूकइ, ठामि ठामि वनरा भइसा हूकइ[३] ।
सादूला सीह गाजइ, कायर ना हीया भाजइ ।
सूरा हथियार साजइ, उद्दंड वाय वाजइ ।
रूख कडकइ, वटाऊ भडकइ । ताड खडहडइ, पखी भडहडइ ।
वालइ[४] वाट साधि छड हडइ, कुमार जागइ छइ ।
इसी रौद्र अटवी, किसी घणी वान रटवी ।
जिहा न लाभइ माग, न लहीयइ नदी तणा थाग ।
न सकइ चाली हाथी[५], न कोइ मिलइ साथी ।
विपम पर्वतमाला, डावी निमणी दव तणी ज्वाला ।
जई न सकइ चढ्यानइ पाला, दीसवा लागा भील अत्यत काला ।
आवो विषम वेला, साथी हुवा लागा भेला ।
झाड सधि मिली, न सकीयइ टली ।
ठामि ठामि दीसइ ज्वाला, माहि ओभीसाला ।

---

१ फुतकार, २ एक एक सू. मिलइ, वणराइ वलइ (विशेष पाठ), ३ मनीष्य मारग यी चूकइ ऊचा शिखरि चढि कूकइ (विशेष पाठ) ४ एक एक सू. अडेइ, चालइ नाथ छइ । ५ दीसइ अरण्य ना हाथी ।

जिहा रहइ सापकाला, न करी सकइ टाला, बडानइ आला[1] ।
इस्यउ महा अरण्य, तिहा एक परमेश्वर सरण्य[2] । (मू०)

४० अटवी वर्णन (६)

शिवा तणा फेत्कार, घूअड़ तणा घूत्कार ।
सिंघ तणा गुंजारव, व्याघ्र तणा घुर्घुरारव ।
सूयर घुरकइ, चित्रक बरकइ ।
वेताल किल किलइ, दावानल प्रज्वलइ ।
रीछ उछलइं, अघ्रणी भ्रमइ ।
मृग रमइं जिसा हुइ दविधा रूख
इसा दीसइ भील इसी वन भूमि ॥ ४ ॥ (मु०)

४१ अटवी-वर्णन (७)

महात घोर निर्मानुषी अटवी, जहि-कवहि ठाइ शिवा तणा फेत्कार ।
कवहि ठाइ अलिंजर तणा फूत्कार, कवहि ठाइ वानर तणा बोंकार ।
कवहि ठाइ घूयड़ तणा हूँकार, कवहि ठाइ सीह तणा गुंजारव ।
कवहि ठाइ व्याघ्र तणा घरघरारव, कवहिं ठाइ सूकर घरकइछइ ।
कवहि ठाइ चीत्रा बरकइ छइ, कवहि ठाइ वेताल किल गिलइ छइ ।
कवहि ठाहि दवानल प्रज्वलइ छइ, कवहि ठाहि रींछ सांचरइ छइ ।
कवहि ठाहि विरूतणा यूथ हींडे छइ, इसी महाभय वणी अटवी ॥

४२ अटवी-वर्णन (८)

किहांई घूवडना घूत्कार, कि० शिवा तणा फेत्कार ।
कि० अलिंजर तणा फूत्कार, कि० शाकिनी तणा रासडा ।
कि० डाकिनी तणा काचडा, कि० कलहस ना कलकलाट ।
कि० कावरि तणा कर्बराट, कि० चीतरा तणा वर्वराट ।
कि० सीह तणा गुंजारव, कि० व्याघ्र तणा घुर्घरारव ।
कि० क्षेत्रपाल तणा भैरवारव, कि० वेताल तणा कल कल ।
कि० वलइ दावानल, कि० रीछ तणी श्रेणी साचरइ ।

---

[1] हुया छोटा कुण वाला । सूरा सजे माला, चतुष्पदरा चाला । घणा पंखिया रा माला । (विशेष) [2] इसी रौद्र अटवी, वखाणइ कुशलधीर कवी ॥ (विशेष) ।

—सभा कुतूहल से

४६ वृक्षनाम (३)

अथ अंब, नींब, बीली, बाउल[1], बोर, बीजोरी, बदाम, कंकोल, केलि, कमल कणयर, करंज, कणज, कयर, कदब, केसु, कोरट, कैंवच[2] कालुबरी, कंथर, ताल, तमाल, तगर, अगर, अरणी, खिरणी, श्रीखड, अखोड, अपनस, असोक, आउल आंबिली, इक्षु, एलची, आमला, अंजीर, सालर, सदाफल, सोपारी, सरद[3], गूगल, गूंदी, जावू, नींबू, नागरवेल, रायण, दाड़िम, जाल। (स० ३)

४७ वृक्ष-नाम (४)

वन वर्णनम्

अगर तगर, निंब, अंब, जंबू, कदब, वड़, कुडा, कैर, खैर, बाउल, बोर, बीजोरा, अंकोल, कंकोल, करंज, कणयर, केसू, कोरट, कैवच, उंबर, कडुंबर, कथार, ताल तमाल, करणा, नींबू, दाडिम, आंवला, हरडइ, बहेडा सेव, अखरोट बिदाम, पिसता, निवजा, दाख, किसमिस, अंबनूस, असोक, आउल, आंबिली, इक्षु, एलची, अंजीर, सीताफल, नालेर, सोपारी, सालर, गूलर, गूंदी, रायण रत्तांजणी धव, सीसम, पीपल, टींबरु, करमदा, प्रमुख, (कौ०)

४८ वृक्ष नाम (५)

वनस्पति नाम—

अंब, निंब, कदब, जंब, ताल, तमाल, हिताल, प्रियाल, नन्दमाल, रसाल, नाग, साग, पुन्नाग, मंदार, केदार, देवदार, कोविदार, सिंदुवार, कर्णिकार, जंबीर करवीर, वानीर, मालूर बीजपूर, खजूर, नारेल, नारिंग, लविंग, प्रियंगु, कुंद, मचकुंद, पाडल, कमल, उत्पल, चपक, केतकी, किंशुक, अशोक, ककोल, कलि प्रमुख वनस्पति जाणवी ॥ (स० ३)

४ _ वृक्ष नाम (६)

नारग, लवंग। प्रियगु पूग। पुन्नाग साग। मगवी धव। अर्जुन, शोभा-जन। सालरि बीजपूर। धत्तूर वानीर। करवीर करीर। जबीर जबु। कदम करं-जन। कृतमाल, तमाल, ताल, हिताल। रसाल, सज्जसाल। प्रियाल, पीतसाल। महाकाल अखरोट। अश्वथ, कपित्थ, अक्ष प्लक्ष, वट, कुटज। पनस, वेतस। निनिश, पलाश काशं। अंकोल्ल, कंकोल्ली। मल्लिका, नागवल्लिका। गिरि कर्णिका, श्री पर्णिका। कर्णिकार, कोविदार। मदार, सहकार। सिंदुवार कल्हार वृन्दार, दमनक, दाडमी करणावरणा। किंकिरात पारिजात, आम्रातक श्लेष्मतक। विभीतक

१—बाहुल २—विवच ३—सरगु

हरीतक। आमलक गुडफलक। भातुक, गुग्गुल। पिचुल, निचुल। वञ्जुल जाई जुई। कुंद, मुचकुंद। पाटल कमल। बंधुक मधूक। भूर्जा खंजूर। मालती, नव मालिका। केतकी चेतकी हरीतकी। चारकुलिक तिलक वकुल, कटुफली उंबर, कालुयरि, नालिकेरि। प्रमुख नाना प्रकार, वनस्पति संभार। पुष्पित, फलित। मंजरित, पल्लवित। सच्छाय स्निग्धच्छाय। नीलच्छाय, हरितच्छाय, शीतलच्छाय। शाद्वल प्रवल। बहलदल सकल, अतुल परिमल। अनेक पथिक विश्रामभूत ललपदि सम्भूत। निग्गीढ नीड विराजमान प्रधान,। अखंड वनखंड। (सू०)

५० वृक्ष वर्णन

वृक्ष फलित, पुष्पित, मंजरित, पल्लवित स्निग्ध, सच्छाय, शीतलच्छाय, सश्रीक, शाद्वल, भास्वल, निचितपत्र, बहुल, परिमल, परिकलित पुण्यकर शोभित[1], विविध विहगमाधार, अनेक पथिक-जनागार, आनंददायक[2]।

(चि०)

५१ पक्षी-नाम (१)

अथ पक्षी नाम—

हंस, कलहंस, राजहंस, चकोर, चास, चातक, चकर, कंक, चक्रवाक, क्रौंच, कपोत, कपिंजल, कलक, कलविंक, कलकंठ, केकी, नीलकंठ, कूर्कट, कोसीट, कहुआ, कारंड, भारंड, कुंडल, कावग, कादंब, काग[3] खग, बग[4], चातिक, टीकण, बलाहक लावक, तीतर, भ्रमर, सुक[5], सारस, सारिका, खंजन, सूकविक, भार इत्यादि ॥

कनार, जनार, बाज, कुई, सीकरी, कोइल[6], समली, चडकली, चडी, कमेडी, देवी, लावा, बटेर, कबूतर, होला, बगला ॥

५२ पक्षीनाम (२)

हंस कलहंस, राजहंस सारस, चकोर, चक्रवाक, कोकिल, कोकनद, बक, मदनशाल, कुक्कुर, कलविंक, क्रौंच, अरिष्ट, पारापत, कपोत, शुक, सारिका, वल, लीका, कपिंजल, चातक, चास, मयूर, तित्तिर, लावक, कुरर, शकुनिका, भैरवा, भ्रमर, दुर्गाकोशटक, टिट्टिभ वेलाक, ढिक, काकजीव, जीवक, हारीत, कारंड, कुंडल, खंजन, पिंज, भृंगार, वितत पक्ष, सिंचानक, गुरुड। इत्यादि पक्षी वर्णन (सा०२)

---

[1] पुण्य प्रकट शोभित [2] अप्यायक (स० १) [3] काक [4] वक [5] शुक [6] कोकिल

(पु० अ०)

५३ चतुष्पद-नाम (१)

स्वापद नाम---

सिंह, शार्दूल, सरभ, साव्रर, व्याघ्र, व्याल, वरु; वरगडा, वराह, चमर, चीतरा, महिष, जरख, रीछ, रोम्म, सियाल, हरिण, गडक, गोमायो, ससलो, वरोटी, वानर, भूड, भैंसा, खर, करत (भ), हस्ती, इत्यादि चौपद ।

५४ चतुष्पद-नाम (२)

बोकडो, गाडर, मीढो, भैंसो, शसल, सूर, सारत्र, हिरण, रोभ्फ, रींछ, सरभ, प्रमुख, चतुष्पद वर्णन ॥

५५ चतुष्पद (३)

सिह-वर्णन

सिंह पुच्छ्यच्छोटित भूपीठ ।
सिंहनाद प्रति शब्दित वत्तातु ।
विस्फारित मुख कुहर विकराल दष्ट्रा दुः प्रेक्षः ।
तीक्ष्ण नख विदारित करि कुभस्थल ।
पिंगल लोचन, केशर भासुर स्कध देश ।
रक्तोत्पल कमल कोमल रसना सनाथ, समस्त श्वापद नाथ (स० १)

५६ कीट-नाम

कीडी, कथुआ, कीडो, कमीआकीला, घीवेल, गदहीरा, माकण, मकोडो, मंकोडी, चाचड, चूडेल, फाका, वगतरा, उदेही, अलसिया, गडोला जलोक, चदाण, भमरा, भमरी, तीड, माखी, मसा, डांस, कसारी इत्यदि जीव ॥

५७ पर्वतनाम

अर्बुदाचल, सिद्धाचल, विध्याचल, मलयाचल, उदयाचल, अस्ताचल, रेवताचल, हिमाचल, कनकाचल, रोहणाचल, हिमवत, महा हिमवत, त्रिकूट, चित्रकूट, रुपी, सुरुपी, नीली[1] महानीली[2], सिखरी, मुक्तागिर, धोलागिर, मानुषोत्तर, समेदसिखर, अष्टापद, नैषध, वैताढ, कैलाश, गोवर्द्धन, गंधवाहन, इत्यादि ॥

---

१ नील २ महानील

५८ सरोवर-वर्णन (१)

अगस्ति ना रोस लगी सृष्टि कर्त्ता अभिनव समुद्र सरिज्यउहुइ,
आठ दिग्गजे दंतूसले थिरू हुतउ निरालत्र भणीउ जिसउ आकाश विसम्य हुइ।
आदि वराह पृथ्वी ऊधरी तीणइ म्लान कि जल सरित हुइ
वन लक्ष्मी नउ जिसउ क्रीडा सरोवर हुइ
किवाहइ नीलकंठ तणहंउना कठ विषु विहतु घूटिवा भणीनइ भय
ब्रह्मा पाताल हूंतउ लोक जीवन हेतु अमृतकुड आणी मेलहउ हुइ
सत्कवि सहस्रमुख विनिर्ग्यतु जिसउं वचनामृत पिंडीभूत हुउ हुइ
धवल स्फटिक पाषाण तणी पालि वृक्षावली शोभितु हस बग बलाहक चकोर
चक्रवाक मछ्य कच्छप कूर्म पाठीन पीठ जलचर जीव विशेषि विराजमान।
वन हस्ती जलक्रीड़ा करइं, तापस जन वल्कल प्रक्षालइ छइ
सुरसुदरी विद्याधरी जल केलि करइं भ्रमर गुण गणाट करइ
वाइं पाणी झलकइ घट नाला सूसूइं पाणी घूमूइ
पथिक जनना श्रम हरइं एवं विध सरोवर ॥ ५ ॥ (मु)

५९ सरोवर-वर्णन (२)

पानि तणो परिगरु, देहरी तणउ समहरु।
चउकी चउखंडे झलहलइ, उआरे पाणी खलहलइ।
पगथिया रा सारुयार[1] वरडी उदार लहरी मला उछलइ।
मत्त वारणा ऊपरि पाणी वलइ
समुद्र नी परि गभीर, निरुपमान[2] नीरू।
उपरि जाण भर[3]इं, खडगू ए तरीइं[4]।
नहवाली अगोरिजालि। प्रवाह छूटइं, बंध फूटइ।
देहरि दंड कलस आमलसारा सोना तणा झलकइ।
जला[5] ढिरिणि कुल वधू तणे पागि नूपर खलकइ।
तडिइं किर्त्तिस्तभ दीसइं, लोक हिया विहसइ।
मेघ मल्हार (राग) गाईयइ वीणा वश मनोहर वाईयइं।
देहरीए पूजा कीजइ, जन्म फल लीजइ।
शत पत्र, सहस्त्र पत्र लक्ष पत्र।
सूर्य वशी, सोमवंशी कमल करी सश्रीक दीसइ।

---

१ रासा प्यारा २ तीर ३ भरीयइ ४ तरीए ५ जलाढिरिणी।

जिहा हस सरलइ, सारस करलइं ।
कपिजल कलइं, वृक्ष ना पान चल चलइ ।
राजहस रमइं, भ्रमर भमइं ।
चकोर चक्रवाक मयूर कूजइ, जलकेलि तणा मनोरथ पूजइं ।
महा काय पोलि, पावड़ियारा तणी श्रोलि ।
निर्मल जल कमनीय, विपुल पालि रमणीय ।
पथिक जनाधार, वृक्ष परपरा सार ।
कल्लोल माला मनोहर, एवं विध सरोवर ।
सरस्या भोगलहर्यभोग जाब्याम्बुज षट् पराः ।
हस चक्राद्यास्तीरोद्यान श्री पाथ केलयः ॥ (मु०)

६० सरोवर-वर्णन (३)

तलाव—
सखरी एकल्लोल, देखीने समुद्रनी पडे भोल ॥
[1]पंखोनी वेढीश्रोल, उछलेइ कल्लोल ॥
दोसे श्रमोल, घणाइक रंगरोल ॥
घणाइक वायरना झंकोल, भला पगथीयाना वोल[1] ॥
घणीक पंखीयानी कलवल, घणीइक हलफल ॥
धोबी धोइं मलमल, भला विकस्या कमल ॥
पाणी पिए श्रमल, भला परिमल ॥
ख्याल देखीइ मुख पखालीइं पथी पाणोले पीइछै ॥
झारी भरी लिजीइंछै, हाथोहाथ दीइछै ॥
मसकते भरीइछै, भैंसा उपरि धरीइ छै ॥
मोजकरीइं छे बामण न्हावे छै ॥
घोतीया ते ल्यावे छै, ईश्वर ते ध्यावेइ छै ॥
सहसनाम ते गिर्णे छैं, सरस्वती पाठवद तैभणे छै ॥
वेद वाचे छइं, प्रभाति ख्यालते माचे छइ ॥
सहुकोई राचे छै ॥
रसोई जिमीइं, श्राखो दिन तोज रमीइं ॥
बीजे स्युं भमीइ ॥

---

१ पत्ती ।

एहवउ तलाव, परमेश्वर मिलाव ।
इति तलाव वर्णनम् ॥ (पू०)

६१ पनघट-वर्णन

बईरां नी भीड़, हुइ पीड, त्रूटें चीड ।
एक ऊतावली दोड़े छै एक माथै वेहडूं चोहडेछै ।
लूगुडु ते माथे ओढें छइ, वेहडो ते फोडे छइं ।
एक एकने अडे छइं धडाधड पडै छइ ।
माहो माहि लडे छइं ॥
हवे नान्ही लाडी, चीखल थी पडे आडी ।
त्रीजी नी भींजाइ साडी, तें माटेइ करे राडी ।
सोक सोक नी करइ चाडी, डीले जाडी ।
खीजे माडी, सासूइं पाछी ताडी ॥
एक पणयारी भरे छइं, वाता ते करे छइ ।
नजर तें अरइं परइ फिरें छइ, एक एक ने हसे छइ ॥
त्रीजी ते पाणी माहि धसेछइ पग ते पागोथियासू धसइ छइ ।
एक एक टोली जाइ छै, आपणी आपणी पाछे आवे छे ॥
एक एक नो छेहडो साहे छे, उपाडया उमाहे छे ।
उतावली धाइ छे, वाता ते चाहे छै ।
जीवाणी पाछूं रेड्य छे, छोकरो तेड्य छे ।
माथा उपरि वेहड़ चोहड्य छै, जेहडे झमके छै ।
घूघर ते घमके छे, पायल ते ठमके छे ।
वेहड़ अरघट्ट, वर्णक गहगट्ट ।
वाजें अणवट्ट, आवे दहवट्ट ॥
एहवैं पणगट्ट । इति पणगट्ट वर्णनम् ॥

६२ नदीनाम (१)

गंगा, गोमती, गोदावरी, सिंधु, चामल, सिप्रा, सोवनभद्रा, सरस्वती, सीता, सीतोदा, रेवा, रिक्ता, रक्तवती, बनास, जमुना, मही, सरजू, तापी, सतलज, भूवि, ऐरावत, १४ लाख ५६ हजार ६० समुद्र, भेली थई छइ । (का)

६३ नदी नाम (२)

गंगा, गोमती, गोदावरी, सिन्धु, सिप्रा, सरस्वती, सोवनभद्रा, सीता सीतोदा, रेवा, रिक्ता, रक्तवती, सुवर्णकुलिका, रुप्पकुला, नरकता, नारिकता

हरिकंता, हरसलिला, यमुना, मही, तापी, बनास, गंभीरी, चाविल, कृतमाल, नक्र-माल, प्रमुख, चौदलाख, छप्पन हजार नदी, लवण समुद्र माहि मिलै। (स० ३)

६४ नदी-वर्णन (१)

नदी, दो तड पाड़ती, कचवर उपाडती।
रुखउन्मूलती, कुमिरिण घालती।
सावज हरणती, जडी मूली खरणती।
मार्ग्गलोक खलती, वलखि वलती।
तरू तोषती, नीचउ जोअती।
महापूरि कलकलती, कल्लोलि उछलती।
लहरि करी सू सूती, वाहले फूफूती।
जिसी कृतांत तरणी मूर्त्ति तिसी रौद्र, वेउतटलेई आवी नदी। (स० १)

६५ समुद्र-वर्णन

समुद्र उच्छल दूहुल कल्लोलमाला मालित गगन मंडलु।
मत्स्य कच्छप कमठ कूर्म नक्र चक्र पाठीन पीठ जलचर सकुल।
अतिशय गंभीर, समुद्दंड नीर डिंडीर।
अनेक सायात्रिक लोक सेवित,
सोल जाति रत्ननउ आगरु एवं विध अपारु सागरु। (स० १ और स० ५)

६६ समुद्र-वर्णन (२)

समुद्र अगाव, अलब्ध मध्य, गुहिर गभीर, आवर्त्त दुर्ग, कुतीर्थ विषम, मकर भयंकर। (पु० अ०)

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग २

राजा, राज-परिवार, राजसभा, सेना, युद्ध

नरेश्वर वर्णन (१)

समुद्रनी परि लक्ष्मीनिधान, सहिजि ही सावधान ।
मेरुनी परि सर्व जनाष्टभ, अति निर्दंभ ।
कार्त्तिकेय नी परि अप्रतिहत शक्ति, देव गुरु नइ विषइ निविड भक्ति ।
आसमुद्रान्त भूमंडल भर्त्ता, आश्चर्यमय महा कार्य कर्त्ता ।
सूर्य नी परि नित्योदय, सत्पात्र कृत संचय ।
दिग्गज नी परि अनवरत दानाद्री[1] ।
कृत करु, जय श्री वरु ।
ईश्वर नी परि जितमन्मथु, प्रजापति वकटित[2] सत्पथु ।
मित्रं प्रति, उदयशील अति[3] ।
सशील, सलील ।
विक्रमाक्रान्त भूतलु, अतिहि प्रबलु ।
रूपइ अभिनव कंदर्पावतारु, अति सुविचारु[4] ।
यशस्वी[5], तेजस्वी ।
प्रतापि लंकेश्वरु[6], एव विध नरेश्वरु ॥ १ ॥
जिणइ राजायइ गौड़ देश नउ राउ गाजिउ, भोट नूं माछिउ[7] ।
पंचाल नउ पालउ पुलइ, कानड देश नउ कोठारि रुलइ ।
ढूंढाड़ि नउ ढोयणउ ढोयई, वावर देश रउ वारि बइठउ टगमग जोयइ ।
चौड नउ त्रापिउ[8], काश्मीर नउ थरहर कापिउ ।
सोरठी (य) उ सेवइ, दसउर नउ दड देवइ ।
मेवाड नउ माल आपइ, काछ नउ कापइ ।
अग देश नउ अग ओलगइ, जालधर नउ जीवितव्य तणइ कारणि[9] रिगइ

---

१ दिग्गज नी परि निरनर, दानाद्रीकर २ प्रगटित ३ मित्र प्रति उदयशील, शत्रुहृदय सील । ४-सीकर वोर अ धार (विशेष पक्ति) ५ जयस्वी ६ सार्वभौम नरेश्वर (विशेष पक्ति) ७,भज्यउ ८ चाप्यउ ९ काजि १० वयरीया कृतात, सेवका परम सात । काद्द वाच निकलरु, सीह नी परि निम्मक (विशेषपक्ति)

[१]घणुं किसु रिपुकुल कालकेतुवर, शरणागत वज्र पंजर[२] ।
पंचम लोकपाल[३], जिमइ सोना रइ थालि ।
जिणइ रिपु सवे निर्द्धाट्या;
दुर्ग सवे आपणा[४] कीधा, वइरी नइ[५] देसवटा दीधा[६] ।
इस्यु निःकटक साम्राज्य राज्य पालइ[७] । (मु०)

२ नृप वर्णन (२)

एकागवीर, रणागणधीर[१] ।
पराक्रम निर्भय भीम, साहसिक सीम ।
विसम घाडि मोडण, पर भूमि पचाणण ।
परदल खंडण, छत्रीस राजकुली मडण ।
लडवाय भडकोडि भजन, अगज गंजन ।
रढ रावण, अरिदल ऐरावण ।
अहकारी माण मोडण, मूछाला वीर माण खडण ।
शरणागत वज्र पजर, गढ मजन[२] कुंजर ।
अडवड्या आधार, वाका वोर पाधोरणहार ।
सीकरि घोरधार, विकट पर[३] महाहंकार धिक्कार ।
कलकीया केदार, पवाडा कोडि जइत्तूयार ।
रण रंगमल्ल, अरढकमल्ल । वीर टोकर मल्ल ।
पर वीर हृदय सल्ल, बावन्न वीर कटार मल्ल[४] ।
रण भग्न सुहडावष्टभन मेरू, साहण[५] समुद्र विलोडण मंथाण मेरू ।
वीर कंकाल वेताल काल, चमर विंवाल ।
परदल हल्ल कल्लोल, वैरि वर्ग[६] द्रह वोल ।
भय भीत भडकोडि[७] रखा वज्र कमाड,[८] दूठ राया हीयइ दराड ।

---

१ विस्तीर्ण कर (विशेष) २ हृदय विसाल ३ जिण रायइ वडावटा विरुद खाट्या, सकल वइरी निर्घाट्या । ४ अपणइ वसि ५ वीहते ६ लीधा ७ रामचद्र नी परइ चालइ । इस्उ नि कटक धीर जितशत्रु राजा राज्य पालइ ।

पाठान्तर कुशलधीर कृत 'सभाकुतूहल' से ।

पाठान्तर—

१ अटग गजण, रढरावण । २ भजन । ३ भट । ४ भाले भयकर । कराल करवाल तर, ललधाराधर । ५ सीहण । ६ परदल । ७ भमकोडर । ८ रणागण भिडमाल पाठान्तर—सभा-शृंगार विनयसागर प्रति ।

गय घड़ विभाड, चोर चरड दुफाड ।
नीसाण निसक, रिपु राय तारामयंक ।
महारिपु कीर्त्तिलकार हनुमंत, घणघोर बल घूमंत ।
डाकीया ऊतारण होप, घयवड घटा टोप । इत्यादि ।

३ राजा वर्णन (३)

विक्रमाकान्त भूतल, शक्तित्रय भासित रिपुबल ।
प्रजापति जनक जननी समानं, सेवक कल्पद्रुमोपमान ।
युधिष्टिर जिम वचन प्रतिष्टु, श्रीराम जिम न्याय निष्ठु ।
विष्णु जिम प्रजापालन व्रत, तरुणादित्य जिम प्रौढ प्रताप ।
समुद्र जिम अनाकलनीय स्वरूप, एहवउ भूप ॥

४ राजा (४)

निज विक्रमाक्रान्त क्षोणि मडल, शौर्य श्री वदनारविन्द प्रद्योतन ।
सकल महीपाल लीला लालितुः, रिपु कुल काल केतु ।
सरणागत वज्र पञ्जर, पञ्चम लोकपाल मुद्रावतार ।
इसउ राजा । (पु० अ०)
सीमाल सवे वश वर्त्तिया किया, गढ़ सवे ढालिया ।
गढवई सवे निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा किया ।
समुद्र पर्यन्त आण फेरी, इणपरि एकत्र निःकटकु राज्य परिपालइ । (पु० अ०)

५ राजा (५)

महाशासनु, अरडक मल्लु, जग झंपणु, प्रताप लकेश्वरु
पर राष्ट्रीक हृदय शल्यु ।
जसु तणइ प्रार्थित प्राण भिक्षा हुंता राय ओलगइ
केइ हाथि दर्पण लियइ ओलगइ
केइ पुण स्त्रीवेश मुडित कूर्च हुता ओलगइ ।
केइ दाते आगलि लेइ ओलगइ ।
केइ वेला वाढी ओलगइ ।
केइ कोढ कुहाड़इ ओलगइ ।
केइ लोटीगयो ।
विंहु नाकेइ हाथु खालइ लोटइ ।
इसउ प्रतापी राजा । पु० अ०

६ राजा (६)

राजा आदित्य जिम प्रतापियउ, सिंह जिम सौर्य सयुक्त, हंस जिम उभय पक्ष विशुद्ध, हार जिम कामिनी वल्लभु चंद्रमा जिम कलावंतु, पट जिम गुणवंतु, धनद जिम श्रीमंतु, हस्ति जिम दानवंतु, मकरध्वज जिम रूपवंतु।

७ राजा (७)

याचक लोकु कामधेनु, उग्र विग्राहक।
राज सभा चक्रवर्त्ति,
नीति विधातु। साहसैक ख्यातु,
जेह प्रसन्नु।तेह धनदावतारु,
जेह प्रति कुपितु।नेह कुपितातावतार,
दोष दरिद्रु। गुण द्रव्य ईश्वरु, परदोषान्वेषण जात्यन्ध। तत्वावलोकन सहस्राक्ष, परदोषोद्घाटन मूक।सद्गुण ग्रहण व्यवद्क,
एवं विध राजा ॥१०७॥ (मु०)

८ राजा (८)

जसु राय तणइ खड्गि राज लक्ष्मी वसइ।
सरस्वती जिह्वाग्रि वसइ, वचनालापि अमृत वसइ।
महाजन हुइं गौरव दरिसइ, सेवकजन मन संतोसइ।
दीठउ आणंद करइ, तूठउ दरिद्र हरइ।
रुठउं सर्वस्व अपहरइं, अन्याय तणी वात परिहरइ।
कीर्त्ति कामिनी कामइ, देव गुरू मेल्ही कुहिहुइ सिर न नामइ।
मधुर प्रसन्न मुख, इंद्र पदवी तणउ सुख।
परनारी सहोदर, दान सन्मान सदादर।
उचित्य चतुर, प्रतिपन्न वाचा सार।
सर्वजन आधार, पंडित जन शृंगार।
अस्खलित कीर्त्ति, सूर वीर विक्रान्त।
परम स्फूर्ति
उदार स्फार मूर्त्ति।
पाप नि कंदन, सज्जनानंदन। एवं विध राजा।
उत्खातान् प्रति रोपयन कुसुमिता त्रिन्वन लघुन वर्द्धयन।
कुज्ञान् कटर्कि नो अहिनियमयन् विश्लेपयन् सहतान।

अत्युच्चान्नमयन् शनैश्चवित तानुन्नामयन् भूतले ।
मालाकार इव प्रपच चतुरो राजा चिरं नदतु ॥११७॥ (स० १)

९ राजा (६)

जसु राय तणइ खड्गि राज्य लक्ष्मी वसइ, जिह्वा सरस्वती वसइ ।
वचनालापि अमृत वरसइ, महाजन किहि गौरव दरिसइ ।
सेवक लोक मन सतोषइ, दीठउ आणंद करइ ।
तूठउ दारिद्र हणइ, रूठउ सर्वस्व हरइ ।
नीति अनुसरइ, अन्याउ परिहरइ ।
कीर्त्ति कामइ, देव गुरु मेल्ही सिरूकुणहइ न नामइ ।
जसु राय तणइ आणदु मधुरु प्रसन्न मुख,
प्रीति तरगित मनु दान सन्मानु आलापु ।
अमृत सहोदरू, वचन कारूण्य रस कूप तुल्य,
उचत्य चतुरु वाचासारु ।
शौर्य्य उपशम श्री विलासु, तत्त्वविचारणैक फल बुद्धि ।
सर्वत्र विख्याति कीर्त्ति, सत्पात्र सेवा रसिक मंत्रि ॥१॥ पु० अ०

१० राजा (१०)

प्रतापि लकेंद्र, सत्यवाचा हरिश्चंद्र ।
साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला कर्ण ।
वचन प्रतिष्ठा युधिष्ठिर, धनुर्वेद अर्जुन ।
आज्ञा अजयपाल, परनारी सहोदर गागेय
निर्भय भीम, आपन्न सत्व जीमूतवाहन,
विवेकी नारायण, विद्या वृहस्पति ।
लावण्य लवणार्णव, रूपि कंदर्प, प्रतपि मार्त्तंड
औदार्य बलिराज, अद्भुत दानि चिंतामणि
सेवक जन कल्पतरु, चतुरग वाहिनी समुद्र
सौभाग्य गोविन्द, ऐश्वर्य सुरेन्द्र ।
सिंह जिम सौर्यव्रत, चद्रमा जिम कलावत ।
शीलि सुदर्शन, विक्रमाक्रात क्षोणीमडल
अतुल बल, पचम लोकपाल
शरणागत वज्र पजर, सकल वैरि महीपाल दुर्जर ॥५७॥ (स० १)

११ राजा (११)

छत्रीस राजाकुलीनो नरेश्वर, सहजैं अलवेसर।
प्रत्यक्ष परमेश्वर,
कपालैं राज्य लक्ष्मी वसैं, मुख सरस्वती उल्लसैं।
तूठौ दारिद्र हरै, दीठौ आनन्द करै।

१२ राजा (१२)

पीनोन्नत स्कंध, सत्य संध।
कमल वदन, उज्ज्वल रदन। सुरभि निश्वास, लक्ष्मी निवास।
सदल नासावंश, पृथ्वी पीठावतंश। प्रलंब कर्ण, सुवर्ण वर्ण।
विशाल नेत्र। सर्व कला क्षेत्र।
अष्टमी चंद्र समान भालस्थल, अनाकलित चल।
कज्जल श्यामल केश पाश, सर्व जन पूरिताश।
सत्त्वैकतान वृत्ति, उभय पक्ष निर्मल प्रवृत्ति।
त्रिशक्ति समन्वित, चतुराज विद्या अलंकृत।
जित पंचेंद्रिय विक्रम, षण्मुख सम विक्रम।
सप्ताग राज विराजित, अष्ट विध मद विवर्जित।
नव निधानाकार, भांडागार।
दश दिशि विख्यात नामासार, अकादश रुद्रइ कलाधार।
द्वादश दिवाकर, प्रताप विस्तार।
त्रयोदश यक्ष कृत सांनिध्य, चतुर्दश विद्यालब्ध मध्य।
पंचदश तिथि दत्त दान, सोल कला संपूर्ण।
सत दशक युसवना अभ्य व्यवहारक। अष्टादश द्वीप कीर्त्ति विख्यात।
एकोनविंशति पाटण नायक, वीस विसा परोपकारक।
दानी कर्ण, पवित्रता ऋतुपर्ण। उपक्रमि राम, पितृभक्ति परशुराम।
राधा वेधि अर्जुन, रससिद्धि नागार्जुन।
संग्रामि भीमावतार। शरणागत वज्र कुमार।
द्रोणाचार्य धनुर्विद्यायां। सुश्रुत आयुर्विद्यां।
आज्ञालकेश्वर। न्याइ विभीषण। इस्यो राजा भूमि भूषण।
तथा। प्रतिपन्न विंध्याचल, अगि भोगि मलयाचल।
कीर्त्ति गंगा। क्षिमा गुण रत्न रत्नाचल।
तथा नयन नद वा चंद्र। पृथ्वी धर नागेंद्र।

पराक्रमि कार्त्तिकेय, शत्रु सैन्य सैंहिकेय।
स्त्री जन रति पति, प्रतापि दिनपति।
ऐश्वर्य सहस्राक्ष विभूति धनद यक्ष।
रूपि अश्वनी कुमार, लोकवसंतावतार।
तथा। जस प्रतापि।
मध्य देसीय मूझइ। सौराष्ट्रीय सूझइं।
मालवीउ आंच मांडइ। मेवाड़उ मद छाडइ। कनूजो कापइ।
वाणारसउ वरकइ नही। मागध तणउ मुणकइ नहीं।
तिलंगु तडफडइ वारि। कलिंग तणउ रूलइ कोठारि।
मरहठु होठ दमइ। कुंकणउ हाथ वसइ।
तथा। जू राजा दिन गमनिका करइ।
किवारह आस्थानि किवारह देवस्थानि।
कही देहवासरि। क० अतेउरि। क० सत्र उसरि।
क० राज पाटिका। क० पुष्पवाटिका। क० सत्तागारि। क० वडइ प्रकारि।
तथा। जीणइ गीत प्रवृत्तइ तुंबरु ताल मुझइ, रंभा नाच मुंकइ।
हा हा हू हू डर फर किन्नर कान धरि। गधर्व गीत मुकइ।
स्वर्गइ देव साभलवा ढूकइं।
तथा। जेह तणी दृष्टिइ दाधा पालुईइ।
त्रूटा संधाइं। भागा सम्भिईइ। सूका नीलाइइं। जीर्ण पुनर्नव हुइ।
अशक्त शक्त हुइ। बाधा छूटइ। कुकवि कल्प त्रूटइ।
दारिद्र जाइ। लक्ष्मी अमाइ। इस्यु, सत्यवंत। सूर्यवंत। कलावत।
गुणवत। आकृतिमंत। दान पर। मान पर। ऋजु स्वभाव।
मृदु स्वभाव। गीत प्रिय। काव्य प्रिय। दक्ष दातार। विधु विचारज्ञ।
अस्खलित सासन। सार्व भौम। राजा चंद्रातप राज्य करइ ॥छ॥

१३ राजा (१३)

राजा सूर्यवत
अखड प्रताप, साख्यात कदर्प वाप।
दुष्ट निग्राहक, शिष्ट परिपालक।
नीति प्रधान,[1] पुण्य प्रधान।

पाठान्तर—१ निधान

विवेक नारायण,
परनारी सहोदर,[१] भरै अनेक ना उदर ।
पराक्रमवंत, दानवंत ।
सत्यवंत, सोमवंत ।
याचक जन कामधेनु,

एवं विध राजान ॥ चि०

१४ राजा (१४)

दान वीर, सग्राम धीर ।
वैरी कुल खंडन, निजकुल मंडन ।
सत्यवाच अविचल, अति गाढो अकल ।
संग्रामे स्थिर, प्रतापै युधिष्ठिर ।
पर राष्ट्र द्वंदप सल्ल,
वीडी वयरागर, गुण रत्न सागर ।
साहण समुद्र, दान खडै निर्जित दरिद्र ।
कप्पूर धारा प्रवाह, अति स्वोछाह ।
सेवक जन कल्प वृक्ष, अति दच्छ ।
विचक्षण, छत्रीस लक्षण ।
याचकजन चिंतामणि, राजा मडल चूडामणि ।
प्रतापै दिनेश्वर, गाढो मलवेसर ।

इसौ जित शत्रु नरेश्वर ॥ चि०

१५ राजा शरीर वर्णन (१५)

राजा कर्ण, गौर वर्ण, लंब कर्ण ।
विशाल नेत्र, फूल गात्र ।
उपराही रोमराय, हीएं श्रीवत्स, पाय पद्म, हस्त चक्र
एक अखंड प्रताप, ऊंचो लक्ष ।
कटि लक, मूल वक ।

इति शरीर वर्णनम् (चि०)

---

१ सेवक जन वत्सल । इस प्रति में ऊपर लिखे प्रथम चित्तौड़ की प्रति के अंत में यह शरीर वर्णन भी लिखा है ।

१६ महाराजाधिराज (१६)

जीह रायतणी आज्ञा पंचाल देश स्वामी मस्तकि वहइ ।
नेपाल देश स्वामी, द्वारि रहिउ, प्रासाद लहइ ।
मलया देश स्वामो पाहुड पाठवइं ।
द्रविड़ देश स्वामी वाज धयकउ ओलगइ ।
सिन्धु देश स्वामी पडपडो दिइ ।
कछ देश स्वामी दिवसोदव नगइ ओलगइ ।
गउड देश० कोठारि ओलगइ ।
मरहठ देश० वज्र पजरि खडहडइ ।
जालधर देश० पग पखालइ ।
सोरठीउ राजा आटील आस्फालइ ।
केई गोतिहरइ तडफडइ, केई लोह खंडे खडावडइं ।
केई दाँति आगुली लेई ओलगइ, केइ स्कधि कुठार धाति ओलगइ ।
कि बहुना जीणइ सीमाडा सवे वस कीधा ।
गढ सवे ढालिया, रिपु सवि निर्धाटिया ।
समुद्र पर्वत आज्ञा पाठवो, अनेकि परि प्रजा सुखिणी कीधो ।
इण परि राजाधिराज राज्य करइ । ५६ । (स०)

१७ अहंकारी राजा (१)

अहकारी कहवा छई—

अटाला, अखियाला, पटाला, हठाला, मुछाला, मामला, करडाला, मरडाला, मछराला, मतवाला, मलपता, मरड़ता, मसलता, आखड़ता, अडता, आपडता, पडता, पाडता, पकडंता, अभीहता[1] बलवता, बोलता, बुद्धिवंता, रूपाला, रंगीला, रसीला, रढीला, रेखाला, रतीला, रिद्धाला, सूरा, पूरा, छयल, छबीला, एहवा गुमानी राजा ।

ओष्ट युगलु फुरकावतउ, वचन विन्यासि खलतउ ।
भीषणाकार मुख करतउ, आरक्त लोचन धरतउ ॥
इस्यु राजा कुप्पउ ॥ पु०

१८ कुपित राजा (१)

कुटिल भ्रकुटि ताडी, चपेटा ऊपाडी ।

---

१ अतिहन्ता

३३ रानी वर्णन

तेह तणी कलत्र-जिसीरभा, जिसी उर्वसी, जिसी तिलोत्तमा, जिसी अप्सरा, जिसी पातलागना । इसी राणी ॥ (पु०)

३४ मंत्री वर्णन

रूपि करी रूडउ, पाट प्रति नथी कूडउ ।
राउला अर्थ निधानु, विण भूम्फ पृथ्वी आपणी करइ,
अनेरइ राय नइ चउका सरि सरइ ।
अनेइ खडि आस जगीस, ताडी वखाणयइ विश्वावीस ।
लोक ना कार्य समारइ, अने प्रजा उगारइ ।
वाद विग्रह राखइ, असत्य न माखइ ।
शास्त्र कुशल, यशि करी निर्म्मल ।
प्रजा नउ पीहरु, अतिहि अलवेसकरु सविहु बुद्धि निधानु एहवु प्रधानु ॥ १८ ॥ जै० मु०

३५ मंत्री-वर्णन

तेमहाराय तणउ चतुर्बुद्धि विलासु, समस्त जन विहितोल्लासु ।
नीति शास्त्र विचक्षणु, विद्यमान सामुद्रिक लक्षणु ।
महाराय तणउ प्रतिशरीरु, अवर्णवाद भीरु ।
कनकमय मुद्रालक्रियमाणु दक्षिण हस्तु, अति प्रशस्तु ।
मंत्रिमंडलुमुखाभरणु, सकल राज सभालकरणु ।
अनेक साधित दुर्घट कार्य सिद्धि, महत्तउ सुबुद्धि ।
तीणपरि सुख सदोह भरि पच प्रकार सोख्यसारु, परि पालइ राज्य सारु ॥

२७ रावण-वर्णन (४)

त्रिकूट पर्वतु, लंकापुरी समुद्र खाई ।
दश सिरु वीस भुजु, त्रैलोक्य कटकु ।
रावण मंडलेश्वरु, तूठो ईश्वरु ।
... .वरु, नवाणवइ कोडि राक्षस बल ।
नव कोडा कोडि नवकोडि नवाणवइलक्ष नवाणवइ सहस्र नवसई

नवोत्तर राक्षस कुल ।
कुंभकर्ण विभीषण प्रमुख बाधव लक्ष,
मंदोदरी प्रमुख सवालक्ष अंतेवरी ।
इंद्रयम मेघनाद प्र० सवालक्ष कुमार ।
असाली सूर्पनखा प्रमुख अढार बहिन ।
सातलक्ष बेटी, तेर कोडि चेटी ।
विहि बैइठी कोद्रवा दलइ, आदित्य रसोई करइ ।
भैंसा रूपी घटवाजतेइ यमुदेवतापाणी आणइ ।
विश्वकर्मा सूत्रधारउं करइ, शुक्र दैत्यगुरू पोथी वाचइ, कथाकहइ ।
इन्दु माली रूपि फूल आणइ, साड छेहिखाट तणी उडाणी ताणइ ।
तेंतीस कोडि देवता ओलगकरइ, इठियासी सहस्र ऋषिश्वरपाणी परत्रभरइ ।
वेद उच्चरइ, शिव शान्तिक करइ ।
देवगुरु बृहस्पति आरिसू देखाडइ, मगलू क्षेत्र खेडावइ ।
कामदेवु कडी कटारउ बाधइ, धनुषाग्नि बाण साधइ ।
महेश्वर पवन (?) वायइ, ब्रह्मा वीण वायइ ।
नारायण······ ·, पवन देवता धूलि बुहारइ ।
नवदुर्गा आरती उतारइ, गगा यमुना वे चँवर ढालइ ।
गणपति गोकुल चारइ, कृतान्तु कोट्ट गखइ ।
सनिश्चरू रसोई राधइ, जीव रति ढोलडी झाडइ ।
केतु भामणा भमाडइ गोरी सणगार करावइ ।
लाछि वस्त्रु सत्तावइ, नवग्रह खाट पाइयेबाधा ।
· · · ·· ··, धनदु भंडारि भरइ ।
··· · ·करइ, ··· ··· ·रावण राज करइ ।
सात समुद्र माजणउ करावइ, अढार भार वनस्पति फूल पगर भद्र ।
तत्क्षकु केड़उ भडारि पहिरउ करइ ।

हस्ती-वर्णन

आलान स्तंभ मोडी, निवड लोह तणी शृखला त्रोडी ।
पु तार पाडी, कपाट सपुट्ट फाडी ।
पडिहारु गाजी, वरण सत्रघोया त्रिगडा भाजी ।
वरंडा पाडतउ, माणस मारतउ, राउत रसाडतउ ।
अटाल टलटलावइ, हाट्ट हलहलावइ ।

आराम उन्मूलइ, ऊभा मनुष्य ऊलालइ ।
क्षत्रिय खलभलावइ, खंडगृह खडहडावइ, धवलगृह धाकलइ ।
तरल तुरगम त्रासइं, नाइका नासइ ।
इसु मूर्तिमंतउ कृतांतु महाकाय, पर्वत प्राय ।
सप्ताग मद प्रतिष्ठतु, देवताधिष्ठितु, त्रिदंड गलितु ।
सारसी करतु, मद प्रवाह झरतु ।
हस्ति राजु, निर्व्याजु ।
कृष्ण वर्णु, सूर्य्यमान कर्णु ।
लीला साचरइ, जयश्री वरइ ।
परस्त्री परिहरइ, शत्रु वर्ग दलइ ।
पर मानु मलइ, कोपि ज्वलइ ।
मही तलि चालतउ, मेघजिम गाजतउ ।
इसउ हस्तिराजु चाल्यु । पु०

१६ कोपातुर राजा (२)

कृत भीम भृकुटि उत्कट ललाट पट्ट घटित त्रिशूल ।
उत्पाटितु दृष्टि सपुट्ट ।
दसन संदष्टौष्टः
प्रकम्पित देह यष्टिः
इणि परिराजा कोपि चडिउ । पु० अ०

२० रूठा राजा (१)

रूठो साते पताल फोडै,
रणागणि गयवर तणीं गडी गाजै, शत्रु भड भाजै ।
दानेश्वरं कर्ण तणो अवतार, धनुर्धरंइ अर्जुन प्राग्भार ।
जेह तणो अतुल भंडार, प्रबल कोठार ।
वडा जुभार, कटक तणो नहि पार ।
करै शत्रु सहार, महा उदार ।
एहवो पराक्रमी ।
अजनाचल रे कैलास पर्वत तणी पदवी आपी ।
यमुना तणैं स्थानकें कीधो गंगा प्रवाह । मित्रकीधा चद्रनैराह ।
सरीखा कीधा हारनै नाग, अतर टालियो ब्रगनै काग । एहवो जाणवो ।।स ३०

२१ राजानाम

जितशत्रु, जितारी, जयसिंह, जनक, जयराज, कनकभ्रम[1], कनककेतु; कनकसिंह, कुंभकर्ण, कुरु, मदनभ्रम, मदनसिंह, मदनकेतु, मदनवेण, मकरध्वज, मृगाग, महिधर, मन्मथ, विजयसिंह, वैरीसल्ल, वैरीमल्ल, वीरसेन, विजयकरण, चंद्रसेन, प्रजापति, पृथ्वीपति, पृथ्वीमल्ल, प्रतापसेन, महीसेन, एहवा राजान महाबलिया छै।

२२ चक्रवर्त्ती ऋद्धि (१)

नव निधान १४ रत्न, सोल सहस्रयक्ष, बतीस[1] सहस्र मुकुट वर्द्धन राय, ६४००० अंतःपुर, सवालाख वारांगना, १४००० वेलाउल, ३२००० देश, २१००० संनिवेश, ५६ अंतरद्वीप, ९९ सहस्र द्रोणमुख, ९६ कोडि ग्राम, ९६ कोडि पदाति, ४९ सहस्र उद्यान, १८ श्रेणि, १८ प्रश्रेणि, ८० सहस्र पंडित, १०० कोडि[2] कौटुंबिक, ३२ कोडिकुल १४ सहस्र चतुर्बुद्धि निधान, १४ मंत्रीश्वर, ३२ सहस्र नव बाहरी नगरी, ४९ कुरराज्य आताप[3] संपात १६ सहस्र म्लेच्छ राय, १४ सहस्र मंडप[4], १४ कडबट[5] १४ सहस्र संधान, १४ सहस्रखेट, ४८ सहस्र पत्तन, १८ कोडि अश्व[6] ८४ लक्ष उत्तम गज, ८४ लक्ष रथ ७२ लक्ष पत्तन, ३६ लक्ष वेलाकूल, ३२ सहस्र प्रवर देश, ६४ सहस्र कुलांगना[7], सवा लाख वारांगना, ३२ भेद भिन्न नाटक, ३२ सहस्र आगर, ८४ लक्ष तालारक्षु, ८४ सहस्र सूत्रधार, सवा कोडि व्यापारिणः, १४ सहस्र जलपथ, २४ सहस्र कटक ३६० सूपकार।

अन्योपि श्रेष्टि सार्थवाह मार्डंबिका कोडंबिकादयः।
ग्रामो वृत्त्यावृतः स्यान्नगरमुरु[8] चतुर्गोपुरोद्भासि शोभ।
खेटं नद्याद्रिवेष्टं परिवृतमभितः कर्वटं पर्वतेन।

---

१ जनक भ्रम (न० ३)

१—१००० कोटि २—आपाताप सघात ३—मडब ४—सह कर्वट ५—मुउरु।

ग्रामैर्युक्तं मटंबंटलित दश शतैः पत्तन रत्नयोनिः।
द्रोणाख्य सिंधु वेला वलयित मथ संवाधनं चाद्रि शृंगे।
इति चक्रवर्त्ति ऋद्धिः॥ (मु०)

पाठान्तर—१ छत्रीस २ १००० कोडि ३ आताप ताप सघात ४ मटब मटब ५ सहकर्वट ६ चउरासी लक्ष जात्य तुरगम अ त पुर ८ मुउरु

विशेष—बहुत्तरि सहस्र पुरवर, छत्रीस सहस्र जनपद चउवीस सहस्र कर्पट सोल सहस खेटक चउद सहस सवाहन पचास करुथान आधिपत्य, पुरावृत्तित्व, स्वामित्त्व, भर्तृत्व अनुभवति॥ (अन्तिम) ९९ (स० १)

२३ वासुदेव राज्य (२)

केवडंउ राज्य वासुदेव तणउं
जिहां समुद्रविजय प्रमुख दस दसार।
पजून प्रमुख अहूठि कोडि कुमार।
शंब प्रमुख एक सहस्र दुर्दांत कुमार।
बलदेव प्रमुख पाँच वीर।
वीरसेन प्रमुख एकवीस सहस वीर।
उग्रसेन प्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा।
महसेन प्रमुख छप्पन्न सहस बलवत।
रुपिणि प्रमुख सोल सहस अतःपुरी जन।
अनग (सेना) प्रमुख सोल सहस वेश्याजन ७० (स० १)

२४ रावण-वर्णन (१)

लका नगरी राजधानी त्रिकूट पर्वत गढ।
अनेक अक्षौहिणी दल, अढारकोडि तूर। जिणइ मृत्यु पातालि घाल्यउ,
नवग्रह खाट पाईयइ बाधा।
बाउ देवता आगणउ बुहारइ, बार मेघ छडउ दीयइ।
वनसपती फूल पगर भरइ, सूर्य रसवती करइ।
चद्रमा घडी-घड़ी अमृत स्रवइ, यम देवता पाणी वहइ।
सात समुद्र माजणउ करावइ, सात सात रसा[1] आरती उतारइ।
विश्वकर्म्मा शृगार करावइ, तेत्रीस कोटि देवता आस्थानि[2] ओलग आवइ।
गगा जमुना चमर ढालइ, तुबर गीत गावइ।
सरस्वती वीणा वावइ[3], रभा नाचइ, बृहस्पति पुस्तक वाचइ।
इन्द्रमाली, ब्रह्मा पुरोहित।
जीमूत रिषि छोरू खेलावइ।
कामदेव कटारउ बाधइ, वासुगि खटि पहुरउ दीयइ।
कुलिक उपकुलिक बेउ पाउ उलालइ, अर्द्ध प्रहर श्रीखड घसइ।
वैश्वानर वस्त्र पखालइ, चाउँडा तलारउ करइ।
विधात्रा[4] कोद्रवा दलइ, गणेस[5] गर्दभा चारइ।

पाठान्तर—

१. सातरिसी २ आस्थानि ३ वाजइ ४ विहि ५ विनायक

२५ (पुनर्वर्णकान्तरं लंकेश) रावणस्य ॥ २ ॥

पहिलउं त्रिकूट पर्वतनी विसमाई, पाखलि (अनी) समुद्रनी खाई ।
लंका नगरी पाखलि गढु, अति सद्दढु ।
ओलगइ निन्नाणवइ कोडि राक्षस ना कुल, बलि करि अतुल ।
बांधव कुंभकरण विभीषण जिसा, बेटा मेघनाद, इद्रजित् जिसा ।
बहिनी असाली सूर्पणखा जिसी,
रावणनइ दस मस्तक, वीस भुज, ए वात सांभली कुणहइ इसी ।
लाधउ ईश्वर नउ वरु, वाउ बुहारइ घरु ।
मेघ करइ छांटणउ, देवागणा करइ ऊगटणुं ।
यम देवता[1] पाणी वहइ, सूर्य देवता रसोई रहइ ।
ब्रह्मा वेद वखाणइ, इन्द्राणी केस ताणइ ।
गंगा यमुना चमर ढालइ, नवदुर्गा आरती ऊतारइ ।
विश्वकर्मा सूत्रहारू करावइ[2], विश्वामित्र आभरण घटावइ[3] ।
मगल पडिउ चेत्र नीअ परिवारइ, छइ ऋतु आपापणी ओलग संचारइ ।
देवता मिलि आगलि नाटक माडइ, विधात्रा कोद्रवा खाडइ ।
धनद भंडार भरइ, रावण इस्यउ राज करइ । सू० मु०

२६ रावण—(३)

लंका राजधानी, त्रिकूट दुर्ग, जीणइ मृत्यु बाधी पातालि घालिउ,
नवग्रह खाट तणइ पइयइ बाधा ।
वाउ देवता आगणउ बूहारइ, चउरासी मेघ छडा छावडा दिइ ।
वनस्पति फूल पगरि भरइ, जमराउ भइसा रूपि पाणी वहइ ।
सातइ समुद्र स्नान करावइ, सात मातर आरती उतारइं ।
विश्वकर्मा श्रृंगार करावइ, शेषनाग राजछत्र धरइ ।
गंगा यमुना चामर ढालइं, छइ रितु पुष्प पूरइ ।
सरस्वती वीणा वायइ, तुंबर गीति गायइं ।
रंभा तिलोत्तमा नाचइं, नारद ताल धरइं ।
आदित्य रसोई करइ, चंद्रघडी २ अमृत भरइ ।
मंगल महिषी दोहइ, बुद्ध आरीसउ दिखाड़इ ।
बृहस्पति घडियारउं वायइ ।
शुक्र मत्री बइसइ, शनैश्चर पूठि पग देई खाट बइसइ ।

---

१. मगहय (महमहण=) २. अधरावइ ३. धटावइ (घडावइ) ।

३ कोस समुद्र खाई, दस सिर, बीस भुज, ३० सहस्र वर्ष आयु, २१ धनुष-उच्च, त्रैलोक्य कंटक, रावण राना जेहनइ—६६ कोटि राक्षस कुल, ६ कोड़ा-कोडि, ६६ लक्ष, ६६ सहस्र, ६०६ राक्षस बल, कुंभकरण विभीषण प्रमुख लक्ष-बाधव, मदोदरी प्रमुख सवालक्ष अंतेउर, इन्द्रजीत मेघनादादिक सवालक्ष बेटा, ७ लक्ष बेटी, आसाली सूर्पनखादिक ६८ भगिनी, ३ कोडि चेटी, विहिक्रोद्रवा दलइ।

८८ सहस्र ऋषि पर्व पाणी भरइ, ३३ कोडि देव उलगइ आस्थानि इंद्रमाली।

ब्रह्मा पुरोहित पणउ करइ, भृगरी ति आचमन दिइ।
जीमूत ऋषि छोरु खेलावइ, कामदेव कटारउ वधावइ।
वैश्वानर वस्त्र पखालइ, कार्त्तिकेय तलारउँ करइ।
चामुडा चाउरि संचारइ, विणायक गादह चारइ।
अनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ।
इसिउ त्रिभुवन सल्ल, महामल्ल, राणउ रावण। १-४ (स० १)

२८ राम-वर्णन

यथा क्षीर माहि गोक्षीर, जल माहि गंगानीर।
पट्ट सूत्र माही हीर, वस्त्र माही चीर।
अलंकार माहि चूडामणि, ज्योतिषी माहि निशामणि।
अश्व मांहि पच वल्लभ किशोर, नृत्य कलावंत माहि मोर।
गज माहि ऐरावण, दैत्य माहि रावण।
वन माहि नंदन, काष्ठ माहि चंदन।
तेजस्वी माहि आदित्य, साहसी माहि विक्रमादित्य।
वाजित्र माहि भभा, स्त्री माहि रभा।
सुगंध माहि कस्तूरी, वस्तू माहि तेजमतूरी।
पुण्य श्लोक माहि नल, पुष्प माहि सहस्र-दल-कमल।
सत्यवादी मांहि धर्म्मपुत्र, ज्ञानी माहि ज्ञातपुत्र।
बाण कला माहि अर्जुन, सूर माहि सहस्रार्जुन।
उपगारी माहि जीमूतवाहन, देव माहि मेघवाहन।
शीलवंत माहि नारद, रसायण माहि पारद।
दक्ष मांहि सहस्र्मार, भोगेश्वर माहि कृष्णावतार।

दातार माहि कर्ण, धातु माहि सुवर्ण ।
देव माहि अरिहंत, ऋतु माहि वसंत ।
भोगांग माहि नारी, क्रीडांग माहि सारी ।
धान्य माहि चोख, सुख माहि मोक्ष ।
नाग माहि धरण, मंत्र माहि परमेष्ठि स्मरण ।
पक्षी माहि हंस, भूषण माहि अवतंस ।
शास्त्र माहि गीता, स्त्री माहि सीता ।
रूपवंत माहि काम, तिम पूर्वोक्त गुणोपेत न्यायवन्त श्री राम ।

२९ सीता

प्रधान, सर्व गुण निधान । भर्त्तारनी भक्त, धर्म नइ विषइ रक्त ।
राम नइ प्रेमपात्र, सुंदर गात्र । शील गुल विभूषित, सर्वथा अदूषित ।
कमल नेत्र, पुण्यखेत्र, । जेहनी मीठी वाणी, सगले जाणी ।
रूपवन्त माहि वखाणी, घणु स्यू इंद्राणी, पणि जे आगइ आणइपाणी ।

(सू०)

३० दशार्णभद्र सवारी (१)

महा गहगहाटि हाटि हाटि गूडी ऊभवी, विविध वदन माल शोभी ।
विचित्र वर्ण संपूर्ण उल्लोच ताब्या, मनोहर मंडप मांड्या ।
गृहि गृहि आरीसानी ओलि[1] झलकइ, कांचन तणी किंकिणी खलकइ ।
स्थानकि स्थानकि सुवर्णमय पूर्ण कलश श्रेणि चड़ावी ।
नीसरिणीनी ओलि मंडावी, कल्याण झल्लरी तडावी ।
पंचवर्ण पुष्प प्रकर भरी, अविद्ध मौक्तिक चत्रक पूरइ ।
कृष्णागरु धूपहडी मेल्हियइं, रंग नइ तरंगि रास खेलीयइ ।
शृंगार सार रस गाइयइ, वीणा वंशादि वादि वाईयइं ।
पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गुंहली दीधी ।
मोती तणा झूंबखा झूबाव्या, माहि पद्मराग पटल लंबाव्या ।
केलि ने स्तंभि तोरणि तिंग तिगाव्या, दुर्गंध ऊपजता राख्या ।
मण[2]पगाम कर्पूर लाख्या ।
केसर कुंकुं तणा छड़ा छांवडा नीपना, कमलिनी कमाल सपना ।
छत्र चामर गहगहइ, केतकी दल परिमल महमहइ ।

---

१ उलि २ मण गमे (गने)

इम सर्व नगर सश्रीक करी, सर्वांग भूषण धरी ।
हस्ति राजाधिरूढ, प्रतापि प्रौढ ।
पाखलि लाख खाडा तणउ भडिवाउ, मंडलीक तणउ समवाउ ।
गजेंद्रनी घटा, घोडानाथाट, पायक ना पहट ।
रथ तणी रामति, मेघाडम्बर, छत्र नउ[1] आडंबरु ।
सीकिरि तणा झमाल, अलब[2] तणा डमाल ।
भेरि तणे भाकारि[3], झल्लरी तणो झात्कारि ।
शंख तणो ऊंकारि, तिविल तणो दोंकारि, मादल तणो धोंकारी ।
ढोल तणो ढमढमाटि, पटहने गुमगमाटि ।
रणतूर ने रणरणाटि, घोडा तणा हींसाटि ।
गजेंद्र ने गड़गडाटि, राजा श्री दशार्णभद्र चालिउ । (स० १)

३१ राज-यश

जिसिउ चंद्रमडल, जिसउ स्फटिक कोमल[1] ।
जिसउ क्षीरसमुद्र[1] जलु, जिसउ हिमाचलु ।
जिसउ विकसित केतकी दलु, जिसिउ प्रधान मोतीहारु[3] ।
जिसउ शेषफणा संभारु[4], जिसउ कामिनी कटाक्ष निकरु ।
जिसउ कास कुसुम प्रकर, जिसउ डिंडीरु ।
जिसउ गोक्षीरु, जिसउ गंगा तरंग पूर[5] ।
तिसिउ महाराय यशः पूर ।

३२ राजा शोभा उपमा

सभा माहि राजा बइठा थको सोभइ छै ते केहवो—
अक्षर माहि जिम ओंकार, मंत्र माहि ह्रींकार ।
गंधर्व माहि तुंबर, वृक्ष माहि सुरतरु ।

---

१ तराब २ अलवा ३ आकारि ।

पाठान्तर—

१ क्षीरार्णव २ जिस्यउ शरदभ्र जलु ३ जिसउ मल्लिका कुसुम प्राग्भारु ४ जिस्यउ हर हास्य प्रसारु ५ जिस्यउ कास्य कुसुम निकरु ।

—१ जैसलमेर प्रति से
२ पुण्यविजयजी अपूर्ण प्रति से

(१) स्फटिकोपल

—पुण्य विजयजी अपूर्ण प्रति से

सुगध माहि जिम कपूर, ओत्सव माहि जिम तूर।
वस्त्र माहि जिम चीर,...
वाजित माहि जिम भंभा, स्त्री माहि जिम रभा।
शास्त्र माहि जिम गीता, सती माहि जिम सीता।
देव माहि जिम इद्र, ग्रहा माहि जिम चद्र।
द्वीप माहि जिम जबूद्वीप, प्रदीप माहि जिम रत्न प्रदीप।
तिम सर्व छत्रीस राजकुली माहि राजा वइठो सोभै छइ॥

३० राजा राज-वाटिका गमन

राजा राज वाटिका चालिउ, गजेन्द्र चडिउ[1]।
पाखती अगरक्षक तणी ओलि, मडलीक नइ[2] परिवारि।
पताका लहलहती[3], अजालवि[4] झलकतइं।
मेवाडवरि, छत्र तणइ आडंबरि।
सीकरि तणइ झमालि, सुखासण नइ दडवडाटि[5]।
घोड़ा तणइ थाटि[6], पायक तणी पहटि।
रथ तणइ चीत्कारि, भट्ट[7] बदी तणइ जयजयारवि[8]॥ ६१॥ (स० १)

३१ राज्य सुख

जीह नइ राज्य इसिउ सुख—
कुणहु सूता मुह न ऊघाडइ, पडिउं को न ऊपाड़इं।
आहा कोइ न बोलइ, ...
आज्ञा कोइ न लोपइ, पराई भूमि कोइ न चापइं।
चोर चरड का नाम को न जाणइ, आपणइ मनि शका कुणह न आणइं।
सोनूं उछालते हींडियइ॥ ६०॥ (स० १)

पाठान्तर—

(१) प्रलब सूंटादट, स्थूल दत मुसल
विपुल कुभस्थल चडिउ, ' (प्रथम पक्ति के पूर्व, विशेष)
(२) तणइ (३) फुरकती (४) अलवी (५) अड़मड (६) थाकि।
(७) भाट नगारी तणइ कड्वारि।
(८) राजा राज वाटिका चालिउ (विशेष)

—पुण्यविजयजी की अपूर्ण प्रति से

३२ राजा को आशीर्वाद

"अथ देसोत नै आसीस वचनिका" ।
काइम कव्वंध, विरद धजाव्रध ।
मोजा समंद, आचार इंद ।
दुरजोधण माण, अर्जुन बाण ।
भुजबली भीम, सूरति सींह ।
षट भाषा जाण, तप तेज भाण ।
विप्र गोपाल, लीला भोआल ।
वीराधिवीर, हेला हमीर ।
मधुकरि सुतन, कर्तव्य विक्रम ।
आसट्ठि हजार फोजारा भाजणहार, छह खंड खुरासाणरा विध्वंसणहार ।
मसती[1] हाथियारा आमोड़णहार, पतिसाह रा विन्नाण[2]हार ।
राजनि के हार,
अरी साल, केताइक साल ।
लख दीयण, जस लीयण ।
राजा के राजा, तप महाराजा ।
इति आसीस वचनम् ॥ (स० ३)

३३ पटराणी-वर्णन (१)

जिस्यो मोर तणो कलाप, तिस्यो केश कलाप ।
जिसी शोभा अष्टमी चंद्रमा, तिसी भाल चंगिमा ।
जिसी जोत्र मालिका, तिसी कर्ण पालिका ।
जिसी खंजरीट नी देह यष्टि, तिसी आकारि दृष्टि ।
जिसी पुष्प नलिका, तिसी नासिका ।
जिसा दर्पण तणा वलक, तिसा कपोल फलक ।
जिस्यो बिंबी फल, तिस्युं अधरोष्ट दल ।
जिसी दाडिम कली, तिसी दंतावली ।
जिस्यो सूकड़ि तणो घास, तिस्यउ मुखं तणोउ वास ।
तिस्यु मुख तणोउवास ।

पाठान्तर—

(१) मैमात हाथिनारा मारणहार (२) विनाटण, परगाहण ।

जिस्यू पूर्णिमा चंद्र नो अवतार, तिस्यु मुख तणो आकार।
जिस्यूं दक्षिणावर्च शंख नूं मंडल, तिस्यु कंठ कंदल।
जिसी कोमल मृणाल कदली, तिसी बाहु युगली।
जिस्या रक्त कमल, तिस्या चरण तल।
जिसी अशोक तणा दल तरली, तिसी अंगुली सरली।
जिसी पद्मराग मणि, तिसी नख तणी भुणी।
जिस्या मुकुलित सरोज, तिस्यो उरोज।
जिस्यु सिंह तणौ वाक, तिस्यु मध्य तणों लाक।
जिसी नील वर्ण तणी युक्ति। तिसी सामल रोम पक्ति।
जिस्युं गंभीर हुइ कूप, तिस्यू नाभि नु रूप।
जिस्यूं हाथिआनुं कुभस्थल, तिस्यू जघनस्थल।
जिस्यो केलि तणौ मध्य भाग, तिस्यु उरु तणौ सोभाग।
जिसी वृत्तानुपूर्व शुंड हस्ति तणी, तिसी शोभा जघा तणी।
जिस्या कूर्म तणा पृष्ट भाग, तिस्या उन्नत पाग।
जिस्यौ रक्त गेरु तणौ पराग, तिस्यौ तला तणौ राग।
जिस्यौ कमल तणौ विकास, तिस्यौ लोचन तणौ प्रकाश।
तथा विकसित वदन, शिखराकार रदन।
सुललित कर्ण, चपक वर्ण।
पीन स्तन, अकुटिल मन।
मुष्टिमेय मध्य, चतुःषष्ठि कला लब्ध मध्य।
कोमल कर, सुलक्षण धर
चक्राकार जघन, मत्त गज गमन। सुघटित चरण।
जेह तणी मुख चंद्रमा भामणुं कीजई, विकसित कमल नुं लुंछणु कीजई।

जेह तणी दृष्टि दृष्टिइं,··· ····· · ·· · ·· ····
निर्जित हरिणी वनवासि गई, कमलिनी जल दुर्ग रही।
खजरीट दृष्ट नष्ट चरई, वेडी समुद्र मांहि फरइ।
जेहनई स्तन सुवर्ण कलस प्रसादि चडाव्या,
चक्रवाक वियोगिआ भणाव्या। तुंबाहलूआथियां।
जेहना वर्ण आगलि सुवर्ण सामलउ। चापा फूल भामलउं।
हरिद्रामसि वर्ण। गोरोचन धूम वर्ण।
तथा। जेहना वचन रस आगलि साकर मउली, द्राख लींबोली।

मधु नीरस, दूध विरस।
अमृत खारु। अनेरुं। किस्युं उपमान विचारुं?
तथा। कत माधुर्य आगलि किंनरी मौन करइ गंधर्व गर्व परिहरइ।
सिद्ध कन्या कानओडइ, नाग कन्या हरख लोडइ।
रंभा सुरासक्त। तिलोत्तमा त्रिदिशानुरक्त।
अप्सरा निःप्रत्तर, लक्ष्मी अस्थिर।
सरस्वति हीन जाति लोपिणी, नागकन्या अवस्था रोगिणी।
विद्याधरी, यामिावनी।
ऋषि कन्या तपस्विनी, गंधर्वी गीत व्यसनिनि।
रति प्रीति अनगनी। कलत्र करेणु उपमा न दीजइ।
निरूपम चरित्र। इसी सुपरीक्षित दक्ष।
दाखि नालू, मिति मयालू, देण हारि दयालू।
सुललित, सुमलित।
न ह्रस्व, न दीर्घ, न कृश, न स्थूल।
न तोपाली। न रोगाली।
न हठीली, न गहिली।
अनुकिंतु सुपरीछणी। सु बूझणी।
विछूटणी सुमुखि, सउलखि।
सुजाणि। सुपरीआणी।
सुपरठी, भर्त्त, चित्त वइठी।
सइणी, गुहिणी। असिथिल, अकुटिल।
धर्म परा, नियम परा।
इसी सीलालंकारिणी, गुणानुरागिणी। कला संग्रह कारिणी।
विवेकवती, सौंदर्यवती।
लावण्यवती, पुण्यवती, आकृति मति देवी वर्त्तइ।
तिणीस्यूं राजा आनंद मय वर्त्तई ॥छ॥ (स० २)

३४—राणी-वर्णन (२)

ते राजा नैं अंतःपुर माहि प्रधान, गुण निधान।
भर्तार तणी भक्ति नैं विषै[१] महासावधान

पाठान्तर—

१—भक्ति निवेषद।

कमल लोचना इस्यै नामै वर्त्तै ॥ (स० ३)
तेराणि, सहिजैं मधुर वाणि ।
शीलवंत माहि वखाणी, गुणै करी सत्य जाणी ।
वणू किस्युं इंद्राणी, जे आगलि वहै पाणी ।
रहे घणै परिवारे, सखी अनेक प्रकारे । (स० ३)
लीलावती, पद्मावती, चद्रावती ।
चपकली, फूलकली, रामकली, गोकली, स्यामकली ।
हसी, सारसी, बगली ।
सुविधि प्रमुख इसि राजा नी स्त्री वर्णनं ॥ (स० ३)

३५—राणी-वर्णन (३)

सुवर्ण वर्ण, प्रलब कर्ण ।
सुकमाल हस्त, स्त्री गुणै लक्षणै करी प्रशस्त ।
कमल दल समान आखडी, माथै रतनमय राखडी ।
देवागना नी परै रूप रूडी, हाथै सुवर्ण मय चूडी ।
लखमी अवतार, हृदय कमल रुलै मोती नो नवसर हार ।
लंकाली कडि, कानै मोती जड़ित सुवर्णमय घडि ।
बोलै अमृत वाणि, अति सुजाणि ।
पंडित लोकै वखाणी, इसी मदनमजरी राणी ॥१४॥ (चि०)

३६—राणी-वर्णन (४)

रंभा जिम रूप सपन्न, पार्वती जिम निःसीम सौभाग्य लावण्य ।
अरुंधती जिम निजपति पद चरण निरत, धर्मरत ।
सीता जिम शीलालकार ।
बीज तणी चन्द्रकला जिम सर्व वन्दनीय, अति कमनीय ।
चक्रवाकी जिम निश्चय, अति प्रेम, करइ पुण्य ना नेम ।
आलापि करी कोकिलारूप, गति करि राजहसी स्वरूपु ।
विनय गुणि करी वेतसमय, मनि शुद्धि करीय गगोदक मय ।
इति राणी वर्णन ॥५८॥ (मु०)

३७—राज्ञी-वर्णन (५)

अद्भुत भाग्यवती, सौभाग्यवती ।
पट्ट प्रतिष्ठावती, सत्वानुष्ठान वती ।

निर्मल शीलवती, उज्वल गुण झलकती ।
लावण्य निधान, अंतःपुर प्रधान ।
निष्कलंक, अकृत पाप पंक ।
सुकर्तव्य सज्ज, सलज्ज ।
विदित कार्य, पूजिताचार्य ।
औचित्य चतुर ।
पाप कर्त्तव्य कातर, सकल लोक मातर ॥६०॥ (स० १)

३८—राज्ञी-वर्णन (६)

सर्व अंतेउरी माहि प्रधान, सर्व गुण निधान ।
लावण्य कूप, अति स्वरूप ।
भर्तार नी भक्त, धर्म नइ विषइ रक्त ।
सुंदर गात्र, राजा नइ प्रेम पात्र ।
सर्वथा अदूषित, शील गुणे भूपित ।
कमल नेत्र, पुण्य क्षेत्र ।
सत्य गुणि कसी, रूप गुण उर्वसी ।
सुवर्ण वर्णकांत, दीठइ आवइ देवांगना सभ्रांति ।
स्नेह कला रति, भारती सम मति ।
सौभाग्य हंस तलाइ, कनक चूड़ि मंडित कलाई ।
सदा सनूरी, कामदेव पूरी ।
त्रिभुवन तत्व माटी, अमृत बिंदु साटी ।
पुण्यतणी वाटी, अतिरंग दाटी ।
रूपइं रति निर्घाटी, न करइं राटी ।
लावक, द्रावक, सावक ।
ऐरावण कुंभ विभ्रमाकार स्तन, त्रस्त हरणी लोचन ।
मदन मुद्रावतार, प्रलंबित हार ।
क्षीण कटि, अति सुघट ।
जेहनी मीठी वाणी, सगलै जाणी ।
रूपवंत माहि अधिकी वखाणी, धणूंस्युं इंद्राणी,
'धीर' कहइ जे आगइ घडउ ले आणइ पाणी ॥
इति राज्ञी वर्णन ॥—कु०

३९ कुमार वर्णन (१)

असम साहसैक मल्ल, वैरि हृदय सल्लु ।
अग्र प्रहारि घाडी तिलकु, त्रैलोक्य कटकु ।
कृतान्त मूर्त्ति, सिंह स्फूर्त्ति ।
इसउ दुर्दान्त कुमरु ॥७६॥ (मु०)

४० कुमार (२)

अति प्रौढ, यौवनाधिरूढ ।
स्त्री जन नइ विश्राम भूमि, निरवद्य विद्या लास्य रंगभूमि ।
सर्वांगीण शुभकारु, राज्य लक्ष्मी श्रृंगार हारु ।
मकरध्वजावतार, एवं कुमार ॥५६॥ (मु०)

४१ राजकुमार (३)

तयोश्च पुत्रो जनि । यौवनं प्राप्तः सन् ।
जिस्यउ चद्रमा नु बिंब कोरिउ हुइ । जिस्यउ अमृत कुण्ड न्हाई होई ।
जिस्यउ कमल तणउ कोश आवरिउ हुइ । जिस्यउ कि मोहनवल्लि प्रसविउ हुइ ।
किं सौभाग्य मजरी हू तु समव्यु हुइ । कोदड तणउ फूल हरु ।
किं काति तणी कुल भीति । कि ए रूप-प्रतिछ्दक तणी मूलगी रीति ।
किं मयण तणु मूल । किं सर्व रामणीयक तणउ अवचूल ।
इस्यु नयनानंद दाईउ । नेत्रामृत आविउ ।
सुललित सुघट्टित ।
सुवासु सोहग निवास ।
अद्वितीय रूप, लावण्यामृत कूप ।
सर्वजन मोहक, मन नइ अद्रोहक ।
[सुकुमाल, सु विशाल ।] सुविचार,
[जोअण हार । तणा मन विंहसइ, दृष्टि जाइ अगि पइसिइ ।]
पाय थभीइ, वाणी निरुभीइं ।
[सयल रोमंचिइ । आत्मा अपूर्व रस सींचिइ ।]
[जाणे त्रीजो कामावतार, जाणेत्रीजु अश्विनिकुमार ।]
जेह तणइ नाम श्रवण लोक काकुली गीत निवारइँ ।
दृष्टि प्रसारि काय कथा मूकइ, कान उरडी ढूकइ ।

तृषित पाणी न पीइं । भूखा भोजन न लीइ ।
इस्यु सर्वजन वल्लभ, देव दुर्लभ ।
सलूणउ सदाखिणउ ।
मित्र वत्सल, स्वजन वत्सल । इस्यउ राजकुमार शोभइ ॥छ॥
इति नगर राजादि वर्णन स्वरूपमिदं ॥छ॥ (स० २)

४२ राजकुमार (४)

अति लखणवत, गाढौ संत ।
सकल शास्त्र भण्डार, राजवंश शृंगार ।
रूपइ करि जयंत अवतार, विवेक सुविचार ।
पिता माता भक्त, लक्षण संयुक्त ।
सकल विद्या निवास, करै बहुत्तरि कला अभ्यास ।
बत्रीस[1] लक्षण लक्षित शरीर, पहिरणि निर्मल चीर ।
जेइ नी लोक नै गाढी हीर, संग्रामे वीर धीर ।
चंपक वर्ण अंग, अति सुचंग ।
नश्चल रण रंग, न करै मंत्री भंग ।
अति दातार, प्रताप अपार ।
मनोहार, याचकजन साधार ।
इस्यौ राजकुमार ॥ १६ (चि०)

४३ कुमार (५)

प्रतिज्ञा सूरू, अवष्टंभ कैलासु ।
राजपुत्र पतल्लिका, बंदि कोलाहलु ।
लोकरक्षा प्राकारू, माहात्म्य सारु ।
परनारी सहोदरु, इसउ कुमरु ।
पायक पहट्टु, ऊठवणि सुहडु ।
खांडा समुद्दु, त्राण सडवडु ।
सेल धूसरु, भाला डंबरु ।
रिण महाधरु, अतिशय दुद्धरु ।
इसउ कुमरु । (पु० अ०)

---

१ छत्रीय

४४ राजपुत्र शिक्षा–

राज्याभिषेक पुत्र शिक्षा।
वत्सं प्रजासुखि पालेवि, अन्याय वाट टालेवी।
भलउ न्याय आदरवउ, जसवाउ उपार्जेवउ।
चिर परिचितं वार ही परहीन करेवी, कुणाहि विश्वास न जाण विउ[1]।
अकुलीन पसाउ निसेधववउ, वेजाइ ससर्ग वर्जेवउ।
महाजन समानेवउ, मडलीक प्रति उचित्य वर्त्तेवउं।
सीमाला सवेऊस सत्य[2] राखेवा, लोक रूड़ इ नीति मार्ग दाखिवा।
चोर चरड निग्रहेवा, पायक प्रति यथा योग्य ग्रास देवा।
किं बहुना राज्य भलउं करिवु। (१५५) (स० १)

४५ राज्य के अंग–

करि, तुरग, रथ, पायक, चतुरगसेना, भाडागार, कोष्टागार, गढ।
सप्ताग राज्य लक्ष्मी॥ १२६ (स० १)

४६ राजसभा (१)

गणनायक, दण्डनायक। सेगरणा, वेगरणा। देवगरणा, यमगरणा। सामंत, महासामंत। मडलीक, महामंडलीक,। चोहट्टीया, मुकुट बन्ध-संधिपाल सधि विग्रही[2], आमात्य, कानुगा, कोटवाल, सार्थवाह, महाजन, अंगरक्षक, पुरोहित[3], नृत्यनायक, विहीवायक। दण्डधर, खङ्गधर।

वाणहीधर, छत्तधर, चामरधर, छत्तधर, दीवीधर।

प्रतिहार, सेनपाल, तन्नपाल, अंगमर्दक, मीठाबोला, साचाबोला[4], कथाबोला, गुणबोला, समस्याबोला।

साहित्य बधक, लक्षण बधक, अलकार बंधक, नाटक बधक।

यंत्रवादी, मत्रवादी, तंत्रवादी, तर्कवादी एहवी सभाछै।

---

१. जाणवउ २ सता

पाठान्तर

१ पारिविग्रही २ बहीनायक ३ पढवटियात, कपटायत ताकतमाली (ढाकढमाली) इंद्रजाली धर्नवादी, धातु वादी–

४ सहस्रबोला विशेषनाम, समार्श्रृंगार से।

४७ राजसभा (२)

युवराज, मत्री, महामंत्री । गणनायक, दण्डनायक, तत्रपाल । माडविक, कौडम्बिक, श्रेष्ठि, सार्थवाह, पडित सभा, ज्योतिषक, प्रमुख राजसभा । (पु० श्र०)

४८ राजसभा (३)

राजराजेश्वर, मण्डलेश्वर ।
सामत मंत्रि, महामत्री ।
चौरासीकट नायकु, सेनापति प्रतिहारु, उपतारु ।
साहणिया, मसूरिया, दीवटिया, द्वारवट्टि, दौवारिका ।
सधिविग्रही, भाडारिक, महाजनिकु, श्रेष्ठि सार्थवाह, सभ्यसभापति, एव राज-लोकु ॥ १०६ ॥ (मु०)

४९ राज सभा वर्णन (४)

श्रीगरणा वयगरणा, धर्माधिकारणा ।
मंत्रि,महामंत्रि, मंडलेश्वर ।
सविधान, प्रधान, नायक, दण्डनायक
संधिविग्रही, श्मसाहणी । सुविचारु, प्रतीहार
श्रा (र) क्षक, जद्वारिका कथक, लेखक ।
गायण, वायण । वीणाकार, वसकार । ज्योतिष्की
वैद्य, महावैद्य । गजवैद्य, अश्ववैद्य ।
मान्त्रिक, तान्त्रिक । कुतगीया, काठीया । प्रखर, सत्पात्र, नट, विट ।
इसी राजसभा ॥६॥ (मु०)

५० राज सभा (१)

अनेक गणनायक, दंडनायक, राजेश्वर, तलवर, माडविक, कौटविक । मंत्री, महाम- , गणक, दौवारिक । आमात्य, चेटक, पीठमर्दक, श्री गरणा, वयगरणा, श्रेष्ठि, सार्थवाह, दूत, संधिपाल, प्रतीहार, पुरोहित, थईयायत, सेनानी । अनेकि संधिविग्रही, त्रिधरणी, चउधरणी । पंचउली, खट्तर्क विदुर, सात सेजवाल, आट ग्रह गण जोसी, नव पडिहार, दस प्रति सुवर्णकार, इग्यारा सामत वार महा मडलेश्वर, तेर पसाइता, चउद चडियाता, पनर पडतार, सोल महा मताणी, सतर आडणीया, अठार झूझार, अगुणीस माणिक्य विनाणी, वीस रत्न पारिखी । परिवारि परिवारिउ राउ सभा बइठउ ॥५८॥ (स० १) ।

५१ राज सभा-(६)

सभा माहि रामण काचढालिउ[1], कुकमतणा त्रडा छात्रडा दीधा ।
कस्तूरिका ना स्तनक पडिया, श्री खड्डुतणी गूंहली दीधी ।
काचइ कपूरि स्वस्तिक पूरिया, अविद्ध मोती तणा चउक पूरिया ।
परवालां तणा नंदावर्त्त रचिया, अतरातरा पुष्प प्रकर भरिया ।
कृष्णागरु ऊखेविउ, पचवर्ण पट्टकूल तणा उल्लोच ताडिया ।
मोतीतणी श्रेणि त्रिसरी चउसरी लबावी ।
मोर पीछ तणे वीजंणे वाउ वींजियइ । ५६ । (स० १)

५२ जवनिका

राजहस, मोर, सभा, आतपत्र-केतु, भवन, वृक्ष, अत्रर, नदी, पुष्करनी, जलनिधि, रत्न, सरोवर, वाडि प्रमुख लिखीते रूप ।
एवं विधि आश्चर्य विराजमान ।

५३ मंत्री वर्णन (१)

सरस्वती कठाभरण, राज्य श्री अलकरण ।
विचार चतुर्मुख, कृत सर्वजन सुख ।
लघुभोज, अत्यत ओज ।
कूर्चाल सरस्वती, साक्षाद्भारती ।
कलिकाल कल्पवृक्षावतार, समस्या सत्रागार ।
खाडेराय, करइ न्याय ।
षड दर्शन पारिजात, सर्व राजकुली विख्यात ।
समग्र[2] ग्राम नगर चैत्य पूजा प्रवर्त्तक, अन्याय निवर्त्तक ।
सकल ज्ञाति[3] अलकार, सुविचार, उदार, स्फार, शृङ्गार ।
सचिव चक्र चूडामणि, प्रताप दिनमणि ।
सरस्वती पुत्र, आचरण पवित्र ।
दातार चक्रवर्त्ति, अपहृत जन अर्त्ति ।
बुद्धिइ अभयकुमार, रूपि कदर्पावतार ।
चतुरिमा चाणक्य, मन्त्रिगण माणक्य ।
सदैवोत्साह, ज्ञाति वराह ।
ज्ञाति गोपाल, दूबला मुसाल ।
शत्रुवश क्षय कारक, वैरिराज मान मर्दक[4] ।

---

१. काव २ सन्मार्ग प्रवर्तक ३ ज्ञान ४ सारक

मज्ञा जैन, अप्रतिहत सैन ।
जिनधर्म धरा धुरधर । भोग पुरदर ।
सर्वज्ञ शासन प्रभावक, जिन आज्ञा प्रतिपालक ।
कुल क्रमागत, सदाचार रत ।
लीला ललित गर्भेश्वर । साक्षात् लक्ष्मी वर[1] ।
जग ज्येष्ठ, अति श्रेष्ठ ।
चतुर्बुद्धि निधान, एवं[2] विध प्रधान । (सु०)

५४ मंत्री (२)

चाणक्य जिम बुद्धि निधान, राज्य भार स्वीकार मूल स्तभायमान ।
चतुरशीति मुद्रा व्यापार परिपालन दक्ष, सकल लोक कृत रक्ष ।
अभयकुमारु जिम राज्य पालनोपाय सावधानु,
बृहस्पति जिम निखिल नीति-शास्त्र जाणु ।
एवं विधु मत्री ॥ ६० । (मु०)
सरीर सकलापु, स्नेहाग आलापु ।
आडंबर मूल, रिपु जन सिरि सूल ।
उपरोधि नमइ, सर्व जनी कउ वीनवइ ।
समय कहावइ, असमय रहावइ ।
कूड नी सारइ, आलू आरु वारइ ।
प्रयोजन पृच्छकु, चालतउ उच्छकु ॥ ६१ ॥ (मु०)

५५ मंत्रि वर्णन (३)

चाणक्य जिम बुद्धि निधान, अभयकुमार जिम राज्य राखिवा सावधान ।
बृहस्पति जिम निखिल नीति शास्त्राधिगत परमार्थ,
चउरासी मुख मुद्रा मथन दक्ष । सकल लोक कृत रक्ष ।
राजार्थ प्रजार्थ ।स्वार्थ कारक । अन्याय निवारक ।
एवं विध महामात्य ॥ छ ॥ (स० २)

५६ महामात्य वर्णन (४)

चतुर्बुद्धि निधानु, महा प्रधानु ।
कुल क्रमागत, सदारत ।
नीति शास्त्रिकरी, सगुण धीर ।

---

१. नरेश्वर २ स्वामिधर्म सावधान (पाठ यहाँ अधिक हैं ।)

अलुब्ध, प्रबुद्ध ।
सर्व राज्य उद्वहन धुरंधरु, पुरवरु ।
लीला ललित गर्भेश्वरु, ज्ञाने करि साक्षात् लक्ष्मीवरु ।
जग ज्येष्ट, अति श्रेष्ट ।
सुविचारु, उदारु ।
एवं विध महामात्य ॥ ३ ॥ (मु०)

५७ मंत्रीश्वर (५)

अच्छेद्य, अभेद्य, गुहीर, गभीर ।
आकृतिमतु, कलावन्तु ।
मर्मज्ञ, उचितज्ञ, सर्वार्थ करण समर्थ ।
उद्यम प्रधान, सर्वमहिमा निधान ।
बुद्धिमय रहर, जग झपणु ।
राजार्थ स्वार्थ, लोकार्थकारक, न्यायशास्त्र तारक ।
गभीर धीर स्थैर्य मदर, गुणग्राम सुदर ।
षड् दर्शन दत्ताधार, निरीह, निस्पृह, योगीन्द्रावतार । अमात्य ५६ (स० १)

५८ मंत्री विरुदानि (६)

सुरताण सुभाषत, दीवाण दीपक ।
अश्वपति, नरपति, गजपति, रायस्थापनाचार्य ।
राज सभालकार, राजसूत्र सोधन सूत्राधार ।
रायसाधार, रायवंटी छोड ।
राय वालेसर, मर्यादा मनोहर ।
परनारि सहोदर, कलिकाल निकलंक ।
विचार चतुर्मुख, रूपरेखा मकरध्वज ।
वज्राक भालस्थल, चतुः चिन्तामणिः ।
वाचा अविचल, वालधवल ।
शील गंगाजल, गोत्र वाराह ।
उभय कुल विशुद्ध, एकोत्तर शत कुलोद्योतकारक ।
उभय कुलपक्ष निर्मल, राजहसावतार ।
हर्षवदन, सत्यवाचा युधिष्ठिर । इत्यादि मंत्री विरुदानि । (स० ४)

५९ प्रतिहार

शरीरि सकलाप, स्नेहल आलाप।
आडंबर मूल, रिपुजन शिर शूल।
अपरोधि मनइ, सर्वनाकुल वीनवइ।
समय कहावइ, असमय रहावइ।
कोप वीसारइ, अलू आरु वारइ।
गुत आदेश प्रयोजन पृच्छक, चालतोच्छेक।
एव विध प्रतिहार ॥ छ ॥ (स० २)

६० मंडलीक

सग्राम सीहु, रिण सीहु, महेन्द्रसीहु।
सग्राम विक्रम, नरविक्रम, रिण विक्रम।
सग्राम मल्ल, रिणमल्ल, भवनमल्ल।
पृथ्वीमल्ल, आसा मडलीकः। (पु० अ०)

६१ खड़ायत

ठाकर भक्त, वाड सक्त।
सयरि त्राणयनु, पडवइ प्राण इतु।
हाथ वासइ।
वाह खाडा तणी काल, आत्रणी अकल।
आगलीउ साटकार, भाट तणो जय-जय कार।
फरड उडवइ, मायउं मीडवइ।
पयसी ओलावइ, सामहउ चलावइ।
धाइ गाजइ, खाघ भाजइ।
एव विध खडायत ॥ छ ॥ (स० २)

६२ राज सेवक

तसु राय तणइ आसन्न ओलगा पसायता पायक आन छइ।
कवहणइ चउठ चयाल वृत्ति पलइ छइ।
कवहणइ सोलसइ (वृत्ति) पलइ छइ।
कवहणइ वीर मुठियल (वृत्ति) पलइ छइ।
कवहणइ वीर वलकु (वृत्ति) पलइ छइ।
कवहणइ सासणबद्ध गामु (वृत्ति) पलइ छइ।

कवहणइ सुखासण (वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ चउखंडी सीकरि । वृत्ति) पलइ छइ ।
कवहणइ सुवर्णमय कलस पलइ छइ ।
कवहणइ धज बिन्दु पलइ छइ ।
कवहणइ पताका० ,,
कवहणइ घंटा० ,,
कवहणइ चमर०
"कवहणइ आगच्छीता शृंगार०"।
कवहणइ भुंजाई रुप्यमय स्थालु प०
कवहणइ शालिउ कूरु । ,,
कवहणइ रू ..... (पु० अ०) (पत्राक ५ वा अप्राप्त)

६३ सुभट

साहण समुद्रु, वयरि घरट्टु ।
विपक्ष कंटकु, चहुच्छ मल्लु ।
धाडी तिलकु, दगदेक वीर ।
इसा सुभट । (पु० अ०)

६४ गढ (१)

गढु गरुउ, अनइ विसमउ,
जसु तणा पाइया पातालि पइठा, भीति गगनि गई,
महागज इसा कोठा,

गरुई पोलि, निवड कपाट, लोहमइ भोगल, ऊपरि कसीसा तणी पंक्ति, विद्याहरा तणी पद्धति, यंत्र तणी श्रेणि, ढीकुली तणी परंपरा, गढ बाहरि वा कवला मणा तणउदुर्ग्ग, खाई तगउ दुर्ग्ग, जल तणउ दुर्ग्ग, थल तणउ दुर्ग्ग,

अनइ परचक्र तणउ प्रवेश नहीं, हाथिया ढोह नहीं, पाखरिया रहण नहीं, सूयण थानक नहीं, पायल वाह नहीं, नीसरणी ठाउ नहीं, भेद सभावना नहीं, जिसउ वज्र खटितु, विश्वकर्मा निर्मापितु हुइ ।

किं बहुना ! पराक्रम असाध्यु,
बुद्धि मंतह अयोग्य, देवह्वइ असाध्यु इसउ गढु । (पु० अ०)

६५ गढ (२)

किलास जिम उंचउ । प्रधान प्रतोली द्वार । सघर कपाट । लोह मय भोगल विजय हरी तणी बरज ।

कोठा तणी पद्धति यत्र तणी श्रेणी । ढीकली तणी परंपग ।
खाई गढ़ । पाणी गढ़ । कटक तणउ गढ ।
वैरी तणो प्रवेश नहीं । हाथीआ तणो ढो नहीं ।
पाखरीआ रहण नहीं । भेद संभावना नहीं ।
जिस्यु व¯ मय घडिउ हुइ ।
घणु किस्यु । ग्रेक दा॰
देवता रहि अगम्य । गढ प्राकार ॥ छ ॥ (स० २)

६६ गढ़ (३)

गढ़ गरूअउ अनइ विसमउ ।
जीह तणउ पायउ पातालि पइठउ, पर्वत नइं शृंगि चइठउ ।
उच्चैस्तर पोलि, लोहमयकपाट, महाकाय भोगल ।
विजहारी तणी पद्धति, यत्र तणी श्रेणी ।
कुली तणी परम्परा, जल निभृत खाई तणउ दुर्ग ।
पर प्रवेश नहीं, हाथिया ढोउ नहीं, पाखरिया रहण नहीं ।
नीसरणी ठाउ नहीं, भेद सम्भावन नहीं ।
जिसिउ वज्र घटित विश्वाकर्मा निर्मापित ।
किं वहुना देवइ हुइं अगम्य ॥५५ (स६ १)

६७ आस्थान-मंडप (१)

आस्थान मंडप, क्षोभ ऊपनउ,
कवणु सुभट सग्राम रसिक हूतउ, भुंइ आहणिउ, ऊठइ छइ,
केऊ घसइ छइ, केउ प्रलयकालु समान उंकार मेल्हइ छइ,
अट्टहास्यु नीपजावइ छइ, केऊ वक्षस्थला परामारश छइ,
केऊ खवा फुरकावइ छइ, के भुजाडडनिरहालइ छइं,
केऊ भ्रकुटि ताडइ छइ, केऊ नेत्र आरक्त करइछइ,
केऊ खडगि दृष्टि निवेसइ छइ, केऊ कटारइ हाथु घालइ छइ,
इणिपरि आस्थानु क्षुभियउ । (पु० अ०)

६८ आस्थान सभा (२)

पुरोहित । सेनापति । तंत्रपाल । दड नायक
श्री गरणा । वइगरणा । मध्यगरणा ।
देवगरणा । आखंडली । धर्माधिकरणी ।

कानडा। महीश्रड़ा। सोरठा। मरहठा। राठउड़। बारहट। भाड़िश्रा।
भयाड़िश्रा। जालंधर। काश्मीर। मालविश्रा। प्रमुख सुभट।
कोटि। संकट। श्रेव विध लोक अलंकृत अस्थान सभा। (स० २)

६९ गज वर्णन (१)

सिंघलद्वीप तणा, अंगमइ गुण घणा।
भद्रजातीक प्रचंड, उल्ललित सुंडा-डंड।
पर्वत समान , जलधरवान, चपल कान।
मदजलभूरता आलिकरता, अतुल बल उच्छृखल गलगर्जित करता।
सप्ताग प्रतिष्ठित, प्रमत्त, मदोन्मत्त।
प्रचंड उदंडी विंध्याचल, समान,
कज्जलवान।
कोपारुण, जाणे साक्षात ऐरावण, अविचल दंतूसल।
छूटा हूंता पर्वत प्राय गढ़ पाडइ, कुणातिह स्युं पइसइ आखाडइ।
कुंभस्थलि सिंदुर नउ पूर, अनइ ऊपरि कर्पूर।
सुवर्णमय साकलि करी अलकरया, गजवरत्रा पाखर्या,
च्यारि शय चौयालिस लक्षणे अनुसर्या।
रूप्यमय घंटानाद, जेहना जगत्र सगलइ जयवाद।
पगिघोर, करइ सोर, श्रम करता दीसइ जाणे लक्ष्मीना क्रीडा-मोर।
जि वारइ कुंडलाकारि रमइ, ति वारइ इस्यु जाणीयइ जाणे पृथ्वी पद्मिनी ऊपरि भमरड़ा भमइ।
इस्या काइ हलूयइ फिरइ, परीक्षकना हृदय माहि सचरइ।
सारसी करता, जय श्री बरता।
इस्या अनेक प्रवेक, उत्तुंग मतंग। सू

७० गज वर्णन (२)

सप्ताग प्रतिष्ठित, सुंडा डड परिकलित।
सुगंध मदजल वासित, गजेन्द्र गु······।
······ विंध्याचल समान, कज्जल वान।
चपला कान, लावण्य विधान।
प्रमत्त, मदोन्मत्त।
तेजकरी प्रचंड, साख्यात मार्तंड।
कोपारुण, जाणे ऐरावण।

परमित मध्यदेश, स्थूलतम पश्चिम प्रदेश ।
स्निग्ध रोम राजी विराजमान, अति प्रधान ।
चंद्रावर्त्त भद्रावर्त्त, प्रशस्ते समस्तावर्त्त परिकलित शरीर, सग्राम शौंडीर ।
झाप, टाप । राग, वाग । अर्द्ध फल गति विशेषि । प्रवीण, धुरीण[१] ।
चतुः शत लक्षण समवाय, पर्वतोत्तुंग काय ।
समुद्र कल्लोल जिम चचल, सर्वत्र प्राजल ।
वेरि करी पवनोपमान, उच्चैश्रवा समान ।
असमान रूप विलास, सलील चरण विन्यास ।
शालहोत्रादि शास्त्र प्रणीत, जाणइ असवार चीत ।
मान संस्थान सपन्न, प्रशस्य देशोत्पन्न ।
राज्याभ्युदय करण, सदा जय लक्ष्मीशरण[२] ।
रेवत देवताधिष्ठित, पंचधारादिकाश्व[३] ।
गति समाश्रित, सुवर्ण सकला विभूषित[४] ।

किस्या एक ते[५]—हयाणा, भयाणा, कूदणा[६], कास्मीरा, हयठाणा, पइठाणा, उत्तरपथा, पाणीपथा[७], ताजा, तेजी, तोरका, काछेला, कान्नोजा, भाडेजा ।

क्षेत्रशुद्ध, प्रमाण शुद्ध, चंपल, ऊँचासणा ।
जोइउ सहइ, वपूकार्‌या रहइ, वाको द्रेठी, सभर पूठि ।
छोटे काने, सूवे वाने । मुहि रूधा, आसणि सूधा ।
हसमसत, हय हेषारवि अंबर वधिर करता ।
सूरवीर साहसी, आम्हा साम्हा मिलइ धसि ।

कालूया, किराडिया, किहाडा, नीलडा, कविला, धूसरा, माकडा, हांसला, जांबूया, दोरीया, बोरीया, शालिहोत्र शास्त्र लक्षण प्रणीत ।

---

१ विराजित जीण । २. प्रधान चरण । ३ देवाधिष्ठित रेवत, पंचम धारावत । ४ नृत्य कलानी विषइ उचित, ५ हिव, तेहना, देश, कहियइ सुविशेष । ६. कू कणा ७ कन्नोजा कुहका, कावेला, मुकराणी, खुरसाणी, सतेजा, खरिंगा, तिलगा एहवा तुरगा ।
ते केहवा, घणूं वखाणियइ जेहवा—

दीलइ घणा । दृष्टचोर, करइसोर । पीलडा, रातडा ।
कनोजडा, भागउड़ा, मेघ वरणिया, हिरणिया, अगंजिया ।

हासला, वासला, चलइ उछाछला । अ बुआ—(कु०) में विशेष ।
+ प्रति (मु०) का पाठांतर—देशसम्पन्न, कालाभ्युदय कारण, अतिमारण ।
सदाजयवाद, लक्ष्मी संपन्ना, क्षेप विक्षिप्त ।

ससइ, धसइ, साटि पइसइ । जुडइ, दुडइं ।
इस्या अनेक हृदयंगम, तुरंगम । सू०

७७ अश्व-वर्णन (२)

परिमित मध्य प्रदेश, विशोष्टोभय प्रदेश ।
निष्ठुर खुरो श्वात भूमंडल, निर्मांसल मुख मंडल ।
स्तोकतर कर्ण युगल, विशाल वक्षस्थल ।
हेषारव वधिरित भुवनोदर, मनोहर दर्पोद्धुर ।
सग्राम सौंडीर, समुद्र कल्लोल चंचल । ४६ (स० १)

७८ अश्व-वर्णन (३)

कांछी, कंबोजा, कलुजा, कश्मीरा, कसेला, कात्तरा, कमेत, काला, पंचाला, अणियाला, हंसाला, हरियाला, हयाणा, भयाणा, पतंगा, उत्तंगा, उनगा, जलगा, पाणीपंथा, उत्तरपंथा, ऊर्धपंथा, अधोपथा, पइठणा, तेजाला ।
लोहधार न मुड़इ, ऊँचै आसण भडइ ।

धूंसरा, भूसरा, माकडा, वाकडा, राकडा, खुरसाणी, तुरकी, नीलड़ा, पीलडा, धोलडा, जलत्राधी, भरेजा, खेचरा, खेतरा खरा (त), नासै परा, आखड़ता अनिहंता, रिधाला, जुवाधिया । (स० ३)

७९ अश्व-वर्णन (४)

तेजी उरंडा । गह्वर तोरा । खुरासाणा । भयाणा । हयाणा । रोहवाल । रुडमाल । तोरकामंद कोरा । पीलुआ । भादिजा । दक्षिण पंथा । पाणी पथा । माकड । नीलड़ा । कीहाडा । गंगाजल । सिंधूआ । पारकरा । पारसीका भद्रेश्वरा । कावूआ । इसी घोडा जाति । पु०

८० अश्व-वर्णन (५)

अथ अश्व लक्षणानि
नरागुलानि द्वात्रिंशात् । मुख भाल त्रयोदश ।
अष्टाङ्गुल शिरः कर्णौ । षडगुलमितौ मतौ ॥ १ ॥
चतुर्विंशत्यंगुलानि । हयस्य हृदय तथा ।
अशीतिश्च समुछ्रये । परिधिस्त्रिगुणो भवेत् ॥ २ ॥
एतत्प्रमाणसंयुक्ता । ये भवति तुरंगमाः ।
राज्यवृद्धिमहीपस्य । कुर्वंत्यन्य स्व वाछित ॥ ३ ॥
अेकः प्रमाणे भाले च द्वौ द्वौ रध्रापरध्रयोः ।
द्वौ द्वौ वक्षसि शीर्षे च ध्रुवावर्ता हये दश ॥ ४ ॥
(स० २)

८१ अश्व-वर्णन (६)

क्याहडा, खूगड़ा, नीलड़ा, हरियाड़ा ।
सेराहा, हलाहा ऊराहा, वराहा ।
सिरि खंडिया, वोरिया ।
इसा अनेक जाति तणा तुरगम अश्व ॥
रूपि हीरउ, कंठि हीरऊ ।
माणिकउ, फटिकड़उ ।
रेवंतु जयवंतु । विसालु, सुकमालु, सावष्टभु, गरुयारंभु ।
गगाजलु, संसारफलु । इसा नामांकित घोड़ा ॥ (पु० श्र०)

८२ अश्व-वर्णन (७)

केहाड़ा, नीलड़ा, हरियाडा, । सेसहा, हराहा, वराहा ।
कोहाणा, भायाणा । ताई, तुरगी ।
ऊवसिया, पीवसिया ।
झाटकिया, झोटकिया । खोलाविया, मल्हाविया,
लडाविया, पुलाविया । सरला, तरला । छोटकर्णा, एकवर्णा । ५२ (स १)

८३ अश्वी-वर्णन

जइ हुई घरि व्याउर[1] घोड़ी, तउ घरस्युं दारिद्रय काढीइ झाड़ी पखोड़ी[2] ।
पुण प्रिय जोइ लीजइ, दरिद्रहइं जलाजलि दीसइ[3] ।
वरस मइ दीसि वियाइ, घरि घणी ऋद्धि थाइ ।
लाखीणउं जिणइ, धणी हइं डाकुर मानइ गिणइ[4] ।
जिहनइ घरि घोडां सुजाति, देसि विदेसि[5] तिहनी विख्याति ।
किसोरो[6] साखीइ पृथ्वी प्रमाणइ, वात सहु को वोलइ ऊखाणइ ।
द्रव्य कइ घोडी नइ कोटि, कइ वउणि नइं खोटि[7] ।
घोडी साखियइ एह कारण, जिम घणियाणी पिहरइ सोनाना मुण[8] ।
एह स्युं कूडूं, घर दीसइ घोडे जि रूडूं ।
जइ तूसइ रेवतु, तउ वेगउ आणिइं दारिद्र नू अंतु । (मु०)

८४ ऊंठ-वर्णन

गोली वीतली रउ, लांवी नली रउ ।
जाडे गोडइ रउ, ससा सेरीयइ वगलां रउ ।

+ म्कर्णा

१. व्यार २ झंझोरी ३. दीजइ ४ धणीनः ठाकुर ढूंडा माहि गिणइ ५. परदेस
६ म्लिउ रउ ७ कइ राज्वीनी ओटि ८. अकीर्त्ति निवारण ।

सिघोड़ा जेहे ईडर रउ, बाजवट आंठूआ रउ ।
लाखेरी रंग रउ, कुंमराले थूंभे रउ ।
………, लटीयाले पूंछ रउ ।
वलिवीं फींच रउ, लावे गडदाणइ रउ ।
कोरीयइ कान रउ, सोपीयइ दात रउ ।
रतनाले आखि रउ, दमामा जेहइ कोपट रउ ।
गाले ब्रिहु गूंजतउ, … ……… ।
लाबाण इरे (दूरे),
भामण ज्यु नेसे चसडका करतउ, … ।
घसला देतउ, ऊंठ तउ इसउ ।
ऊंबर सूंबरा चडण रउ । (कु०)

८५ रथ-वर्णन

चारु चीत्कार कलित, विशाल सालभजिका शालित ।
धवल पताकाचल मालित, विचित्र चित्र परम्परा विराजित ।
पर पथिनी निर्दलन । ७३ (स० १)

८६ शस्त्र-वर्णन (१)

१ चक्र	२ धनु	३ वज्र	४ खड्ग
५ कृपाणी	६ तोमर	७ कुत	८ त्रिशूल
९ शक्ति	१० पासु	११ मुग्दर	१२ मषिका
१३ भल्ल	१४ भिंडमाल	१५ गुरुज	१६ लूंठि
१७ गदा	१८ शखी	१९ परशु	२० पट्टसु
२१ यष्टि	२२ सपन	२३ पठसु	२४ हल
२५ मुशल	२६ कुलिस	२७ कातरि	२८ करपत्र
२९ तरवारि	३० कुद्दाल	३१ यत्र	३२ गोफण
३३ डाहिणि	३४ सडसिका	३५ कुहाडी	३६ लिपुखं

इति दडायुधानि । १२५ । (स० १)

८७ शस्त्र-वर्णन (२)

सिल्ल, भल्ल, वावल्ल, कुत, करवाल, तीरी, तोमर, नाराच, अर्द्धनाराच, चक्र, शंख, शक्ति, क्षुरप्र, दुस्फोट, कोदड, हल, मुशला, गदा, तरवारि, कातरि, शस्त्रिका, खड्ग, मुग्दर, तद्दल, भिंडमारि । ११५ । (स० १)

८८ शस्त्र-वर्णन (३)

तरवारि । त्रिशूल । नाराच । कौशल । कृपाण । चक्र । कुंत । खड्ग । गडीव । सहापट्टि । मुसढि । गदा । मुशल । लकुटी । मुंग्दर । छुरिका । शस्त्री । कस । अर्द्धचंद्र । कर पत्र । वाण । यष्टि । असि पत्र । क्षुरप्र मुखी । अर्द्ध मुखी । भिंडमाल । तोमर । भल्लि । लागल । पाश । परश । क्षुर । विस्फोट । वज्र । शक्ति । मूल । भल्लल । सवला । इत्यादि शस्त्राणि । (स० २)

८६ शस्त्र-वर्णन (४)

हथनाल, हवाई, हल, मुंशल, चक्र, नाल, गदा, गुरज, गेडि, गोलो, गोफण, गुपती, फरसी, तरवार, तीर, तरकस, कटारी, कसी, कुद्दाल, कबाण, कोकबाण, काती, भाला, बरछी, बगतर, पाखर, अंकुश, अणी, छुरी, सांकल, दारू । इत्यायुध ।[1]

६० शस्त्र-वर्णन (५)

तीरी, तोमर, नाराच, अर्द्धनाराच, भल्ल, सिल्ल, बावल्ल, कुत, खड्ग, छुरिका[1] तरवारि, यमदंष्ट्रा, पटह, फुरसी कर्त्तरी, धनुष, शींगिणि, चक्र, शक्ति, गदा, मुद्गर, गर्ज, त्रिशूल, फलक, ओडण[2] प्रमुखा । (स० १)

६१ शस्त्र-वर्णन (६)

छुरसार लोहतणी घणी, पौगर मेल्हती, बीजनी परि झलकती, तीन्हीं धाराली, बढाली, अणियाली पइसारुई, नीसारुई । ७४ (स० १)

६२ छुरीकार

हाकइ, ताकइ । दड़इ, दावरइ । ऊधसइ, विहसइ । हणइ, धुणइ । पुलइ, मेल्हइ । उविलइ, रहइ । हसइ, धुरकइ । चड़इ, पडइ, अडवडइ । हुलइ, डुलइ । छुरीकार । (स० २)

९३ धनुर्धर

सामितणु वयरु, नव यौवन शरीरु ।
सीगणि तत्र अभ्यासु, आगुलि तणउ प्रासु ।
सौर्य वृत्ति तणी गांठि, उधसि झाटि ।
जोइ त्रिविविध गणु, लाखइ बाणु ।
हाथ वावरइ, भवरउं वीसरइ ।

---

[1] फासी । वज्र, त्रिशूल, मुदगर, डंड, बगदो, ढाल, चक्रबाण, कुट—इति विशेष (स० ३)

[1] छुरिक [2] उडण ।

समरु सांधइ वेझउं वीधइ ।
कोसीसा उतारइ, निटोल मारइ ।

६४ योध-पायक

जेह तणुं जाणइतुं कुल, स्वामि तणुं बल ।
आगलि आचार चालइ, थोड़ूं बोलइ ।
छइ दर्शन नमइ, ठाकरहिं गमइं ।
संग्रामि युद्धर, परनारि सहोदर ।
पागे काम करइ, स्वामि काज मरइ ।
रणि वइरी नइं हाकइ, हथीआर ताकइ ।
बोलावी दिइ घातइ, जाणइ युद्ध तणु उपाय ।

६५ युद्ध-वर्णन (१)

बिहुं पखा दल मिल्या ।
सर्वत्र धूलि-पटल ऊछल्या ।
कोई आप-पर बूझइ नहीं ।
न जाणीइ आपुदल
सर्व एकंकारु प्रतिभासइ ।
केतलउ गज सारसी करतउ जाणियइ ।
तुरंगम हेषारवि जाणियइ ।
रथ चीत्कारि जाणियइ,
विंधि पताका जाणियइ,
किंकिणी नारि जाणियइ,
सुभट मनोरथ मालियइ,
हीन हृदय ना शस्त्र ऊदालियइ ।
तुरंगमे खुरे करी पृथ्वी दलीइ ।
काहली त्रडत्रडइ ।
प्रहारि जर्जरित खडहडइं ।
कबंध धरा पडइं ।
राजपुत्र घोड़ चडइ ।
सूरवीर गहगहइ,
कातर डहडहइ ।
विंध लहलहइ,

सेनानी महमहइ ।
घड़ भूझइ,
इतर मूझइ ।
एकि खड्ग काढइ,
एकि गज तणी वस्त्र वाढइं ।
अनेकि शस्त्र झलहलइं,
हाथिआनी गुढि ढलइं ।
कायर खलभलइं,
घोड़े पाखर गणगणइं ।
विहित सर्व जन डमरि,
इसइ समरि ॥ ७१ ॥ (मु०)

६६ युद्ध-वर्णन (२)

विहुँ पखा वृहत पुरुष साचरिया
क्षेत्र सूडावियउ
विहुं पखा सन्नद्ध बद्ध नीपना
सुभटे पाखर लीधी
मयगल गुडा सुण्डि-दण्डि मुहवड़ घाता
पंच वल्लहा किशोर पाखरा ।
जाति तुरग पलाणा ।
रथ पाखरा ।
वीर पुरुष महा सुभट प्रगुण नीपना ।
केई आगि लोहमय आगी करिउ मस्तकि सिरि कुनिसि ओ हुआ संग्रामोद्यत ।
केइ परिकर सपूर्ण लौह चूर्ण हुया सोत्साह ।
केई आबद्ध तोणीर वीर हुया युद्ध प्रगुण ।
सेवागत राजान चक्र हुयउ सावष्टंभु
चक्रव्यूह गरुड़ व्यूह तणी रचना नीपनी ।
आगवाणि सींगडीया तणी श्रेणी ।
पश्चात् भागि फारक मंडल तणी पद्धति ।
तदनंतर हस्ती घटासीत्कार करती ।
पाखरा तणी श्रेणी हेपारव मेल्हती ।

बिहुं पखा पंच शब्द तणा निर्घोष उछलेवा लागा ।
रणतूर्य वाजेवा लागा ।
नीसाणे घाय वलेवा लागा ।
बिहुं पखे भाट पढेवा लागा ।
बिहुं पखे सुभट तणा सिंहनाद प्रवर्त्तेवा लागा ।
सिल्ल मल्ल वावल्ल नाराच प्रमुख प्रहरण पडेवा लागा ।
बिहु पखे हाकि २, हणिउ २, मारि २, नाठउ रे २, भागउ रे २, त्राव्उ रे २
इणि परि सुभट शब्द नीपजेवा लागा ।
गयण आच्छ-दियं । आदित्य किरण निरुद्धा ।
तेतलइ समइ कूटेवा लागा कपाल ।
भाजेवा लागा धनुर्द्दण्ड ।
जाएवा लागा शिरःखण्ड ।
पडेवा लागी खांडा तणी झड ।
वाजेवा लागी सुभट तणी काटकड ।
नाचेवा लागा भड़ कवंध ।
फोटिवा लागा धज विंध ।
त्रूटेवा लागा खड्गफल
नासेवा लागा कायर दल ।
इसइ सग्रामि सुभट गाजइ ।
कायर थरथर धूजइ ।
वीरे बाधी कसणि ।
कायर भूरहि खणि खणि ।
कुंभ सेल लीजइ ।
कायर खीजइ ।
वीर तणा भाला झलकइ ।
कायर तणा मन टलकइ ।
पचखिद पड़ घाय ।
कायर भणइ पाय पाय प्रसके जाइ ।
निसाण, कातर तणा पडइ प्राण ।
दल आघा खिसइ ।
कायर खूणे खुसइ ।
दल हियरइ वड़इ ।

कायर तरखणि पड़इ ।
दल आफलइ, कायर खलभलइ ।
भड़ झूझइ, कायर मूझइ ।
भड मेल्हइ प्रहारु ।
कायर जोय वारु ।
वीरहं मुडी पड़इ ।
कायर पीडी चड़इ ।
तिणि सग्रामि हृदय दृढ़ करी सन्नाहु करिउ ।
एक मनु धरिउ ।
खाभनी खणीउ ।
पय घरट्टु बांधिउ ।
चाप साधिउ ।
रिणि राजा चढिउ ।
जिहा धूलि पटल सर्वत्रइ ऊछलिया ।
कोइ आपु पर विभागु न वूझइ ।
पिता पुत्र न सूझइ ।
न जाणियइ आत्मदलु ।
न जाणियइ हाथिया तणइ गुलगुला-रवि ।
तुरंगम तणइ हिणहिणकारि ।
रथ तणइ चीत्कारि
भाट नगारी तणइ कयवारि ।
इसइ समरि भरि वर्त्तमानि हूतइ
सुहड सूडइ, सगुण हाथि लूडइ ।
रथावली उथिलावइ, मउडबद्धा माकडु जिव खिलावइ ।
पाखरिया थाट हणाइ ।
दल समदाय भाजइ, दलवइ गांजइ
सत्रु स्कंधावार तणा कंद ।
समग्र तृण समान करिउ गणइ ।
इसउ संग्राम ।
महल कुंकुम तणइट छडउ दीन्हइ
कस्तूरिका तणा स्तवक पडिया
बावना श्रीखंडहणी गृंहली दीन्ही

काचइ कर्पूरि स्वस्तिक भरिया
अवीधा मोती तणा चउक पूरिया ।
प्रवालाघोखंडे नंदावर्त्त रचिया ।
अंतरा २ पुष्फ तणउ प्रकरु भरियउ
कृष्णागरु ऊखवियउ ।
पंचवर्ण पाट्ट पटुला तणा ऊलोच बाधा
मुक्ताफल संबन्धिनी त्रिसरी मोतीसरी लबावी
राजा स्वयमेव आस्थानु दे वइठइ
मोरवीछ तणे वाउ वीजणे वाउ खेपियइ छइ
ऊपरि सजल जलद पटलाय मान मेघ डंबरु धरिओ
मस्तकि त्रिशेखरु मुकुटु रचियउ
दीप्ति विनिर्जित मार्त्तण्ड मंडल कर्णि कुडल निवेस
वक्षस्थलि स्थूल मुक्ताफल ग्रथित सर्व सारु नवसरउ हारु लबावियउ ।
सहस दलु हस्ति कमलु, निरुव करु पाय टोडरु
पुरुष प्रमाणु सिंहासनु कटी प्रमाणु पादपीठु, पश्चिम दिग्ग विभागि थईयायद्ध
वाम प्रदेशिमंत्रि, जीवणइ पुरोहितु । बिहु पक्खइ अंगरक्ख तणी ओलि ।
सर्वत्रइ कावडिया फिरिया । तेतइ समइ सुपहुत्तउ ॥
जोड काहली तडपडइ
सार उठिया हाथि गडयडइ
सीगी तणा शब्द कल्लोल ऊछलइ
नीसाण घाइ वलइ
तुरंगम तणा हिणहिणाकार
सुभट तणा बापूकारु
घंटा हणा टंकार
कवीहणा झकार हूया
वीर सिरि पट्ट बाधा
फरीहणा मडप ठाडा
खाडा तणा समुद्र विस्तारा
कडोरण कोठारु भरिया
सुभट तणी पाटी भरी
आरेणि तणी सूत्रण धरी
प्रलय तूर्य वाजेवा लागा

वीर मोदला रुण झरोवा लागा
असी परि संग्रामु प्रगुणु हूया । (पु० अ)

६७ युद्ध वर्णन (३)

सीमाडा सवे वसि कीधा, सवे गढ लीधा ।
गढवई सवे निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा कीधा ।
समुद्र लगइ आपणी आण फेरी ।
एकछत्र निष्कटक राज्य प्रतिपालता सग्राम विषय कदाचित् उपजइ ।
त्रिहु पखा वृहत्पुरुष साचरिया ।
क्षेत्र सुडाविउ, त्रिहुगमा सन्नद्ध बद्ध नीपना ।
सुभटे जरहि जीण साल लीधी ।
मयगल गुडिया, सुडादडि मुहवडि घातिया ।
पच वल्लह किसोर पाखरिया, जाति तुरगम पलाणिया ।
वीर पुरुष महा सुभट प्रगुण नीपना ।
चक्रव्यूह गुरुडव्यूह तणी रचना नीपनी ।
अगेवाणि सीगडिया तणी श्रेणी ।
पछेवाणी फारक तणी पद्धति ।
ततो हस्ति घटा सीतकार करती ।
पाखरीया नी श्रेणि हेषारव मेल्हती ।
पच शब्द तणा निर्घोष जमला उछलइ ।
रणतूर वाजइं, नीसाण घाय गाजइं ।
त्रिहु गमे भाद पढइं ।
त्रिहु गमे सुभट तणा सिंह नाद हुवा लागा ।
सिल्ल भल्ल तीरी तोमर नाराच प्रहरण पडवा लागा ।
त्रिहु पखाहा कि २ हिणि हिणि मारि २ नाठउ २ भागउ २
इण परि सुभट शब्द नीपजावइ ।
गयण आछादिउ, सूर्य किरण रूंध्या ।
तेतलइ समइ फूटेवा लागा कपाल मडल ।
गाजेवा लागा धनुमंडल, जाएवा लागा शिरः खंड ।
पडवा लागी खांडा तणी झड, वाजेवा लागी सुभड तणी काटकडि ।
नाचेवा लागा धड-कबंध, पडिवा लागा ध्वज चिंध ।

प्रहार जर्जर कुंजर पड़इ।
सुनासणा तुरगम तडफड़इ, भाले भरडीता गजेंद्र आरडइं।
रीरीया करता राउत हथियार हलइं, घाइ घूमिया सुभट ढलइं।
पडिया पाइक न उसासीयइं, हिवा हाथीया आश्वासीयइं।
मउड़उ धाम उड़वडइ, रेवत रडवडइं।
पडिआ पचायण नी परि हाकइं, रोस लगी मुंछ भूंछफरकावइं।
रथ चक्र चापीति करोडि कडकड़इ, वेताल हडहडइ।
भाग्यवंत जय लक्ष्मी वरइ, आपणउ काज करइ। १२२ (स० १)

६८ युद्ध-वर्णन (४)

वीर मादल वाज्या, सूर साज्या।
जय ढक्क वाजी, नीसत नीकली गया लाजी।
त्रंबक त्रहत्रहायइ, नेजा लहलहायइ।
त्रिभुवन टलवलवा लागा, माहोमाहि वइर जाग्या।
सूर्य्य आछदिउ, रजो गण उन्मादिउ।
सेष सलसलिउ, दिग्गज हलवलिउ।
आदि वराह घुरहरिउ, उच्चैश्रवा घरहरिउ।
परदल मिलइ, चींध चलवलइ।
नीसाण वाजइ, जाणे आकासि मेघ गाजइ।
रथ थडहडइ, रण काहल त्रडत्रडइ।
गजेंन्द्र गडगडइ, घोडे पाखर पडइ।
छत्रीस दंडायुध झलहलइ, कायर खलभलइ।
पृथिवी चलचलइ, समुद्र झलझलइ।
शेष सलसलइ, सूर सामला हलफलइ।
कापुरुष टलवलइ, हाथीया गुलगुलइ।
झूझार ना मनोरथ फलइ।
अति रागी रा मन छूडायइ, रूडा रणक्षेत्र सूडाइ।
ढोल ढमकइ, चित्त चमकइ।
अतिहि फार, फुंकार, हुंकार।
सुहड हसइ, अंगि ऊधसइ।
वीर किलकिलइ, सूरना टोल मिलइ।
बिहुँ दल विचालि प्रधान फिरइ, थापिउ झूझ सिरइ।

वाणावली विछूटइ, पर्वतना शिखर त्रूटइ।
घोडां ने खुरे उडी खेह, जाणे आकासइ आव्या मेह।
धूलि गगनांगिणि लागी, मार्ग प्रचारनी वात भागी।
अंधकारि विश्व व्यापिउ, इसु रणक्षेत्र थाप्युं।
धारा मंडप गाज्यउ, जगत्रय अमूझ्यउ।
सेष सलक्यउ, वाराह चमक्यउ।
माहो माही हंस्या, इस्या सुभट धस्या।
भाट चपूकारइ, पूर्वज संभारइ।
हाथीयइ हाथिउ, घोडेइ घोडउ।
रथइ रथ, पायकिई पायक।
हुयवा लागूं झूझ, स्युं वर्णवि वस्यइ अबूझ।
वात करता रोमाचीयइ अंग, ते सुभट भला जे मरइ रणरंग।
उड्यालोह, मेल्या घर ना मोह।
आपणा स्वामी आगलि ऊभा, नथी किसी वात नी छोभ।
अख्या झाटके, कायर ऊडी गया गोफणि ने त्राटके।
रथना घडघडाट, वाणना सडसडाट।
रणतूर ना गडगडाट, कहुक वाणना पडपडाट।
तुवक ना भडभडाट, गोली ना कडकडाट।
चंद्रवाण ना तडतडाट।
सर घोरणि साधी, माहोमाही चाल त्राधी।
अणीसर फूटइ सेल, देव जोवइ खेल।
सन्नाह त्रूटइ, खंग ना अंगार विछूटइ।
धड पडइ, मस्तक रडवडइ।
कबंध नाचइ, नीर याचइ।
अति उ गाढ, फूटइ जम दाढ।
तेहने अगि उपरापरइ झाटके तरवारि त्रूटइ, ते मरइ अखूटइ।
पड्या ऊठइ, धायइ एक एक नइ पूठइ।
गृध्र ऊपरि सांचरइ, अपछरा वरइ, देवता जय जयारव उच्चरइ।
सूर वाहइं भाला, न छूट चड्या नइ पाला।
वहइ फोला, लोक ल्यइ ओला।
गूहा आवइ वांण, कायरां रा पडइ प्रांण।
वाधी चाल, निपटि धोडी विचाल।

भाला री भचाभचि, बकतर भेदी लागइ विचाविचि ।
घोडे घाली पाखर, आडो आया जाणे भाखर ।
कहता तो घणाही कहइ, ते विरला सूर जे इसइ रिण ऊभा रहइ ।
एहवा सब्द सहइ, ते कवि कहइ ।
देठ लागा, माहो माह वइर जागा ।
जे हुंता सेनानी, ते धुर थी हुआ कानी ।
जे हुता कोटवाल, ते पिण नाठा तत्काल ।
जे हुता एक एकडा, तीयारइ नाम नामइ दीया छेकडा ।
जे हुता फोजदार, तीयारइ सिर पडी मार ।
जे हुता फउज विडार, ते हुआ कहार ।
जे हउसे बाधता कटारी, तीयानइ ते पडी मारी ।
जे हुता खवास, तीया मुकी जीविवारी आस ।
जे वणावत्ता सागी बाकी, तीया नासिवा नइ वाट ताकी ।
जे पहिरता मोटा साडा, तीया नासता कीधा कोडि पवाडा ।
जे ढोलरइ ढमकइ मिलता तिकेपिण दीसइ टलता ।
काबिली मीर, नाखइ तीर ।
इस्यै रणि जे पामइ जय, तेहनइ पोतइ पुन्य निचय । सू०

युद्ध-वर्णन (५)

परदल मिलइं, सुभट कल कलइ ।
नीसाणि घाय वलइ, पताका भलहलइ ।
ओरणि माडीयइ, अर्द्धचद्र बाण खडियइ ।
भट्ट हक्का हक्क करइ, देवागना वीर वरइ ।
विद्याधरी पुष्प वृष्टि करइं, धनुर्धर बाण तणी श्रेणी वावरइं ।
आकाश मंडलि गृध्र फिरइ, सीचाणा समली साचरइ ।
हाथियानी घटा गुडी, घोडे पाखर पडी ।
बिहुगमा दल मिलइ, धूलि पटल उछलइ
जेतइ सुभट गाजइं तेतलइ कायर थरहरइं ।
जेतइ सुभट बाधइ कसणा तेतलइ कायरथाइ नासणा ।
जे० खड्ग खड्गिइ, लीजइं, तेतलइं कायर मन माहि खीजइ ।

जे० वीर भाला भळकइं, तेतलइं कायर ना मन टलकइं
जे० पच शक्ति पडइं घाय, ते० कायर करइं पाय ।
जे० धूसके वाजइ नीसाण, ते० कायर ना पडइं प्राण ।
जे० दल आघां खिसइ, ते० कायर खूणे खिसइं ।
जे० वेउल ही चडइ, ते० कातर तत्काल पडिइ ।
जेन० विढल आफलइ. ते० कातर मनि खलभलइं ।
जेतलइं सुभट झूझइ, ते० कातर लोक असूझइं ।
जे० सुभट मेल्हइं प्रहार, तेतलइं कायर जोअइ नासिवा वार ।
जे० वीर मस्तक पडइ, तेतलइ कायर पगि पींडी चडइं ।

हाथिउ हाथिइ, घोडउ घोडइ ।
रथ रथिइ, पायक पायकिइ ।
भथाउत भथाउतिइ, खड्गायुद्ध खड्गायुद्धिइं ।
कुंतायुध कुंतायुधिइ, गदायुध गदयुधइ ।
गजायुध गजायुधइं ।
हलायुध० मूशलायुध शल्लायुध०, त्रिशूलायुध० ।
वेउ दल मिलइ, सर्वत्र धूलि पटल उच्छलइ ।
कुण हूँ आपणउ परायउ विभाग बूझइ नहीं, पिता पुत्र सूझइ नहीं ।
न० जाणियइं आत्मदल, न जाणियइं पर दल ।
न० भूतल, न० नभोमंडल ।
न० रात्रि, न० दिवस ।
न० पूर्व, न० पश्चिम ।
सहू एकाकार हुइ, इसिइ समय समग्र दलि वर्त्तमानि ।
राजा सन्नद्ध वद्ध लोह चूर्ण हुई सुहडइ सगुड हाथीया लूडइ ।
रथावली ऊथलावइं, मउडउघा माकड जिम खेलावइ ।
पाखरिया घाट हणइ, महायोध सनुख मरणइ ।
टलवइ भाजइं, जल समुदाय गाजइं ।
एतलइ समइ समकाल काहली वाजइं, मदभमल गजेन्द्र गाजइ ।
नीगडियानी श्रेणी कमकमइं, नीसाण तणा घाय धमधमइ ।

तुरग तणा हेसारव, धनु तणा टंकारव ।
वीर रण भूमिभरी, आरेणि तणी सूत्रधरी ।
प्रलय प्रबल तूर्य वाजइ ॥ ६७ (स १)

१०१ युद्ध-वर्णन (७)

आम्हो-साम्हो कटक आविया वडी, फोजइ फोज अडी।
वगतर नइ जीन साल, सुभटे पहिरया ततकाल।
माथइ धरया टोप, सुभट चढ्या सबल कोप।
पाचे हथियार बाध्या, तीर-तीर साध्या।
आमल पाणी कीधा, भाजण रा सूंस लीधा।
घोड़े घाली पाखर, जाणे आड़ा भाखर।
आगइ कीया गज, ऊपर फरहरैं धज।
दमामे दीधी घाई, सभ वीर आया धाई।
रण तूर वागइ, ते वलि सिंधूडइ रागइ।
ठाकुर वपुकारइ, वडा-वडा वापारा विरद संभारैं।
छूटैं नालि, निपटि थोडी विचाल।
वहइ गोला, लोकल्यै ओला।
छूटैं कुहक वाण, कायरा रा पडैं प्राण।
कावलि मीर, नखइ तीर।
लागी खडा खड, वागी भड़ाभड़ि।
गईभल्लरी फौज भागी, सबल लीक लागी।
जे हूॅतो सेनानी, ते तो धूरखी थयो कानी।
जे हूतो कोटवाल, तेत्तो भागतो ततकाल।
जो हूॅतो फौजदार, तिणरैं माथै पडी मार
जे हूता चौरासीया, ए दाते त्रिण लीया।
जे हूंता खवास, तीए जीववा री मुकी आस।
जो हूता कायर, तिणने साभरी आपणी वायर।
जे चढता वाहर, तेह थया छोडी कायर।
जे ढोलरैं ढमकै मलता, ते गया पासे टलता।
जे बाधता मोटी पाघड़ी, ते ऊभा न रह्या एका घडी।
जे हूॅता अेक अेकडा, तिणरे नामइ दिया छेकडा।
जो माथे धरता आकडा, तीए मुहडा कीया वाकडा।
जे वणावता सारगी वाकी, तीए तड रण भूमिया की।
जे बाधता बिहूं पासे कटारी, तींयानइ नासता भुई पडी भारी।

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ३

स्त्री-पुरुष वर्णन

पुरुष-वर्णन (१)

कज्जल श्यामल केश पाश,
अष्टमी चन्द्रोपमानु भालस्थल।
कामदेव कोदण्डाकृति भ्रूभगु,
विकसित नीलोत्पल दीर्घ लोचन
सज्जन चित्त वृत्ति तुल्य सरल नासा वंस
परिपक्व बिंबाफल तुलिताधरोष्ट
कुंदकलिकोपमान दंत पंक्ति
निर्मल परिपूर्ण पूर्णिमा चंद्र मण्डलायमान वदन मंडलु
सख सदृश त्रिरेखांकित कंठ कंदल
लंबमान स्कंधन्यस्त कर्णपालि
मासल स्कंध देशु
पृथुलु वक्षस्थलु
नगर दुर्ग परिघा समान वर्तुल भुजादण्डु
सर्वथा अलक्ष्य क्षामोदर गंभीर नाभि प्रदेशु
कदली स्तंभोपमानु उरु युगुलु
कूर्म पृष्टि प्रदेश जिय उन्नत चरण
अशोक तरुपल्लवानुकृत हस्तपाद तलु
विद्रुमारुण नखमणि निकर
छत्रीस लक्षण लक्षित शरीरु
पृष्टि पालकु बहुत्तर कला कुशल
लिखित पठित प्रमुख चौसठ विज्ञान विचक्षणु
उदग्र यौवन पुरुष नीप जइ। पुरुष वर्णन (पु०)

२ पुरुष गुण-वर्णन (२)

सौन्दर्य,	धैर्य,	औदार्य,	गाम्भीर्य ,
शील-स्वभाव,	सत्य,	साहस,	भाग्य ,
राग,	रूप,	लावण्य,	लालित्य,
कान्ति,	कला,	ज्ञान,	विज्ञान ,
विद्या,	विनय,	विवेक,	विचार ,
शस्त्रशास्त्रभेद,	वेद विदान,	लक्षण	प्रमाण ,
तर्क,	साहित्य,	सामुद्रिक,	शकुन ,
सगीत,	गीत,	निमित्त,	निरुक्ति,
निघंटु,	पिंगल,	पुराण,	गणित ,
ज्योतिष ।	एहवागुण —		(स०४)

३ सत्पुरुष-गुण वर्णन (३)

कुलीन	शीलवान	विवेकी
दाता	भोक्ता	कीर्त्तिवान्
सूरः	साहसिकः	सत्ववान्
सत्यवान्	गभीर	प्रियवाग्
धीर	सलज्ज	बुद्धिवत
कलावंत	गुणग्राही	उपकारी
कृतज्ञ	धर्मवान्	महोत्साह
सवृत मत्र	क्लेश सह	पात्र रुचि
जितेन्द्रिय	सतुष्ट	अल्प भोजी
अल्पनिद्र	मितभाषी	उचितज्ञ
जितरोष	अलोभ	स्वरूप
सुभग	तेजस्वी	बलिष्ट
प्रतापी	सुसस्थान	सुगध देह
सुवेष	शुभगति	सुस्वर (सुखर)

सुकान्ति इत्यादिक पुरुष गुणाः । (स० १)

४ सत्पुरुष के स्वाभाविक गुणों की उपमा (४)

सत्पुरुष स्वभाव—

कः शशिन[1] शीतलं करोति, को दुग्ध धवलयति।
को मयूर पिच्छानि चित्रयति, कः शर्करा मधुरा[2] करोति।
कोमृत[4] सर्वरसा-स्वादं धत्ते, को गंगा पवित्रयति।
हंसाना को गति शिक्षयति, कः पद्मरागं[3] रंजयति।
कश्चंपक[5] सुरभी करोति, को जात्यमणिषु कांति कलाप।
कः सरस्वती पाठयन्ति, को लकाया अलकारं कुरुते।
तथा साधु पुरुषस्य स्वभावेन गुणाः॥ (स० १)

५ सज्जन स्वभाव उपमा (५)

चंद्रमा नै कुण शीतल करै ?
अगनि नै कुण दाह करै ?
दुग्ध नै कुण धोलै है ?
मयूर पीछ नै कुण चित्रै ?
लक्ष्मी नै कुण नोत्रै ?
कमल नै कुण मधुरा करै ?
गंगोदक नै कुण पवित्र करै ?
हस नै गति कुण सीखवै ?
जुआरी नै कुण भीखवै ?
चंपक नै कुण सुगंध करै ?
सारदा नै कुण भणावै ?
लोका नै कुण दीपावै ?
स्त्री नै कपट कुण शीखावै ?
बृहस्पति नै कुण बचावै ?

---

१ शिशिरी २ मधुरी ३ ब्रह्म ४ को मेवानभ्यर्थयति,
५ इनके बदले में यह पाठ—को नालिकेरे जल निपति
क कोकिला स्वर माधुर्यं विदधाति।
को वृत्तता नयति मौक्तिकान्। मु
कु में विशेष पाठ—तथा को पुत्रो विनय नयति।

कृपण नै लक्ष्मी कुण संचावै ?
तिम सज्जन नै स्वभावै जांणवो ।
(सू. ३)

६ सत्पुरुष प्रतिज्ञा (६)

कदाचित् समुद्र मर्यादा व्यतिक्रमइ, कदाचित् जइ मेरु महीधर चक्रमइ ।
कुलाचल चक्रवालइ , ग्रहचक्र निज मार्ग सू चलइ
पृथ्वी पातालि जाइ, वाउ निश्चल थाइ ।
वज्र दण्ड जर्जरता धरइ, जल ज्वलइ ।
ज्वलन शैत्य धरइ,
आदित्य पश्चिम ऊगइ,
कमल वन पर्वत विकसइ
कदाचिदमृत विष थाइ
कदाचित्पाषाण जल माहि तरइ, कदाचित्नारकी सौख्य पामइ
कदाचित्बृहस्पति वचन खलइ, गंगाजल पश्चिम वहइ
कदाचित् अभव्य जीवहृदयि धर्मोपदेश रहइ, कदाचित् मानस सरोवर सूखइ
कदाचित् हरिश्चंद्र प्रतिज्ञा हूतउ चूकइ, कदाचित् सिद्ध गर्भवासि अवतरइ
तथापि सत्पुरुष आपणीप्रतिज्ञातउ न टलइं । १०८ ।

७ सत्पुरुष के परोपकारों की उपमा (७)

सत्पुरुष परोपकार किहिं पृथ्वी नियमिया छइ
शेषराजु पृथ्वीधरइ, आदित्य अंधकार संहरइ
चन्द्रमा शैत्य करइ, मेघु जलु पृथ्वी भरइ,
गोमडलु दुग्ध झरइ, चन्द्रोपलु अमृतु झरइ,
वैश्वानरु प्रज्वलइ, वृक्ष फलइ ॥
(पु श्र.)

८ सत्पुरुष के परोपकारों की उपमा (८)

सत्पुरुषः परोपकारमेव कुरुते न पुनरात्मार्थं यथा—
रविस्तमो नाशयति, परं नात्तं स्फोटयति ।
चद्रः स्वामृतेन जगत्तापं, निर्वापयति न स्वयं ।
वृक्षाः पंथानामातपं निवारयति, नात्मनः

यथा खड्गोऽन्येषा शरीराणि विदारयति, नात्मशाणा घर्षण
यथा वैद्योऽन्य नाटिका[1] विलोकयति नात्मनः ।
यथा मन्त्रवित्नर विषाणि छिन्नति[2] तथा न स्वदेह विप ।
यथा रत्नाकरः पर दारिद्र्य निराकुरुते तथा कस्मान्न त्वारत्वम् ।
तथा चिंतामणि कल्पद्रुमाद्याः कामान् कुर्वते ।
तथा स्वाचेतनत्वं कस्मान्न स्फोटयति ॥ ७६ (स. १)

९ सत्पुरुषों के परोपकारों की उपमा (९)

सत्पुरुष परोपकाराय अवतरति ।
कर्पासः परार्थे विडम्बना सहते, मौक्तिकं पर शृंगाराय वेधंसहते ।
सुवर्ण परालकाराय, ताप ताडनादि ।
अगरु पर सौरभ्याय दाह, चंदन पर तापोपशातये घर्षणं ।
कर्पूर पर सौगध्याय मर्दन, कस्तूरिका पर पत्रभंगी कृतेवर्त्तन ।
ताबूलं पर रगाय चर्वण ।
दधिविलोडन परार्थं सहते, मजिष्टा वस्त्र रंजनार्थं कुट्टन खडनादि सहते ।
धुर्यः परार्थमेव भारमुत्पाट्यति, सूर्यः परार्थमेवोद्गच्छति ।
जलधरः परोपकारायेव वर्षति ॥ २१ । (स० १)

१० सत्पुरुष के कोप की उपमा (१०)

सत्पुरुषस्य कोपो मनस्येव विलीयते ।
यथा दरिद्रस्य मनोरथा मन विलीयते ।
यथा कूपस्य छाया कूप एव० वि० ।
यथा सुरगाया धूली सुरगायामेव वि० ।
अरण्य कुसुमानि अरण्य एव विलीयते ।
कातारच्छिन्न कूट शैल फलानि शैल एव० ।
यथा वध्यावपुरपत्यानि तत्रैव विलीयते ।
विधवा जन स्तना हृदय एव विलीयते ।
कृपण लक्ष्मीः भूमावेव यथा विलीयते । ७७ । (स० १)

११ पुरुष के ३२ लक्षण (११)

इह भवति सप्तरक्तः षड्डुन्नतः पंच सूक्ष्म दीर्घोयः ।
त्रि विपुल लघु गंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षणः सपुमान् ॥ १ ॥

---

१. नटिका २. भिन्नति ।

नख चरण पाणि रसना दशनच्छद तालु लोचनान्तेषु ।
रक्तः सप्त स्वाध्यः सप्तागा सलभते लक्ष्मीम् ॥ २ ॥
पटक कक्षा चक्षुः कृकाटिका नासिका नखास्यमिति ।
यस्येदमुन्नत स्यादुन्नन यस्तस्य जायते ॥ ३ ॥
दतत्वग् केशागुलि पर्व नखाः पच यस्य सूक्ष्माणि ।
धन लक्ष्म्यायेतानि च जायते प्रायसः पुंसां ॥ ४ ॥
नयन कुचातर नासा हनुभुज मिति यस्य पचक दीर्घं ।
दीर्घायुर्भवति नरः प्राक्रमी जायते सह ॥ ५ ॥
भाल मूरो वदनमिति त्रितय भूमिश्वरस्य विपुल स्यात् ।
ग्रीवा जघा मेहनमिति त्रिकं लघु महेश्वरस्य ॥ ६ ॥
यस्य स्वरोऽग्रण्य नाभी सत्वमितीद त्रय गंभीरस्यात् ।
सप्ताम्बुधि पर्य त भूमे स परिग्रह कुर्यात् ॥ ७ ॥
इति द्वात्रिंशल्लक्षणानि ॥ १२३ । (स० १)

१२ संग योग्य पुरुष (१२)

सुमति, शीलवत, सतोषी, सत्संगी, स्वजन, साचाबोला, सत्पुरुष, समेला[१], सुलखणा, सलज्ज, सुकुलीण, गंभीर, गुणवंत गुणज्ञ । एहवा पुरुषनो संग कीजे ॥ (स० ३)

१३ कीर्त्याभिलाषी पुरुष (१३)

चौदह विद्यानिधान,
समस्या शतुकार,
षड्भाषा चक्रवर्ती,
लाणराय कालिकाचार्य,
कालिकाल सर्वज्ञ,
सरस्वती कठाभरण,
प्रत्यक्ष बृहस्पति,
वादी विभाड,
कवि-कामधेनु,
इत्यादि विविध गुण वर्णना कीर्त्याभिलाषिणः ॥ (स० ४)

(वि०)

---

१ सामल

१४ रूपालो (रूपवान) पुरुष (१४)

छयल,	छत्रीला,	रूपाला	रंगीला,
गलियामणा,	ललितांग,	ललितगर्भ,	लीलाभोपास,
लीलावत,	भुश्राला,	लटकाला,	भटकाला,
लवणवत,[१]	मीठाबोला,	मलपता,	मा (म्हा) लता,
विनोदी,	विनयी,	ख्याली,	खुस्याली,
सौभागी,	सुंदर ॥	एहवा	रूपाला ॥
			(स० ३)

निर्द्धन होने पर भी सत्पुरुष

१५ प्रतिभा-वैशिष्ट्य पुरुष उपमा (१५)

निर्द्धनोपि सएवोतमः पुरुष. यथा-भग्नमपि वाराह ।
श्रांतोपि पारसीको हयः, रक्तोपि कर्पूर समुद्गकः ।
खडोपि निशाकरः, अच्छादितोपि दिवाकरः ।
दुर्बलोपि सिंहः, शुष्कोपि वकुलश्री विद्धापि मुक्तावली ।
फाटितमपि रत्न कंबल[२] । मलिन मपि दुकुलं,तृप्तमपि गंगाकूल ।
म्लानमपि इक्षुखंड, जीर्णमपि शर्करा खड ॥ ७४ । (स० १)

१६ दुर्जनवर्णन (१)

दुर्जन एहवउ दीसइ, बाहिर हेजालूओहीयउ हीसइ ।
अतरग वलइ रीसइ मिलइ सुजगीसइ ॥
आघेरउ जात (प्र) दाँत पीसइ , मुहि मीठउ, चित्त बीठउ ।
पराया छल छिद्र जोवइ, विणास विण विगोवइ ॥
परम प्रसंसायइ खीजइ, उपगारन सहसे न लीलइ ।
पर मर्म भाखइ, साच करी दाखइ ॥
पहिलउ विचार मांहि आवइ, अवसरे खिसी जावइ ॥
मुहडइ सहू सु लिवास, वाह नउ न करइ विसास ।
केहनइ वचनि न पतीजइ, जउ आपणउ चित्त दीजइ ॥
तोही भीजइ न सीजइ, वार वार स्यु कहीजइ ॥
न सगा, न सगीजा, जाणु मो सारिखा करू बीजा ॥

---

१ लावण्यवत

न सहइ बीजा साथइ, ठाक ठोक ल्यइ आपणइ माथइ।
इसउ दुर्जन, तिण सु न मिलइ कोई मन ॥
इति दुर्जनकम् ॥ (कु०)

१७ दुर्जन पुरुष

मुहि मीठउ, चित्ति विणठउ ।
पिराया छल छिद्र जोयइ, विणास विण विगोयइ ।
पर प्रशंसाइं खीजइ, उपकार ने सहस्रि न लीजइ ।
परमर्श भाखइ, साच करी दाखइ ।
न सगा न सणीजा, नविहु छइ इस्या लोक बीजा ।
न सहै जैइ बीजा साथइ, ठाक ठोक कल्पइ आपणइ माथइ ।
नहीं कोई नेह नइ सज्जन, इसिउ दुर्जन ॥ १६ ॥ (मु०)

१८ दुर्जन-वर्णन (३)

दुर्जन, कृतघ्न, निष्ठुर स्वभाव, अप्रतिष्ठ, वंदनानिष्ट
स्वकार्य बद्धकक्ष परकार्य निरपेक्ष। (पु० अ०)

१६ दुष्ट पुरुष (४)

रे रे दुराचार, अधर्म व्यापार ।
जनित कुल कलंक, दूर मुक्ति मर्याद ।
पापिष्ट, निकृष्ट, दुष्ट दृष्ट इण परि निर्भछिउ । १५६ (स० १)

२० कुपुरुष (५)

प्रत्यक्षे मधुरया गिरा अमृत वर्षतां परोक्षे दोष जल्पता ।
नीचाना व्यसनैर्वस्ती कृताना इद्रियैः [1] पराभूताना ।
पल्वल जलादपि निर्मलाना ।
अमावास्याया अपि अंधकार मुखाना ।
गुरुपुः विद्वेषिणां ।
बंधुषु बद्ध वैराणा, पितृमित्र द्रोह कारिणा ।
मातृ शूक्लाना, स्वपुन्छ्यादि कारकाणा ।
समुद्र जलादप्यनुप भोग्याना ।
अंत्यज चरितादपि मलिन चरिताना ।

---

१ इंद्रियै

सर्पजाते रपि अनात्म नीताना ।
प्रदीपा दप्याश्रय विध्वंसिना ।
नदी कूलादपि नीच गामिना ।
मृत्पात्रादपि भंगुराणा ।
हरिद्रा रागा[1]दिपि क्षण विनश्वराणा ।
उदया न दृश्यते कुपुरुषाणा ।
यतः—

परवादे दश वदन पर दोष निरीक्षणे सहस्राक्ष. ।
सद्वृत्त वृत्त हरणे बाहु सहस्रार्जुनो नीचः ॥ ९७ (स० १) ॥

२१ अंध-वर्णन (६)

रणाध, रोगाध, बुभुक्षाध, तृष्णाध[1], लोभाध, कामाध, दर्पांध, मद्याध, क्रोधाध[2], विद्याध, वित्ताध, अहंकाराध[3], जात्याध, चित्ताध ।

पुरुष सर्वथापि न देखइं काई ।

न पश्यति मदोन्मत्त. कामाधो नैव पश्यति ।
न पश्यति जात्यंधो अर्थी दोषा न पश्यति ॥ १।१३६ (स० १)

२२ मूर्ख संग (७)

कुमाणस नउ ससर्ग न कीजइ, वरि व्याघ्र सिउ, क्रीडा कीजइ ।
वरि सूता सींह[1] मुखि हाथ घातीयइ, (आ)अजीसाप[2] सिउं साई दीजइ ।
अजी[3] हलाहल विष पीजइ, वरि अगिनी ज्वाला लीजइ ।
वरि[4] वयरि घरि वासउ वसीयइ, वरि चोर साथि वइसीउ ।
वरि पाताल विवरि पइसीइ, वरि बलतइ दावानलि जईयइ ।
पुण[7] सर्वथापि मूर्ख साथि न जाईयइ ॥

न स्थातव्यं न गंतव्यं, क्षण मप्यसना[5] सह ।
पयोपि शुंडिनी हस्ते वारुणी[6] त्यभिधीयते ॥ १
वरं पर्वत दुर्गेषु,. भ्रात वनचरैः सह ।
नतु मूर्ख जन संपर्कः सुरेन्द्र भुवनेष्वपि ॥ २।८५ (स. १)

---

[1] रागा दपि
अति लोभ
[1] कोपाध [2] मदाध ३ तृषाधु । (पुन्य विजय जी अपूर्ण प्रति)
१ ससर्ग [2] जिसापस्यु ३ वरि ४ वरि यरि ५ पण ५ सती सता ६ वारुणी
७

अवरु रूप तणी रेख, लावण्य केरउ कसवट्टउ
कनीयता तणउ भडार, काति केरउ आधारु
पसइ प्रमाण लोचन, जसी कामदेव तणी सींगी
धणुही त साभमुह,
जसउ जाइलउ हीरउ, तिसी झलकती दत पंक्ति
त्रिहु पइटे वहतउ सीमतउ, अति सुकोमल रोमराजि
बोलती जिसी अमृत तणीवेलि, वचनि करी पाहण तेई पल्हाल
इसी स्त्री ॥ (पु अ०)

३० सुस्त्री (४)

चद्रमुखीचकोराक्षी, चित्तहरणी, चातुर्यवती, शीलवती सिंहलकी, सुलक्षणी श्यामा, नवागी, नवयौवना, गौरागी, गुणवती, पदमणी, पीनस्तनी, हेजाली, हस्त-मुखी, एहवी स्त्री पुण्य नइ योगइ (पामइ)

प्रति स० ३ का पाठ इस प्रकार है—

रूपाली, चद्रमुखी, चकोराक्षी, चातुर्यवती, हसगतिगामिनी, चित्तहरणी (मनहरणी), हसत मुखी, पद्मिनी, पीनस्तनी, गोरागी, गुणवंती, नवागी, नवयौवना, सिंहलकी, भ्रूहवंकी, शीलवती, सुलक्षणी, पद्मगंधी, सुकोमल शरीरी, पातल पेटी, मोहनगारी, अतिहलवी, नहीं भारी, हेजाली, शील गगेव, मधुरभाषिणी, कोकिलकठी। एहवी स्त्री क्रीड़ा करै छै।

३१ सगर्वा स्त्री (५)

हस गति चालती,मयगल जिम माल्हती।
कामिनी गर्व भाजती, चद्रकला जिम वाधती।

---

१ इति सभा शृगार वचन चातुरी ग्रन्थ समाप्त

२ स० १ प्रति, में इसके बाद का पाठ नीचेवाला न होकर इस प्रकार है—
सुवरणि, सुसची, सुसूत्रणी, सुशील,
अमृत वाणी बोलती, पाहण पल्हालती
हाथि कोमली। सहजि प्राजली
सर्व गुण सपूर्ण। इसी कलत्र महा भागि लाभइ, स्थाने निवास॥

नोट—स० १ की दूसरी प्रति मे पाहण के स्थान पहाण और कोमली के स्थान मोकली पाठ है।

नयण वाण जण वींधती।
तरुण तरङ्गि, करुण तरङ्गि।
वाकउ जोअती,जन हृदय आल्हादता।
कञ्चुक ताडती, सीमंतउ फाडती।
कठ कंदलि हारु रोलवती,
जोवतु न हुती बाल सुकुमाल, तत्काल उत्तलित काम काल।

विरह—

हा कान्त!
हा हृदय विश्रान्त!
हा प्रियतम
हा सर्वोत्तम
हा सौभाग्यसुन्दर
हे प्रेमपात्र।॥ ६६ ॥ (मु०)

३२ सुबाला (६)

हंसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती।
कामिनी गर्वु भाजती, चंद्रकला जिम गुणिहिं वाधती।
नयण-वाणिहिं जण मण वींधती।
माथइ सीमतउ फाडती, हियइ कुंचक ताडती।
वाकउ जोयती, विरहिया चित्त ओअती।
अति रूपवती, साक्षात रति तणउ रूप।
लक्ष्मी तणउ लावण्य, पार्वती तणी रेषा।
रंभा तणी कांति, रन्ना देवि नउ तेज।
रोहिणी तणी कला, सीता देवि नी लीला।
द्रौपदी तणउ सौभाग्य, लक्ष्मी तणउ भाग्य।
अग्नि देवता नउ वान, रूपिणी तणउं सत्थान।
कठि नवसरइ हारि रुलतइ जिम दीठि।
तिम चित्त माहि पइठी॥ ऐइसी बाला।
इदुर्वक्त्रस्य वीप्सा सदन मुपकथा पादयो पंकजाली
पर्यायोलि कर्ण्यानतुतनु महसा वर्णिका कर्णिकारं।

आभालः कुंभि कुंभ द्वयः मुरसि जयो काम कोदंड दंडः ।
पालइ भ्रूलत्तायारतिरमि नयनं पश्य रूपस्य यस्यः ॥१३१॥ (स०-१)

३३ नायिका अंग उपमा (७)

काजल श्यामल केश कलापालंकृत उच्च मस्तक ।
जिसिउ अष्टमी तणउ चंद्र तिसिउ भालस्थल ।
जिसीया वसंत मास तणा हींडोला तिसिउ कर्ण युगल ।
पुरुष प्रसृति प्रमाण कमल परिलोचन ।
जिसी कामदेव तणी सागिणी, तिसी भुमहि ।
जिसी तेल तणी धार, तिसी सरल तरल नाशावंश ।
जिसीउ पूर्णिमानउ चंद्रमा तिसी मुख कमल ।
जिसिया प्रवालिया, तिसिया ओष्ट पुट ।
जिसी दाड़िमनी कल, तिसी दंत पंक्ति ।
जि० विशाल करि कुंभस्थल, तिसिउ वक्षस्थल ।
जि० कमल कोमल नाल, तिसी बाहु लता ।
जिसिउ सीह तणउ लाक, ति० मध्यदेश
जि० पर्वत्त शिला, तिसिउ नितंब बिंब ।
जि० केलिना स्तंभ, ति० वेऊर ।
जि० ऐरावण सुंडादंड, ति० जंघ युगल ।
जि० अलता[१] नी पोली, ति० सुकुमाल पादतल ।
जि० यमुना प्रवाह तिसी वेणी लहलहइ ।
जिसी चांपानी कली तिसिउ सकल शरीर ।
रूप तणी रेखा, लावण्य तणउ कसवट्टउ ।
कांति तणउ आगर, सौभाग्य भंडार ।
बोलती अमृत वेलि, जे वचनि करी पाहण पहालइ[२] । ६५ (स० १)

३४ नायिका आभरण (८)

ललाटि तिलक, काने झलक.

---

१ अलता

२ पल्हाल

बाहे वलक[१], आगुलि अगुलियक,
कटि कंठिका, गलइ हारु,
माथइ मोतीसरि, हृदय सोवन[२] ऊतरी
हाथे दोरा, पाए पोलरा,
इसे आभरणे आहरी टोहरी नायका ॥ (पु० अ०)

३५ कुस्त्रो (१)

काली, कराली, कोचरी, काणी, कुरूपो, कुत्सित, कुरुर, काकसरी, काकजघा, कुहाडी, कुलक्षणी, सापिणी, पापिणी, सखिणी, सटखिणी[१], सवणी, निरगुणी, चचल, चीपडी, कुखेडी, कूबडी, बोबडी, मुकडी, नुबडी, लबडी, सडी, पडी, बली, उछाछली, भूतेछली, चिंतावली, पागुली, रूलीखली,[२] खुली बली, खेलेजाडो, मुल, आखा चिपडी, आ खेबाडी, डीलेजाटि, कामकाज माडी, आखेंचूंधी[३], कानि ऊची, हाथिट्टी, कानि बुटी, लाबा दात, करेरात, नीलज, अकज, छिनाल, टारी, कुतरी, निसनेहो, कुहाड, दुर्गंध देह, जीभाली, रीसाली, भूठाबोली, निद्रणखीण, अकुलीण, सेडाली,

एहवी स्त्री पाप थे होइ । एहवी स्त्री भला माणसने वरजवी । (स० ३)

३६ कुस्त्री (२)

काली, कुत्सित, कुहाड़, राड, रीसाली, रोमाली, रोती, चूची, चीपड़ी, सूगाणी, सखिणी, हठीली, सेडाली, हराम जाति, कलेमणी, कुपात्रणी, कुजाति, एहवी भूडी स्त्री पाप नइं उदय पामइ (पै०)

प्रति स० ३ का पाठ—

काली, कुत्सित, कुरूप, कुहाड़, कुतरी, गटी, रीसाली, रोमाली, रोती, चूची, चीपडी, सुगामणी, सखामणी, सोभाली, माजाली, सेडाली, माजरी, हठीली, हरामजादी, भूठा बोली, कलेसणी ।

३७ कुस्त्री (३)

बोलती हूती छड ऊतारइ, चाट फाडइ
महा विकरालि, अति आगि भालि
सात्री अलछि, बोलती सर्वांग सूल उपजावइ

---

१ वलय २ सोवर्ण ३ हाथे ककण रव भलत्कार, पगें नेवर भात्कार ।
(स० १ न० १/० के अतर्गत)

१ सउखिणी २ लुली ३ आखे चूची

मिरी तणी ऊगटि, अगार तणी सउद्धि
चालतउ पलेवणउ, दाघ ज्वर तणि ग्रहिन
निर्सा केवलइ हालाहलि
विषि घडी हुइ तिसि स्त्री ॥ (पु० अ०)

३८ कुस्त्री (४)

कुहाडि अदंड स्त्री—

बोलती छउड ऊतारइ, दृष्टि देखती मनुष्य मारइ।
नाग माथइ सइ[1] थड फाडइ, चालती[2] भुहि फाडइ।
नव धाया तिर पाडइ, वालि बाघी कुडी आहणइ।
आकाशि उडता पखीया गणइ, कुहणी छेहि खात्र पाडइ[3]।
विहु पुरुष देखता वाट उठाड़इ।
अगाई करति आद्रा[4] लुवि त्रोडइ, पग छेहिं गाठि छोडइ।
आखि हुतउं काजल हरइ, केसि बाधि[6] शिल धरइ।
जीभइ नव छोलइ, निष्ठुर वचन बोलइ।
जीण[7] बोलाविती माथा ना केस ऊभा थायइ। ना चालती अलच्छि जाणवी।
दुरित वन घनाली[8], शोक कासार पाली।
भव कमल मगाली, पाप तोय प्रणाली।
विकट कपट पेटी, मोह भूपाल चेटी।
विषय विष भुजगी, दुःख सारा कुशागी ॥ ८८ ॥ (न० १)

३९ कुस्त्री (५)

जीभइ नव छोलइ, बोलतु छउड उतारइ।
चालती भूमि फोडई, नव घामा तेर पाडई।
वालि बाधी कोडीआ हणई, कुहणी छेहि खात्र पाडई।
पग छेहडइ गाठि छोडई, साची अलच्छी
मिरी तणी ऊगटी, चालतु पलेवणु
आगरण तणी दाह, जूर तणी वहिनी,

---

१ नाग नयइ फाडइ २ चुटहि भुहि ३ पटइ ४ वाह ५ वानुवि ६ ... ७ जेणि
८ घनाली

बोलती छूटइ उतारइ, रीसइं छोरू नइं मारइं ।
जइ को वारइ, तउ साहमु तेहनइ विडारइं ।
जण जण स्युं आफलइ, बोलती विसइ हाथ उछालइ ।
जाअइ खेत्र खलइ, घरि विग्रोड़ करि बाहिर मलइ ।
पूरी पापिणी, फूफूती सापिणी ।
जे चालती कुवच्छ, साची अलच्छ ।
जीभइ चत्र छोलइ, सासू सुसरा नूं नाखइ ओलइ ।
अगार तणी सडडि, विढइ सहू सुं टडडि ।
बोलता केस ऊभाथाय, मनुष्य नासी घरे जाय ।
बिलाड मुखी, धणी नइ दुखी ।
वगाई खाती, ... ।
गोडउ गिलइ, झागड़े मुहडउ छिलइ ।
जाणें आरण नी राख, छोरू नइ लागइ जेहनी चाख ।
पर मर्म चापइ, आगलउ बोलतउ थरहर कापइ ।
जे जे चालनूं पलेवणूं, एहनूं नाम न लेवणूं ।
जिवारईं गृहस्थ नइ ...जोग, तिवारइ होइसी कुकलत्र तणउ सयोग ।
चालती चीतरी, ... ।
लावा लूतरी, किता कहू कूतरी ।
पुण्य द्वार तणी आगल, मोक्ष तणी भागल ।
जेह जीव नइ होइ पापकर्म भारी, इसी सतापकारी तऊ सपजइ नारी ।
कहइ 'धीर' अणगारी ।

इति दुष्ट स्त्री वर्णक ॥

(कु०)

४१ दुष्ट स्त्री (७)

काली, कुकाली । काणी, कोचरी ।
कुरूप, कुत्सित ।
काक जंघा, काकसरी ।
कुदाडि, कुलक्षिणी,
सापिणी, पापिणी
मुंखिणी, नरगिणी
लाबडी, बोबडी ।
सट्टी, पट्टी ।

४३ अधम स्त्री (६)

बोलती खाल पाडइ, फूक देती पाहण फाडइ ।
महाकालि, विकरालि । सपूरी आगि झालि[1] साची अलछि ।
जाची जेऊ काल रात्रि ।
वचनि सर्वांगि शूल ऊपजावइ, मिरी तणी ऊगटि ।
अगार[2] तणी सउडि, चालतउ पलेवणउ ।
दाघ ज्वर तणी बहिन, नव धाया तेर ऊपाडइ ।
बगाई करता धाटी ओडइ, फूँक वेहि गाठि छोडइ ।
जिसी केवलइ हालाहलि घडी हुइ, प्रलयकाल तउ नीपनी हुई ।
वीछी ना आकुडा नी परि वाकुडी, कूड कपट कारि साकुडी ।
कुलक्षण तणी आकुडी ।
इसी सर्वाधम स्त्री जाणिवी ।
आवर्त्त. सशया नाम विनाय ।

(न० १) १३७

४४ फूहड़ स्त्री (१०)

कुघरणि, महा कुहाड़ि ।
सदा धरइ आटोपु, अइठी भरतार दिइ निगेपु ।
डोला हेठि कि कि उधरइ, तुहि साम्ही[1] थी बरबरइं ।
रावणा सीवणा नितु अणाह करइ, नकल दिवस सूअर जिम चरइ ।
ऊँचा × नीचा वाक्य बोलाइ, यही प्राहुण उटला[†] कोलइ ।
घोर छाकन्‍: भिडइ, वाद + गुलाम ऊपरि मुहि चडइ ।
घरि थकि मीकउ ओडइ, बोलावी माथउ फोडइ ।
पाणी माहि कलि ऊठाडइ, कुटुम्ब नदा दुःखि पाडइ ।
इसी घर नारि दुर्मुखि, अघकार नुखि ।
सताप कारिणी, उद्वेग कारिणी, कलह कारिणी ।
महापाप तणइ उदयि पामीयइ, रोभि चडी कुणही न मनावीयइ ।
राधती सीधती सारउ मउलउ करइ दाधउ काचउ करइ ।
दीलउ गीलउ करइ । जे खाधउ ते न्हावउ

---

१ मूर्ति २ अग्नार ३ केटि
१ बीवर
+ वाद्‌ वाद × अवाच्य — उगको — और वाइज ऊपर कवारी ऊपरि निनेवउ चडइ

जिम थोडइ पाणी माछलु, तिमि विरहि कीधउ आतमा आकलउ।
जिमि द्विविध ससार देखइ, तिम आपणपू उवेखइ।
पुणि रोअइ, अनि आखि ना आस लूही दिमि पन्ना जोअइ
जिसी बाग विछोही हरिणी,
तिमी विरहि व्याकुलि तरुणी।
गाढइ दुख सागर बूडी
तउ निद्राइ न तेडी॥ ३७॥ (मु०)

४६ विरहिणी (१२)

हार त्रोड़ती, वलय मोडती।
आभरण भाजती, वस्त्र गाजती।
किंकिणी कलाप छोडती, मस्तक फोडती।
वक्षस्थल ताडती, कुचूउ फाडती।
केश[1] कलाप रोलावती, पृथ्वी तली[2] लोटती।
आँसू करी[3] कुचक सींचती, डोडली दृष्टि मींचती।
दीन वचन बोलती, सखी जन अपमानती[4]।
थोडइ[5] पाणी माछली जिम तालो वली[6] जाती, शोक विकल थाती।
क्षणि जोयइ, क्षणि रोअइ।
क्षणि हंसइ, क्षणि नइसइ[7]।
क्षणि आक्रंदइ, क्षणि निंदइ।
क्षणि मूझइ, क्षणि बूझइ।
देह तणउ तणुं, संतापइ चंदणु।
कमल[8] नाल, पुण मेल्हइ झाल।
चद्र काति[9] ज्वलइ, पुष्प[10] शय्या बलइ।
हारु, भावइ अगारु।

पाठांतर

१ कुल कलाप रोलती (पु० अ०), कतुल कलाप रोडती (मु०) २ नरतल (पु० अ० और मु०) ३ मुकनालि वापाजलि (पु० अ०) सकल वापि (मु०)

४ इसके बाद प्रति (पु० अ०) में 'गुणवुण रोइती, अपरापरु दिग्मण्टल जोइनी,' पाठ है।

५ पाणीय रहित नंच्छी जिन तिलोवलिजाती, विकलथाती (पु० अ०) पाणीय रहित मत्स्य जिम वैल्लती, (मु०) ६ विकलइ (पु० अ०) विहसई (मु०)-चद्रोपलपलई। ७ क्षणि एक टवूकइ, क्षणि एक सदई (मु०) ८ मृणाल नाल ९ ज्योत्स्ना (पु० अ०) चद्रिका (मु०) १० चद्रोपलवलई (पु० अ०) चद्रोपल ज्वलइ (मु०)

कदली हर,[1] मानइ जमहर ।
जे जल सीकर[2] ते उद्वेग कर ।
जड शीतलोपचार ते करइ[3] विकार ।
इणं परि प्रज्वलित स्नेह पटल ।
विरहानल नीपजइ,
विरह ताप निश्वास चिंता मौन कृशागता ।
अरुद्र शय्यानिशादैर्घ्यं जागरः शाशिरोष्णता ॥
अप मारथ्य घनसार कुरु हार दूर एव किं कमलैः ।
अलमल मालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला ॥
अथ सा पुनरव विह्वला, वसुधालिंगन धूसर स्तनी ।
विललाप विकीर्ण मूर्द्धजा सम दुःखामिव कुर्वती स्थलीं ॥ ११८ । (सं० १)

(स २) मे विशेष पाठ—

जे तरु किसलय तप, सोइ सताप कर

(स. ३) में विशेष पाठ—

आखि चचाले । बैठी डोलै । घूँघटरी ओट धरती लौटे ।
आसूइ धरती सींचै, दुखे आँख मीचै ।
कुंटुंब नै करै कानै, सहेलिया ने अपमानै ।
मूर्छा पामती धरती ढलई,
खिण उघाडै मुहडइ मूडेघरइ,
अहोराजकुल दिवाकर, हो करुणासागर
हो असरण-सरण, मुझनइ मूकी नै किहा गयो ।

४७ विरह-विलाप (१३)

हा कान्त ! हा हृदय विश्रान्त !
हा प्रियतम ! हा सर्वोत्तम !
हा दयत[1] ! हा प्राणहित !
हा सौभाग्यसुंदर ! हा भाग्य पुरदर !
हा अमृत वचन ! हा चन्द्रवदन !
हा सुदर गात्र ! हा प्रेमपात्र ! (पु० अ०)

---

[1] गृह (मु०) [2] शीतलकर (पु० अ०) शीतलु (मु०) [3] भजइ (पु० अ०) (मु०) ८ इणि पर प्रबल, प्रज्वलित स्नेह पटल (पु० अ०) (मु०)

[1] दयित (स० २)

४८ वेश्या वर्णन (१४)

चतुषष्टी कला[1] कुशल, कोमलालाप पेशल ।
निरुपम[2] रूप लावण्य सरूप, विलसद् गुण निधान कूप ।
चतुरिम चाणक्य[3], ज्योत्सना माणिक्य ।
इंगिताकार निपुण[4], कामशास्त्र विचक्षण[5] ।
चंपक कलिकावत सुकुमार, सत्पुरुष सार सुकुमार ।
इस्यउ पुरुष देखि, कुट्टणि भणइ विशेखि ।
वस्थि[6] करै भक्ति, वडी आसक्ति ।
आव्यउ आपणै गृहागणि, चावतउ[7] जाणै चिंतामणि ।
निवृत्ति करु, साक्षात कल्पतरु । (सू०)

४९ स्त्री स्वभाव (१)

खिण रूसे, खिण तूसे । खिण मुलके, खिण ग्रुरके ।
खिण मुरझे, खिण बुझे, खिण झूझे । खिण धीजे, खिण सूझें ।
खिण हँसे । खिण सस्नेह साहमुं जोवे,
खिण प्रीति तोडे, खिण प्रीति खिण रोवे ।
खिर टले, खिण मिले । खिण कोप उछले, खिण वले । खिण तारे, खिण मारें ।
खिण राचें, खिण माचें । खिण विरचे, खिण वढे ।
खिण गाइ, खिण उदास थाइ । खिणापडे, खिण[1] पाडे, ।
खिण राग दिखाडे, खिण महिला मर्म उघाडे ।
खिण हंसे, खिण मा र वाघसे । खिण भूंडी, खिणरुडी ।
॥ एहवो स्त्रीनोस्वभाव ॥ (स० ३)

---

१ विज्ञान (मु) २ 'दखना मोहियउ वडावडा भूप, विमल सद्गुण निधान कूप ।' इससे पूर्व अधिक पाठ—'महा एक अनूप, जोवता अवगुणइ छाह नइ धूप ।' (कु) ३ चतुर वाणिज्य (मु) ४ 'अ ग मइ घणा गुण' (प्रति कु, में अधिक) ५ जाणइ नरनारी ना लक्षण (कु में अधिक) इसके आगे और अधिक—

वक्षस्थल विशाल, अत्यंत सुकमाल ।
रूपइ उर्वसी, निलउ लोचन विसी ।
साक्षात रंभा, देखता उपजइ अचभा ।

६ वस्त्रि (कु) वस्त्रे (मु) ७ चालतउ (मु) आविउ (कु)

१ खाडै

५० स्त्रीना काम (२)

दलवा, भरडवा, पोसवा, थालधोवा, झटकवा, छाण पूछा, लीपणा, वासीदा, राधवा, प्रीसवा, कालवा, साधवा, इत्यादि स्त्री का काम।

(स० ४)

५१ स्त्री उपमा (३)

रति, प्रीति, रंभा, तिलोत्तमा, इन्द्राणी ४ अपछरा, उर्वसी, लक्ष्मी, गंगा, देवकन्या, नागकन्या, किन्नरी, विद्याधरी, खेचरी भूचरी, सरस्वती, गौरी इत्यादिक [एहवी कन्या]

(स० ३)

५२ स्त्री नाम (४)

कपूरदे, रत्नादे, रूपादे, अमृ प्रतापदे, सहजलदे, मूमलदेवि, चापलदेवि, रामलदेवि, पाल्हणदेवि, पाल्हणदेवि, राणी कपूरमंजरी, रत्नमंजरी, मदनमंजरी, सोभाग्यमंजरी, कुमरि ॥

(पु० अ०)

५३ मालवी स्त्री नाम (५)

चंगा,	गगा,	चंपा,	गोभा,	जसोदा,
जागसा,	जसमा,	वरजू,	वेणि,	खेड़ा,
सोना,	लाली,	लखमी,	नीला,	तेजू,
तिलका,	अगरा,	आसा,	फूला,	अनूला,
इंद्रा,	सुंदर,			

५४ मेवात स्त्री नाम (६)

गुलालदे,	गुलाबदे,	गोरादे	गूजरदे।
गुमानदे,	गोपालदे,	साहिबदे,	चतुरंगदे,
सोहागदे,	सुजाणदे,	सुरताणदे,	देवलदे,
दुरगादे,	साहिया दे[१],	राययादे,	सोभागदे
चमेली,	कसेरी,	कपूरी,	कस्तूरी,
राकली	गाकली,		

---

१ साहिबादे

१ प्रभात-वर्णन (१)

हवै कूकडा बोल्या, लगारेक नींद थी डोल्या ।
नींदै झकोल्या, मूंकी संभोग नी लोल्या, स्त्री भर्तार डमडोल्या ।
आवी नारी, बार उघाडी, राति अँधारी ।
भर्तारइ लूगडूँ आल्यूं, वासै पाछै घल्यूं ।
दही संभाल्यूं, विलोवणूं घाल्यूं ।
राति ज दीसैं छइं, घरटी पीसै छइं ।
इतरइ शंख वाग्या, झन्नकी नै जाग्या ।
ऊठ्या नागा, लूगडा पहिरवा लागा ।
पहिर्या वागा, आपणै कामै लागा ।
दीवइ जोति घटी, चाकी परीवटी ।
दूती परी सटी, चंद जोति मटी ।
गणिका नी महिमा घटी, माथा नी वाँवै लटी, पाप मति फटी ।
तितरैं झालर वागी, स्त्रियो पण जागी ।
ऊठवानै लागी, भावठि भागी, पुण्य दिसा जागी ।
किंवाड़ खोली, मुँहड़ै बोली—
उठो बाई, जागो भाई, राति विहाई ।
प्रह पीली थई, राति परी गई ।
कलीं चूण लई, हीइं सरदई ।
आकाश लाली भई, स्त्रियो गहगई, सन्नकू भली भई ।
शैया संकेली, अलगी म्हेली ।

५५ मरुधरस्त्रीनाम (७)

हरकी, वीरकी, केसकी, रामकी, नोनकी, पूरकी,
देवकी, रावकी, चापली, पेमकी, आसकी, कोडकी,
ऊमली, सिवली, देवली, दीपली, जगली खेतली,
मानकी, नेतली, पासकी, इत्यादि मरुधरस्त्रीनामानि ॥

५६ दक्षिणी स्त्रीनाम (८)

तेलाई, तुकाई, तुलजाई, जोगाई, झरवाई, झवाई,
जम्यवाई, मोगाई, भोगाई, गंगाई, मगाई गोमाई,
रंगाई, रेवाई,[1] शिवाई, देवाई, नगाई, लवाई,
केसाई, कोडाई, कोकाई, कनकाई, जमुनाई, हसाई,
भंगाई, मणिकाई, भीमाई, कासाई, कामाई, जीवाई
फूलाई, द्वारकाई, पीलाई, राजाई,
इति दक्षिणीस्त्रीनामानि ॥

५७ गुजराती स्त्री नाम (९)

छोटी, चड़कली, मडकली, मागवाई
गावाई, गोरवाई, लाडवाई, लाछावाई
लीलवाई, लालवाई, वीरवाई, वइणावाई
सेजवाई, वेजवाई, वालवाई, गेलवाई
तेजवाई, फूलवाई, पूतली वाई, सेवित्रीवाई,
कुंअर वाई, कीकी वाई, रींडली वाई, मट्टवाई,
मटकूवाई, फटकूवाई, फणकूवाई, झणकूवाई,
वीभूवाई ॥

(स० २)

---

१ रीवाई

सभा शृंगारादि-वर्णन संग्रह

विभाग

प्रकृति-वर्णन

प्रभात, संध्या, ऋतु आदि

रजनी खेली, स्त्री रही इकेली ।
वात सभारै पेली, ऊभी देहली, नयणै रेली ।
प्रभाती गावो, मंगल ध्यावो ।
आणंद पावो, दरबार जावो ।
घोडै जीण करइं, कोतल आगल करइं ।
झाँखी नै मुजरैं, वड़ै गुजरैं ।
तीन हजारी, पंच हजारी ।
सात हजारी, महा वजारी ।
बार हजारी, लाज वधारी, काज सधारी ।
मुजरै आया, मोजा पाया घोडा लाया ।
निवाज गुदारं, मेजत आवै ।
तुरक मुगल, सईद अवल ।
काजी आगें, पगे लागें ।
नोवत गडगड़ै छै, पारसी भणै छै, खुदा खुदा करै छै ।
चोपू उछेरयूं, गोवालै घेरयूं, आंधुं सू प्रेरयू ।
पथी परा चाल्या, आघा हाल्या ।
सोंण साउ वाल्या, साथै संबल घाल्या ।
वांका मारग टाल्या, सज्जनिया पाछा वाल्या ।
सूरज उग्यो, संसार जग्यो ।
व्यापारे लग्यो, पनघट लग्यो ।
आप आपणा धर्म करीइं पुण्य करीइं, अरिहंत धरीइं ।
सुणो हो भ्रात, करो पुण्य नी वात ।
पवित्र करो गात, गई रात, थयो प्रभात ॥ (स० ३)

२ प्रभात-वर्णन (२)

प्रभात समउ हुयउ अह फूटउ[1] ।
लोक तणइ ध छूटउ ।
तारागण विरलउ हुयउ, चंद्रमा विच्छायु थियउ ।
कूकडउ[2] लवइ, देवतणाआर ऊघड़ा ।
प्रभातिक तूर्य वाजिया, राजभवन वैतालिक पढइ ।

१—अंधकार फीटउ । गाय तणा गाला छूटा ।
२—कूकडा तणी ऊलि लवइ,

हस्ति सिखलारवि कानि पडियउ न सांभलियइ ।
विलोणा तणा झरडका ऊठिया,[1] पथिया मार्गिथिया ।
ब्राह्मण तणै घरे वेदझुणि[2] विस्तरियउ ।
धार्मिकलोक अनुष्ठान[3] पर हुया । (पु० अ०)

३ सूर्योदय-वर्णन (१)

उदयाचल चूलिकालकार, निज किरण विकाशितान्धकार ।
प्रवर्त्तित सकल महीतल व्यापार, चक्रवाक प्रीतिसूत्रतणा सूत्रधारु ।
निजकर निकर प्रतापाक्रान्त भूतल, इस्यउ सूर्यमंडल ।
कातिसमूह प्रकासइ, उद्दंड पद्मिनी खंड विकासइ ॥ ६५ ॥ (मु०)

४ संध्या-वर्णन (१)

सूरज ना किरण पश्चिम ढल्या, पथी सगा नै मल्या ।
विरही ना हिया वल्या, गोवाल घरै वल्या ।
चोपूं लाव्या, आप आपणा घरै आव्या ।
पखी टलवल्या, मालै जावानै खलभल्या ।
चोर सलसल्या, आवैं हडफल्या ।
आकाश राता, मेहें करी माता ।
किहाकिण नीला, किहाकिण पीला ।
नानाप्रकार ना रग, भला सुरग ।
राछ-पीछ सकेल्या, ठिकाणै मेहल्या, कारीगर घरै खेल्या ।
सक्का पाणी भरैं, छटकाव करैं, देसोत डेरैं ।
फूल विखेरैं छइ, छडीदार जी-जी करैं छइं ।
दुलीचा विछावै छइ, उमराव आवै छइ ।
मोजा पावैं छइ, कीर्तन थावैं छइ ।
गुणियन गावै छइ, अवखास जुडै छइ ।
पाछा ते मुडै छइ, दुसमन ते कुढै छइ ।
हीयो हीयाते अडै छइं, असवार ते खडै छइं ।
एक-एक मा पडै छइ, कुजड़ियां लडै छइं ।
गुदडी जुडाणी छइं, अनेक वस्तु मडाणी छइ ।
दलाल बोलावै छइं, रसिया मोलावै छइ ।
माला गूथावैं छइ, बीडा खावै छइं ।

१—उपजइ । २—ध्वनि । ३—प्रतिक्रमण (स० ११५०)

पान मिठाई ल्ये छइं, पईसा दे छइं ।
झालर झणके छइं, रणसींगा रणके छइं ।
शंख भणकै छइ, कतेव भणै छइ ।
तसवी गिणै छइ, खटकर्म ते करै छइं ।
लोक अरापरा फरै छइ, दीवा हाटे घरे छइ ।
तेल ते भरै छइं, सध्या ते करै छइ ॥ (स-३)

५ चन्द्रोदय-वर्णन (१)

गजलक्ष्मी स्फाटित दर्प्पणु, चकोर संतर्प्पणु ।
अमृतमय किरणु, तिमिर हरणु ।
मुग्धवधू विदग्ध शिक्षिणोपाय, प्रणय कुपित कामिनी माननोपाय ।
विरहिणी हृदय करपत्रघातु, चकोर दत्तलातु ।
चक्रवाकु नि.कारण शत्रु, कन्दर्प्पराजनउं छत्रु ।
अमृतइ भरिया चन्द्रकान्तु, यामिनी-कामिनी कान्तु ।
प्रकाशित कुमुदाकार, इस्यउ ऊग्यउ रजनीकार ॥ ६४ (मु०)

६ अंधारी रात-वर्णन (१)

साझ परी गई, गुढड़ी परी थई, दीवै जोति भई ।
चोहटै भीड़ मिटी, व्यापार नी महिमा घटी, हाटै तालूं नटी ।
आप-आपणै घरै आया, कूँची लाया ।
स्त्री सोलै सिणगार सजै, गणिका जारनै भजै, घड़ियाले घडी वजै ।
सर्वकारज साध्या, पाडा बाध्या, रधारण राध्या ।
व्यालू कीधा, किमाड आडा दीधा ।
सीरख माचा सभाल्या, ढोलिया ढाल्या ।
ऊपरि पहतेडा वाल्या, सूवा नै भाल्या, जामण घाल्या ।
मिठाई खाइ छै, कहणी कहवाइ छै, नींद आवै छै ।
सूपा पडया, जार परस्त्री नै अडया ।
अघकार व्याप विस्तरै, कुमाणस पर घर सचरै ।
काजल जेहवी, स्त्रियोनी वेणी जेहवी ।
यमुना ना प्रवाह जेहवी, रेवतकाचल जेहवी ।
अजनाचल जेहवी, पटाभर कुंजर जेहवी, कालीघटा जेहवी ।
काली-काली स्याम, ·········।
हाथे हाथ न सूझै, कोई कोईनै न बूझै, विचार माणस मूझै ।

काइ न कहवाई छै, दूती उतावली धाई छै, संदेसो कहवा जाइ छै।
केड़ते कसै छै, चोरते धँसै छै, कूतरा ते भसै छै।
घोड़ा ते हणहणै छै, नीला जवते चरै छै।
कोटवाल ते फिरै छै, चोकी ते करै छै।
रणतूर बजावै छै, 'खबरदार-खबरदार—जागते रहियो—जागते रहियो' कहीनै जगावै छै, चोर-चकार नै भजावै छै।
घणी सी कहीइं वात, दुसमणनी न पूगै घात।
मनुष्यनी नोवै यात, एहवो अंधारी रात। (स० ३)

७ अंधकार-वर्णन (१)

काली लली—रात्रि रात्रि प्रतिइ मिली।
जिसी भ्रमरनी पाख, जि० अजनाचल नउं शिखर।
जि० कुमाणस मुख, जि० स्त्रीतणी वेणि।
जि० यमुना प्रवाह, जि० कज्जल नउ अंबार।
जि० गुलीनउ रंग, जिसिउं कसीसनउं जल॥ ७२ (स० १)

८ वसंतऋतु-वर्णन (१)

विरहिणी हसंतु, पुहतउ वसतु।
फूलइ वणराइ, नगरमाहि न फिराइ।
रुलीइ तिमं निजईय वनि।
मेल्ही वइराग, खेलीइं फाग।
कामराज ना भूंप, तिसा मस्तकि रचीइ चूप।
अति सुविशाल, आंब नी डाल।
तिहा बांधीइ हिंडोला, रमइ नर भोला।
फूलहरा भरीइ, भला कदलीगृह अनुसरीइ।
कोइलि वासइ, रुलीईत विलासी नासइ।
भर्त्ता स्त्री रलिए, खेलहि खडोसली ए।
विहसी वउलसिरी, भमइं रहइं भमर पाखलि फिरी।
चपक नी कली, चपक ऊपर नीकली।
मस्तकि मरूआ, पहिरे लोक गरूआ।
रितुराज नउ भालु, वनि महक्यउ वालउ।
परिमल भारी, उल्लसी देव गंधारी।
दमणउ पहिरीइ, कुण एकु चित्तु न हरीइ।

नीकली निरवाली, हियइ पहिरी वाली ।
सुकृतीया हुइ सुखकरणी, हसी विहसी करणी ।
दीसइ महाभरि, आंबानी माजरि ।
उल्लस्या अशोक, वत्तत रागु आलवइ लोक ।
इम वसंतश्री विलसइं, सुरराज हुइं हसइ ॥ ४१ (मु०)

६ ग्रीष्मऋतु-वर्णन (१)

गयो सियालो, आयो उन्हालो ।
लू वाजे छै, शीत लाजै छै ।
पग दाझै छइं, तावडो तपै छइं ।
रूख पात झडै छइ, रूख पवनै पडै छइं ।
पणिहारी पाणी माटि लडै छइ, वावकूआ सूकै छइं ।
लोग काम चूकै छइं, पंथीमार्ग मूकै छइं ।
तावडो लुकै छइ, कंठ सूकै छइ ।
जोगी जाप जपै छइं, जीव रुख नै लपै छइं ।
सर्वछाया छिपै छइं, तावडो तपै छइ ।
... ., चंदन प्याला भरावीजै ।
तैखाने पोढीजै, मलमल ओढीजै ।
एलची साकर ना पाणी पीजै छइ, वाय लीजै छइ ।
मोज दीजै छइं, करतूत कीजै छइं ।
लाहो लीजै छइं, आंबा मोरया छइ ।
फाग खलै छइं, पचरका मेलै छइ ।
मुहडै गुलाल छेलै छइं, लोक हाय झेलै छइ ।
हीया विकसै, लोक हँसै ।
बागवाड़ी लाइजै, तलाव न्हाईजै ।
कमल लाइजै, चाग वाइजै ।
राग[१] गाइजै, आणंद पाइजै ।
दुलीचा विछाइजै, यार बोलाईजै ।
गोठ कराइजै, पात्र नचाइजै ।
बाजा बजाइजै, पाय नचाइ जइं ।
रंग रमीइं, परदेस काइ भमीइं

---

१ रास।

अवल्ल जीमिइं, …… ..।
केसरीलाल, रमोगुलाल ।
वइसौ चउसाल, एहवो उष्णकाल । (स० ३)

१० उष्णकाल-वर्णन (२)

महा पित्त[1] नउ आलउ, आव्यउ उन्हालउ ।
लूअ वाजइ, काननी पापड़ी दाझइ ।
झाळुआ वलइ, हिमाचल ना शिखर गलइं ।
निवाणै खूटा नीर, पहिरीइं आछा चीर ।
हथेली जेवडा, जीमइं[2] भीना वडा ।
एवड़उ ताप गाढउ, भावइ करंबउ टाढउ ।
पाचइ वण, राणी ना ढीला थायइ काकण[3] ।
वायु वाजइ प्रबल, उड़इ धूलि ना पटल ।
सियालइ हूती राति मोटी, ते उन्हालै थई छोटी[4] ।
सूर आपणपइं तपइ, जगत्र संतापइ[5] ।
जे जीव थलचरइं, ते जलाश्रय अणुसरइ ।
लोक ल्यइ आबलवाणी[6], मेली टाढा पाणी ।
केइक जीमइं खाटा, तड़कउ टालइं बाधइ त्राटा ।
साहूकार ल्यइ साकर, तपति नई सिर घइ टाकर[7] ।
एवउ उष्णकाल, फूलइ अंब डाल[8] ।

११ उष्णकाल-वर्णन (३)

जिसी दावानल तणी ज्वाला तिसी लू वाइं ।
जिसिउ त्रावन्नपल तणउ गोलउ धमिउ हुइ, तिसिउ आदित्य तपइ ।
जिसी भाड तणी वेलू तिसी भूमिका धगधगइ ।
मस्तक तणउ प्रस्वेद पानी[9] उतरइ ।
धर्मि जीवलोक गलगलइ, श्रीमत तणा चउबारां झलहलइ ।
जलद्रा शरीरि लगाडीपइं, गुलाल[10], तणा अभ्यगम[11] कीजइ ।
बावन्ना श्रीखडघसीयइं, चउदिसिहि वीजणा फिरइं ।

१—पित्र २—जीमइलोक ३—रणीय हुइ ढीला थाइ काकण ४—सीयालइ हुती मोटी रात्रि, ते नान्हीथई रात्रि, ५—जगयउ तपइ ६—आछिल वाणी ७—तपति माहि फिरइ कागलिया चाकर ८—फलीयइ अ बा कालि। ९—पाल्ही। १०—गुलाम।
११—अभ्य ग।

द्राक्षा आंबिली पान कीजइ, कलमशालि तणा सीथउरा करंबा कीजइं।
आछा कापडा पहिरीयइं, लू आहण्या पाणी पीजइ।
अछाछ चंदन रसार्द्रकरा मृगाक्षो धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च।
मदोमरुत्सुमनसः शुचिहर्म्यं पृष्टं ग्रीष्मेमदं च मदन च विवर्द्धयंति। १५२
(स० १)

१२ वर्षाकाल-वर्णन (१)

आयउ वर्षाकाल, चिहु दिसि घटा उमटी ततकाल।
गडगडाट मेह गाजै, जाणै नालि गोला वाजै।
कालै आभै वीजुली झबकइ, विरहणी ना हिया द्रबकइ।
बब्बीहा बोलइ, वाणिया धान वेचिवा बाखार खोलइ।
बोलइं मोर, दादुरइ सोर।
अधारइ घोर, पइसइ चोर।

कदर्प्य करइ जोर, मानिनी स्त्री भर्त्तारनइ करइ निहोर। चंद सूरिज बादले छाया, पवेवाऊ आप आपणां घरा नइ धाया। राजहंस मानसरोवर भणी चाल्या, लोके वस्तु वाना घरा माहे घाल्या। बग पंकति सोहइ, इंद्र धनुष चित्त मोहइ। आभो थयो रातो, मेह थयौ मातौ। मोटी छाट आवइ, लोकानइ भावइं। झड़ी लागी, करसणीरी भाग्य दसा जागी। मूसलधार मेह वरसइं, पृथ्वी उर्णा-पूर्ण करिवा तरसइं। वहइ प्रनाल, खलखलइ पाल। चूयइ ओरा, भीजइं वस्तुवाना रा बोरा। टबकई पटसाल, चिचुंयइ वाल। नदी आवी पूर, कर्डाणर रूंख भाजि करइं चकचूर। वहइ वाहला, लोक थया काहला, जूना डूँढा पड़इ, लोक ऊँचा चड़इ। हालीए खेत्र खड़्या, वाडिस्यु सेढा जड्या। मारग भागा, जे जिहा ते तिहा रहिवा लागा। प्रगट्या राता मामोला, धान थया सुहगा मोला। नीली हरी डहडही, घणा थया दूध नइ दही। नीपना घणा धान, सभर्‌या धर्म्मनइ ध्यान। गयो रोर, लोग करइ बकोर। गयो दुकाल, थयो सुगाल। ईदृशे वर्षाकाले न कोपि, गंतुं शक्नोति। (का०)

१३ वर्षाकाल-वर्णन (२)

आसाढू[१] मेह आव्या, कुणइक नइ मनि उछरग न भाव्या।
कालाहणि[२] वली, सर्व जीव[३] नइ मन रली।
उत्तर वाउ वाव्या, आकास मेह गाज्या।

---

[१] साढ़ (मु०), सत्राढ़ (मु०) [२] कालवणी (मु०) [३] जगत्रय (मु०)।

कुडा बहक्या, केवड़ा महक्या ।
कुंद उलस्या, करसणी हरस्या ।
कदंब महमह्या, मयूर गहगह्या ।
पपीहा वासइ, विरहणी उसासइं ।
पर्वत[1] नइ सिखरि स्नेह नइ भरि ।
सीगड़[2] वायइ, मल्हार गाइ ।
भील नाचइ, महिषी माचइं ।
तूठा मेह, उलस्या स्नेह ।
नदी पूर वहिवा लागी, पग न लहइं पागी[3] ।
जल सू भरया निवाण, पृथ्वी प्रवर्त्ता मदन नी आण ।
हरी प्रगट हुआ, दीसइ बराह रा जूथ जूजुआ ।
सालूर ना सांभलीयइ स्वर, जाइ दीसइं विकस्वर ।
भला केलिवीयइ[4] वालर, वावीयइ झालर ।
अति सरूप, नींबूआ नीपजइ भूप ।
ठामि-ठामि[5] मन मोहीयइ, शालि ना क्यारा डोहीयइ ।
गुहिरउ मेह गाजइ, दुर्भिख्य तणा भय भाजइ ।
आगम नरेसर ना जाणे नीसाण वाजइ, बग पक्ति विराजइ ।
वाव्याकरण वाधइ, लोक धर्म कर्म वेवै साधइ ।
वेला लहलहइ, सर्वलोक आचारइ रहइ ।
पर्वत थी नीझरण छूटइ, भरिया सरोवर फूटइ ।
मघा अंधकार विस्तरइ, कमल परिमल निस्तरइ ।
अखड धार पाणी पड़इ, करसणी खेत्र खडइ ।
सीम नड़इ, लोक ऊँचा चडइ ।
केई एक तिलकी पडइ, कोठार खोलीजइ ।
कढीयारा दीजइ, एक-एक नइ पतीजइ ।
धान रा धणी छीजइ, कागदी पीजइ (काम दीपीजइ) असन्नाब सहु भीजइ ।
इसउ वर्षाकाल जाणी, हीयइ संतोष आणी ।
साधुमास च्यार एक ठउड़ि रहइ, पीठ फलक संग्रहइ ।
घणू स्यू कहीयइ, जइ रूडूं थानकि लहीवइ, तउ चउमासि एक रहीयइ ।

१ बप्पीहा (सु०) (मु) २ सींगलू (सु०) (मु०) ३ देश-विदेश नी वाट भागी (मु०) ४ कोलविइ (मु०) ५ अणवावै (मु०) [(सु) और (मु) प्रतियों में यह पाठ नहीं है ।]

फोरवियइ तप री[1] सगति, श्रावक करइ[2] भगति ।
स्यउ बंधुवर्ग,[3] साधु नइ[4] इहाई स्वर्ग ।
लाभइ प्रासुक[5] आहार, तउ लेवउ[6] व्यवहार ।
नइसइ श्रावक सुजाण, भला करइ वखाण ।
पुण्यवंत नइ[7] सगलइ पूरउ, नहीं मुनिसर[8] नइ कांई अधूरउ ।

(कु०)

१३ वर्षाकाल-वर्णन (३)

ऊमटी घटा, वादल हुई एकठा ।
पडइ छटा[9], ऊलसै[10] कुलटा ।
भाजै भटा, भीजै लटा ।
पुहवि पुण्य प्रगटा, ऋषिराजान ठामि बइठा ।
मेह गाजै, जाणे नाल गोला वाजै ।
दुकाल लाजै, सुवाय वाजै ।
इन्द्र राजै, ताप[11] पराजै ।
वीजली झबकै, पाणी भमकै ।
मेह टबकै, हीया द्रबकै ।
नदी खाल उबकै, वनचर भवकै,[12] आयो अबकै ।
घणा जीवनी उतपत, को पंथ चालो मत ।
बोलै मोर, डेडक जोर,[13] दादुर करै सोर ।
अंधार घोर, पइसैं चोर ।
भीजैं ढोर, स्त्री करैं निहोर ।
चंद सूर वादले छायो, पथि घरे आवि धायो ।
मेघ वरसै सवायो, रूठो नाह मनायो ।
खलकैं खाल, वहै प्रणाल ।
चचूइं वाल, चूइं ओरा साल ।
साप गया पयाल, नदी वहै असराल ।
झडी लागी, करसारी[14] दिसा जागी ।
वरसइलो पूर, भाजैं रूंख चकचूर ।

---

१ जीमवानी हुई २ गाढी (मु) धणी (सु) ३ सू करइ अपवर्ग (मु) ४ महात्मा हुई (मु) ५ परघल 'विशेष पाठ' (मु) ६ स्याकार करइ विहार (मु) ७ सहु करइ (मु) ८ तपोधन हुई । ९ छाटा १० ऊलटैं ११ दाप ।
१२ लवकै १३ टेड करै सोर १४ लोक दशा (कौ)

हाटि विचै वाहला, लोक थया काहला[1] ।
जूना घर पडै, लोक ऊँचा चढै ।
आम हुओ रातो, मेह थयो मातो ।
हाली हल खडया, वाडी सूं सेरा जडया ।
नीली हरियाली महमही,[2] घणा दूध नै दही ।
मारग भागा, जे जिहा ते तिहा बइसवा लागा ।
गयो दुकाल, हुओ सुकाल ।
पाणी छडै पाल, एहवा वर्षाकाल । (स० ३)

१५ वर्षाकाल—वर्णन (४)

वर्षाकाल हूउ वहतउ रहिउ कूउं ।
कालूवणि वहइ[3], मेघतणा पाणी वहइ ।
पथिक[4] गामि जाता रहइं, पूर्व दिशि तणा वाय वायइ ।
लोक हर्षित थाइ । ·· ·········· ।
आकाश घडघडइं, खोलड[5] खडखडइ ।
पंखी तडफडइं, वडा मानुस अडवडइ[6] ।
काष्ट खंड सडइ, हाली लोक हल खेडइं ।
आपणा घरबारि कादम फोडइं[7], तिहा मुडि २ वेलू रेडइ[8] ।
पाणी पार न लहइं, साधु साध्वी विहार न करइं[9] ।
श्रावण लोक जयणा करइं ।··· ············· ।
अनेक जीवाधि[10] नीपजइं, विविध धान्य ऊपजइं ।
लोक तणी आस पूजइ, गोकुलनां[11] वृंद दूझइं ।
अनेक कोठार भरियइं, जूना धान्य वावरियइ ।
[12]आवइं रेलि, वाधइ वेलि ।
[13]ऊपजइं नीलि फूलि, कुटंबी कणवीकइ मूलि ।
[14] फीटउ दुकाल, नीपनउ सुगाल ।
एवं विध वर्षाकाल ॥ ४१ ॥ (स० १)

१—आकुला २—हरी टहडही । ३—वाविपाणी भरता रह्या, वादल उनह्या । ४—पथी । ५—खाल । ६—लडथडै ७—फेडै । ८—वीजा काजमेडै । ९—थईर । १०—जीव । ११—गाय भैंस । १२—अनेक लपसै, लोक हँसै । १३—अनेक वनस्पति फूलै । १४ दुकाल नासीजे, सुकाल होइजै । (स० ३)

१६ वर्षाकाल वर्णन (५)

ऊपरि मेघ गडगड़इ, अमोघ धारा पाणी पड़इ,
अनेक घर खडहड़इ, कर्द मि वृद्ध अड़बड़इ, दुर्दुर रडई ।
बीज झबाक जाइ, पामर लोक घर छाइ,
पथिकलोग ठामि ठाइ, पृथ्वी हरिताकुल हुइ ।
सरोवरहुया गडलु, सर्वत्री टोडा प (ख ?) डई ।
बगुला रूखसिहर ऊपरि चडई, वासर गिरी कदरि वीसमइ
हंस पहुचइ मानसिसरि, ... ।
मयूर नाचइ, बिरहणि सोचइ ।
करसणी लोक हल खेडइ, धनवतलोक धान खेडइइसउ वर्षाकालु ।।पु० अ०

१७ शरद ऋतु वर्णन (१)

ऊन्हालो नउ भाई, अनी लेई वैश्वानर नउं अंगु काई ।
न जाणीइ किहाई हूंतउ दिशि सप्रकाश, शरदऋतु पहुतउ फूल्याकाश ।
अगस्ति ऊगिउ, मेहनठ भरग्यउ ।
पाणी थ्या निर्मल, करसण सफल ।
चद्रज्योत्स्ना शीतल, पीनइं अभावताइं जल ।
हंस स्वर सुखावा विलसिआ लागा ललभ (त) वर्णा गावा ।
स्त्री सुनेत्र, डोहइ त्तेत्र ।
साड मावइ, कोठीवड़ा पावइं ।
वैद्य सुविचारू, करइ पित्तोपचार ।
करीइ स्यूंस खाईई, खांडु नइ पुहुंक खाईइं ।
पूगी लोक नी आस, मह्रा भरिवा परया कपास ।
कोठा अन्न भरीइं, कुणहि हुई काई न करीइं ॥ ३६ ॥ (मु)

१८ हेमन्त ऋतु (१)

अति वसंतु, आविइ ऋतु हेमन्तु ।
जिहा सीयना भर, सेवीइं निर्वात घर ।
तुलाईए पुढीइं, भली तुलाई उढइ ।
अति ही मोटी, प्रलंब दोटी ।
ओढी नइसीइ सीयाल हुइं हसीइं ।
जिमतो न थाइं धत्सक वेटा जिमई अनेक विध मोदक ।

मुहुंडा रइ कांइ लागी कुटेव, सदैव जिमइ सातू जल सेव ।
गजीणा खाजां, चिहुँ आगि साजां ।
परीसणि हारि किम नइ थाइं आकुली, जीमइ भली साकली ।
घणी खाड करी बहू मूल्या,..... ......
अमृत पाहिइ मोठी, तापइ अंगीठी ।
ते तलाई माहि सगुण, आव्यउ माह नइ फागुण ।
सीय ना कोट दीसइ, दरिद्र तांढि मरतां दात पीसइ ।
हिम जामइं, न खडाई ओढणु लामइं ।
काष्ट दाघ सीय पडइं, दांत खडहडइ ।
घणूइ जीमइ सपराणी रोटी, पुण न सकीइ नीगमी रात्रि मोटी ।
फूल माहि पडवउ, फूल नह मिसि विहस्यु दीसइ कूदड़उ ।
राति सघळीइ अरहट वहइं, ऊन्हाळऊ धान गहगहइ ।
पुण्यवत लोक, रहित शोक ।
रमइं होळी, फागु दिइ भमल भोळी ।
ऋतु सारो सबळ, सेवीइं आदा गुळ ।
रोग नउ भमु, जउ सीयाळइ कीजइ श्र मु ।
भल तळ्या गुळ्या जीमइ, सीयाळा ना दिन सुखिइ गमीइ ॥४०॥ (मु०)

१६ शीतकाल वर्णन (१)

आविउ ऋतु हेमंतु, भोगी प्राणीयइ अत्यंत ।
जिहा सीय ना भर, सेवीयइ निवति घर ।
तुलाईयइ पडढीयइ, सखरी सीयरक्ख ओढीयइ ।
अति हि मोटी, मजीठी दोटी ।
ओढ़ी बइसीयइ, सीयाळा नइ हसीयइ ।
निमता न घरईयइ[1] उत्सुक, भावइ विविध मोदक ।
अमृत पाहि[2] मोठी, लोक तापइ अंगीठी ।
तेतला माहि सगुण, आव्या माह नइ फागुण ।
सीयना कोट दीसइ, दरिद्री टाढि मरता दात पीसइ ।

---

१ थाईजइ २ वहि ।

हिम जामइ, न छुडाइ श्रोढणु' घणइ कामइ ।
काष्ट दाघ सीय पडइ, दात खडहडइ ।
घणुइ जीमीयइ चोपडी रोटी, तउही[1]नीगमी न सकीयइ सीयाळानी राति मोटी ।
राति सघली अरहट वहइ, ऊन्हाळू धान गहगहइ ।
पुण्यवत लोक, दूरी कृत शोक ।
जन रमइ होळी, फाग द्यइ भंमर भोळी ।
ऋतु सारी सवळ, सेवीयइ आविनइ सूठ नइ गळ ।
भला तल्या, गल्या जीमीयइ, तउ सीयाळा रा दिन सुखइ गमीयइ[2] ।
(सू०)

२० शीतकाल-वर्णन (२)

शीत कालि-दिवसि २ गोधूम वृद्धि थाइ ।
वेटी आपणा सासुरे जाइं, व्यास[3] रग महघा थाइं ।
कंबळि जोई ती न लाभइ, घरे फलसा वापरइं ।
तपोधन विहार क्रम करइ, श्रीमत घर माहि पडमी सूयइ ।
दारिद्री लोक सीयइ कापइ, सकळ लोक अगीठे तापइं ।
तादि खड[4] बाखड खडइ, राति मिरी निम साकुडइं ।
श्वान नी परि कुणमणइ, हाथ पाय आगुळी चणमणइ ।
हेमते दधि दुग्ध सर्पिरसना० । १५३ (स० १) ।

२१—शीतकाल-वर्णन (३)

भोगी भमर नै प्यारो, योगीश्वर नैं न्यारो ।
महा ताढो, वाऊ वाजै गाढो, जात्रा नो न मिलैं किइ साढो ।
दाहे रूंख बाल्या, सज्जन हीइ साल्या ।
विलोवणा घाल्या, बीजा काम टाल्या, स्त्रीना पालव झाल्या ।
वायइं खीजै, पान बीड़ा दीजै ।
संग कीजै, ऊडै पडवै पोढीजै ।
सखरा सीरख ओढीजै, हीये हीओ भीडीजै ।

---

[1] नीठ [2] गणिकुशळ धीर सु विशाळ, यू वखाणियउ शीतकाळ । [3] पास [4] ताढिहड ।

त्रीलैं नडीजै, लाड लडीजै ।
त्री स्युं घणी गोठि, खावा-लाडू सोंठि
कोई न चहरैं, दुसाला पहिरैं ।
दुख हरैं, आणद करैं ।
पासैं त्रागडी[1] धखैं, अवल चीज भखैं, सांधो पासैं रखैं ।
मावठो होइं, लोक ऊंचो जोइं ।
गाय भैंस दूझै, विरही धूजैं ।
तपसी बूझैं, रागियो मूझैं ।
हिमाचळै पडैं बरफ, रोगी नैं पगैं चालैं सडफ ।
हीइ वधइं कफ. वैद्य करैं शफ उफ, लबाडी करैं लपलफ ।
फिरैं हरीफ, मागै गरीब ।
झाड झूड झडझडया, आक उजडया ।
पात झड़पड्या, दरिद्री तडफडया, पाणी पत्थर सम अड्या ।
भोगी खाइ औषध ऊपर पीइ दूध, तेथी थाइ कोणे शुध ।
रावडिया दूध चाटैं[2], ताढैं होट फाटैं ।
खळैं धान लाटैं, व्यापारी लाभ खाटैं ।
आवैं हाटैं, फुलेल वाटैं, देवै पईसा साटैं ।
साध पागरया, पग ठांगरया ।
गरढा डोकर, पगैं लागै ठोकर, हसै छोकर ।
ठाकर ठरया[3], साथ सोड मा घरया ।
हाथे न लवैवाइ शस्त्र, आघो ओढि वस्त्र ।
लोक सीसीयाट करैं, पाणीं नींठ भरैं ।
चोपू उछरैं, ताढैं न चरैं ।
धूजैं बाल गोपाल, विरही मा पडैं हवाल ।
विपम हवाल, सहु बैठा चउसाल ।
साचव्या देहरा नैं पोसाल, एहवो शीतकाळ ॥ (स० ३)

२२—दुष्काल वर्णन (१)

एहवुं एक पडिउ दुकाल, ठामि[2] दीसइ नर कपाल ॥
रुंड मुंड घरापीठ, चाचरि चाली सकइ नीठ ।

१—सगड़ी । २—वाटइ । ठारै करि ठन्या ।

नैरती वाय वाजइ, भूपति ना हीया भाजइ
मिल्या मेह नासइ, न रहइ को केहनइ पासइ ।
धनवंत सीदाय, तउ रांक नी सी गति थाय ।
मारग हुआ महाविषम, सचरइ चोर चिहुगम
गोरू विण दीसइं गाम नइ देस, वाल्हा छोडि गया विदेस ।
माणस माणस नइ भखइ, आपणौ परायउ नोलखइ
लोक वेचवा लागा पुत्र, छाडीजइ फूटरा कलत्र
रोता बालक देख, तू पजइ दयानइ देख ।
लोक घणा निर्धन थया, उत्तम सु नीच घर गया ।
वडा जे जंगम यती, तेहं पिण ताकइ कोइक सती ।
केइक धांन ना धणी, तेतउ वावरइ अन्नमिणी ।
पाताळ भोग लीजइ, सगउ सगा नइ न पतीजइ ।
पहिलउ जे लेता वनस्पती, तेह पिण न दीसइ रती
लोक भला लाज छोड़ी, मांगिवा लागा हाथ ओडी ।
बीजा सहू भोग भागा, सहु ध्यान धान लागा ।
कहावता जे दातार, ते पिण मांगइ कही करतार ।
वीसरया सर्व कला गीत, घरि घरि कीजइ अन्न री चीत
रूड़ा जे राउत राजा, ते पिण ताकइ लोक ताजा ।
सर्व लोक निर्धन हुवा, बाप बेटा रहे जूजुआ ।
वंचिवा लागा लोक, सगपण सँघ हूई सहू फोक ।
घणुं किंतु पतिसाह, ते पिण करइ धान ऊमाह ।
केतलुं कहीये एक रूप, जेहनी वात भय रूप ।
एहवइ महा दुकालि, धीर पुन्यवंत दीयइ दान सालि ।

इति दुर्भिष्य वर्णनम् ॥ कु० ।

२३—कलि-वर्णन (१)

ईणइ अवसर्प्पिणी कालि, समइ समइ अनंत गुणी हाणि ।
वलि माति सम्य, अनुद्ध नरेन्द्र लब्ध ।
रस निरास्वाद, लोक स्तोक मर्याद ।
अविवेकि वासु, धर्मवन्त नासु ।
हुण्ड संस्थान, अल्प विज्ञान ।

अतुच्छ मच्छर, कर्कश स्वरु ।
तुच्छ धर्म रंगु, गुरुजन प्रशंसा भंगु ।
सुकृत करणी प्रमाद, बहु मृषावाद ।
साप्रत वर्त्तइ इसउ कलिकालु, जिहां को नहीं कृपालु, दर्शन उत्सृंखलु ।
आर्यजन स्वल्प, घणा कुविकल्प ।
बहु कराक्रान्त देश मडल, पृथ्वी मंद फल ।
नारी विकल निरर्गल, ऋषि भाजन खल ।
साधु लोक आकुल, राज तुच्छ बल ।
गुरु कलह कदल, धर्माचार्य चंचल, भविक धर्म विकल ।
खड वृष्टि, बहु स्त्री सृष्टि ।
लोक द्रव्य दृष्टि, सर्व लोक मिथ्यात्व दृष्टि ।
लोक घटियइ कपटि दल, इसी प्रवर्त्तइ कलि ॥ १०० ॥ (मु०)

२४—कलिकाल-वर्णन (२)

साप्रति वर्त्तइं कलिकाल, महा कूड़ कपट काल !
चोर चवाड साक्षात हालाहल, सासू बहू परस्पर कलि ।
गुरु शिष्या जायइ खांध वलि, अन्याय कुरीति देश मंड़लि ।
राजकुल रूंधा खली, राय राणा वर्त्तइं छली ।
क्षत्रिय नासइं दीठइं दलि, भला माणस हुइइं तांतलि ।
पृथ्वी मद फल, मंत्र सवे निफल ।
जडी मूली रस विकल, कुल स्त्री निरर्गल ।
न्यायी राय तुच्छ दल, चरड बहुल ।
वाट पाडा तणा कलकल, धर्म गुरु चपल ।
पापोपदेश कुशल, मिथ्यात्व निश्चल ।
लोक माया बहुल, अल्प संगल ।
इणइ कुकालि, अवसर्पिणी कालि ।
अल्प क्षीर गाइ, निःस्नेह माइ ।
भक्ष्य भोज्य निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद, ।
रहस भेद, रस छेद ।
क्रूर संचना, गुरु वंचना ।
आऊषा स्तोक, निवाणिजा लोक ।

देह वातली, भक्ति पातली
अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्य ।
बाप बेटा तणा गर्थ सातइं, आपणा छोरु कुक्षेत्रि घातइं ।
श्लोक सीदंति सतो विलसत्यं-संत ।
पुत्रा म्रियते जनकश्चिरायुः ।
परेषु तोष. स्वजनेषु रोषः ।
पश्यतु लोकाः कलि केलितानि ।
दाता दरिद्रः कृपणो धनाढ्यः ।
पापी चिरायुः सुकृती गतायुः ।
राजा कुलीनः, कुलवाश्च भृत्यः ।
पश्यंतु लोकाः कलि केलितानि । ११४ । (स० २)

२५—कलिकाल-वर्णन (३)

इसी स्त्री अनर्गल, देव निःकल ।
पृथ्वी अफल, राजान अबल ।
चोर प्रबल, शत्रु बहल ।
साधु विरल, मंडलीक कुटल ।
दर्शनिया शिथिल, इसी कलि । (पु० अ०)

२६—कलि प्रभाव-वर्णन (४)

पापि जउ, धर्मि खउ ।
साचउ अविगणियइ, भूठउ वखाणियइ ।
गुरु शिष्य तणउ[1] खमइ, बाप-बेटा नमइ ।
सासू पाटलइ, वहू खाटलइ ।
ए कलि तणा प्रभाव ॥ १२१ ॥ (स०.१) १ तण ख० इ (पु० अ०)

१—तण खवइ (प्र० अ०)

सभा-शृंगार

अथवा

वर्णन संग्रह

विभाग ५

कलाएँ और विद्याएँ

१ कला-भेद (१)

७२—कला वणिक

२३—कला वेश्या

७४— ,, जूवारु

७५— ,, रस-चणिक

(पु० अ०)

७२—कला पुरुष (२)

१ लेखन	२ पठन	३ सख्या	४ गीत	५ नृत्य
६ ताल	७ पट	८ मृदग	९ वीणा	१० वंश
११ भेरी	१२ द्विरद	१३ तुरंग	१४ शिक्षा	१५ धातु
१६ दृग	१७ मंत्रवाद	१८ वलित पलित नाश	१९ रत्न	२० नारी लक्षण
२१ नरलक्षण	२२ छंद	२३ तर्क	२४ नीति	२५ तत्वविचार
२६ कविता	२७ ज्योतिष	२८ श्रुति	२९ वैद्यक	३० भाषा
३१ योग	३२ रसायन	३३ अजन	३४ लिपि	३५ स्वप्न
३६ इन्द्रजाल	३७ कृषि	३८ वाणिज्य	३९ नृप सेवन	४० शकुन
४१ वायस्तंभन	४२ अग्निस्तंभन	४३ वृष्टि	४४ लेपन	४५ मर्दन
४६ ऊर्ध्वगमन	४७ घट बंधन	४८ घट भ्रमण	४९ पत्र छेदन	५० मर्म भेदन
५१ फल वृष्टि	५२ अबु वृष्टि	५३ लोकाचार	५४ जनानुवृत्ति	५५ फलभृत
५६ खड्गधारण	५७ छुरि बंधन	५८ मुद्रा	५९ लोह	६० रद

पाठान्तर—

३ गणन, १० ;; १७ मन्त्रवाद के वाद तन्त्रवाद विशेष है। २६ व्याकरण। ३० षड-भाषा। ४१ वाक् स्तम्भन। ५१ कला वृष्टि। ५४ जातानुवृत्ति। ५५ पल भरण। ६१ काष्ट छेदन। ६२ चित्र कृति के वाद वाहु युद्ध है। ७२ अष्ट ज्ञान। (मो०)

६१ कार ६२ चित्र कृति ६३ दग युद्ध ६४ मुष्टियुद्ध ६५ दण्डा युद्ध ६६ असि युद्ध ६७ वाक् युद्ध ६८ गारुड दमन ६९ सर्प दमन ७० भूत दमन ७१ योग ७२ अञ्ज ।

यथा श्लोक—

६४ कला—(स्त्री) (३)

चौसठ कला, तन्नामानि यथाः—१ नृत्य २ उचित्य ३ चित्र ४ वाद्य ५ मंत्र ६ तंत्र ७ यत्र ८ ज्ञान ९ विज्ञान १० दण्ड ११ जलस्तम्भन १२ १२ गीत-गान १३ ताल मान १४ मेघ वृष्टि १५ फलावृष्टि १६ आराम रोपण १७ आकार गोपन १८ धर्म विचार १९ शकुन विचार २० क्रिया कल्प २१ संस्कृत जल्प २२ प्रसाद नीति २३ धर्म नीति २४ वर्ण वृष्टि २५ सुवर्ण सिद्धि २६ सुरभि तैल करण २७ लीला सञ्चरण २८ गज तुरग परीक्षा २९ पुरुष स्त्री लक्षण ३० सुवर्ण रत्न भेद ३१ अष्टादस लिपि परिच्छेद ३२ तत्काल वुद्धि ३३ वस्तु सिद्धि ३४ वैद्यक क्रिया ३५ काम क्रिया ३६ घंट भ्रम ३७ सारि परिश्रम ३८ अजन योग ३९ चूर्णयोग ४० हस्त लाघव ४१ वचन पाटव ४२ भोज्यविधि ४३ वाणिज्य विधि ४४ मुख मडन ४५ सालि खडन ४६ कथाकथन ४७ पुष्प ग्रथन ४८ वक्रोक्ति ४९ काव्य शक्ति ५० स्फार वेष ५१ सकल भाषा विशेष ५२ अविधान ज्ञान ५३ आभरण ५४ नृत्योपचार ५५ गृहाचार ५६ काव्य करण ५७ परिनिराकरण ५८ धान्यरंधन ५९ केस बधन ६० वीणा वजावी ६१ वितंडा वाद ६२ अक विचार ६३ लोक व्यवहार ६४ अन्ताक्षरिका—प्रश्न प्रहेलिका स्त्रियोनी चौसठ कला ।

६४ स्त्री कला (४)

नृत्य १	उचित्य २	चित्र ३	वादित्र ४
मत्र ५	तत्र ६	ज्ञान ७	विज्ञान ८
दम ९	जलस्तभ १०	गीतगान ११	तालमान १२
मेघवृष्टि १३	फलाकृष्टि १४	आरामरोपण १५	आकारगोपण १६
धर्मविचार १७	शकुनसार १८	क्रियाकल्प १९	संस्कृत जल्प २०
प्रासादनीति २१	धर्म नीति २२	वर्णिका वृद्धि २३	स्वर्ण सिद्धि २४
सुरभि तैल करण २५	लीला करण २६	गज तुरंग परीक्षण २७	
स्त्री पुरुष लक्षण २८	सुवर्ण रत्न भेद २९	अष्टादश लिपि छेद ३०	
तत्काल वुद्धि ३१ ।	वास्तु सिद्धि ३२	वैद्यक क्रिया ३३	

काम विक्रिया ३४	घटभ्रम ३५	सारिपरिश्रम ३६
अञ्जन योग ३७	चूर्ण योग ३८	हस्त लाघव ३९
वचन पाटव ४०	अंतांक्षरिका ४१	भोज्य विधि ४२
वाणिज्य विधि ४३	मुख मंडन ४४	शालि खडन ४५
कथाकथन ४६	पुष्प ग्रंथन ४७	वक्रोक्ति ४८
काव्य शक्ति ४९	स्फार वेष ५०	सकल भाषा विशेष ५१
अभिधान ज्ञान ५२	आभरण परिधान ५३	भूतोपचार ५४
गृहाचार ५५	व्याकरण ५६	परनिराकरण ५७
रंधन ५८	केश बन्धन ५९	वीणा निनाद ६०
वितण्डावाद ६१	अंक विचार ६२	लोक व्यवहार ६३
हस्त[1] प्रहेलिका ६४	स्त्री चतुषष्टि कला ॥	(१५५ जो०)

५—(वशीकरण) विद्या साधन (५)

कामण	निर्जीव सजीव करण
मोहन	आम्नाय उपासन
थभन	अकाल फल
वसीकरण	मोहन वेल
आकर्षण	काली वेल
उच्चाटन	मत्र
सातन	तत्र
पातन	यत्र
अजन	जडी
(चू!) रण	स्याल शृगी
पाताल गमन	स्वेत चरमी
पाद लेपन	स्वेत अरंड
इद्र दर्शन	स्वेत आकडो
अदृष्टीकरण	स्वेत पलास
आकाशगमन	वंदो हाथाजोडी इत्यादि
रमणी मोहन	

(वि०)

१—प्रस्त (प्रश्न !)।

अथ राग नाम (६)

१ श्री राग	१३ जयजयवंती	२५ केदार	३७ रामगिरी
२ सारग	१४ प्रभाति	२६ मारू	३८ सासेटी
३ दीपक	१५ खंभाइति (-यची)	२७ सिंधु	३९ आसाउरी
४ सोरठ	१६ ललित	२८ मधु	४० घन्यासरी
५ नट	१७ वसत	२९ माधव	४१ हिंडोलन
६ विहागड़ो (विहगड़ो)	१८ वेलाउल	३० परज	४२ मालकोश
७ कान्हडो	१९ भैरव (भयरव)	३१ पूरवी	४३ आशा
८ मालवी	२० भूपाल	३२ विभास	४४ काफी
९ गोलो	२१ बंगाल	३३ कल्याण	४५ दीपक
१० गोडी	२२ रामकलो	३४ घोरणी	४६ माहव
११ टोडी (तोडीं)	२३ मल्हार	३५ जयतसिरी	४७ अडाणो
१२ वैराडी	२४ देव गंधार	३६ गूजरी	

३२ बद्ध नाटक (७)

१ गय	९ देवगण	१७ हरिण	२५ भडा(द्रा!)सन
२ रथ	१० विद्याधर	१८ चामर	२६ सिंहासन
३ तुरंगम	११ गंधर्व	१९ वनलता	२७ आरिसा
४ सीह	१२ विहग	२० पद्मलता	२८ विमान
५ वृषभ	१३ सरभ	२१ साल	२९ हस
६ सुर	१४ सर्प	२२ नदावर्त्त	३० कोकिल
७ असुर	१५ सुकराज	२३ पूर्ण कलस	३१ वास
८ किन्नर	१६ सारस	२४ स्वस्तिक	३२ लाव
रयाग	पडह	भेरी	लांगळ
मृदग	ताल	भुगल	चतुपट

वाद्य (८)

१ ममा, २ मडंग ३ मद्दल, ४ कडंब, ५ झल्लरि, ६ हुडुक, ७ कसाला ८ काहल, ९ तिलिमो १० वंसो, ११ सखो १२ पणचोय बारसमो ।

द्वादश तूर्य निर्घोषो नांदी नाम रव ।

रण नंदी तूर (६)

१ ढक्का २ इक्का ३ डमरूय ४ काहल ५ पुप्फ-भेर ६ भाणंग, ७ पडहो ८ जुग सख ६ करड १० पुग्गय ११ मद्दल १२ कंसाल रणनंदी। इतिरणनंदी तूरः।

(१२७ जो०)

वादित्र नाम वर्णन (१०)

भेरि	भुगल	पडह	ढोल
लरि	कुंडि	पखाउज	मादल
वंस	वीणा	सुग्मद्दल	पणव
ताल	झाली	घूघरि	कसाला
तूर	निसाण	नफेरी	डाक
बुक्कर	हुडुक	शंख	शखमाल
रावणहथ्थ	दुंदभि	करडि	तिवल
दुडदडि	कांसी	भभा	डमरू
वरघू	पिनाकी	दमामा	महुयारी
आउज	पटाउज	सींगी	घाट
अघडडी	रुद्रवीणा	सींगा	सरणाई
टमकीउ	मदनभेरी	काहली	कादवरी
चाग			

(सू०)

३६ बाजित्र (११)

१ भेरी	१० श्री मंडल	१९ मृदंग	२८ गडमडी
२ भभा	११ तिवल	२० त्रिवल	२९ नाद
३ भूगळ	१२ ढोल	२१ भूलरी	३० केदारी
४ नफेरी	१३ करनाळ	२२ दुंदुभी	३१ होक
५ नीसाण	१४ कासी	२३ बरघू	३२ पूंगी
६ ददा मे मा	१५ सरणाई	२४ सारंगी	३३ झाझ
७ दडवडी	१६ बासरी	२५ रणसिंघो	३४ तंदूरो
८ ताळ	१७ वीणा	२६ जन्यघंटा	३५ [प] खाज
९ धूंसाल	१८ चंग	२७ राई	३६ नरसिंघो

[१] सांख

काव्य ना भेद (१)

काव्य, कवित्त, छंद, सवैया, योतिस, वैदक, प्राकृत, तर्क, वितर्क, प्रमाण, चितामणी, चतुराई, रघु, किरात, माघ, मेघदूत, नेमदूत, नैषध, कुमारसम्भव चम्पूकथा, गीता, भागवत, स्मृति पुराण, वेद, विचार, वखाण, गाहा, गूढा, दूहा, प्रहेलिका, हरियाळी, कमलबन्ध, छत्रबन्ध, नागबन्ध, गरुडबन्ध राजबंध तोडरबन्ध, मादळबन्ध, अहर, अलग्ग, हयापखरा, छपखरा, नटपखरा, पखाळ, पारगत श्लोक, सगीत, गीत इत्यादि काव्य (शास्त्र) ना भेद ॥

विद्वान लक्षण (२)

काव्य, कवित्व छद, सवैया, ज्योतिष, वैद्यक, प्राकृत, सम्कृत, तर्क, वितर्क प्रमाण, गीता, भागवत, पुराण, वेद, विचार, इत्यादिक ना जाणणहार छइ।

(कौ०)

वादीन्द्र (३)

अढारहंइ लिपि तणइ विषय कुसल, चारि विद्या कठस्थ
चेष्टानुवादु, अक्षरानुवादु, अर्थानुवादु परवादी सउं करइ
पर पठित अष्टोत्तर शत काव्य अर्थु देइ
एक पदी द्विपदी त्रिपदी समस्या पूरइ
तुरग पद पाठि कोष्टक पूरण करइ
गूढ पद क्रिया-गुप्तक तणा लेखउ न लेई
त्रिवर्ग परिहारु पचवर्ग परिहारु बोलइ
प्रच्छन्न लिपि तणी अलवि करइ
कूर्चाल सरस्वती, प्रत्यक्ष वाचस्पति
पंडित घरट्ट, भग्न वादी मरट्ट
इसउ वादीन्द्रः ॥

(पु० आ०)

१८ लिपि (१)

हंसलिवि[1] भूवलिवि[2] जक्खाका तह[3] रक्खसीय बोधव्वा[4] उड्डीह[5] जवणी[6] तुरकी[7] करी[8] दवडीय[9] सिंघविया[10]।

मालविणी[11] नडि[12] नागरी[13] लाड लिवि[14] पारसीय[15] बोधव्वा।

तहय निमितिअ[16] लिव्वा चाणक्कि[17] मूलदेवीय[18] ॥ १ ॥ लिपि नामानि

१२४ न० (१२६ जो०)

१८ लिपि (२)

१ हस लिपि	७ तुरकी लिपि	१२ लाट लिपि
२ भूत लिपि	८ द्राविणी लिपि	४१ सारसी लिपि
३ यक्ष लिपि	६ सैंधवी लिपि	१५ अनिमित्तिलिपि
४ राक्षस लिपि	१० मालवि लिपि	१६ चाणक्की लीपि
५ उड्डी लिपि	११ नडी लिपि	१७ मूलदेवी लिपि
६ यावनी लिपि	१२ नागरी लिपि	१८ करी लिपि

मौ०

लिपियें (३)

लाडी	चौडी	कान्हडी	गूजरी
सोरठी	मरहठी	कुंकुणी	खुरासाणी
ससी	सिंहाली	डाहली	कीरी
हमीरी	कास्मीरी	परतीरी	मागधी
महायोधी	मालवी	॥ इत्यादि लिपयः ॥	(११३ जो०)

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ६

जातियाँ, धंधे और व्यक्ति नाम

१८ वर्ण ३६ पौन (१)

घाची, घाछा, मोची, मणीहार, मइणारा मेर, मैणा, सुई, सुतार, सोनार, चूनगर, चित्रगर, नीलगर, तेरमा, लूंणगर, ठंठारा, मठारा, लोहार, लोवाना[1], लोत्रना, लोढा, भोपा, मरडा, भिखारी, भील, कोळी, काठी, वणगर, कठीयारा, कळवी, कसारा, कुंभार, चूडीगर, कार्ळा, वाणीआ, विप्र, वैद्य, वेश्या, वणगर माली, तेली, मरदनीया, मठवासी, गोला, गाधी गारडी,[2] योगी, यति, संन्यासी, जिंदा, सोफी, भगत, आमीक, भेषधर, इत्यादि ३६ पवन (स०)

प्रत्यंतरे— छींपा, सिलावट, सीसगर, तुरक, तबोळी, तोरगर (विशेष)

पेशेवार जातियाँ (२)

सोनी,	पारखि,	जवहरी	गाधी	दोसी,	नेस्ती
कणसारा,	मपारा,	मणियारा,	सोनार,	कुंभार,	ठंठार
लोहार,	वलार[3]	पटउलीया,	पटसूत्रीया,	माली,	तबोली
हरयेरवलिया,	जोगी,	भोगी,	वइरागी,	नट,	विट,
खूँट,	खरड,	लाठा,	माठा[4],	रंगाचार्य,	उचितबोला
साहसोला,	मोटा बोला,	मेलगर,	मामगर,	कउतिगिया,	कुलहटीया
नटावा,	गांछा,	छींपा,	परीयट,	सुई,	ताई,
तेली,	मोची,	सतूआरा,	बंधारा	चीत्रारा,	तूनारा
कोळी,	पंचउळी,	डब्रागर,	त्राबर,	फोफळिया,	फडहटीया
फडिया,	वेगडिया,	सींगडिया,	भोई,	कंदोई,	देसाळी
कलाळी,	गोली,	ग्वाळ,	पसूयाळ	राजपात्र,	विद्यापात्र,

विनोद पात्र । १०८ । (स० १)

चौरासी वणिक जाति (३)

श्रीश्रीमाल,	श्रीमाली,	ओसवाल,	पोरवाल ।
पल्लीवाल,	बघेरवाल,	डिसावाल[5],	मेड़तवाल ।

---

१. लवाना । २. गाटरी । ३. तराल । ४. मठा । ५. देसवाल ।

खंडेलवाल,	अगरवाल,	जैसवाल,	सेभवाल[१] ।
डींडूवाल,	कठोडा,	सूराणा,	सोनी ।
लाद,	मोढ,	भागद्रा,	नागद्रा ।
नागर,	नीमा,	हरसोला,	नरसिंघपुरा ।
दसोरा,	मेवाड़ा,	आमेटा,	मेडतिया ।
सोरठिया,	वीयाड़ा,[२]	खड़ायता,	साडेरा ।
भटेरा,	कुभा,	धाकड[३],	चीतोडा ।
लाडूआ,	हरसोरा,	हूवड,	नागोरा ।
जलोरा,	साचोरा,	वघनोरा,	सोभीता ।
वाल,	कपोला, इत्यादि वणिक जाति ।		

नैष्टिक ब्राह्मण (४)

उत्तरासंग धोती, सऊतरिऊ जनोइ, हाथि प्रवीती,
सिरु भद्रियउं, सिखा फरहरती, तिलकु वधाग्यिउ,
गात्री[४] सारु, त्रिकाल संध्यारामनु, प्रभात स्नानु, नित्यदानु ।
वेद पढइ, वेदान्त जाणइ, सिद्धात वखाणइ,
देव तर्पणु, गुरु तर्पणु, ऋषि तपणु, पितृ तर्पणु,
इसउ नैष्टिकु ब्राह्मणु ।

ब्राह्मण नी जाति (५)

नागर, राजर, उदवट, भटनागर, सिणोरा, साचोरा, दसोरा, उदब्रर,[५] साहोद्रा[६], नागद्रा,[७] गेडवाल, खेडावाल, इटावाल, पल्लीवाल, श्रीमाल, गोलवाल, चोवीसा, लोडी सीखा,[८] वडी-साखा, मथुरीया, सिनोड्यिा, कन्होजिया, वालिमिया, श्रीगोड, गुजरगोड, गोड, मेवाडा, चितोडा, कन्हडा सारस्वत, उदिच, घेणोजा, तदुआणा, मालवी इत्यादिक ।

विरुदावली वाचक छात्र नाम (६)

एक राजा नै ब्राह्मण महा पंडित बोलाइ छइ ॥
मुंहडा आगल छात्र भणें वृदावलि बोलइ छइ ॥
कुण २ ते छात्र तन्नामानः—

---

१. सेमवाल । २ वायडा । ३. थाकड़ । ४. गायत्री साधनु (स० १) प्रारभ के कुछ शब्द आगे पीछे हैं । ५ गांटा । ६ सिवोद्रा । ७. नागोद्रा । ८ सिखा । ९. धारणी ।

उपाध्याय, शंकर, ईश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, गंगाधर, गदाधर, विद्याधर, महीधर, धरीखोधर, भूधर, श्रीधर, दामोदर, महादेव, सिवदेव, रामदेव, मेवाडी, त्रवाडी, उमापति, गंगापति, गणपति, भूपति, देवपति, पंडित, जनार्दन, गोवर्धन, मुकुन्द, गोविंद । एहवा नाम विरुदावलो बोले ॥

विरुदावली (राजकुमार शिक्षक पंडित) (७)

सरस्वती कंठाभरण, वादि विजयलक्ष्मी सरण ।
ज्ञान सर्व पुराण, वादी कदली कृपाण ॥
जीतवादि वृन्दवादि, गुरो गोविंद वादि ।
धुक दिवाकर, अज्ञान तिमिर निसाकर ॥
वादि मुखभजन, रामसभा रजन ।
कुवादि प्रस्त्र खडन, पडित सभा मडन ॥
वादि गोधूम घरट्ट, मर्दित वादि मरट्ट ।
वादि मृगसिंह सार्दूल, वचोवाल्या विकृतवादि भूल ॥
षडभाषा वल्लिमूल, परवादि मस्तक सूल ॥
वादि कुद कुद्दाल, रजितानेक भूपाल ॥
वादि वेस्या भुजग, शब्द लहरी तरंग ॥
सरस्वती भण्डार, चवद विद्यालंकार ॥
सूर्य सास्त्राधार, बहुत्तरी कला भर्त्तार ॥
महाकवीश्वर, प्रत्यक्ष परमेश्वर ॥
कूर्चालि सरस्वति, प्रत्यक्ष सारमेति ॥
जितानेक वाद, सरस्वती लब्धप्रसाद ॥
ते पारंभलि पडित जाणी, पोताना कुवर नइ कुवरी भणवा मूकी ॥

राजपूत नो छत्रीस वंशावली (८)

परमार,[1] राठौड, चौहाण, गहिलोत, दहिया, सेणचा, मोरी,[2] वगडा,[3] सोलकी, सीसोदिया, खेरमोरी,[4] नाकुभ,[5] गोहिल,[6] पडिहार, चावडा, झाला,[7] हूर, कागवा,[8] जेठवा, रोहर वूस,[9] वोरड,[10] खीची, खरवड, डोडिया, हरिअड, डाभी, तूंअर, कोरड, गौड, मकवाणा, यादव, कछवाहा, भाटी, सोनिगरा, देवडा, चंद्रावत । ए छत्रीस राजकुलो छइ ।

---

१ पमार २ वीर ३. कावा ४. खयरमोरी, ५ निकुंभवक ६ गहिलोत, ढिया, ७. भाला ८ गवा ९ हूणा १० वारड़ । (स ३)

महाजन नाम (९)

पासणागु आसणागु देवणागु

पासचंद्र आसचन्द्र देवचन्द्र

पासवीरु जसवीरु आसवीरु

इसउं महाजनु

महाजन विरुदावलि (१०)

सुरताण सनाखत, दीवाणदीपक।

अश्वपति, गजपति, नरपति, राय स्थापनाचार्य्य।

राजसभालकार, राजसूत्रधार, रायवंदिछोड, राजवाल्हेसर।

मर्यादामयरहर, पर नारी सहोदर।

कलिकाल निष्कलंक, विचार चतुर्मुख।

रूपरेखा मकरध्वज, वज्राक भालस्थल, चतुः पथ चिन्तामणि।

वाचा अविचल, वाल धवल, शील गंगाजल।

गोत्रवाराह, शील गांगेय।

उभयकुल विसुद्ध, एकोतरशत कुलोद्योतकर, उभयपक्ष निर्मल हंसावतार।

हर्ष वदन, सत्यवार्त्ता युधिष्ठिर।

सोना जलहर, कूर सागर।

कडाहि समुद्र, सालि समुद्र, वाहण वरिस।

द्रारिद्रय मुद्रा विहडणहार, विहि लिखिताक्षर मीटणहार,

पचार्कादि संवत्सर मुद्राकणहार

अछित ना विक्रमादित्य, विमणिम भोज।

जगज्जीवन जीमूत वाहन, दुवला मुसाल, दुत्रला पीहर।

ताकूया रउ तीर्थ, याचका रउ जीवन, राक रउ रक्षक।

मारूत्रड मालवउ, सकल जीव लोक कनक धार प्रवाह।

ऋण मोक्षण कामधेनु, दीनोद्धरण धीर, दुस्समय सावधान।

छत्रीस वेलाउल विख्यात, अष्टादस वर्ण पारिजात।

विषम दुष्काल जीतूयार, कलिकाल कल्पवृक्षावतार।

इत्यादि। दातृविरूदानि। (सू.)

साहुकार विरुदावलि (११)

दान व्यसन वासित चेतसः। अथ एकोत्तर शत कुलानि। पितृपक्ष १४, अमाय पक्ष २०, श्वपक्ष पक्ष १६, असुतापक्ष १२, भगनी पक्ष ११, अफूई पक्ष १०, १७६, अमासी पक्ष १८, एवं १०८ पक्ष।

सोना जलहर, क्रूर सागर ।

कडाह समुद्र, शालि समुद्र वाहन ।

दारिद्र मुद्रा विहडनहार, विहि लिना.(रक्त !) अक्षर मेटणहार,

पचायन वादी, सवच्छर मुद्रा करणहार ।

अछति इला विक्रमादित्य, जीमणे भोज, जगत जीवन, जीमूत वाहन,

दुबलानो पीहर, सकल जीव लोक कनक धारा प्रवाह ।

कृण मोक्षण कामधेनु, दीन धरण हार ।

दुःसमय सावधान, छत्रीस वेलाउल विख्यात, अष्टादश वर्ण पारिजात,

विषम मार्ग भजनहार । इत्यादि साहुकार विरुदानि (वि०)

गुजरात श्रावक नाम।(१३)

रामजी, रतनजी,[१] रूपजी, राघवजी, रायसिंघ, विजयसिंघ, [२]जैसिंघ, जसवत जिणदास, विमल दास, वर्द्धमान, वीरजी, वजीर, [३] सामल दास, सूरदास, शातिदास, शिवदास ।

ऋखभदास, राघवदास, सोमजी, सुदर, सोमचद, करमचंद, कपूरचद, कमल सी, अमरसी, विमलसी, अमथो, ओघव, हेबुओ, ढबूड, धरमौ, धींगड, धनराज, मनराज इत्यादि ।

दक्षिणी श्रावक नाम (१४)

अथ दक्षणना श्रावक नामानि ।

बासबा, पासबा, आसबा, बीरबा, हीरबा, नारबा[४], सोनाबा, दानाबा, गोमाजी, रामाजी, तानाजी, कानाजी, मांनाजी, खांनाजी, इत्यादि ।

सीरोही श्रावक नाम (१५)

अथ सीरोहीनी धरतीना श्रावक नामानि ।

भूधर, भाखर, परवत, डूंगर, राउत, दुलीचद, टेकचद, समरचंद[५], उत्तम चद, उग्रसेन, वीरसेन, भगोतीदास, भिखारीदास, भइरोदास, नंदलाल, वंदलाल, जगतसिंह, सबलसिंह, जेठमल्ल, टोडरमल्ल, टेकमल्ल, भाभण, खाखण, खारवण इत्यादि ॥

१—मेवाड़ । २. खेतद । ३. वजिद । ४. नीरवा । ५. सभाचद ।

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग ७

देव, वेताल, शाकिनी, सिद्ध, व्यक्ति तथा
व्यक्ति कष्टादि वर्णन

(१) देवता

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, भगवती, शक्ति, राम, कृष्ण, हनुमान ।
आसपास [लोक देवता]—खेत्रपाळ, गोगो, पाबूदेव, शक्तिदेव, रामदेव, रामापीर, भैरव, पीर, डाउलपीर, भूत, सीतळा ।

(२) अथ शाकिनी

करि माळ, दिंती ताळ ।
मुख बोलती आळ माळ, उर्द्ध कीधा मुत्कल केश जाल ।
दंष्ट्रा कराळ, हाथि धरती रक्त कपाळ ।
मुखि बोलती जाणे वैश्वानर झाळ, इस्यउ शाकिनी चक्रवाळ ।
जिसा मरु देशि कूंर तल, तिसा नयन युगल ।
जिसा पुरातन कोद्रव पलाळ, इसा पीळा केश जाळ ।
जिसा साप पर्ण, तिसा टापरा कर्ण ।
जिसी सिला उच्च सरल, तिसी अगुली विरल ।
जिसा ताल वृद्ध तरल, तिसा जघा युगल
जिसी पर्वत नो दोतडि, इसी मोटी कडि । इसी शाकिनी ॥ ७२ ॥ (जै.)

(३) वेताल (१)

साग पाग समान कर्ण, श्यामल-कज्जल समान वर्ण ।
निलाट चटित विकराल, महा भैरवानुकारि मुख ।
ज्वलन ज्वाला कलाप पिंगल दृष्टि, निरतर अंगार वृष्टि करतउ ।
कडकड़त महिष मोडतउ, पाताल विवर नीं परि पेट संकोडतउ ।
आपणउ कपाल आस्फालतउ, दुर्दरा रवि ब्रह्माण्ड फोडतउ ।
आकाशि तारा मंडल त्रोडतउ, कुलाचल पर्वत पातालि घाततउ ।
हाथि तीक्ष्ण काती नचावतउ, महा कपालि रुधिर पीतउ ।
गलइ रुडमाल वहतउ, अट्टहास करतउ, कातर आतुर बीहावतउ ।

प्रत्यक्षकाल, कङ्काल, कराल वेताल ।
काकीडा उदिर सर्प घेरोला नी माल धरतु ।
ताल तमाल जघा घर द्दरतउ ।
पग छापरा, कान टापरा, आखि ऊंडी, निलाडी भूंडो,
धमिया लोह गोला, तिसिया वेउ डोला । एवं विध वेताल ॥ ११२ ॥ जी०

(४) वेताल (२)

सूप जिसा नख, लोढउ जिमि आंगुली, लोह तणी नीसाह जिमा पाय ।
ताल वृक्ष जिमी दीर्घ जघ, जिसी कूभी तणउ खापरु तिसउ उदरु । जिमउ प्रवहण तणउ कूया खभउ, तिसि बाह । लाबा दांत, मोचउ नाकु, वाकउ निलाड, त्रीभींटउ माथउ । इसउ रौद्र विकरालु वेतालु ।

(५) वेताल (३)

मनुष्य फीटि हुओ वेताल, कठि विलंबित रुंडमाल ।
करतल पातके, ... ।
वसुन्नाभिभूत, जिसो यमदूत ।
कान टोपरा, पग छापरा ।
आख ऊडी, पेट कूडी ।
आख राती, हाथे काती । भूंडी छाती ।
विकराळ वेस, विहावे देस ।
हडहडाट हँसे, धरामडळ धँसे ।
मस्तके अगार बळै, रवि जिम कळकळै ।
इस्यौ रौद्र रूप, तेहनो स्वरूप । कान कूप
केतलो वखाणू, इस्यो वेताल ॥

(५) वेताल वर्णन (४)

भीषणाकार, अति रौद्राकार ।
मुखि करतउ फार फुत्कार, कृतान्तावतार ।
मुखि मेल्हतउ भाळ, हाथि देतउ ताळ ।
मस्तकि कपिल केश, स्थपुठ, ललाट ।
घटितका कराल दृष्टि, मुख विवर विरचितागार दृष्टि ।
कर्ण कुहर विहरमाण, भुजंगराज भीषण । .

चिपट नाशिका, ओष्टपुट विनिर्गत दीर्घ दृष्टि ।
ताल विशाल जघा युगल, सकल स्थाली बधू कठ कालकायकाति ।
कटि कलितु कपाल ।
लोहितारुण पाणि विकराल, हास वाचालित दिगंतराल ।
एव विध वेताल ॥ ७३ ॥ जै०

(६) महासिद्ध

मंत्र तणउ जाण योगींद्र[१], स्वर्गलोक समग्र अवतारइ[२] ।
गगनागणि चंद्रादित्य[३] स्तभइं, आकाशि[४] वैश्वानर बालइ ।
आपणा वस्त्र आगि पखालइ[५], पाणी माहि[६] पलेवणउ प्रज्वालइ ।
पाताल कन्या प्रत्यक्ष दिखाइ[७], कउपड[८] करता वन खड मोडइ ।
पातालि[९] बालि तणा बध घोडइ, लोह शृंखला[१०] फुक जोडइ ।
पर्वत्त[११] ना शृग ढालइ, शम्बर शृग गालइ[१२] ॥ २४ ॥

(६) सिद्ध

कर कमल कलित योगदड स्कध प्रतिष्ठित योगपट्ट[१३] ।
प्रसाधित प्रचड चडिका मत्र, पिशाच साधन स्वतत्र ।
शाकिनी निग्रह साहसिक, रसायन प्रयोग रसिक ।
प्रदर्शित वलि पलित नाश, वशीकरणि अमूढ लक्ष ।
खडी चापडी प्रमुख विद्या कुतूहली ।
असाध्य साधक, आकाश पाताल बंधका ।

(८) योगीन्द्र

ऊपर हुतउ इद्रिसहितु स्वग्रलोकु आणइ
गगनागणि चद्रमादित्य स्तभइ
आकाशि अग्नि बालइ
पाताल कन्य का प्रत्यक्ष देखाडइ
कडयडरभु करता वनखड पोडइ

---

१ जोगी । २. अवतारें । ३ चद्रसूर्य थंभे । ४. आकाश विश्वानर वले । ५. मां पखाले ६. माहे पलेवण प्रज्वाले । ७ देखाडे । ८ कटक परीकरता वनखड मोडे । ९. पताल वलि तणा बधन छोडे, १० फूकें जोडें । ११. पर्वत शृग उखाडें । १२. गाले । १३ व्यायोग ।
इत्यादिक महासिद्ध जाणवो ॥ (पू०)

पातालि बलि तणा बंध त्रोड़इ
पर्वत तणा शिखर फोड़इ
इसवु महा मां थिकु
शक्ति मंतु योगीन्द्र ॥

(९) पूतली वर्णनम्

पूतली, जाणे काचइ कपूरि घड़ी, जाणे रंभा तिलोत्तमा आकाशि हुंति पडी।
जिसी अमृत सारिणी, इसी मनोहारिणी ।
जिणि दीठि ऊपजइ रली, इसी पूतली ।
सा देखी जाणियइ चित्रामु चित्रितु, जिसउ पाषाण घटितु ।
जिसउ काष्ट उत्कीरितु, जिसउ मंत्रि स्तंभितु ।
जिसउ महाग्रह ग्रहितु, जिसउ भूताधिष्ठितु, जिसउ सन्निपात पूरितु।
जिसउ मदन भिभलु, इसउ हुइ ग्रहिलु ।
न वेलइं, न वेयइं ।
न चालइं, न हालइं ।
न खेलइं, न बोलइं ।
न जियइं, न रमइं ।
न नासइं, न सम्मुख लागइं ।
मन मथ्यिकरइ ऊमाहइउ ॥ २ ॥

(१०) रोषातुर व्यक्ति

सकोप नरः, भ्रकुटि ताडतउ ।
विकट चपेटाऊ पाड़तऊ, होठकरी फुरफरतउ ।
वचन विन्यासि प्रसख लतउ ।
विभीषणाकार मुखनरतउ, आरक्त लोचन फेरतउ ।
दुर्वाक्य बोलतउ, महा कोपि सयर डोलतउ ।
जाणेकरि प्रज्वलतउ वड़वानल ।
अति रोषारुण, जिसिउ रातउ अरुण ।
निष्ठुर वदन क्रूर लोचन ।
सर्व स्फुटाटोप कुटिल ।
कज्जल दल श्यामल, निर्लालित जिह्वा युगल ।

चूड़ामणि प्रभा प्रहतांधकार जालु ।
सज्जित सज्ज सरल स्फालु स्फारस्फूत्कार भीषण ।
अत्यता[1] मर्य दूषण ।
अवनि वनिता वेणि दंडायमान, यमुना समान कायमान ॥ ४० ॥

(११) प्रसन्न व्यक्ति

किरि धनदु यक्ष तूठउ,
किरि वेतालु तसु सेव पयठउ ।
किरि कल्पद्रुम फलियउ,
किरि कामु घटु माझि दलियउ ।
किरि कामधेनु ग्रिहांगणि वाधी,
किरि नवनिधि तणि लाधी ।
किरि चिन्तामणि रत्न हाथि चडिउ,
किरि उदयु पुण्य ऊवडिउ ।
इसउ हृष्ट तुष्ट सानद हूयउ ॥ (पु० अ०)

(१२) प्रेमी

सहर्ष, सस्नेह, सोल्लास, सविकास, सविभ्रम, सप्रेम, सोत्कंठ, विहसित-वदन, उल्लसित वचन, रोमांच, कुंचकित शरीर, सर्वालकार विभूषित, सर्व-शंकादिदोषा दूषित, प्रेम संयोग ॥३॥

(१३) कांतिहीन

[[2]विच्छाय श्याम दीन वदन हूउ ।]
जिसिउ[3] चपेटा आहणिउ माकड, जि० डाल चूकउ वानर ।
जि० घाय[4] चूकउ सुभट, जि० दाय[5] चूकउ जुआरी ।
विद्या चूकउ विद्याधर, फालै चूकउ दर्दर ।
जिम ठाम चूकउ भडारी, यूथ भ्रष्ट चूको हरिणु ।
जिसिउ[6] चौर अत्राण अशरण ।
राज्य चूकउ राजा[7], पदवी चूकउ पदस्थ,
लाज चूको नारि, भीख चूकउ भीखारी[8] (स० १)

---

१ अल्पता । २. सकल विकास । ३. मु० ३ में नही । ४. ऊच पेटा । ५. घाव। ६. दुख । ७. जिम । ८. राजश्री । ९. पदवी ।

(१४) भाग्यवान

तसु तणइ रूपइ कुलि वहइ, सोनमा मोर ऊडइ
मोन वेहूले राति विहाइ, पटउवे भूमि ऋहुरियइ
चीतविया पासा पडइ, ऊघउ करता पाथरउ थाइ
लक्ष्मी ग्राहिरि मूसाविइ, उपरि पइसइ,
इसउ दीहाडउ ॥

(१५) पुण्यवंत

जसु तणइ प्रदक्षिणा वर्त्त शख।
चिंतामणि रत्न फरुस पाखाण, सोना तणउ पुरिसउ।
कोटीं वेघ रस, काली चित्रावलि वेलि।
चोटिया द्राम, जल तरणि हीरउ।
कवडी पोतइ, साखिणी पदमिणी वेउ लक्ष्मी निधान कलस आणइ।
लाखी कउ दीवउ प्रज्वलइ, कोटिध्वज लहलहइ।
जसु तणइ रूपइ कोलू वहइ, सोना ना मयूर उडइ।
सोवने फूले राति विहाइ सपालय सोना पहिरियइ।
पटउले भूमि ग्राहिरियइ, चीतविया पासा पड़इ।
ऊघउ करता पाथरउ थाइ, लक्ष्मी वारणइं लाखइं।
अनइ ऊपर वाडइं पइसइ, इसिउ दीहाइतउ।

(१६) पुण्यवंत (२)

जाणे धनद यक्ष तूठउ, जाणे करि वेताल सेवावाहि पइठउ।
जाणि करि कल्पद्रुम फलिउ, किरि काम घट आवी मिलिउ।
किरि कामधेनु गृहागणि[1] ग्राधी, किरि नवनिधि तीणि लाधी।
किरि चिंतामणि रत्न हाथि चडिउ, किरि पूर्व भवभाग्य ऊघडिउ।
अथवा कल्प वैलि घरी गणइ प्रइठी।
अथवा महालक्ष्मी मूर्ति मले घरि पइठी। भवति भूरिभिः ॥

१—गृहागणि।

(१७) लक्ष्मीवंत वर्णनः—

ऊँचो तो[1] अजान बाहु,[2] वामनो[3] वासुदेव ॥
गोरो[4] तो कंदर्प, कालो[5] तो कृष्ण ॥
घणो जीमै तो आहारी,[6] थोड़ो जीमै तो पुन्यवन्त ।
जो ऊँचा वस्त्र पहिरै तो राजेश्वर, सामान्य वस्त्र पहिरै तो सुमो[7]
दाता[8] तो कर्णावतार, जो न दे[9] तो[10] छाना पुन्य करै
घणुं बोलै तो भोलो, न बोलै तो मितभाषी
जो लंपट तो भोगी, जो नपुंसक तो परनारि सहोदर[11] इत्यादि ॥

(वि० पु०)

एक अन्यप्रति में उक्त पाठ विशेष मिलता है ।
मुक्तिनारी प्रतोलीद्वार, सकल तत्व भंडार
कर्मवल्ली छेदन कुठार, चतुर्दशपूर्वोद्धार
पंचपरमेष्टि नवकार, कंदर्पावतार

(पू०)

थोडुं जिमइ तउ सुकुमार, भगडदू तउ व्यवहार
अपहुँचवाण तउ पूरउ, जउ पहुँचइ तउ सूरउ
लक्ष्मीवंत जिमि करइतिमि छाजइ, 'धीर' जिम बोलइ तिम विराजइ

इति वर्णक—

सभा कुतुहल में यह पाठ अधिक मिलता है ।

(१८) लक्ष्मीवंत (२)

लक्ष्मीवंतु ।
जइ ऊंचउ तउ अजानु बाहु, जउ खाटरउ तउ वामणउ वासुदेव ।
गोरउ तउ कंदर्प, कालउ तउ कृष्ण सोह गालउ ।

---

१ ऊंचउ तउ २ अर्जुनबाहु ३ वामणउ तउ ४ गोरउ ५ कालउ ६ सूरउ आहार ७ खूनउ ८ जइ दातार ९ जइन घइ १० तउ ११ साचदापी १२ महायोगी ।

घणउं जिमइ तउ पूरउ आहार, थोडा जीमउ तउ पुण्यवंतु ।
जउ पट्उला पिहरइ तउ राज राजेसरु ।
जउ सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ अलवेसर ।
जउ दातार तउ वलि कर्णावतार ।
जउ लक्ष्मी न वावरइं तउ प्रछन्न पुण्य करइ ।
जउ घणउ बोलइ तउ भोलउं, न बोलइ तउ मित भाषी ।
भोग चपल तउ कंदर्पवितार; जउ अविषइ तउ परनारी सहोदरु ।
जउ टालि माथइ, तउ टालिये पुण्यवंत जि हुइ ।

श्लोकाः—

यस्याति वित्तं स नरः कुलीनः सः पंडितः सश्रुतवान विवेकी,
स एव वक्ता, सच दर्शनीय. सर्वेगुणाः कांचन माश्रयंति ॥
गुण वृद्धा तपोवृद्धा ये च वृद्धा वहु श्रुता ।
सर्वे ते घन वृद्धस्य द्वारे तिष्टन्ति किंकराः ॥१०६॥ जे०

(१६) ऋद्धिवंतु—(३)

ऋद्धिवंतु, पुण्यवंतु ।
कर्पूर कुलगला करइ, अद्भुत श्रृंगार रस माचरइ ।
नितु नव नवालंकार वावरइ, उत्फुल्ल पुष्प शय्या आदरइ ।
हींडोलाट खाटनी लीला धरइ, भोग पुरंदर हुअउ फिरइ ।
सकल स्त्री लोक लोचन हरइ, दृष्टि दीठउ मनि विकार करइ ।
नव नवे लीला विलासे रमइ, मूँह पूंछी जिमइ ।
कडि पूछी पहिरइ, खडोखली तणा पाणी लहिरइ ।
लक्षित गर्भेश्वर, द्रव्य अविनश्वर ।
शालिभद्रानुकार, मदन मुद्रावतार ।
अश्रात तम्बोल समारइ, पंच प्रकार विषय सुख अमाणइ ।
ऊगिउ आथमिउ काइं न जाणइं ।

गाथा

जाई विज्जारुवं, तिन्निवि निवडंतु कंदरे विवरे ।
अत्थुच्चियं परिवुड्ढो जेण गुणा पायडा हुंति ।

(२०) वणिक वर्णन

रिद्धिवन्त पुन्यवत, कपूरे कोरला करे ।
अद्भुत शृंगार समाचरें, नित नवा अलंकार वावरें ।
कमल फूल त्रिदश आदरें, हिंडोला खाटनीं लीला करें ।
भोग पुरन्दर होइं फिरे, सकल स्त्री जन लोचन हरें ।
दृष्टि राघो ठाम विकार न करें, नवा नवा विलास करें ।
महता भोजन जीमे, खडोखली तणा पाणी लहर ।
दयावंत चित्तधर, पर उपकार कर ।
ललित गर्भेश्वर, द्रव्य अर्चनेश्वर (अविनश्वर ?) ।
सालिभद्रानुकार, मद मुद्रावतार । निरतर तम्बोल संभरें,
पंच प्रकार विषय सुख माणें, ऊग्यो आम्यो न जाणे,
दिन प्रति विलास हँसें, एहवा महाजन वसें ।
भोग पुरंदर, सौभाग्य सुन्दर ।
नवादि जलधर, ताबूल सनागर ।
बीडी वैरागर, माननीय मनोहर ।
लीला अलवेसर, लीला शालिभद्र, इत्यादि भोग पुरंदर ।

(२१) श्रेष्ठि

जसु बणइ प्रदक्षणावर्त्त संखु, चिन्तामणि रत्नु ।
फरस पाषाण पुरिसउ, कोटि वेधु रसु, कालउ चीत्रउ ।
चोटीया द्रास, जलतरणि हीरउ, कवडी पोतइ, सखिणि पदमिणि ।
चेउ लक्ष्मी निधान कलस आणइ,
लाखि दीवउ ज्वलइ । ध्वज लहलहइ, इसउ पनउतउ सेठि ॥

(२२) सुखी श्रेष्ठि

श्रीमंतु, रिद्धिमंतु ।
काकनि करुला करइ । फोफले कग्ग ऊडावइ ।
महु पूछी जीमइ । कढि पूछी पहिरइ ।
ललित गब्र्भेश्वरु । शालिभद्रावतारु ।

ऊगियउ आथमिउ काइं न जाणइ। अश्रान्त तंबोल समाणइ। पंच प्रकार विषय सुख माणइ।
इसउ धनाढ्य सुखिउ सेठि ॥

(२३) श्रेष्ठि पुत्र

सुजन, सरल प्रकृति, दाक्षिण्यशील, औचित्य गुणो पेत कृतज्ञ, नीतिवंत, सदाचार, उपकार निरत, दातार शिरोमणि, स्वजन, वच्छल, नगर मुख, राजमान्य प्रसिद्धि पात्र, इसउ श्रेष्ठि पुत्र।

(२४) श्रेष्ठि प्रवहण यात्रा

समुद्र अगाध मध्य, गुहिर गंभीर, असप्राप्त तीर।
तीहि समुद्र नइ तीरि, वावन्नउ बोहित्थ नागरिउ।
आउलां सूत्रिया, देशांतरोचितक्रियाणा भरियां।
कूआ खंभ ऊभविउ, [२]नीजामा सज्ज हुआ।
ग भेला लोक भाड़िउ[४], इधन पाणी पक्वान संग्रहिया।
खाडिया पीसिया संवलु[५], सिद्ध ताडिउ।
बलि बाकुलि किया, दिक्पाल पूजिया।
नाटक पेखणा[६] कराविया, स्वजन लोक मोकलाविउ।
भले[७] शकुने भले मुहूर्त्ते, भले दिवसि, [८]हूते प्रवहणि [९]श्रेष्ठि चडिउ।

(पु० अ०)

(२५) निर्द्धन वर्णन (१)

ऊंचउ तउ एरंड, खाटडउ तउ हीनाग।
घणुं बोलइ तउ लाफु, न बोलइ तउमोगु।
घणु जीमइ तउ भूखउ।
उचा वस्त्र पहिरइ तउ ईतर, सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ सुखीउ।

वि० पु० अ० में प्रथम पंक्ति नहीं।

१ समुद्र तणइ, तीर्थि वापन्न २ नीजाव सचिया ३ कमारउ ४ माडियउ ५. सावलु, सिद्ध ६ प्रेक्षणक ७. शुभ ८. वर्त्तमानि हूते ९. पुत्र चडियउ।

गोरउ तउ पाडु रोगिउ, कालउ तउ कवाडी। व्यापारी तउ भडग,
विषयी तउ सर्वधर्म्म वाह्य। विषयहीन तउ नपुंसक।
पुरुष लक्ष्मी रहित, तेहनइ कोइ न चीतवइ हित।
बोलतउ होइ मीठउ, तउही न सुहावइ किए ही नइ दीठउ।
गुणे करी पूरउ, तउ ही लोक कहइ अणूरउ।
घणुं किसुं झखीयइ, मेलावा माहि नो लखियइ।
लक्ष्मीयइ छाडियइ, ते कुण ही मांडियइ।
सदीवउ सीयालउ, चड्या आगलि दीठइ पालउ।
घरनी कलत्र, तेहइन मानइ जिम सत्रु।
मोटायइ वंस नउ, न लेखवइ कोइ किणही अस नउ।
इस्यउ दरिद्र पुरुष, सहू करइ कुरुष। (सू०)

(२६) निर्धन (२)

निर्धन-उंचउ तउ मसाण खंभ, खाटरउ तउ हीनाग।
घणउ जीमइ तउ छारीउ, थोडउ जीमइ तउ भूडऊ टाणउ[1]।
घणउ बोलइ तउ लबाल लापड, न बोलइ तउ मोगउ।
भला वस्त्र पहिरइ तउं ईतरवा, सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ दरिद्री।
गोरउ तउ आम वातीउ, कालउ तउ कवाड़ी।
वेवइ तउ खात्र पाडिउ, न वेवइ तउ भडग।
विषइ तउ सर्वधर्म वहिकृतः,विषयहीन तउ नपुसंक।

श्लोकः—

वरं रेणुर्वरं भस्म नष्ट श्रीर्नपुर्नरः
पूज्यते परीणि[2] कापि निर्धनस्तु कदापि न ॥१॥

गाथाः—

पथ समा नत्थि जरा, दारिद्द समो पराभवो नत्थि।
मरण समं नत्थि भयं, खुहा समा वेअणा नत्थि ॥२॥

पाठान्तर—१ भूडउ ऊणाटउ २ परवणि।

(२७) निर्धन वर्णक (३)

पुरुष लक्ष्मी रहित, तेहनइ कोई न चींतवइ हित ।।
बोलता होइ मीठउ, तउही, न सुहावइ किणहीनु दीठउ ।।
गुणेकरे पूरउ, तउही लोक कहइ अणूरउ ।।
घणुस्यु भखीयइ, मेलावा माहे न लखीयइ ।।
लक्ष्मी छडीयइ, ते कुणइ मडीयइ ।।
सदीव ओसीयालउ, चडय।अ।गलि हीडइ पालउ ।।
घर नी, कलत्र, तेह पिणि गिणे सत्रु ।।
मोटा नइ वसनउ, न लेखवइ कोई किणही अस नउ ।।
जउ ऊंचऊ तउ एरंड, जउ मातउ तउ संड ।।
गोरउ तउ पडु रोगियउ, न बोलइ तउ सोगीयउ ।।
कालउ तउ कबाडी, घणु बोलइ तउ लबाडी ।।
थोडउ जिमई तउ दूखउ, घणु जिमउ तउ भूखउ ।।
सामान्य वस्त्र पहिरइ तउ छीतर, उचा वस्त्र पहिरइ तउ इंतर ।।
जउ पातलउ तउ विरंग, व्यापारी तउ भडग ।
विषई तउ सकामी, निविषई तउ अकामी ।।
दातार तउ लंड, सूंब तउ भड ।।
झगडइ तउ नग, न झगडइ तउ ठग ।।
जिम चालइ तिम त्रोटउ, जिम बोलइ तिम खोट्उ ।।
इसउ दलिद्री पुरुष, तिण जगत्र करइ कुरुखं ।।
जिवारई लक्ष्मी त्रासइ, तिवारइ डील माइ गुण सर्व नासइ ।।
दीन भाषइ, तउही को न राखइ ।।
इति दलिद्री वर्णकम् ।। कु.

(२८) निर्धन (४)

उचो तो एरंड, खाटरो तो हीनाग ।।
घणो भोलो तो लाकु ।।
बहु बोलै तो लबोल, न बोलै तो मौन ।।
घणुं जीमै तो भुख्यो, थोडुं जीमै तो अभागीयो ।।

भला वस्त्र पहिरें तो ईतर, सामान्य वस्त्र पहिरें तो दरिद्री ॥
व्यापारी तो भडग, विप्रइ तो सर्वधनवाह्य ॥ विषयहीन तो नपुंसक ॥

(२६) दरिद्री,

पुरुष लक्ष्मी रहितु, तिह हुइं कुणहुं न चीतवइ हितु ।
बोलतउ हुइ मीठउ, तथापि न सुहादू कुणहइं दीठउ ।
गुणे करी पूरउ, तोइ लोक देखइ अणूरउ ।
घणउ किसिउ झखीयइ, मेलावइ न उलखीयइ ।
लक्ष्मी छाडियइ, सुकुणिइ माडियइ ।
सदैव उसी आलउ, सुखासणि बइसण हारउ ।
आगलि हींडइ, अण वाहणे अनइ पालउ ।
घरनी कलत्र, तेहइ मानइ भणी शत्रु ।
मोटावइ वंस नउ, पुणि रिणि राउलि निमइ,
इसउ दरिद्रो ॥ २० ॥ जै०

(३०) दरिद्रो वर्णन—(२)

दरिद्री ना टापरा, जूनागढ ना छापरा ॥
तिहा रहे माणस बापडा, ते महा लापरा । न जाणे आपरा ॥
वाका वला, उपरि पडे सला । नीकन्ते कानसला ।
वासडा काला । घणा चडकलीना माला, विचमा साप ना चाला ॥
कुण२ दीसें ख्याला,
गोरोली ना इडा ॥
मकोडा ने कीडा, घरती, माननी निरती,
घडाधड करती, जिणतिणसु लडती, आगणे पडती ॥
घणा मेलना थोक, हीया थी न जाइ शाक, जे बोलें ते फोक ॥
एह फुअड, बोलें सदा कूड ॥
घरमा दीसें धूड, धणीमा पिण चूड ॥
परसालें चूइं, आगणें सूइ, रीट रालो लुई ॥
तितरें भितडा पडें, वइर अडें, वली बापडो उंचो चढे ॥

---

१. लट ।

विणठी हांडी, ते पिण किनारे खाडी ॥
थाली नी पडें माडी, पीसवानी वेला मारे डाडी ॥
तुस ना ढोकला ते पिण नहीं मोकला,
माथे चढ़े जूना टोकला, रोव छोकरां, समझावे डोकरा ॥
खावा न मिले धान, देखीनें भडकें सान, देखीने जाइ डील नु चान ॥
(स्त्रा०)

आगणे कुतराना घुरघुराहट, रहेता महा उचाट ॥
सुवा न मिलें खाट घणा माखी ना भिणभिणाट ॥
वारणें पिण तुटी त्राटीं न मिलें एक सूतनी आटी, ढिलें पछोडी पणफाटी,
आगणे रोडी ॥ गाठे न मिले कोडी, वणी घणीयानी नी सरखी जोडी ॥
आगणें काटानी वागर, जाता न मिलै आदर ।
वेसवां न मिले किहा पाधार, जाता ऊपपजे डर ॥
घणा अजगर, शरदीना घर ॥
उदेही ना भर[1] अनेक कोल ना दर ।
उदरना भर, एहवा दरिद्री ना घर ॥
इति दरिद्र घर वर्णनम् ॥ ५ ॥ (क) (कु.)

---

(३१) जुआरी

निरतर जू रमइ, आपणउ सयर दमइ
सगल धन गमइ, भीख भमइ,
अलीख (क.) भाषण करइ, निज कुटुंब परिहरइ
अपमान आदरइ, अनर्थ परम्परा वरइ
जाणी पाणी दिव्य करइ, अनेक नीच कर्म समाचरइ
सात पूर्विज तणी ऋधि (ऋद्धि) क्षयं करइ, आपणा मस्तक ताइ रमइ ॥२॥

(३२) चोर

निविध वेस, करइ विवरि प्रवेसु ।
चडइ अटालि मालि, पइसइ परनालि खालि ।
महा निसंकु, अतिहि त्रिवंकु ।

१—वर ।

छाने पगि चालइ, कुणहइ हुईं ! आपणु चित्त नालइ ।
चार चक्ष उपवाडइ, कमाड नी कोडि उघाडइ ।
नउल ना साकल वाढइ, भुइरा ध्याकेकाण काढइ
दीहइं सूइ, राति पग हंठिइ करइ,
नगर सहु सूअइ न मिलइ कहि-नइ साथि, रुधइ जाइ ताली देईं हाथि ।
राय ने भंडारि, खात्रि पाडइ, पग रमाडइ
इसउ चोरु ॥ १७ ॥ जै०

(३३) चोर वर्णन (२)

विविध वस्तु हेरइ, बोलाव्यउ वोल फेरइ ।
चढ़इ माल अटालि, पइसइ परणाल खालि ।
कमाड ऊघाडइ, पणि सूतउ को न जगाडइ ।
अघोर निद्रा द्यइ, कान कोटिरा आभरण ल्यइ ।
कटारी यइ वधन वाढ़इ, पर्वत प्राय केकाण काढइ ।
चढ़िउ चोर पवाडइ, राउला भडार फाडइ ।
खलक नइ घरि द्यइ खात्र, न छोडइ छइल नइ छन[१] थात्र (पा १) ।
घण जिस्यउ गाढउ गात्र, दारिद्रय छेदिवा दात्र ।
दीसइ दीसइ शात, पणि रात्रिइं तउ साक्षात् कृतात ।
विणासीयइ तउ इइ न मानइ चोरी, वाध्यउ वाढी जाइ दोरी ।
लोहनी साकल त्रोडइ, घडी न रहइ खोडइ[१] ।
हाकिउ ऊठी ऊजाइ, रुंधिउ ऊधसी धाइ ।
करि कीधइ करवालि, इइ लच्च लोक विचाली ।
गढ़नी परनालि, पइसतउ वाघउ झालि[२] ।
पाणि ए महापापी, जेणइ प्रजा सतापी[३] । सू०

---

१ छात्र

१ कु० विशेष पाठ इसके वाद—सीसम ना किमाट फोडइ, मरण मीम ओटइ।
दीठु काइ न छोटइ, पगे छछोहउ दोटइ, डीलइ जोर, कर्म हि शोर ।
मननउ कठोर, जाणे खा परउ चोर ।

२ इसके वाद का विशेष—काठउ वाधउ, पोता नउ कमायउ लाधउ ।

३ कहिये सी वात, गणि धीर कहइ ए चोर अवदात ।

(३४) वृद्ध वर्णक

जिवारइ जरा चापइ, तिवारइ कर वेवे कापइ, पग थरहरइ ॥
कडि थाइ कूबी, वांसा नीसरइ डूबी,
तडपडइं‥थीमीट, तास कायइ वहइ रीट,
माथउ धूजइ, चालता मासन पूजइ,
आख गई ऊंडी, जेहवी धोबीनी कुंडी,
डागडी झालइ, हलवे हलवे हालइ,
मुहडइ पडइ लाल, हसई बाल नइ गोपाल,
टागे पडइ वल, सगले टीलइ सल,
दाढ दात सगला पड्या, काने तउ ताला जड्या,
खाजखिरोइ जिसइ, पीहिरणु खिसइ तिसइ,
हाल हुकम न गालइ, डोकरा नु भाखइ कानइं,
मास गल्यउ, चामडउ नीचउ ढल्यउ,
चिंता करी वल्यउ, माथज पल्यउ जुंआ रउ जालउ ।
टाबरा नउ ओस्यालउ ॥
सहू ना करइ विषास, इसउ वृद्धावास ॥
घणातण डोकरा दुखी, ना केईक पुन्यवत सुखी ॥
मन सवेग आणउ, जउ इसउ वूढापणउ जाणउ,
गणि कहइ कुशलधीर, इम जाणि धर्म सूं करिज्यो सीर,

इति वडपण वर्णनम् ॥ कु०

(३५) हतांग मनुष्य

टूटा, पागला, आधला, असम, अनाथ, असरण ।
हीन, दीन, खीण, राक, रोगी, बधिर, बोबडा, गुगा ।
गहेला, टोहिला, दूबला, भूखा, तरस्या, इत्यादिक ना जाण ।

(३६) फूहड़ स्त्री

कानसियाली भरिया रालडा, फूहड़ा भरिउ साडलउ ।
ओघरसाला भरिउ ओढणउं, हाथि पाथिउ नहीं, पगि पाणी नहीं ।

मलि मलिन सरीरि, दीठि ओकारि आवइ,
इसी फूहड़ी सुगावणी घरनारि कलिकालु प्रचुरु ॥ (पु० स०)

(३७) व्यक्ति कष्ट

तृषा, भूख, भावठि, ठाढि, यह तापता, बडो, लू उंगाल,
धूसर, आरत, उचाट, अजो अजप, इत्यादिक भोगव्याजीव ।

(३८) व्यक्ति आपद (२)

आपदा, कष्ट, कलेस, गड, गुंबड, ताव, सीसक, मथवाय, आफरो, अजीर्ण, उपद्रव, मार, छल, छिद्र, भूत, प्रेत, पिशाच, साकिणी, डाकिणी, यक्ष, योगिणि, व्यतंर, वाल वेरि ।

रोग ८४ जाति ना वाय, ३६ जात ना फोडा, २१ जाति ना प्रमेह, २८ जातिना, आखना रोग १३ जाति ना सन्निपात, १२ जात ना ताव, ६ जाति ना श्लेष्म, ६ जात ना पित्त, दया पाली हो तो एती आपदा न पामियइ ।

रोग सोग वियोग ।

(३६) व्यक्ति रोग (३)

१२ ज्वर,	१३ संनिपात,	१६ प्रमेह,	५०० आमवत,
८४ वायु,	३६ महावायु,	८४ दोष	४५ खाधा विकार
१०८ फोडी,	५ गुल्म,	५ त्रयन,	२० श्लेष्म,
८ उदर,	१०८ व्याधि,	१०८ सहमउमृत्यु	७६ चक्षुरोग,
कास श्वास,	हरिषा, (हास)	अतिसार,	गुडगूम्बड ।
देह रोगाः ॥	१०६ जो०,		

(४०) व्यक्ति रोग (४)

जलोदर, भगदर, क्षार, खयन, खास, स्वास, हडकी, हरस, हीक, कुलण, वलण, अजीर्ण आफरो, अतिसार, अमार, आधासीसी अतर्गल, वाय, वेमचीवेग-वमन, वासी छडप्रमेह, पाणहिपीन सपघरी प्रवाला नासूर, नकलोही, नीनामी, गोलो, गुल्मगोलो, फीहो-फूलीफोडो, रागपित्ति रगतविकार, पांणी विकार, सोजो-श्लेष्म छाया, छाणी उदर विकार, कफ, कोढ, कोरड, कहमीया लोहीगण,

सग्रहणी, सीताग, सन्निपात, शूलसीसक, चादी द्राट, वातपित्त, मूर्छा, मधुरो, नभूत, रावण झोलो, दृष्टिदोष नेत्रदोष, धात, निर्घात, पुन्य थकी ए माहिलो एकेह प्रकासन पामे । (वि०)

(४१) उपचारक प्रकार

वेद, वारा, जाणजोसी, देव, देवला, डाकोनरा भोपा, भरडा, भगत, आमिक, भेषधर, भीखारी, भूआमडल, जोगी, जती, लटा सोफी, सन्यासी, पछणा, इछणा, उजणा, उतारणा, डोरा मादलिया, तेल, आंम्नाय उपचार इत्यादि ।

(४२) व्यक्ति कष्ट—दुस्काल वर्णन

दुष्काल वर्णन

एहवइ एक पडिउ दुकाल, ठामि २ दीसइ नर कपाल ।
रुंड मुंड मय धरा पीठ चाचरि [1]लाली सकीवइ नीठ ।
नेरती वाय वाजइ, भूपति नांइ हीया भाजइ ।
मिल्या मेह नासइ, को केहनइ न रहइ पासइ ।
धनवंत पणि सीदाइ, तउ रांक री किमी[2] गति थायइ ।
मारग हुआ महा विषम, संचरइ चोर विहुगंम[3] ।
गोरू विण दीसइ गाम देस, वाल्हा छडगया (वि)देस ।
माणस माणस नइ भखइ, आपण पारका नो लखइ ।
लोक वेचवा लागा पुत्र, छाडीजइ फूटराइ कलत्र ।
रोता बालक देखि, नूपजइ दया (नइ) रेख ।
लोक घणा निर्द्धन थया, उत्तमइ नीचनइ घरे गया ।
बडायइ जे जंगम जती तेहइ पणि ताकइ कोई सती ।
केईक जे धांन रा धणी, तेहइ पणि वावरइ [4]धान मिणी ।
पाताल भोग लीजइ, सागउ सगानइ न पतीजइ ।
पहिलुं जे लेता वनस्पती, तेह पणि न दीसइ रती ।
लोक भला लाज छोड़ी, मागवा लागा हाथ ओडी ।
(जो०)

त्रीला भोग सर्व भागा, सत्तु[5] धांनरइ ध्यानि लागा ।
जे कहीजता दातार ते पणि मागइ कही करतार ।
वीसर्यासर्व कला गीत, घरि घरि कीजइ अन्नरी चींत ।

१. चाली २. किसी ३ चिडु ४ अन्न ५ सहू

रूडायइ राउत राजा, ते पणि ताकइ लोक ताजा।
सविलोक निर्द्धन हुया, वाप वेटा रहइ जुजूया।
वचिवा लागा लोक, सगपण [1]सधि हुई फोक।
घणुं किस्यु जे पतिसाह, ते पणि करइ धान ऊमाह।
कितलुं कहीयइ ए सरूप, जेहनी वात भय रूप।
एहवइ महा दुकालि, [2]जगडू दीयइ दान विसाल। सू०

इति दुर्भिक्ष वर्णन।

---

१. सँध सहू २ धीर पुन्यवत धरिदीयइ दान सालि। (कु.)

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन संग्रह

विभाग ८

जैनधर्म सम्बन्धी वर्णन

(१) तीर्थंकर

जगद्भूषण, जगदेकरक्षण ।
तीर्थंकर, सर्व पाप क्षयंकर ।
विस्तीर्ण ससार सागर, गुण रत्नाकर
करुणा निधान, सकल देव प्रधान,
त्रिभुवनाधिप रूप, प्रकाशित संसार रूप ।
लोकोत्तर चरित्र, गंगाजल पवित्र गात्र ।
परमानंद दायक, सकल कर्म घायक ।
निर्दलित दोष, निःप्रतिम संतोष ।
सकल कल्याण कारक, आठमद निवारक ।
आठकर्म जीपक, पैंतीस वाणीगुण कथक । आर्यदेश भविक जीव उपदेशक।
चउतीस अतिशय विराजमान, बार गुण विराजमान ।
सहवा वीतराग देव (पू०) ।

(२) प्रथम ऋषभदेव जिन वर्णन

युगला धर्म निवारणु, संसार समुद्र तारणु ।
मरुदेव्या स्वामिनी कुक्षि सरोवर राजहंसु, इक्ष्वाकु कुलावतंसु ।
श्री नाभि नरेन्द्र नदनु, मुक्ति श्री हृदय चदनु ।
शत्रुंजय मौलि मडनु दुष्टारिष्ट खडनु ।
केवलज्ञान भास्करु, सर्व सौख्य करु ।
अशरण शरणु, कुगति हरणु ।
अनाथु नाथु, जगपति श्री जुगादिनाथु ।
अयश हरण, परम सौख्य नउ देणहारु तउ दानु देवउं अति चारु ॥१३॥ (जै०)

(३) आदिदाथ (१)

नाभि नदनु, सकल जगत्त्रय[1] मडनु ।
पचशत धनुष मान,[2] तापोत्तीर्ण सुवर्ण समानु ।
अति[3] श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कधु, जगत्त्रय तणउ बंधु ।

---

१ मही । २. प्रमाणु । ३ हरगल गवल ।

केवल ज्ञान लक्ष्मी सनाथ, भव्य लोकन्हि मुक्ति मार्ग तणउ दिखाडइ साथ।
संसार कूपि पडता प्राणि वर्ग[१] हुइ दिइं हाथ।
युगला धर्म निवारवा समर्थ, परमेश्वर[२] सदर्थ।
श्री आदिनाथ श्री संघ तणा मनोरथ पूरउ ।१। जो०

(४) जिन बिंब (१)

नासाग्र न्यस्त दृष्टि युगल, श्रीवत्सलाछित वक्षस्थल।
पद्मासन विधृत कर युगल, प्रकटी कृत वस्त्रांचल।
शरीर तेजच्छटा छोटिताधकार जाल, त्रैलोक्य सुखाल वाल। ६३।जो० (२)

नासाग्र विन्यस्त दृष्टि युगलु,
श्रीवत्स लाछित वक्षस्थलु,
पद्मासनोत्सग विधृतकरकमलु,
प्रगटीकृत वस्त्रांचलु
शरीररश्मिच्छटाच्छोटितान्धकारु। अस विंबु। (पु. अ.)

(५) परमेश्वर की नख कांति

जिसउ गुंजा तणउ अर्द्धभाग, जिसउ पद्मरागु।
जिस्यउ मजीठ रगु, जिसउ बाबू णउ पुष्प, जिसउ प्रवाल भंगु।
जिसउ चोल मजीठ, जिसी राती टसरि।
जिसी अशोक तणी कूंपलि, जिसी कुपति कपि कपोल।
जिसउ बिंबी तणउं फूलु, जिसउ अभक्रक।
जिसउ सिंहरु, जिसउ ऊगतउ सूरू।
जिसउ कुंकुम, जिसउ कुसुमउ।
जिसउ हिंगुल, जिसउ शुक चचु।
तिसी परमेश्वर तणी चरण नख काति ॥ ८६ ॥ जै०

(६) केवल ज्ञान से देखा हुआ अन्यथा नहीं होता (१)

कदाचित् समुद्र मर्याद मेल्हइ,
कदाचित् आदित्य पश्चिम ऊगइ।
,, अमृत विषु परिणमइ,

४ पटता। ५. भगवत।

कदाचित् चन्द्रमा अगार वृष्टि करइ ।
,, पाणी माहि पाषाण तरइ ।
,, मेरु चूलिका चलइ,
,, वाचस्पति वचन फलइ ।
,, शिला तलि कमल विकसइ,
,, गंगा जलु पश्चिम वहइ,
,, अभव्य हृदय धर्मोपदेश रहइ ।
,, मानुस सरोवरु सूकइ,
,, सत्पुरुष प्रतिपन्नु चूकइ ।
,, मेदनी मंडलु पातालि जाइ,
केवलज्ञानु दृष्ट तोइ अन्यथा (न) थाई । पु० अ०

७ केवल ज्ञानी के वचन अन्यथा नहीं होते [२]

कल्हारइं[1] समुद्र मर्यादा मेल्हइ, नदी तणां वृंद[2] पाछां पमेलइं[3] ।
क० सूर्य घोरांधकार करइ, क० चंन्द्रमा अंगार तणी वृष्टि करइ[4] ।
क० पापाण[5] खड जल माहिं लागमा[6] तरइ, निर्भाग्य मनुष्य हइ लक्ष्मी वरइ।
क० सकल दिशा मंडल फिरइ, क० मेरु पर्वत्त वाय[7] करी साचरइ ।
क० वेद विद्या[8] विदग्ध पुरुष मरइ, क० पवन वन माहि स्थिर पणउ आदरइ ।
क० वेलू माहि पीलता तेल नीसरइ, क० पूर्व भवान्तर नउं कर्म साभरइ ।
क० सूंकडं रूख फल फूलि करी विस्तरइ, क० सूकड इक्षु खड रस झरइ ।
क० कैलास चूला चलइ, क० बृहस्पति[9] वचनि करी स्खलइ।
[10] क० कुलाचल एक स्थानि मिलइ, क० अघटतउ संयोग मिलइ ।
क० गगाजल पश्चिम वहइ, क० अभव्यनइं[11] मनि धर्म रहइ ।
क० मानस[12] सरोवर सूकइ, क० सत्य हरिश्चंद्र प्रतिज्ञा थकइ चूकइ ।
क०पृथ्वी[13] मडल पातालि जायइ, केवल ज्ञानी कथित तउ ही—अन्यथा न थाई ॥५॥

(जो०)

१ किवारे २ ना उद्धरण ३ ठेलइ ४ मरे ५ जलमा पत्थर तरे ६ लगारेक तरइ ७ फेरिव्यो फिरे
८ ब्रह्मा वेद न उच्चरे ९ सुगुरु १० खल ११ पाखण्डी १२ रत्न कनक दहे
अन्य प्रति में इसके बाद "कुलवती भर्तार मुके" पाठ अधिक हे । १३ आकाश ।

(८) केवलज्ञान

विशेष अतिशय निधान, सकल ज्ञान[1] प्रधान।
मोहाधकार विच्छेदन भानु, त्रोटिता शेष कर्म सतानु।
त्रिभुवन जन सकल संदेह छेदक, अच्छेद्योभेद्य प्राणी-गण हृदय भेदक।
अनतानत विज्ञानु, इसिउ ऊपनउ केवल ज्ञान[3] ।। ३ ।। जो०

(६) समवसरण (१)

उत्पन्न दिव्य विमल केवल ज्ञानावलोकित सकल लोकालोक स्वरूप।
सुवर्ण सिंहासन छात्र चामरादि अष्ट महा प्रातिहार्य्य शोभमान समानरूप।
देवाधि देव, विहित सुरासुर सेव।
त्रिभुवनैक नायक, सकल सौख्य दायक।
त्रिभुवन जन नयना प्यायक, निर्जित पंच सायक।
चउत्रीस ३४ अतिशय सहित, पात्रीस ३५ वचनातिशय परिकलित।
चउसठि ६४ इन्द्र सहित, अष्टादश १८ दोष रहित।
घात्य कर्म चतुष्टय मुक्त, देवता कोटि युक्त।
यदा कालि नगर समीपि आवइ, तिवारइ आपणइ भावइ।
चतुर्विध देव निकाय समोसरण नीपजावइ।
तिहा पहिलू देव निर्मित, सवर्त्तक वायु विस्तरइ।
तृण काष्ट, कचवर अपहरइ, आकाशि मेह पटल पसरइ।
सुगधोदकि वृष्टि करइ, फूल पगर भरइ।
योजन एक प्रमाण भूमिका, विरचित अगर धूमिका।
मणि रत्न सुवर्ण सिउं साधी, गुरूड रत्नमय पीठ बाधी।
ऊपरि जानु प्रमाण पच वर्ण कुसुम वरसइ, चिहुदिसि दिव्य परिमल विलसइ।
उदार रत्न, १ सुवर्ण २ रूप्य ३ मय त्रिणि प्रकार।
मणि, रत्न, हेम मय कोसीसे करी सदाकार, समस्त विस्व माँहि सार।
पुण्यावतार, तेजि करी पूस्फार।
च्यारि (४) प्रतोलीद्वार, जिहा देवज प्रतीहार।
तिहा विहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुभ।

---

१ किहवारइ २ लगारेक तरइ ३।

इन्द्र धनुष मान मूरखा, तिसिउं रत्नमय तोरण ।
ऊपरि प्रत्यक्ष जिसी मागलिक तणी पालि, तिसी वंदर माल ।
अति पवित्र, विशाल छत्र ।
उदार स्वरूप, कनक रत्नमय पूतली तणा रूप ।
नयनइ जोता उपजावइ सुख, इस्या इन्द्रनील निर्मित मगर मुख ।
जिहा लिख्या सिंह, शार्दूल, गज, इसा निर्म्मल नीरज पचवर्ण धज ।
एहवा समोसरण विचालि, मणिवद्ध पीठ विशालि ।
सकल मागलिक मुख्य, वार गुणउ अशोक वृक्ष ।
तेह तणइ तलइ, स्वर्ण रत्नमय सिंहासण, जगन्नाथ नइ वइसण ।
तेजि करी जोई सकीयइ नीठ, इस्यु, सुवर्णमय पायपीठ ।
जिस्या हुवइ थवल कमल सहस्र पत्र, इस्या पनरह (१५) आतपत्र छत्र ।
व्यतर मध्यस्थ अमर, देवाधि देव न इं ढलइं चमर ।
अधरी कृत दिव्य मडल, तीर्थंकर लक्ष्मीकर्ण कुंडल ।
जगदीस पुठिइ झलकइ भामडल ।
जेहनइ दर्शनि मिथ्यात्व पटल टलइ, तिस्युं आगलि धर्म्मचक्र झलहलइ ।
आकाशि मधुर ध्वनि देव दुदुभि वाजइ, गाजइ ।
तेह नइ निर्घोषि करी गगनागण ।
पारतीर्थिक तणा भडवाय भाजइ, पापीजन पइसता लाजइ ।
रूडा सवे विरूद वाजइ, सहस्र योजन उच्चैस्तर इंद्रध्वज लहलहइ ।
धूप तण परिमल मह महइ, इद्रादिक देवता गहगहइ ।
वाजित्र तणी कोडा कोडि द्रहद्रहइ, मनुष्यनी कोडि आवइ मननइ रहरहइ ।
इसिइ प्रवसरि, एक देवगति गान करइ, एक श्रुति धरइ ।
एक सिंहानाद उच्चरइ, एक जगनाथ पासइ फिरइ ।
एक विचित्र वाजित्र वा यइ, एक रग करिवा सज्ज था यइ ।
अप्सरागण नाचइ, तीर्थंकर तणी भक्ति करीवा राचइ ।
दुष्ट वनचर आपणा आपणा जाति वइर परिहरइ,
परस्परइ प्रीतिवत हूता सचरइ ।
एणइ एहवइ समोसरणि, मार्गि काटे ऊंचे थाइते ।
पृष्ठानुगामी पवने वाइते, पोखी ए प्रदक्षिणा वर्त्तिजाइते ।
परमेश्वर तीर्थंकर ।
नव सुवर्णमय कमलि पाय स्थापतउ, तेजिकरि दसइ १० दिसि व्यापतउ ।
पूछिया तण ऊत्तर आपतउ, जन परम्परा नइ पाप थकी मूकावत्तउ ।

गज गतिइ चालतउ समस्त भव्य लोक तणा लोचन नइ आनंद उपजावतउ।
भव्य जीव तणइ हृदय कमलि बोधि बीज वावतउ।
पूर्व दिसि तणइ द्वारि पइसी, पूर्वाभिमुख सिंहासनि बइसी।
चतुर्मुख होइ, भविक सम्मुख जोइ।
बारइ (१२) परिषद पूरी, मिथ्यात्व मान मूरी, पापकर्म चूरी।
सर्व सत्त्व साधारिणी, योजन नीहारिणी, अमृतानुकारिणी।
वाणीयइ करी, लोक ऊपरि हित आदरी।
चतुः प्रकार, सर्वसार, जग त्रयनइ आधार।
धर्म्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक तणइ हीयइ वसइ।
अनेक भव्य जन आदरइ धर्म्म, त्रूटइ जिणथी अशुभ कर्म्म।
पामीयइ मोक्ष सर्म्म, इति समव सरण। (सू०)

(१०) समवसरण (२)

योजन लगइ खेहनुं विस्तार। देव कृत कचवरा पहार।
गंधोदक सींचवइ। सौचाम्यसार। पचवर्ण जानु प्रमाण जिह कुसुम सभार
देव कृत मणि कनक रूप्यमय त्रि प्राकार।
विशाल शाल भंजिका सहित रत्न मय दो जेहनु द्वार।
यथा स्थान स्थित गणधर देव देवी प्रभृति बार सभा परिवार।
उच्चैस्तर तोरण पताका किंकिणी नउ झात्कार।
धूप घटिका निर्गच्छत्। कृष्णा गुरु कु दरुक तुरुकनो जिहाँ धूपोद्गार।
चतुर्द्वार। एवं विध समवसरण॥ छ॥ पु०

(११) समवसरण (३)

जानि इन्द्रादिक देव आवइ, समवशरण तणी भक्ति भावहि।
एक देव रूअार नीपजावइ, रूप्यमय प्राकारु, एकदेव विस्तारित तेजः प्रकारु
निपजावइ स्वर्णमय प्राकारु।
एक देव मणि रत्नोद्योत विश्वर्तितांधकार निपजावइ, रत्नमय प्रकारु।
एक देव अति उदारु, नीपजावइ प्रतोली द्वारु।
एक देव लोक लोचन समुल्लासन, नीपजावइ सिंहासन।
एक देव प्रकाशित दिग्मण्डलु, नीपजावइ भामण्डलु।
एक देव विस्मापित जगत्त्रय, नीपजावइ छत्र त्रय।

एक देव पल्लव निकुरंब पूरितान्तरिक्षु, नीपजावइ किंकिल्लि वृक्षु।
इसं धजविंघ पताका समलंकृतु समवसरणु रचहि। पु० अ०

(१२) समवसरण में देवों की विविध भक्ति

ज्ञानि ऊपनइ, इंद्रादिक देव आवइ समवसरण तणी भक्ति साचवइ[१]।
एकि देव अतिस्फार, नीपजावइ प्राकार।
एक तेजः संभारभासुर सुर करइ सुवर्ण प्राकार।
एकि रत्न द्युति विघट्टितांधकार करइ रत्न प्रकार।
एक उदारस्फार नीपजावइं प्रतोलीद्वार।
एक लोचन समुल्लासन नीपजावइ।
सिंहासन प्रसारित दिग्मंडल, नीपजावइ भामंडल।
विस्मापित जगत्त्रय, नीपजावइं छत्रत्रय।
कोई संपादित भुवनोत्कर्ष, करइ कुसुम वर्ष।
के० भूमि स्थित धवल ढालइ चमर युगल।
के० दत्रेक्षण करइ प्रेक्ष (ण)।
के० विस्तारउ सर्व सार, वीणा झंकार।
केई अति स्फीत, गायइं परमेश्वर नउ गीत।

१३ जिनवाणी वर्णन (१)

बारइ परिषद पूरि, मिथ्यात्व मान मूरि, पाप कर्म चूरि।
सर्व सत्व साधारिणी, योजन नीहारिणी।
चतुर्द्धा धर्म्म प्रकाशिनी, च्यारि कषाय निर्नाशिनी।
भव्यजन कर्णामृत स्राविणी, कुमत विद्राविणी।
ससार समुद्र तारिणी, आश्चर्य्य कारिणी।
पर दर्शन क्षोभिणी, चतुत्रीस वचनातिशय शोभिनी।
सकल क्लेश विध्वंसिनी, उत्तम चतुर्विध सघ प्रशंसिनी।
अष्ट कर्म्म बल विदारिणी, दुर्गति पतज्जनतोद्धारिणी।
सभा जन ससय हारिणी, मोक्षोपाय विधायिनी, सर्व वंछित दायिनी।
इसी वाणीयइ करी, लोक ऊपरि हित आदरी।
चतु. प्रकार, सर्वसार, जगत्रनइ आधार।
धर्म्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक तणइ हीयइ वसइ। सू०।

---

१ भावटि २ रूप्पमय प्राकारु।

(१४) जिन वाणी वर्णक (२)

श्री जिनवाणी, सुणिज्यो भविक प्राणी ।
एछइ मुक्ति अहिनाणी, परभव नउ सवल जाणी ॥
आदरउ विवेक आणी, छोडउ अवर विकथा कहाणी ।
जउ वाछउ मुक्ति रूप पटराणी, घणुं स्युं कहु ताणी ।
जिसी सिद्धातइ वखाणी, अमिय समाणी ॥
वाणी बारह परषद पूरी, मिथ्यात्वमान सूरी ।
पइत्रीस वचनातिशय सनूरी, पापकर्म-पूरी ॥
सर्वसत्वर्धारिणी, योजनानुहारिणी ।
भव्यजन कर्णामृत स्राविणी, कुमति विद्राविणी ॥
ससार समुद्र तारिणी, महा आचार्य कारिणी ।
अष्टकर्म वल विदारिणी, दुर्गतिपतज्जनतोद्धारिणी ॥
सभा जन ससय हारिणी, मोक्षोपाय विधायिनी ।
चतुर्धा धर्म प्रकाशिनी, च्यार कषाय निर्नाशिनी ॥
मालव कौशिक राग शोभिनी, पर दर्शन क्षोभिनी ।
सकल कर्म ध्वंसिनी, कलिमल खयालिनी ॥
उन्मार्ग भेदनी, मिथ्यात्व छेदनी ।
इसी वाणीयइ करी लोक उपरि हित आदरी ।
चतुः प्रकार, सर्वसार, जगत्र नइ आधार ॥
धर्म मार्ग उपदिसइ, भविक लोक वणइ "धीर" हीये वसइ ।
एवं विध भगवद्वाणी- सर्व वानछि दायनी । स० कौ०

(१५) जिन वाणी—(३)

वीतराग तणी वाणी, भव वेलि कृपाणी ।
ससार सागर समुतारणी[1], महा मोहाधकार[2] दिनकरानु कारिणी ।
क्रोध दावानलोपशम्मिनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी ।
कलिमल प्रक्षालनी, मिथ्यात्व छेदिनी ।
त्रिभुवन पालिनी, पाप विशोधिनी, मन्मथ प्रतिपंथिनी ।

---

१. समार समुद्र तारणी । २ विध्वसनी ।

अमृत रसास्वादिनी, हृदयाल्हादिनी ।
आक्षेपकारिणी, विक्षेप विस्तारिणी ।
सर्वजनचित्त चमत्कारिणी[1] जगत्त्रयोपकारिणी ।
आगमोद्धारिणी, योजन विस्तारिणी । भग[2]वद्वाणी । रा० जो० ।
आगे अन्य प्रति से—

सर्व विघन हारिणी, ससारोच्छेद कारिणी ।
चतुर्विध सघ मनोहारिणी, चतुर्विध धर्म प्रकाशनी ।
चतुः कषाय विनासनी, भव्य जन कर्णामृत श्राविनी ।
सकल कुमति विद्राविणी, त्रैलोक्य आश्चर्य कारिणी ।
सर्व संसय निवारिणी, योजन भूमि विस्तारणी ।
विक्षेप विस्तारिणी, योजना विस्तारिणी ।

(१६) जिनवाणी वर्णन (४)

चतुर्धा धर्म प्रकाशिनी । च्यारि कषाय निर्नाशिनी ।
भव्य जन कर्णामृतस्त्राविणपाना हारिणी । ससार समुद्र तारिणी
आश्चर्य कारिणी । योजन हारिणी ।
अखलित, पात्रीस वचनातिशय परिकलित ॥ ८ ॥ जै०

(१७) धम उपदेश

निद्रान्ते परमेष्ठि सस्मृति रथो देवार्चन व्यावृतिः ।
साधुभ्यः प्रणतिः प्रमाद विरतिः सिद्धान्त तत्त्व श्रुतिः ।
सर्वस्योपकृतिः शुचि र्व्यवहृतिः, सत्पात्र दाने रतिः ।
श्रेयोः निर्मल धर्म कर्मणि रतिः, श्लाघ्या नराणा स्थितिः ॥
तुम्हें सदैव पुण्य कर्त्तव्य करिवुं, मनुष्य जन्म नउं फल लेवउ ।
निद्रा प्राति पच परमेष्ठि नमस्कार गुणिवउ, श्री सिद्धात सुणिवउ ।
श्री सर्वज्ञ देव पूजियउ नवनवे स्तवने स्तविवउ ।
श्रीसद्गुरु सेवविउ, कुसंग मेल्हिवउ,

---

१ सम्मोहकारणी । २ वीतरागवाणी ।

विकथा प्रमुख प्रमाद—टालिवउ । मनि धर्मोद्यम आणिवउ ।
सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावना प्रभावनादिक पुण्य कार्य करिवो ।
निद्रादिक[१] पाप करणीय परिहरवा ।
मन उन्मार्गि जातउ वालवुं ।
वैश्वानर नउं[२] कर्म वन वालिवउं ।
परोपकार करवउ पुण्य भंडार भरिवउ ।
शुद्धव्यवहार आराधिउ, मोक्ष, मार्ग साधविउ ।
न्याय उपार्जित वित्त क्षेत्र[४] नइ विषइ वेचिवउ ।
तीर्थयात्रा प्रमुख पुण्य लाभ लेवउ ।
जीवदया कीजइ, उचित दान दीजइ ।
'सकल लोक माहि प्रसिद्धि लीजइ, पूर्वोपार्जित पाप खीजइ ।
मनुष्य भव कृतार्थ नीपजावीयइ, श्रावकाचार साचवीइ ।
सर्व दुःख प्रमाजीय । ईण परि श्रीधर्म समाराधया जिय उत्तर मंगलीक माला पामउ तिम भी धर्म नइ विषइ सदैव सावधान हुया ।। इत्युपदेश।।

(१६३ जो०)

(१८) जिनोपदेश (२)

सत्संगत्या १ जिनपति नुत्या २ गुरु सेवया ३ सदा दयया ४
तपसा ५ दानेन ६ तथा तत्सफल सुकृतिभिः कोप ।।
तन्मानुष्य जन्म लब्ध्वा यो विपली कुरुते स एवं कुरुते ।।
भस्मकृते स दहति चारुचदन जे मनुष्य जन्मेद कामार्थे
नयते सततं धर्म परिमुक्ताः । २ । अतत्सफली कार्य मेवा यतः ।।
पुष्णाति गुण मुष्णाति दूषण सन्मते प्रबोधयते
शोधयते पाप रजः स्तसंगतिरंगिना सततं ।। १ ।। कीरद्वयवत्
माताप्येका पिताप्येको ममतस्यच पक्षिणः
अहं मुनिभि रानीतः सचानीतो गवाशने ।। २ ।।
नच. फलति कामा वामा कामा भय नयतते ।
न भवनिर्भव भीति जिनपति नति मति मतः पुंसः ।। २ ।।

---

१ निंद्रा २ तउ ४ क्षत्री

कुमारपालाशोकमालिवत् गुरु सेवा करण परो नरो नारागै
रभिद्रुतो भवति ।
ज्ञान सु दर्शन चरणै राद्रियते सद्गुण गणैश्च ॥ ३ ॥
केशि प्रदेशि वत् । नरय गइ प्रौढ स्फूर्ति निरुपम मूर्त्ति, शरदिंदु कुंद
सम कीर्ति ।
भवति सि सौख्य भागी सदा दयालकृतः पुरुषः ॥ ४ ॥ दामन्नक वत्
पूर्व भवे जालिकः जलमिव दहनः स्थलमिव
जलधिर्मृग इव मृगाधिप स्तस्य इह भवति
जे न सतत निज शक्त्या तप्यते सु तपः ॥ ५ ॥
सनत्कुमार दृढ प्रहारि वत् । तं परिहरति भवार्तिः
स्पृहयति सुगतिर्विमुंचते कुगतिः यः पात्रता
कुरुते निज कन्यायार्जित वित्तं ॥ ६ ॥
चतुस्सुत जनक जिनदत्तः श्रेष्टी च शालि भद्र
चदना श्रेयास धन सार्थवाह वत् ॥ ६ ॥ इत्युपदेशलेशः समाप्तः ॥ १६८ जो०

(१८) धर्म कृत्य

देव पूजनु, गुरुवदनु, तीर्थयात्रा गमनु,
शील परिपालनु, अध्ययनु
स्वाध्याय, ध्यानु, तपोविधानु
अनुष्ठान, दानु
सुधी भावना, जिन शासन प्रभावना

(पु० अ०)

प्रमुख धर्म कृत्यः—

(२०) धर्म कृत्य

यथा शक्ति दान दीजइ । शील पालीइ । तप तपीइ । भावना भवीइ ।
सम्यक्त्व पालीइ । मिथ्यात्व टालीइ । देव पूजीइ । गुरु सेवा कीजइ ।

सिद्धान्त सांभलीइ । तत्व अभ्यासीइ । विचार पूछीइ । वदनक दीजीइ । सामायक लीजीइ । अधीत शास्त्रा गुणीइ । धर्मना फल लुणीइ । पर स्त्री परिहरीइ । नियम सपोषध लीजइ । तीर्थ यात्रा कीजइ । जिन शासन नी प्रभावना कीजइ । अट्ठाही महोत्सव कीजइ । गुरु सन्मान दीजइ । एवं विध जिन धर्म भाव सहित कीजइ ॥ पु० ।

(२१) दान वर्णन

दानु, विश्व रंजनु ।
भवाम्भोधि निस्तरण शोकु,
यशः प्रकाश केतु
कीर्ति नर्त्तकी रंगभूमि, सकल सौख्य बीजाङ्कुर क्षेत्र रग भूमि ।
कल्लोल कमला वशीकरण, समग्र गुण गणामन्त्रण ।
करइ लोक गान, जिणइ लाभइ सन्मान ।
निः समान, वधारइ कीर्ति विमान ।
रुडउ भावइ संतान, पामीइ शुभ स्थान ।
भवांतर लहीइ घणु धान, प्रतापि करी दीपइ भान ।
आपणइ उदार पणइ वमावइ रान, लक्ष्मी नइ उछइ वान
जिह नइ मनि हुयइ सान, तिणि माहि मानि दान,
देइवउ दान ॥ ८८ ॥ जै०

जै

(२२) दाने पुण्य संख्या

यदि मेघस्य धारा संख्या भवति । दिवि तारा संख्या ।
भूतले रेणु कण संख्या । समुद्रे मत्स्य संख्या । मेरु गिरौ स्वर्ण संख्या ।
मातृ स्नेह संख्या । सर्वज्ञ गुण संख्या । दुर्जने दोष संख्या ।
आकाशे प्रदेश संख्या । जीवस्य गति संख्या ।
सत्पात्र दाने पुण्य संख्या भवति ॥ छ ॥ पु.

(२३) शील वर्णन

तीर्थं विण स्नान, दत्त[1] विण बहुमांन ।
चंदन विण विलेपन, अलंकार विण विभूषण ।
लोके लेई न सकीयइ एहवुं निधान ।
मुक्तिदान, सावधान, अमूल्मत्र वसीकरण, दुर्गति हरण ।
अमूर्त्तु शृगार, सयम श्री हार ।
भवाभोधि तारण, संकट निवारण ।
मोह महीपाल सिरि कील, करइ पुण्य कउ[2] उन्मील ।
नासइ मदन रूपीउ भील, उन्मूलइ अवेसास रूपी[3] उखील ।
न करवी एह नइ विषइ ढीलि । तिण पालिवउ निर्मल[4] शील ॥ सू० ॥

(२४) शील वर्णन (२)

शील, अति सुशील ।
विण स्नात्र पवित्री करणु, विण अलंकार आभरणु ।
जग त्रय वश्य करु, दुर्गति हरु ।
विश्वास तणु कारण, अकीर्त्ति निवारण ॥१४॥ जै०

(२५) परस्त्री गमन दोष—

परदार संग लगी घरबार चूकियइ ।
,, ,, धनधान्य चूकियइ[5] ।
,, ,, खाएवा पीएवा चूकियइ ।
,, ,, ओढेवा पहिरेवा चूकियइ ।
,, ,, स्वजन परजन चूकियइ ।
,, ,, देह वान[6] चूकियइ ।
,, ,, आचार व्यवहार चूकियइ ।
,, ,, सत्य शौच चूकियइ ।
,, ,, देवगुरु चूकियइ ।
,, ,, धर्ममार्ग चूकियइ ।

१ अदत्त बहुमान २ नउ ३ रूपीयउ ४ श्री शील । ५ मूकियइ ६ स्नेहवान ।

परदार संग लगी इहलोक परलोक चूकियइ
,, ,, एक नरक ढूकियइ[1] ॥ + पु. अ.

(२६) तप वर्णन

तपु, साक्षात् परम जपु ।
अष्ट कर्म क्षयंकरु, महा शोक हरु ।
मुक्ति श्री वशि करिवा परम मंत्रु, मदन गढ गाजिवा मगर वइ यन्त्रु ।
मुनि जन शृंगार, अरिष्ट तरु कुठार ।
इस्यउ तप ॥ १५ ॥ जै०

(२७) अथ तप

त्रिभुवन वशीकरणु मन्त्रु, कन्दर्प्प दर्प अशोच्चाटन परम यंत्रु ।
लोभार्णव शोषण वडवानल, मोक्ष श्री कमल ।
माया वल्ली कुठारु, दुरितोपताप तस्कर, धर्म महाराज नगरु,
मानाचल चूलिका वज्र घातु, केवलि श्री कान्तु,
जु वहइ तपु, ते (घ) लहइ संसारि संतापु ॥ ६० ॥ जै०

(२८) भावना

मुक्ति श्री प्रति सगलाइ भावे जाणे हाव भावना ।
स्यूं घणइ वादि, भावु हुइ तउ स्या जईय प्रासादि ।
भावु मूलगउ योगु, भावु लगी वइठा पुण्य नु समायोगु ।
ध्यान ध्येय धारणा, भावु लगी सगलाइ कारणा ।
एवं विध भाव ॥ १६ ॥ जै०

---

१ एक नि केवल नरक दुख देखइ + एक अन्य प्रति में—"खड्गत्वमिं द्रिव्य० मव स्वहरण वघ०"—पाठ अधिक मिलता है ।

भावना

जिम तुंग प्रासादु दण्ड कलश प्राग्भार, जिम स्त्री सोहइ कंठ कदलि हारि।
जिम मस्तक सोहइ केश प्राग्भारि, जिम कमल सोहइ वारि।
जिम कर्ण सोहइ स्वर्णालिकारि, जिम सोहइ गुहु नारि।
जिम नेत्र सोहइ कज्जल सारि,
जिम विवाहि सोहइ कूरि, जिम सोहइ उच्छव तूरि, जिम वीडउं कपूरि।
नदी जल पूरि,
रात्रि चद्र मण्डलि, जिम हारु मुक्ताफलि, जिम सरोवर सोहइ कमलि,
जिम मुख सोहइ तबोलि, जिम पृथ्वी सोहइ वेलाकूलि।
जिम सोहइ रसवती जिम सोहइ सरस्वती वचनि
तिम सोहइ धर्म भावना ॥ ६१ ॥ जै०

(३०) दया धर्म प्रधानता

धर्म माहि दया धर्म वीतरागि भाखिउ मुख्य[1] वाखाणिवउ।
जिम[2] पर्वत्र माहि मेरु, तुरंगम माहि पंच वल्लह किसोर।
हस्ति[3] माहि ऐरावणु, दैत्य माहि[4] रावणु।
वृक्ष मांहि[5] कल्प वृक्ष।
रत्न माहि[6] चिन्तामणि, अलंकार माहि चूडामणि।
क्षीर[7] माहि गोक्षीर, नीर मांहि गंगा नीर।
वस्त्र माहि[8] चीर, पटसूत्र माहि[9] हीर।
पुष्प माहि कमल,[10] वाद्य माहि शख यमल।
काष्ठ माहि चंदन, वन माहि नदन ॥ २४ । जो० +

---

१ ते २ जिसो ३ हाथी ४ जिम ५ जिम ६ जिम ७ खीर ८ जिम ९ जिम
१० रंग माहि धवल

+ एक अन्य प्रति में "वाजित्र माँहि भभा, स्त्री माँहि रंभा।
शास्त्र माहि गीता, सती माँहि जिम सीता"
यह पाठ और मिलना है।

(३१) जीवदया रहित धर्म (६)

जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती।
दधी[1] रहित ओदन[2], घृत रहित भोजन।
कंठ रहित प्रासाद, माधुर्य रहित साद।
खंड रहित मोदक, आधार रहित गंगोदक।
कंठ रहित गायनु, छंद[3] रहित वायनु।
शक्ति रहित पौरुष[4], ध्यान रहित गौरुष[5]।
मद रहित वारण[6], वेद रहित ब्राह्मण[7]।
परिवार रहित नायक, शास्त्र रहित पायक।
फल रहित वृक्ष·······।
वस्त्र रहित शृङ्गार, सुवर्ण रहित अलंकार।
तीम[8] जीवदया रहित धर्म न शोभइ॥ १२, स० १

(३२) जीवदया रहित धर्म (२)

जीव दया रहित धर्म न शोभइ,
जिम मद रहित[9] गजेंद्र, लज्जाहीन कुलवधू, नीति विकल[10] राजा।

---

१ दधि। २ ओदन। ३ नृत्य रहित गायनु। ४ पुरुष। ५ गुरुत्व। ६ हाथी, सेवा रहित साथी। ७ इसके बाद "गुण रहित सागर" विशेष ८ इसके बाद "तप रहित भिक्षुक" वि०
फिर—वेग रहित घोडे, केश रहित मोंडे।
प्रेम रहित सुगम।
दान रहित राजा, खड रहित खाजा।
तेज रहित सविता, वाणी रहित कविता। (विशेष)

८ जिम एतला वाना विना न शोभै, तिवा जाणदो। (सु०-२)

'पु०' प्रति के प्रारंभ में इतना पाठ अधिक ॥धर्म वर्णक॥ अहो धार्मिक लोकउ। फल्गु भाषित परित्यजी यदा मात्र। एक तात्विकी वृत्ति। मन सावधान करी कान मानहूँ तउ धर्म नुं स्वरूप सामलउ।

९ हीन १०. हीन+स्त्री पु० प्रति में इतना पाठ और अधिक मिलता है—
घृत रहित भोजन। लवण रहित रसवती। आकृति हीन सरस्वती। छंद रहित कवि। क्षमा रहित मुनि, जिम एतला पदार्थ मृत्युलोकइ न शोभइ॥
तिम जीव दया रहित धर्म न शोभइ ॥छ॥ पु०

बद्ध मुष्टि नायक, शस्त्र रहित पायक ।
अति निष्ठुर वाणिउ, खासणउ[1] चोर ।
आलसू कमारउ, दुर्विनीत चेलउ, ध्वजरहित देवकुल ।
जिम गाबडि छोटउं ऊंट, उसियालइ (अनइ) खुंट ।
वेग पाखइ[2] घोडइ, गृहस्थ माथइ बोडइ ।
एक स्त्री[3] अनइ बूटी, एक ध्वज अनइ अंतरालि त्रूटी । (स.१)

(३३) धर्म महात्म्य

परम मंगलं धर्मो धर्मो बुद्धि[4] समृद्धि दः
इष्टार्थ साधको[5] धर्मो धर्मो मोक्ष दायकः ॥
भो भविक लोको, निर्मल विवेको, श्री सर्वज्ञ प्रणीत पुण्य कर्त्तव्य करवउं ।
आपणा मनुष्य तणउ फल लेवउ ।
ए धर्म परम उत्कृष्ट मंगलीक कहियइ, एह प्रसादिइ सर्व कल्याण लहियइं ।
जिम तेज सगलाई सूर्य तेज माहि समाइं ।
जिम नदी सवली समुद्र मांहि माइ ।
जिम पग सघलाइ गजेंद्र पगि अंतर्भवइ ।
जिम आकाशि माहि सर्व पदार्थ आवइं ।

तिम दधि, दुर्वा, ऽक्षत, चदन, कुसुम कंकुम, पूज्यवृद्धाशीर्वाद द्वादश तूर्य निनाद । विवाहादि हर्षणाकल अनेराइ पुत्र जन्मादि महोत्सव सानुकूल ग्रह वैरि निग्रह, भला स्वप्न, शुभ शकुन, प्रमुख प्रमुख सकल मंगलीक माहि अंतर्भवइं देखउ ।

ज्ञानत्रय सहित श्री तीर्थंकर तणाइ गर्भावतारि माता अद्भुत १४ स्वप्ना लहइ । चलितासन देवेन्द्र तेऊ फल कहइं ।

देवता गृहांगणि निधान संचारइ, रत्न मणि, मौक्तिक, प्रवाल, पद्मराग, दक्षणावर्त्त सखे करी भंडार भरइं । कण कोठार वृद्धिवत हुइ । गज तुरंगम रथ पदाति समधिक थाइ, अनेक देश संविशेष आपणइ वसि सपजइ, राज्य संपदा वृद्धिवती नीपजइ । अनेक राय राणा आज्ञा[6] मानइ । जन्म समइ छप्पन्न दिकुमारिका सूति कर्म करइ, आपणी[7] रली चउसठी देवेन्द्र जन्माभिषेक करइ ।

---

१. खापणउ, खोसणउ २. रहित ३ स्त्रीकानि ४. वृद्धि ५. ऽनिष्ठ बाधका ।
६ आणा ७. आणी

मेरु पर्वति मिली सुवर्ण, रूप्य, वस्त्र नी वृष्टि निरन्तर करइं, ज जं जोइइं तं तं आणी । नृपागण भरइं बालपणि देवागना लालइं । देव सवे टोहिला टालइ, अंगुष्ठि अमृत सचारइ, देव पच धात्री वधारइं, यौवनि जं जोइय तं नपाडइ, सहू काज कीधउ, जि दिखाडइं, दीक्षा लेता मह्य महोत्सव करइ ।

परमेश्वर तणी स्तुति समाचरइ, केवलि नानि ऊपनइं
समवसरण रत्न, सुवर्ण, रूप्य मय प्रकार रचइं ।
अढई गाऊ तीह नोवडा[1] वध खचइं ।
जानु प्रमाण पुष्प प्रकर भरइ, त्रिन्नि छत्र परमेश्वर नइ मस्तकि धरइ ।
व्यंतर च्यारि रूप्यं करइं, अंगुष्ठि अमृत सचारिइं ।
रत्नमय दड चामर ढालइं, हर्ष लगइ आप न सभालइ ।
नव सुवर्ण कमल पाय हेठि सचारइ, अष्ट मगलीक नवा अवतारइं ।
इन्द्र ध्वजादि ध्वज लहलहइ, धूप[2] घटी परिमल महमहइं ।
हर्ष प्रकर्ष लगइ देव गाजइं, असख्ये भव तणा सदेह भाजइं ।
रंभा तिलोत्तमा अप्सरा नाचइ, सविहु न मन पतीजइ माचइ ।
चउत्रीश अतिशय, अष्ट महा प्रातिहार्य सहित
अढार दोष रहित, ३५ वाणी ना गुण सहित, इम तीर्थंकर देव
धर्म लगइ सदीव मगलीक महोत्सव अनुभवइं ।
अनइ दश विध भवन पति निकाय, सोल व्यतर तणा निकाय,
पंच ज्योतिषी निकाय, बार देवलोक देव,
पच अनुत्तर विमानं देव ज सपूर्ण सुख अनुभवइ ।
तेउ धर्म हीज नउ निःकेवल माहत्म्य जाणिवउं । (१६३ जो.)

(३४) वीतराग धर्माराधन

देव श्री वीतराग देव प्रणीत धर्म्म तेउ एकाग्र मने आराधीइ
एहु जिन धर्म दश लक्षणोपेतु, भवारण्य वनइ पइलइ परि जाइवा सेतु ।
सर्व सौख्य दायकु, समस्त जीव लोक नउ नायकु ।
निर्मलु, पाप प्रति सबलु ।
विश्व वात्सल्य करु, दारिद्र हरु । त्रैलोक्य छुइ आदरु

---

१. नउवड़ा २. घटी ।

चिन्तामणि कल्पवृक्ष कामधेनु तेहनु केवल उद्यापारा जेहना ।
आदेश कराया चन्द्रमा सूर्य जलधरु, स्वर्ग्य विवर्ण्य करु ।
इसउ धर्म्म आराधिइउ ॥ ३१ ॥ जै०

(३५) जिन धर्म

जिम देव मध्य इन्दु, तारा मध्य चन्दु ।
स्नग्ध मध्य घृतु, औषध मध्य अमृतु ।
बुद्धिमत मध्य वृहस्पति, निरीह मध्य यति ।
तिम धर्म मध्य जिन धर्मु ।

(३६) धर्म महात्म्य

जे गया विदेश, पडिया सबलइ क्लेश,
तारया पाणी नइ पूरि आक्रम्पा अक्रूर,
चाप्या सधरि, डसिया विसधर,
धरिया राये, लेल्या घण घाए
मुरडिया भोगे, दूहविया रोगे,
पाडिया बंदी, पडिया विछदी,
तिहा सविनइ धर्मनौ आधार, एह साचो विचार,
'धीर' वदई वारम्वार, वीनऊ कारिमउ व्यवहार ॥ (कु०)

(३७) धर्माधार

जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि ।
तारया पाणी नइ पूरि, आक्रमण क्रूरि ।
चाप्यास धरि, डसीया विषधरि ।
धरीया राए, लेल्या घण घाए ।
मुरडीया, मोगे, दूहवीया रोगे ।
पाटिया बंटि, पडिया विछुटि ।
तिहां सविहु नइ धर्म्म नउ आधार । ए साचउ विचार, वीनउ कारिमउ व्यवहार ।

(३८) धर्म

ससाराभोधि तरण हेतु, यशः प्रसाद केतु ।
विचक्षण कीर्ति नर्त्तकी रंगभूमि प्रदेश । सकल सौख्य बीजांकुरोद्गम क्षेत्र निवेस
सलधि लोल कल्लोल चपल लक्ष्मी तणु वशीकरण । समग्र गुण गणामनण

(३६) युगलिया सुख वर्णन

हिव युगलिया नां सुख साभलउ
अति रुडी नित्योद्योति रत्नमय भूमि, तिहां दश विध कल्पद्रुम मनोवांछित पूरइं,
एकि कल्पद्रुम अष्ट भूमिका रत्न निर्मित आवास तणऊ आकार धरइं,
तेहि माहि नित्योद्योत पल्यंक रत्नमय सिंहासन सहित
एकि चंद्र सूर्य नी प्रभा आपणी काति करी पराभवइं।
एकि स्त्री पुरुष योग्य दिव्योपभोग्य आभरण विस्तारइं,
एक चक्रवर्तीनी रसोइ पाहिइ अनत गुण सुस्वाद।
अष्टोतर सउ खाद्य, चोसठि व्यजन रूप आहार आपइं।
एकि स्थाल विशाल वाटुला वाटुली सीप कच्चोल भृंगारादिक,
भाजन सवे समोपइं।
एकि क्षोम, पट्टकुल, चीनाशुक, क्षीरोदक,
प्रमुख पच वर्ण विचित्र भाँति स्वच्छ[1] निर्मल वस्त्र पूरइं।
एकि बल बुद्धि आयु,
वृद्धिकारक शीतल सरस आप्यायक पाणी आपता तृषा चूरइं।
एकि वीणा, वेणु मृदग, यमल, शख,
पटह कंसाल[2] प्रमुख अगुण पचास वादित्र स्वर साभलावइं मधुर।
एकि तिलक, बकुल, अशोक,
चम्पक, कुद, मचकुदादि, पुण्य प्रकर संपाडइ प्रचुर।
एकि १ दीवानी परि उद्योत करइ, रात्रि ना अधकार निराकरइ।
तेह युगलीया ना च्यारि भेद छप्पन अतर दीवा,

१ हेमवत, ऐरण्यवत[3] २ हरिवास रम्यक तणां ३ देवकुरु उत्तर कुरु ४ एकेकि पाहिइ अनुक्रमिइं, अनंत गुण बल, रूव, सुख ते आठ सय धनुष १ एक गाऊ १ बि गाऊ ३ तिन्नि गाऊ ४ ऊँचा। एक १ एक रत्नि ३ त्रिन्नि ४ दिन अंतरि भोजन इगुणासी इगुणासी[2] चउसठि ३ अगुण पंचास ४ दिन अंत्य कालि अपत्य लालना। चउसटि १ चउसटि २ अट्ठावीसं सउ बि सय छप्पन ४ पृष्ठ करंडा। त्रीजा १ बीजा २ त्रीजा ३ पहिला ४ आरानी सुखिया। पल्योपम आठमउ भाग १ एक पल्य २ बि पल्य ३ त्रिन्नि पल्य ४ आयुः।

ते सवे जुगलीया दिव्य रूप, चउसठि लक्षण लक्षित देह स्वरूप, सम

---

१ स्वरद। २. कंसाला
पाठा—३ तयः अन्नादिदं

चतुरस्र संस्थान, वज्र, ऋषभ, नाराच, ४ प्रधान परम सौभाग्य सहित वलिपलित विवर्जित, अशिक्षित सर्व कला तणा जाण । केवलउ पुण्य नउं प्रमाण । जन्म माहि रोग, शोक, दुःख, जरा, मरण छींक, बगाई, ऊपमरण, अल्प कषाई, ऊपजइ देव माहि । तेह माहि कुण हूँ न स्वामी, न दास, न मूक, न ऊमसूक, न बधिर, न विधुर, न कूबड़ा, न वामणा, न हुँठा, न छोटा, न पागुला, न आधुला, तिहा डास मुमा माकुण जू प्रमुख न उपजइं । साकर पाहिइं घूलि ना सुस्वाद अनत गुणा पूजाइ । ए इस्या सुख सत्पात्र दानिइं युगलिया लहइ । कुपात्र दान लगिइ पट्ट हस्ती, पट्ट तुरगम थाइ । अधिकी सद्गति न जायइ [3] । अनइं अभय कुमार जिम च्यारि बुद्धि धर्म प्रभावइं लाभइ, अनइ धर्म नइं प्रसादिइं लक्ष्मी वृद्धि, कुटुंब वृद्धि, स्वजन परिजन वृद्धि, गज तुरंगम, वृषभ, रथ घण, ढोर, वृद्धि हुई । देखउ तुम्हे अशोक माली नव पुष्पनी पूजा लगइ नव भवे क्रमिइं नव द्राम लक्ष, नव द्राम कोड़ि, नव स्वर्ण लक्ष, नव स्वर्ण कोड़ि, ४ नवरत्न, लाख ५ नव रत्न कोड़ि ६ नव ग्राम लाख ७, नव ग्राम कोडि ८ तणउ स्वामी हूयउ । श्री पार्श्व कन्हइ दीक्षा लेई, अनुत्तर विमानि गउ, तेउ मोक्षि पुण जाइ सिइ । इम धर्म नइ प्रसादि धर्म-वृद्धि संप इ । अनइ धर्मे समृद्धि ऊपजइ, अत्रुट अक्षय लक्ष्मी चिंतामणि, दक्षिणावर्त्त शंख, सौवर्ण्ण पुरिसा नी सिद्धि, अभीष्ट मंत्र सिद्धि, अचिंतित देवता वर, अद्भुत निधान, लाभ, राज सन्मान, उचित दान, एहसि अनेक समृद्धि होइ, अनइ न ज वाछिइ इष्टार्थदुस्साध, सर्व कार्य रूप सौभाग्य अद्भुत भोग महा सुख, ते ते सहू धर्म महात्म्य लगइ, नीपनउ दीज दीसइ, अनइ विघ्न क्षुद्र उपद्रव, रोग, हानि दारिद्रय दुःख, शोक, चिन्ता अरति प्रभृति अनिष्ट कोई धर्म लगइ न सम्भवइं । घणुं किस्यु कहीयइ एह धर्म लगइं, अनंत सौख्य, मोक्ष पुण्य लहियइ । एह भणी तुम्हें पूजा प्रभावना दान शील, तप, भावना, अमारि प्रवर्त्तना, तीर्थयात्रा, सामायिक, पौषध, संवेग, वैराग्य, परोपकार प्रमुख पुण्य कार्य नइ विषइ तिम उद्यम करवउ जिम उत्तरोत्तर सकल मंगलीक माला पामउ । यतः—पुंसा शिरोमणियंते धर्मार्जन परा नराः ॥ इत्युपदेश छः ॥ (१६५०) जो ।

(४०) पुण्य माहात्म्य ।

पुण्य लगइ पृथ्वी पीठि प्रसिद्ध पुण्य लगे मन वछित सिद्धि ।
पुण्य लगे निर्मल बुद्धि, पुण्य लगे घरि २ वृद्धि [1] ।

---

१ ऋद्धि वृद्धि पुण्य-सुपरिवार तणा योग (अधिक पाठ)

पुण्य लगे नवे निद्धि, पुण्य लगे घरि थिर रिद्धि।
पुण्य लगे शरीर निरोग, पुण्य लगे अभंगुर भोग।
पुण्य लगे नव नव[१] रंग, पुण्य लगे चढीयइ[२] तुरंग।
पुण्य लगे सुकलत्र संयोग, पुण्य लगे टलइ सहु सोग।
पुण्य लगे सिगला थोक, पुण्य लगे वसि सहु लोक।
पुण्य लगे घरि गज घटा, पुण्य लगे सउदा सटा।
पुण्य लगे उलटा पटा, पुण्य लगे रहइ विकटा।
पुण्य लगे लहइ चउहटा, पुण्य लगे[३] चदन छटा।
पुण्य लगे सूर सुभटा, पुण्य लगे सेवक थटा।
पुण्य लगे निरुपम रूप, पुण्य लगे मानइ भूप।
पुण्य लगे अलख सरूप, पुण्य लगे पुत्र अनूप।
पुण्य लगे सुभ[४] आवास, पुण्य लगे पूजइ[५] आस।
पुण्य लगे रहइ उलास, पुण्य लगे तेज प्रकास।
पुण्य लगे नेक[६] शृंगार, पुण्य लगे मानइ कार।
पुण्य लगे शुद्ध[७] आहार, पुण्य लगे रहइ आचार।
पुण्य लगे जस सोभाग, पुण्य लगे द्रव्य अथाग।
पुण्य लगे वाधइ भीर, पुण्य लगे वाधव सीर।
पुण्य लगे चतुर सुजाण, पुण्य लगे अविरल वाण।
पुण्य लगे तान नइ मान, पुण्य लगे फोफल पान।
पुण्य लगे मुंहडइ वान, पुण्य लगे अमृत पान।
पुण्य लगे 'धीर[८]' सुभ ध्यान, पुण्यइ पामीयइ केवल ज्ञान।

इति पुण्य फल। (कु०)

(४१) पुण्य प्रभाव (२)

सर्वोपार्जित पुण्य प्रभावि, जे सौख्य-लहइ ते सम्भावि।
जिस्यउ निर्मल शंशाकु, तेहं पाहिइं कुल निक्लंकु।
तिहा जन्म लहइ, नीरोग थ्यउ रहइ।

---

१ नवा २ पल्हाणीयइ ३. चालता दीजइ। ४ वसिवा प्रधान ५ पुण्यइ पूजइ मन चीतवी। ६ अनेक ७. भला। ८ सर्वत्र वहुमान।

+ दूसरी प्रति में पाठ बहुत कम है उसी का यह विस्तार किया गया है। निम्नोक्त पाठ उसमे अधिक है।

"पुण्यइ आनददायिनी मूर्त्ति, पुण्यइ अद्भुत स्फूर्ति।

अंगो पाग करी प्रौढ, हुई यौवनाविरूढ ।
सर्व शास्त्र करी परिकलितु, विज्ञान न इ विषय अश्वलितु ।
सर्व लक्षणो पेतु, कुल हूइं केतु ।
विविध भोग तणी प्राप्ति, अनि भोगविवानी जाणइ युक्ति ।
शालिभद्र नी परि, विविध स्त्री घरि ।
आलन सूभव्या गजेन्द्र मद झिरइ, तुरगम हेखारव करइ ।
विबुध जन बइठा शास्त्र वाचइ, आगलि त्रिवेली पात्र नाचइं ।
ती—ता गुण करी प्रबल, नागवल्ली दल ।
ते अश्रान्त बीडा समाणीइं, ऊग्या आथम्या अतरु न जाणीइ ।
स्वजन तिडइव्या, रहइ निष्पृहा । सप्त भूमिक धवल गृह,
ऊपरी स्वर्णमय कलश झलहलइ, बारि बंदिजन कलकलइ ,
देवदूष्य व पहिरीइं । चंदन काष्ट विहरीइ ।
दुर्जन ना नामइ पक्ष, नीपजई चतुर्मुख गवाक्ष,
सारि पासे रमीइं । इम दिन नीगमीइ,
सूआ मालही हस मयूर लही तिहनइ विनोद लागीइ । जइ माग्यउ लाभइ, तउ वीतराग कन्हलि इ र सौख्य मागीइ ॥ ३० ॥ जै०

(४२) पुण्य प्रकार (३)

नाणु, भाणु, खाणु, पीणु, कयाणु, वसाणु, दोझाणु, वीयाणु, इत्यादिक पुन्यना प्रकार छे । वि०

(४३) पूर्वभव के पुण्य से प्राप्ति

बेटा, बेटी, वइयर, बल, बुद्धि, सोना, रुपा, मणी, माणिक, मोती, मुंगीया, मान, मही, मयगल, मोटाई, मर्यादा, हर्ष, कुटब, परिवार, स्वजन, सम्बन्वी, संपदा, मोहणवेल, चित्रावेल, कामकुभ, कल्पवृक्ष, कामधेनु, दक्षिणावर्त शंख, पारसपाषाण, एतला वाना पूर्वला भवनि पुन्याई होई तिवारे पामीइं ॥

(४४) पुण्य विना नहीं मिले

माता, पिता आइ, काका, बाबा, मामा, मामी, भाई, भत्रीजा, भोजाई, भाडरु, मित्र, कलत्र, पुत्र, पुत्री, पौत्र, प्रपौत्र, भाणेज, पीत्राई, पडपीतराई, सगा सणीजा, सम्बन्धि, कुटब, परिवार, नफर, चाकर ।

कांम कुम्भ, कामधेनु, कल्पद्रुम, चिंतामणी, चित्रावेल, मोहणवेलि, रसतुवती, तेजमतूरि, स्पर्शोपल, सुवर्णफरसो, रत्न कंबल स्यालश्रंगी, अणसरोहिणी, पद्मिनी स्त्री, भद्र जातिनाहस्त्री, ए योगवाई पुन्य विना न पामें । वि०

(४५) विना पुण्य नहीं मिले—(२)

सुठाम, सुगाम । सुदान, सुमान । सुजात, सुभ्रात । सुतात, सुमात, । सुकुल, सुबल । सुस्त्री, सुपुत्र । सुपात्र, सुखेत्र । सुरुप, सुविद्या । सुदेव, सुधर्म, सुगुरु । सुदेश । सुवेश । ए योगवाई पुन्य विना न पामीइं ॥

(४६) अथ पाप फल ॥

पाप लगइ मध्यम जाति, पाप लगे भमइ दिन राति ।
पापथी पामियइ प्रियवियोग, पापथी पामिये रोग ॥
पापथी पामियइ सोग, पापथी पामिये कुनारि नउ संयोग ।
पापथी पामिये क्षय, पापथी पामिये भय ॥
पापथी पामिरइ परवस, पापथी पामियइ अजस ॥
पापथी पामिये धनहाणि पापथी पामिये दुख खाणि ॥
मुनि वीर मुखिनी वाणी, ए पापना फल जाणि
इति पापवर्णक ॥ कु.

(४७) धर्म में प्रमाद

जे कोई जिन धर्म तणो प्रमाद करें
ते जाणे ठीकरी कारण अमृत कुम्भ फोड़े[1] ॥
निष्कारण आजन्म तणो स्नेह त्रोडें ।
कामधेनु अलीठी मेल्हीइ
चिंतामणी रत्न आवतो पाय फेडइं ॥
कल्पद्रुम आ णा घरथी उन्मूलें ।

"ईआ, आई, बहिन, माई भूआ, फूफा, फूफी, देवर, जेठ, स्त्री, पुत्र, नानो, मोटो, गरवो, बूढो, खावो, पिवो, पहनु, बइसवुं, जावु, आँवु ख्याल विनोद ए पुण्याइयें पामवा पाठ अधिक मिलता है ।

[1] ठीकरी कारणि कोई कामकुंभ फोटइ

प्रवहण आपणा समुद्र माहि घोले ॥
सोनातणे कारणे पीतल ल्यावें ।
अमृत नीनाइगा विस घोले ॥
इत्यादिक जिन धर्म जाणवो ॥ पू०

(४८) प्रमाद (२)

अजइ व्याघ्रि सासाईउ दीजइ, सर्पि सउं क्रीडा कीजइ ।
अनइ हालाहलु पीजइ, महाविष तणउ कवलु लीजइ ।
अग्नि मध्य पवसियइ, शत्रु सउं वसियइ ।
पुण प्रमादु न कीजइ ॥

(४६) जिन धर्म छोड़ मिथ्यात्व ग्रहण स्थिति

यो जिन धर्म मुत्त्वा मिथ्यात्व प्रतिपद्यते, स स्वर्णस्थालेन रजः पुज मुद्धरति ।
" " " कल्पतरुणा छाया लाभ वाछति ।
" " " चदन वन ज्वालनेन भस्म लाभं ।
" " " अगरु काष्ठेन लागूलं ।
" " " सुवर्ण पिंडेन कुशीं सभो ।
" " " चिन्तामणिना काको ड्डायन विधत्ते।
" " अमृत धारया पाद शौचं चिंतयति।
" " " मत्त करीन्द्रेण काष्ट भारः ।
" " " कस्तूरीका वीणा[1] केन सिंखी ।
" " " कदली स्तमेन गृह भार मुद्धर्तु मिच्छति ।
" " " कमल तंतुभिः मत्त वारण बध्नाति॥
(१६ जो०)

(५०) असाध्य शुद्ध धर्म

शुद्ध सर्वज्ञोक्त धर्म करी न सकीयइ ।
जिम मेरु पर्वत्त तुलाग्रि धरी न सकीयइ[2] ।
जिम समुद्र भुजा दडि तरी[3] न सकीयइ ।
जिम लोह मय[4] चिणा चर्वण करी न सकी यइ ।

---

१. त्रीणा कन मपी–त्रीणाकेन मर्पो । २ सकीइ । ३ तरिउ । ४ चाणी ।

जिम खड्ग धारा ऊपरि फिरी[1] न सकीयइं ।
जिम वैश्वानर मध्य[2] प्रवेश[3] करी न सकीयइ ।
जिम राधावेध[4] साधी न सकीयइ ।
जिम पाणी पोटलइ बांधी न सकीयइ ।
जिम वायनउ कोथलउ भरी न सकीयइं । ४३ जो०

(५१) नवकार महिमा (१)

त्रिभुवन माहे सार, धर्मकल्पद्रुम प्रकार ।
समरण मात्र, करे भवापहार । प्रकृति ही उदार ।
लक्ष्मी निवास, निजि श्रीया वास'
रूडां धर्मफल देखि, प्रमाद उवेखि ।
आलस परिहरी, आदर करी ॥ (पू०)

(५१ अ०) नवकार महिमा (२)

पुण्य तणै विधि भावना सहित लाभ लेवो, जिण कारण भणी इस्यूं कहीइं—
जिम प्रसाद सोहैं कलस सहित, जिम सरीर सोभे शील श्रृंगार ।
जिम सरोवर सोभे कमल, जिम पुष्प सोभे परिमल ।
जिम मुख सोभे निर्मल नेत्र जुगल, जिम रात्र सोभे चद्र मंडल ।
जिम विवाद सोभे क्रूर, जिम उछव सोभे तूर, जिम नदी सोभे पूर ।
जिम हृदय सोभे हारि, जिम गृह सोभे श्रम नारि ।
जिम मस्तक सोहैं केस प्रागभारी, जिम कर्णं सोहैं स्वर्णालिकारी ।
जिम समकित सोभे भावना,
तिम मुख सोभे नवकार । एहवो पचपरमेष्ठि नवकार''

(विनयसागर प्रति)

(५२) संघ

सघु, वंदनीयः वन्दनीयु, पूजनीय हइ पूजनीयु
महनीय हइ महनीयु, स्पृहणीहइ स्पृहणीय

---

१. नाती । २ माहि । ३ पइसी । ४ वेधु वींधी ।
÷एक अन्यप्रति में—"जिमए गगउ बन पाली न सकियइ' पाठ अधिक मिलता है ।

अभिषणीय हइ अभिषणीय, अनुगमनीयहइ अनुगमनीय ।
मान्य हइ माननीय, गरुयाहइ गरुयउ ।

(पु० अ०)

(५३) तपोधन

अनुवरतु ग्रामानु ग्रामि विहार क्रम करहि, अढार सहस सीलाग धरइहिं ।
अनुवरतु परमेश्वर तणी आज्ञा अनुसरहिं, अनुवरतु गुरूपदेसु स्मरहिं ।
अनुवरतु पुण्य भडार भरहि, अनुवरतु मोक्ष लक्ष्मी स्मरहि ।
अनुवरतु तपु तपहिं, अनुवरतु कर्म क्षपहि,
खड्गधारा चंक्रमण कल्पु, निर्विकल्पु ।
व्रतु परिपालहि, इमा महासत जंगम तीर्थ तपोघन भणियहिं ॥ (पु. अ.)

(५४) तपोधन वर्णन

पॉच भरत पॉच ऐरावत पॉच महाविदेह, सत्तरि सउ आर्य क्षेत्र ॥
पइतालीस लाख मनुष्य क्षेत्र माँहि जे साधु ॥
साधु रत्नत्रय साधइ, जिनाज्ञा आराधइ ॥
च्यारकषाय परिहरइ, नवकल्पी विहार करइ ॥
अढार सहस सीलाग धरइ, दस विधि यती धर्म आचरइ ॥
बाईस पसह ऊपनइ न डरइ, चवदह उपगरण धरइ ॥
पचमहाव्रत पालइ, छाठउ रात्री भोजनचार[1] ऊचालइ ॥
तेत्रीस आसातना टालइ, आठे मद गालइं ॥ वर्त्तमान कालइं,
इग्यार अंग सूत्र प्रकासइ जिणइ करी मिथ्यात्व पडल नासइ ।
तेरह क्रिया ठाण वरूपइं, सत्रे विध सजम धुराअइ जूपइ ।
सत्तावीस गुणे सयुक्त माया मिथ्यात्व नीयाणादि साल विप्रमुक्त ॥
बइतालीस दूषण रहित आहार ल्याइ पाच दोप मांडलना लागवा न द्यइ ।
पंच सुमतइ सुमता, त्रिहुं गुपतइ गुपता ।
संयम रमणी सुंरमता, दुक्कर पंचेंद्री दमता ।

१—टारइ ।

क्रिया कलाप सावधान, सदा धर्म ध्यान ।
महा एक तपोधना, करंत देह सोधना ।
एहवा मुनीसर, अपीहर जीवना पीहर
अनाथ जीवना नाथ, मेलइ मुक्ति नउ साथ ।
सकल जीव अभय दायक, सर्व ओपमा लायक ।।
जाणी ससार असार, ओपण पइथ...।।
नव.. थापक, उन्मार्ग ऊथापक ।
साधु भगती दया पालइ, अतीचार सर्वथा टालइ ।।
मेरुनी परइ अप्रकंप, आकासनी परे निरालव ।।
वायनी परइ अप्रतिबंधु भारंड पखीनी परइ अप्रमत्त ।।
सूरो इव तेज लेस्या, चंद्रो इव सोम लेस्या ।।
सागर नी परे गभीर, कुंजरनी परे सोंडीर ।
खीरो इव अखधारे, जलोइव सच्च फासे, सखो इव निरंगणे ।
ससार समुद्र तारण तर गुण करड ।
सचरित्र, गंगाजलनीर नी परे पवित्र ।।
सर्व दोष रहित, चिंतवइ सकल जीव हित ।।
चारित्र करी पवित्र गात्र, ससारोदधि यान पात्र ।।
दुःकर्मवल्ली वन छेदन दात्र, सुकृत तणू एक पात्र ।
जेहनइ दर्शन हुइ पाप अल्प मात्र, तपइ करि सोखित गात्र ।
वली ते तपोधन केहवा आगम माहे गुणधरे गुथ्या जेहवा† ।

(५५) मोक्षार्थी (१)

वाल लगी सिर मुंड मुडन कीजइ, खारा तोरा पाणी पीजइ ।
अंत प्रान्त आहार लीजइ, सीत वात आतप सहियइ ।
एकत्र सदैव न रहियइ, यथावस्थित धर्म कहियइ ।
एतदर्थ स्य (स्व) कर्म उठहियिइ ।
शुक्ल ध्यान धरिउ अनंतर मरिउ, मुक्ति पय सरिउ ।
ईणइं परि सिद्ध होइयइ, सकल त्रैलोक्य टगमग जोईयइ ।।१।।

---

† इसके बाद चित्तवाला गच्छीय देवेन्द्रसूरि के सुदर्सण कथा की तपोधन के वर्णन वाली गाथाएं हैं ।

(५६) मुनि वर्णन (२)

संसार समुद्र तारण तरण्ड, गुण करण्ड ।
सच्चरित्र, गगाजल नी परि पवित्र ।
सर्व दोष रहित, समस्त जीव हित ।
शान्त, दान्त ।
विचित्र चारित्र करि पवित्र गात्र, ससारोदधि यान पात्र ।
दुःकर्म वल्ली वन छेदन दात्र, सुकृत तणुं एक पात्र ।
जुहनइ दर्शनि हुइ पाप अल्प मात्र, तपस शोषित गात्र ॥६॥ जै०

(५७) गुरु वर्णन

पाँच इन्द्रिय ना व्यापार सवरणु, नव विधिश्रा ब्रह्मचर्य आभरणुं ।
चउहि कषाये विनिमुक्त । पाच महाव्रत सयुक्त ।
पाच समिति समितु, त्रिहुंगुप्ति गुपितु ।
शान्तु, दान्तु ।
सर्व सिद्धान्त तणु जाणनहार, धर्मोपदेश नु देणहार ।
तरण तारण मूर्ति, पुण्य नइ विपइ स्फूर्ति ।
अभव्य जीव प्रतिबोधकरु, शुद्ध चारित्र धरु ।
श्री जिन शासन शृंगार हारु । अतिहि सुविचारु ।
अति सुरूप, क्षमा रूपु ।
सम तृण मणि लोष्ट काचनु, पाप निकदनु ।
इसउ सद्गुरु ॥ २५ ॥ जै.

(५८) गुरु (२)

गुरु क्रियानुष्ठान परु, जिन वचन धुरंधरु ।
सरस्वती लब्ध प्रसाद वर ज्ञान दर्शन चारित्र प्रतिपालन तत्परु ।
सकल गुण मणि भंडारु विज्ञान सार तरागम विचार ।
श्री गच्छ श्री सघ आधार, स्फुरद्रूप साहित्य तर्कालकार ।
सुविज्ञात व्याख्यात, जीवाजीवादि तत्त्व विचार ।
विद्वज्जन सभा शृंगारहार, अमद सौर्द (१ सौहार्द) सह दयालंकार ।

अक्रोध, अविरोध, विबुद्ध, विशुद्ध ।
आदेयोदार स्फार तर वचन, दत्तात्यत साशीति निर्वचन। एव. गुरु ॥४। जो.

(५९) तपोधना महासती साध्वी

पुण्यवति तपोधना, करइ देहनी साधना ।
सदैव भणिवा गुणिवा नउ आक्षेपु, नथी लागतउ विलेपु ।
श्राविका हुइं भणावइ, धर्म्म भाव भावइं ।
अत्युत्तम नारि, महासती चंदनबाला नइ अवतारि ।
गच्छ चिन्ता चतुरि, विज्ञान विद्या विदुरि ।
जीह कन्हलि प्रति बोधनी शक्ति एवडी, रह्यु हुंतउ मान गजेन्द्र चडी ।
वचन छलि प्रतिबोधउ बाहुबलि ।
श्री युगादि देव नइ समवशरणि आणउ,
केवल श्री अलकरतउ देखी जगदीसि वखाणउ ।
ते ब्राह्मी सुन्दरि, जेह आचार करी ऊधर्गी ।
एव विध महासती ॥ २८ ॥ जै.

(६०) साधु (१)

उत्तम नगर, गुरु क्रियानुष्ठान पर,
जिन वचन धुरंधर, सरस्वति लब्ध प्रसाद वर,
त्रिण तत्व पालन तत्पर ।
सकल गुण भंडार, विज्ञ आगम विचार,
सकल सत्र आधार, शास्त्र ना अलकार ।
जीवादि तत्व विचार, विद्वज्जन सभा शृंगार हार,
त्रिण गुप्ती कारक, पंच सुमति पतिपालक ।
बैतालीस सदोष टालक, अढार सहस्र श्री सीलाग रथ धारक ।
तेर काठीया जीपक, अष्ट कर्म छीपक ।
त्रिगुण गुनि प्रवर्तक ॥ (पू०)

(६१) श्रावक (१)

द्वादस व्रत धारक, शुभ ध्यान मन वालक ।
श्री जिन पाद आराधक, अगणित पुण्यकारक ।
दृढदर्शन पोषक, दान शील तप भावना भावक ।

एकवीस गुण सयुक्त उत्तमोत्तम कार्य प्रसक्त । पितृ मातृ भक्त ।
दक्ष विवेक विधि, दक्षिण उदधि ।
भलो भावना भावक, सर्व जीव आवर्जक ।
गुरु वचन आराधक, जिन शासन प्रभावक ।
धन धान्य समृद्धि, अत्यत समृद्धि ।
दानेक वीर, अति ही गभीर ।
देव गुरु चरण मधुकर, सर्व कार्य धुरधर । एहवा श्रावक ।

(६२) सु श्रावक वर्णन (२)

पाप नइ विषइ विरक्त चित्त, शत्रु मित्र सम युक्त ।
शुद्ध व्यवहार नउ करण हारु, सन्मार्ग नु सचार हारु ।
धर्म धुरन्धर, सेवक जन सुखकार ।
उचित उलखइ ।
दया दान पूरउ, सुकृत साचिवा तरउ ।
आचार वतु, छाटि वइसइ तउ कृतान्तु ।
कुणइ प्रतिकूल्उं न चवइं, त्रिकाल देव पूजा साचवइ ।
सुश्रावकु, बारह व्रतु प्रति पालक ।
सद्गुरु नी आज्ञा वहइ, पुण्यवत माहि लीह लहइ ॥ २६ ॥ जै.

(६३) श्रावक वर्णनम् (३)

श्रावक धुरा सूधउ समकित धरइ, विकथा च्यारे परिहरिइ ॥
परभव थकी डरइ, सदगुरु ना पाय अणुसरइ ॥
जीवनी जयणा करइ, सकृत भडार भरइ ॥
विसेष ना जाण, गुरु मुख सुणइ वखाण ॥
राखइ सहूना प्राण, जिन वचन करइ प्रमाण ॥
बारह व्रत राखइ, पर मर्म न भाखइ ॥
आपना अवगुण टाखइ, सहूनी साखइ ॥
उपगार कइ अवसर लहो, साहमी सु धरणइ वइसइ नही ॥
कुणही नु आलि न दइ, नव तत्वादिक नउ अर्थ ल्यइ ॥
देवाधि देवनी करइ अरचा, न करइ कुणही री चरचा ॥
उत्तरासण घाली, लात्वात्माश्रमण द्यइ मन वाली ॥
आपण पर नी विगत जाणइ, तउ सद्गुरु श्रावकनइ वखाणइ ॥

(६७) श्राविका वर्णन (२)

सुश्राविका, पुण्य प्रभाविका, आचारवत, विवेकवत ।
सुशील, सहजइ [1]सलील । तप उपधान रहा विपय न करइ ढील,
टीटारु दीसइ डील सुविचार, अवसरनी उलखणहार ।
समस्त कुटुंब सौख्य करिवा बुद्धि, त्रिपक्ष शुद्ध, स्वभावि मुग्ध । +
भर्तार नउ मन राखीइ, न रह सकइ अध घडी घर पाखइ ।
सहू जिमाडी जीमइ, घणु बोल्यु न गमइ ।
कण रा विकण करइ, देव गुरुना पग अणुसरइ ।
चालइ पूर्वज रीति, न करइ किणहनी [2]कफीति ।
करइ सासू ससुरानी सार, सरिखो मोटा घर नइ भारि ।
पछइ सूयइ, पहिलेउ जागइ, आपणइ मुखि काई न मागइ ।
इस्यो काई सरज्यौ माणस पूरऊं, किणही नउन बोलइ अपूरू [3] ।
एवडी अंग माहि लाज, आपणऊ अर्थ विनासी सारइ कुटुम्ब ना काज ।
गोरुनी पीडि लीजई, पुण्यवन्त नइ पतीजै ।
आपण परनी विगति जाणइ, सद्गुरू न्यायि श्राविका वखाणइ ।
को कहिसइ गुरू चाटूया बोल बोलई इस्या ।
पणि परमेश्वरे वखाणी, रेवती नइ सुलसा । (सू० और जै०)

(६८) सात क्षेत्र

इस्यइ दुःषमाकालि, पसरइ पाप नइ जालि ।
सुकृत ना आचार साचवइ, सत क्षेत्रीयं वित्तु वावइ ।
अतिहिं पवित्र, वहिलउ क्षेत्रु ।
करावइ श्री वीतराग ना प्रासादु, लिय जगत्रय जयवादु ।
बीजउं क्षेत्र विंब भरावइं,
जइ मनि वार एक प्रथम श्रावकु भरतेश्वर वेह न्हइ हरावइ ।
त्रीजउ क्षेत्र तपोधनु, किसी परि रंजवइ तीह ना मनु ।

---

१ तदन्तर अधिक–अतहिं, लक्ष्मीनइ अवतारी चित्तनीउदार, अवसर नी ओलखलहार। सुरूपश्च ढलकार, करइसा,—वडइघरिमहा—

द्वादशव्रतधार । अवसरइ उपकार नी इडी, ए वातनथी कूडी । सर्व स्त्री-रोषरहित, शीलादि गुणेसहित । १ सील+वाणी बोलइ मीणी जाणइ मिश्रीनइ दुग्ध । २. अफीति ३ अपुरू ४ पीडा ५ स्त्री ६ कुशलधीर ।

चउमासि रहावइं, धर्मकथा कहावइं ।
पोसाल करावइं, ओखध वेखद, वस्त्र, पात्र । अनी उपगरावइ छात्र,
सयनासननीं चिंता आजु लगइ दीसहु दीसइ देववा
चउथउ क्षेत्र तपोधना
कहीयए, तेहना भारण हजि पुण्यवंते वहीयइ ।
पाचमउ क्षेत्रु श्रावकु जाणउ,
तेहनी सार पर्युपास्ति करता देखी विस्मउ करइ ।
छट्ठउ त्रिनेत्र नउ
सातमउ क्षेत्र, पुस्तक भरावइ, प्रशस्ति लिखावइ ।
ए सात क्षेत्र वावइ प्रशस्य, नीपजइ पुण्य रूपिया शस्य ।
भली तीर्थ यात्रा करइ, कलिकाल गर्व हरइं ।
भला तीर्थोद्धार, करावइं सुविचार ।
विबुध जन इसु जि कहइ, जिन शासन नउ भारु एहेजि निर्वहइ ।
इसा, तुम्हा जिसा ।
सुश्रावक, पुण्य प्रभायकु ।
देव गुरु नइ आशीर्वाद जयवंता वर्त्तउ ॥ २९ ॥ जै०

(६९) गच्छ

तपागच्छ १, ओसवालगच्छ २, जीराउल ३, वडगच्छ ४, गागेसराय (?) ५, कोरटीआ ६, भरुचा ७, आनपूरा ८, ओडविया ९, गूंदवीआ १०, दिकाऊआ ११, भिन्नमाला १२, मोढासीया, १३, टासरुआ १४, गछपाल १५, घोषवाल १६, भगडीया १७, ब्रह्माणीआ १८ जालोरा १९, वोकडीया २०, मढाका २१, चित्रोडा २२, साचोरा २३, कुचडीया २४, सिद्धातीया २५. रामसेणीया २६, मलधारा २७, आगमीआ २८, नवराजीआ २९, पल्लवीया ३०, कोरंडावाल ३१, नागेन्द्राक ३२, धर्मघोषा ३३, नागोरा ३४, उछितवाल ३५, नाणावाल ३६, साडेरा ३७, मडोरा ३८, सूराणा ३९, खभायता ४०, वढोदरा ४१, सोपारा ४२, मांडलीआ ४३, कोटिपुरा ४४, जागडा ४५, छापरीया ४६, वोरमंका ४७, टोवंदनीक ४८, चित्तावाल ४९, वेगडीआ ५०, चाम्रडगव गछ ५१, विज्जाहारेगछ ५२, कतब्रपुरा गछ ५३, कावेलागछ ५४, सटोलिया गछ ५५, महुकरा गछ ५६, कन्नरसा ५७, मुणतेला ५८, रेवईआ ५९, धूंधूखा ६०, छाभाणीया ६१, पचनलीआ ६२, पालणपुरा ६३, गधारा ६४, गूंदेलीयां ६५,

सार्द्धपूनमिया ६६, नगरकोटीया ६७, हसकोटिश्रा ६८, भट्टनेरा ६६, जालोरा साठिया ७०, भीमसेणिया ७१, तांगडीया ७३, कवोजा ७४, सेवंत्रीया ७५, वछेरा ७६, वहेडा ७७, सिंघपुरा ७८, घोघरा ७६, सजाती ८०, वारेना ८१, मोरंडवाल ८२, नाढोलीया ८३, चोलीया ८४, इति चौरासी गछ नाम। (वि०)

(७०) तपागच्छ शाखानाम

विजय १, विमल २, कुशल ३, रुचि ४, हस ५, सुदर ६, सौभाग ७, सागर ८, श्राणंद ६, हर्ष १०, राज ११, सार १२, रत्न १३, पुत्र १४, धर्म १५, उदय १६, चंद १७, सोम, वर्द्धन १८, एवं १८ शाखानाम्। (वि०)

(७१) जैनमत

दिगम्बर, श्रागमीया, पूनमीया साढपूनमीया, लूका, पासचदीया, श्रध्यात्म-मती, वीजामती, ब्रह्मामती, कोथलामती, कडूश्रामती, सागरमती, कानामती, ढूढ्यामती, इत्यादि मत जाणवा। (वि०)

(७२) ११ अंग सूत्र

श्रथ एकादशागा—

श्राचारांग, सुगडाग, ठाणांग, समवायाग, भगवती, ज्ञाता धर्मकथाग, उपासा-गदशाग, श्रतगडदशाग, श्रणुत्तरोववाई, प्रश्न व्याकरण, वियाकसूत्र इत्यादि—एकादशांगा।

(७३) १२ उपांग

उववाई, रायपसेणी, जीवाभिगम, पन्नवणा, जम्बूदीव पन्नत्ति, चदपन्नत्ति, सूर पन्नत्ति, कप्पिया, कप्पविडसया, पुप्फिया, पुप्फचूलीया, वराहीदशा, इत्यादि बार उपाग।

(७४) १० पयन्ना

देवदथश्रो, तंदुलवेयालियं, चदाविज्जियं, गणिविज्जा, श्राउपच्चक्खाण, महापच्चक्खाण, मरण समाधि, चउसरण, मरण विभत्ति, गछाचार, इत्यादि दश पयन्ना।

(७५) छः छेद

निशीथ, महानिशीथ, वृहत्कल्प, व्यवहार, पचकल्प, दशाश्रुतस्कंध, इत्यादि छःछेद ग्रंथ।

(७६) मूल आगम

आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, पिंडनियुक्ति इत्यादि मूल सूत्र च्यार। नंदी सूत्र, अनुयोगद्वार, इत्यादि पैंतालीस ४५ आगम जाणवा। वि०

(७७) नवतत्व

(१) जीव, (२) अजीव, (३) पुण्य, (४) पाप, (५) आश्रव, (६) सवर, (७) निर्जरा, (८) बंध, (९) मोक्ष।

धर्म-अधर्म। हेयज्ञेय, उपादेय। निश्चय, व्यवहार। उत्सर्ग अपवाद। आश्रव, परिश्रव। अतिचार, उपचार। अतिक्रम, व्यतिक्रम। इत्यादिक साभल्या विना शास्त्र ना भेद न जाणिइ। (सभश्रृङ्गार की द्वितीय प्रतिका प्रथम पत्र)

(७८) विगय

तेल, गुल, घृत, दूध, दही, कडाविगय, आमिष, माखण, मधु ६ विगयनाम।

(७९) संमूर्च्छिति उत्पत्ति १४ स्थान

(१) लघुनीति, (२) वडीनीति, (३) श्लेष्म, (४) वमन, (५) पित्त, (६) राधि, (७) थूक, (८) लोही, (९) वीर्य, (१०) वीर्य खरडीया वस्त्र, (११) मृतक, (१२) स्त्री नर संग में, (१३) नगर ने खाल, (१४) अने अशुचि, इत्यादि में संमूर्च्छिम पचेंद्री ऊपजे।

(तीर्थंकर माता देखे) चतुर्दश महास्वप्न वर्णन क्रमेण।

(८०) गज वर्णन—(१)

ससग प्रतिष्ठितु! शुण्डा दण्डि परि कलितु
मत्तु, मदोन्मत्तु।
प्रचण्ड, उदण्ड।
विन्ध्याचल समानु; उज्ज्वलवानु।
कोपारुण, जिसउ हुई ऐरावण।
उज्ज्वल, प्रधान दन्तूसल।
छूटउ हूँतउ पर्वत प्राकार पाडइ, कुण तिहस्यउ पइसइ अखाडइ।
कुम्भस्थलि सिन्दूर नू पूर; ऊपरि कपूर।
सुवर्णमय शृंखले करी अलकरउ, गज वस्त्रा परिवरिउ।
रूप्यमय घंटा निनादु, जेहनउ जगत्र जयवादु।

पगि थोरु, श्रम करतउ दीसइ जाणे तउ लक्ष्मी नउ मोरु
सारमी करतउ; जय श्री वरतउ
इस्यउ गजेन्द्र मरुदेव्या स्वामिनी कुक्षि अवतरिउ श्री ऋषभु ॥ ४३ ॥ जै०

(८१) वृषभु (२)

बीजउ स्वप्न देखइ वृषभु ।
उद्दाल धवल, प्राणि करी प्रबल ।
रोम राइ करी सुकुमालु, पूठिइं सुविशालु ।
पृथ्वी नउ भार वहउ समर्थ, परमेश्वरि सिरिज्यउ एणि अर्थ ।
काधि मोटउ, पूठि धोटउ ।
नथी दीणु, इस्यउ धुरीणु ॥ ४४ ॥ (जै)

(८२) सिंह (३)

अकलु अबीहु, त्रीजउ स्वप्न देखइ सीहु ।
जीणं करि सघणीइ वनु, परिपूर्ण पंचाननु ।
तीखी दाढ, सविहु जीव माहि ऊगाढ ।
अतिहिइं सूरउ, सर्वांगि पूरउ ।
उल्लालित पुच्छच्छटा छोपु, सकोपु ।
मुख सुविकासु, अनइ देखता सप्रकास ।
छइ वीहामणउ अनइ नहरालउ, सौर्य वृत्ति नउ आलउ ।
आये नलि घाती बइठउ, राणीइ स्वप्न माहि दीठउ ॥ ४५ ॥ जै०

(८३) लच्मी देवी (४)

त्रिभुवन स्वामिनी, चउथउं स्वप्न देखइं अनी ।
रंगरेलि, मूर्तिमती कल्पवेलि ।
विभूषण ने सहस्ती करी अलंकरी, हाथिए परवरी ।
सुवस्त्र सुवेष, जेहनी अत्युत्तम रूपनी रेख ।
जगत्त्रय जीवनु, सुहणइ दीठइ अने सउ थाइ मन ।
सर्व दुःख निर्नाशिनी, पद्मद्रहनिवासिनी ।
सकल सौख्य कारिणी, महा मनोहारिणी ।
परम दैवत्तु, इह लोकि परम तत्वु ।
परमेश्वरी, इसी स्वप्न माहि राज्ञी अनुसरी ॥ ४६ ॥ जै०

(८४) पुष्पमाला (५)

पाचमउ पंच पुष्प माला, पांचमउ स्वप्न देखइ आला ।
भरीइं परिमल ना केउल, एहवा बउल ।
गंधिकरी गाढा लांपा, इस्या चापा ।
सेवत्रा, सौरम्य गुण भरया ।
लोचने नाशिका पुट अनुहरा, वेल विकस्वर ।
पहिरिवा दरिद्रीइ, थाइ वाहीं उर ईश्वर ।
अनेरा पुष्प प्रति कटक, इसा पुष्प कोरटक ।
पाखलि फिरइ भ्रमरना वृंद, इसा कुंद मुचकुंद ।
अति हिइ बहु मूल, जाइ ना फूल ।
मस्तकि पहिरता करणी, त्रिवणी शोभा थाइ करणी ।
सोनडी हइ कइ जासूना, जूजउ फुलीना सूना ।
अति सुविशाल, राणी देखइ प्रधान पुष्पमाल ॥ ४७ ॥ जै

(८५) चंद्र (६)

जेह नइ नथी कलकु, इसउ शशाकु ।
छट्ठउ स्वप्न देखइ, अमृत नइ उवेखइ ।
नक्षत्र माहि नाथु, शीतल्व गुणि करि ऊभ्यउ हाथ ।
जगत्रय न्हइ आणंदकरु, भालस्थल थ्यु न मेल्हइ अध घडोइ ईश्वरु ।
रोहिणी नउ भर्त्तार, ज्योत्स्ना करी अपार ।
अमृत नउ कुण्ड, महिणारभु ।
मथी देवे मेल्हउ हुइ, जिसउ मारवण नउ पिंडु ।
सूर्य ने किरणे गलिवा वीहइ, तउता अधिक न दीसइ ते दीहइ ।
जल निधि रुपीया ज भमंतु, थ्यउ वडवाग्नि वीहतउ ।
जाणे झडयउ पारउ, लोचन नइ पियारउ ।
आकाशि महिषी ना मुख फेणु, वाहणि पणु ।
इस्यउ चन्द्रमा दीठउ ॥ ४८ ॥ जै.

(८६) सूर्य (७)

अति हिया वणउं, सुयणु सातमउं ।
तेज नउ भरु, देखइ दिनकरु ।

जिसउ केसू प्रधान, अथवा गुन्नार्ध राग समानु ।
अति हिंगुलो नउ रगु, ऊगतउ एहतउ सुरगु ।
अंधकार हरु, जगत प्रकाश करु ।
आकाश विभूतिइं ओटइयउ, प्रलयाग्नि जिसउ हुइ रह्यउ ।
सत्कर्म साक्षात्कु, दिग्वधू ना नाक नउ जिसउ मौक्तिकु ।
लोचन विसमउ, सुहणउं सातमउ ॥ ४६ ॥ जै.

(८७) ध्वज (८)

पंच वर्ण पानडे करी गहगह्यउ ।
साथीए करी सनाथु, जिस्यउं हुई साचउ सुकृत नउ हाथु ।
वली पुष्प वृक्ष नउ अंकूरउ, दानव वंश टलिवा सूरउ ।
वाइ करि फरहरइ, जय श्री वरइ ।
विज्ञान करी विचित्तु, स्वप्न माहि पवित्तु ।
देवीइ इसउ ध्वज दीठउ ॥ ५० ॥ जै.

(८८) कुम्भ (९)

स्वप्न माहि निदंभु, सुवर्ण मइ कुम्भु ।
गूंहली उपरि माडउ, अलक्ष्मी छाडउ ।
महामानि, अलंकरयउ आंबा ने पानि ।
चिहुँ वाटि करि पट्ट वड़ी, ऊपरि प्रधान टोवडी ।
मांगलिक माहि पहिलउ, आवउ वहिलउ ।
तडि आठ मांगलिक अविद्ध मोतीना, किम न उल्हसइ श्री जोतीना ।
स्वामिनि मरुदेव्या, पूर्णकलश सु नव स्वप्न अनुभव्या ॥ ५१ ॥ जै.

(८९) सरोवर (१०)

महा मनोहर, दशमउ देखइ सरोवर ।
पाणी भरिउ, राजहंस ने युग्मे अलंकरिउ ।
चकोर चक्रवाक नासइ, महा मत्स्य हसइं ।
आडिनी उलि एक लग, बहु विध टींक बक ।
सार कुटलइं, पर्वत प्राय मगर गल लइं ।
माहे कमल उन्निद्र, जाणेच्छइ समुद्र ।
चन्द्रमा मिलवा नइ करइ कल्लोल ।
हिम वर्ण दीस्यइ पालि वली, जिहां छइ सच्छाइ वृक्षावली ।

तिहां बइठा चल कण लागइं, साथ कहइ ईहा रही स्यकइ आगइं।
पृथ्वी माहि पामीइ, मार्ग अमु गमीइ।
इस्यउ सरोवर दीठउ ॥५२॥ जै०

(९०) रत्नाकर (११)

महारत्न नु आगरु, इग्यारमउ स्वप्न देखइ सागरु।
मच्छ, कच्छ, पाठीन पीठ जलचर जीव अनीठ।
महा निरवधि, क्षीरोदधि।
अतिहिं उद्दण्डु, डिंडीर पिण्ड।
तेहे विराजमान, मर्यादा करी प्रधानु।
गंभीरिमा गुणि करि गाजइ, आपणी मर्यादा रख्यउ कहइन्ह न विराजइ।
महालक्ष्मी धरु, इसउ स्वप्न देखइ स्वामिनी प्रवरु ॥५३॥ जै०

(९१) देवविमान (१२)

रहित शोकु, जिसउ बारमउ हुइ देव लोकु।
इसउं विमानु, सुरगणा ससैन्य मानु।
स्वर्णमय कुंभ सहस्रि परिकलितु, दिसि एकइ नहीं जिहा तोरण टलतु।
जिहा बार सूर्य ना उदय, रत्नजटित इसा चन्द्रोदय।
दीठी हरइ अलच्छि, इसी चिंहु पखे परीयच्छि।
परिमल करी विशाल, माहि लंबायमान फूल नी माल।
अगर गंधि उच्छलइ, जवाधि ना परिमल मिलइं
कपूर महकइ, कस्तूरी महकइ, जय पताका लहकइ।
भ्रमर गुणगान करइ, बारमुं स्वप्न देखइ॥ (जै०)

(९२) रत्न राशि (१३)

चन्द्रकान्त, पद्मकान्त।
पद्मराग, पुष्प राग।
हीरिताक्ष, लोहिताक्ष।
कर्केतन मणि, वैडूर्य मणि।
गुरडोद्गार, पुलकोद्गार।
हीरा मणिकला, अविद्ध मौक्तिक भला।
त्रास रहित, तेज सहित।

रत्न तणी राशि, प्रवेश करती आवासि ।
जिसउ सूर्य होइ अनभ्र, तिसा ईस गर्भ ।
जिसा लोक चित्तरञ्जन, तिसा अञ्जन ।
सविहुँ रत्न प्रति मल्ल, इसा मसार गल्ल ।
तेज ना चुलक, इसा पुलक ।
इसम तेरमउ स्वप्न दीठउ ॥५५॥ जै०

(६३) निर्धूम अग्नि शिखा (१४)

तेज प्रखरु, चउदमम स्वप्न वैश्वानरु ।
सप्त ज्वाला करालु, देखता सौख्यकारु ।
उर्द्ध मुखु, धूप नइ विपइ विमुखु ।
धग-धगाय मानु, स्वप्न माहि प्रधानु ।
होतव्य द्रव्य नउ प्रमगाहारु, तेहनु वर्त्तइ लोक व्यवहारु ।
घृति करि सींच्यउ, इसतिका रच्यउ ।
मर्यादा ज्वलतु, निद्राना व्रलइतउ ।
राणीइ इस्या स्वप्न दीठा, मनन्हइ लाग्या मीटा ।
श्री कल्प मध्ये चतुर्दशस्वप्न वर्णनानि ॥ १४ ॥ ५६ ॥ जै०

(६४) वैमानिक देववर्णन

अति सुकुमाल, रसाल ।
दिव्य देह, अति सस्नेह ।
निरामय शरीर, अतिधीर ।
महामानी, भागी,·· ······ ··।
अमृता हारी, सौख्य व्यापारी ।
अति प्रोढा, विमानाधिरूढा ॥ ७ ॥ जै०

(६५) सौधर्म देवलोक स्थिति

साभलउ सौधर्मेन्दू तणी स्थिति । सौधर्म ।

रत्नमय भूमि, शक्र सिंहासन, सूर्य जिम झलकतउ, तिहां बइसइ शक्र इसिइ नामिइ सौधर्मेन्द्र । दक्षिण लोकार्द्ध स्वामी, एरावण वाहण, बत्रीस लाख विमान तणउ अधिपत्य पालइ, लीला लगइ वैरि दुःसह स्फुलिंग (सह) सहस्र वरस तउ ज्वाला ना सहस्र झरतउ, देदीप्यमान दक्षणहस्ति वज्र ऊलालइ । चउरासी सहस्र अति स्वच्छ निर्मल वस्त्र मस्ति, चद्र मडल सम त्रिन्नि छत्र कनक दड चमर दिव्य आभरण डबरन इन्द्र सामाजिक देव सपरिवार तेत्रीस त्रायस्त्रिंश इसिइ

नामइ दुगु दुग देव, ४ लोकपाल । पद्मा, शिवा, अजू श्यामा सुलसा, अचला कालिंदी भाणू ए अठ अग्र महिषी, सोल सोल सहस्र देवी परिवृत्त, १२ सहस्र अभ्यतर सभा तणा देव, १४ सहस्र मध्यम सभा तणा देव, १६ सहस्र बाह्य सभा तणा देव, ७ कटक नाट्य, गधर्व हय, गज, वृषभ, रथ, पदाति रूप ७ कटकतणा स्वामी । नीलंजणारि जसहरि एरावण मातलि दामिही हरिणेगमेषी ७ सर्वा गि सन्नाह पहिरि, दृढकशा बधि बाधी धनुषि गुण चडावी रहया, ग्रीवा भरण विभूष्य मस्तकि । नेत्रादि वस्त्र मय अथवा सुवर्णमय टोप धरता सज्जी कृत क्षेप्यास्त्र, गृहित अक्षेप्यास्त्र मध्यि त्रिहु पासि एव त्रिहु स्थानकि नम्या । त्रिहु स्थानकि साध्या इस्या वज्र मय कोटि धनुष मुष्टि स्थानकि सारहिया, नील वर्ण, पूष पीत वर्ण, रक्त वर्ण, पुख इस्या बाण हाथि धरता, केतलाइ अनारोपित चाप हाथि लेइ रहिया, केइ खेडा हाथि, केइ खाडा हाथि, केइ दड हाथि, केई पाश हाथि, केतलाइ नील वर्ण, पीत वर्ण, केतलाइ रक्त वर्ण, केतलाइ त्रिवर्ण चाप प्रमुख शस्त्र धरइ छइ ।

सर्वे स्वामी शरीर रक्षा सावधान, अनेथि मन अणकरता, मडली नो स्थिति आलोपता[1] परस्पइ आतरु पडतु टालता, परस्पर संबद्ध, सदा विनयवंत्त, अत्यन्त भक्त, इस्या त्रिन्नि लाख छत्तीस सहस्र अगरक्षक देव सम श्रेणी निरतरि इन्द्र पाखती रहिया छइं । इम सौधर्मेन्द्र धर्म तणइ प्रसादि[2] महासुख अनुभवइ, इम अनेराई देवेन्द्र ना सुख जाणिवा ।छ०।। (१६४ जो.)

(६६) देवलोक सुख

देवलोकणी, केवडी ऋद्धि, केवडउ सुक्ख,
जहि मनोवाछित विमान सपजइ,
मनोवाछित आहार, मनोवाछित सिंगार, मनोवाछित अगभोग,
मनोवाछित, आभरण, मनोवाछित रत्न, मनोवाछित नायका,
मनोवाछित प्रेक्षणक मनोवाछित नाटक,
अनै अनेक परि क्रीडावन, सरोवर, पुष्करिणी,
वैक्रिय लब्धि संपन्न हूता विचित्र क्रीडा करइ,
शरीरि प्रस्वेद नहीं, फूला कुर्माइ नही, वस्तु मइलियइ नहीं,
फूटरा पहिरणा चागण चोटा थका देव सुक्ख अनुभवइ,

१—अलोपता २—प्रभावि।

(९७) देववर्णक (१)

अति सुकमाल, विसाल भाल ।।
करता झाकझमाल, अतिरसाल ।।
दिव्य देह, रूप रेह ।।
मयण गेह, अति सस्नेह ।।
निरामय शरीर, धीर वीर ।।
महामानी, दीसता जेहवा जानी ।।
विराजमान कुंडल, दर्प्प जिसा गल्लस्थल ।।
महा भोगी, साक्षात देखइ जोगी ।।
अमृताहारी, स्वेच्छाचारी ।।
सदय सनूरा, ऋद्धइं करी पूरा ।।
मलमूत्र रहित अवितशक्ति सहित ।
विमाने बइठा वहइ, भूमिथी च्यार अगुला ऊचा रहइ ।।
मुनि 'कुशल धीर कहइ', देव, ... ।।

इति देव वर्णक ।। कु०

(९८) मोक्ष इन बातों में नहीं

मोटी छोटी कछोटी मोक्ष नहीं, कापाय धोती मोक्ष नहीं ।
विकट जटा मुकुटि मोक्ष नहीं, निष्कारणि[1] शिखा मोक्ष नहीं ।
कठि जनोई मोक्षि नहीं, हाथि अनति मोक्ष नहीं ।
अखंड त्रिदंडि मोक्ष नहीं, कन्हइ कमंडलि मोक्ष नहीं ।
मस्तकि मुंडिइ मोक्ष नहीं, वन वासि मोक्ष नहीं ।
किन्तु रागद्वेष परिहारि शुद्धिइं मनि मोक्ष हुइ ।

रागी बध्नाति कर्माणि वीतरागो विमुच्यते ।
जना जिनोपदेशोय सक्षेपाद्बंध मोक्षयो ।।८७। नो०

(९९) मोक्ष इन बातों में नहीं

नच्छोटी कछो मोक्ष, न विकटि जटा मोक्ष ।
न कण्ठ कंदर स्थित यज्ञोपवी मोक्ष न अखण्ड त्रिदण्डी मोक्ष ।
न विशालि कपालि मोक्ष, न स्वदर्शन मुण्डनि सिरे खुंडनि मोक्ष ।
न नियंत्रित सर्व करणि विकृष्ट तपश्चरणि मोक्ष ।
किन्तु राग द्वेष परिहारि सुद्धइ निर्मल मनि पावीइ ।

---

१. शिखा

(१००) लक्ष्मी देवी वर्णन

पुण्य लक्ष्मी पवित्र, एह भरत क्षेत्र। परइ हिमवत पर्वत सुवर्णमय छइ। एक सहिस्र बावन जोअण अनइ बार कला जे पिहुलउ। सउ जोअण ऊंचउ। तेह उपरि पद्म द्रह छइ। जे किसउ? निर्मल जल परिपूर्ण। दस जोअण ऊंचउ। पाँच सउ जोअण पिहुलउ। सहिस्र जोअण लाम्बउ। वज्रमय पासा। तेह पद्मद्रह माहि श्री देवता वसिवा योग्य कमलइ। ते किसिउ? एक योण पिहुलउ, एक जोअण लाबउ। जोअण माहि विकासे पाणी ऊपरि। त्रिणि जोअण सविसेष तेहनी परिधि। वज्रमय तेहनूं मूल। रिष्ट रत्नमय कद। वैडूर्य नामइ जे निल रत्न। तेह मय नाल। रक्त सुवर्णमय तेहना बाह्य पत्र। किंचि रत्तमय जाबूनइ नाम सुवर्णा तेह मय अभ्यतर पत्र। तेह कमल माहि बीज कोस रूप। सुवर्ण मय कर्णिका छइ। ते किसी? रक्त सुवर्णमय तेहना केसर। त्रिकोस तेलाबी अनइ पिहुली। एक कोस ऊंचो। त्रिणि कोस सविशेष तेहनी परिधि। तेह कर्णिका नइ मध्य भागि श्री देवता योग्य भुवन छइ। ते किसउ? एक कोस लाबू, एक कोस पिहुलु, माहेरउं कोस अचउ। त्रिणि द्वार तेह भुवन तणा—एक पूर्व दिशि—एक उत्तर दिशि—एक दक्षिण दिशि। ते बारणा पाचसइ धनुष ऊचा, अठीसइ धनुष पिहुला। तेह माहि अढीसइ धनुष प्रमाण मणि मय वेरका। जे ऊपरि श्रीदेवता योग्य सयन छइ। हिवइ जे मूलिगउ कमल कहिउ? तेह कमल अनेरे अहोत्तर सउ कमले वलयाकार पणइ वीटउ छइ। ते सघलाइ कमल मूलगा कमल चउ—अई प्रमाण जाणवा तेहे सविहु कमले श्रीदेवता तणा आभरण रहइ। तेइ वलय पारवतीइ बीजउ कमल नउ वलय छइ। विणइ वलय श्री देवी तणा च्यारि सहस्रि जे छइ। सामान्य देव नेहणा वायव्य ईशान उत्तर दिशि च्यारि सहस्रि कमल छइ। ते मुख्य कमल नउ अर्द्ध प्रमाण जाणवा। तथा श्री तणइ महा मंत्रि कल्प छइ। जे च्यारि महत्तरादेवी तेहना च्यारि कमल पूर्व दिशि जाणिवा। श्री देवी तणइ अभ्यंतर पर्षद तणा आठ सहस्र छइ जे मुख्य स्थानीय देव। तेहणा दश सहिस्र कमल आग्नेय कूणिवा। श्रीदेवी तणइ मध्य पर्षद तणी दश सहिस छइ ते मित्र स्थानीय देव। तेहणा दश सहिस कमल दक्षिण दिशि जाणिवा। श्री देवी तणा बाह्य परिषद बार सहिस्र छइ जे किंकर स्थानीय देव तेह तणा बार सहिस्र नैऋत्य कूणि कमल जाणिवा। श्रीदेवी तणइ हस्ति अश्व रथ पायक। महिष नाम गधर्व रूप जे सात कटक तेह तणा जे सात स्वामी तहे तणां सात कमल पश्चिम दिशि जाणिवां। तेह त्रीजा कमल नइ वलय पाखतीइ त्रीजउ वलय छइ, विहा श्रीदेवी तणा जे सोल सहिस्र अग

रत्तक देव तेह तणा सोल सहिस्र कमल जाणिवा। तिवार पूठइ त्रिणि वलय वलि कमल ना जाणिवा। तिहा अभ्यतर वलय श्रीदेवी तणा—छत्तीस लाख जे आभियोगिक देव तेह तणा छत्तीस लाख कमला जाणिवा। मध्य वलय श्रीदेवी तणा—४००००००० आभियोगिक देव तहे तणा ४० लाख कमल जाणिवा। वाह्य वलय श्रीदेवी तणा—४८ लाख आभियोगिक देव, तहे तणा ४८ लाख कमल जाणिवा।

एवं एक कोड़ि वीस लाख पचास सहिस्र एक सउ वीसोत्तर कमल जाणिवा। एवडा कमलवासी देव अनै देवी एह सगलउ श्री देवी तणउ परिवार जाणिवउ।

देह प्रभामर विभासुर देव देवी, ससेव्यमान वलमान् छिनाभ हस्ता। रत्नौज्वला भरण मंडल मडिताङ्ग। श्री तीर्थराज पदपंक संग भृगा दारियम् "१" इति श्री लक्ष्मी देवता ऋद्धि वर्णन। पं० हर्ष रत्नमुनि पठनार्थं।

सभा श्रृंगार

अथवा

वर्णन-संग्रह

विभाग १

सामान्य नीति वर्णन

(४) इनमें ये दोष

चद्रस्य कलको दूषण, सूर्यस्य प्रताप.
समुद्रस्य क्षारत्व, शरीरस्य रोगः ।
तपसः क्रोध, जलधरस्य श्यामत्व, ससारस्य दुख भडारत्वं ।
धनवता कृपणत्व, दानिना निर्धनत्वं ।
पुण्यवता अवल्हित्व, स्त्रीणां वद्स्था ।
मेघस्य चपलत्वं, कमलेतु कटकित्व । एवं विधावुदोषा ।

॥ १० ॥ चो०

(५) कोई न कोई कसर सब में (१)

विष्णु दशावतारण कडडि भागऊ, ईश्वर नागऊ, ब्रह्मा पंचमा मस्तक नो चूको, चंद्रकोरो, शुक्र काणो, शनैश्चर कूबडो, आदित्य सतापकर सूर्यसारथि पागुलो, मगल-विक्रोओ, रावण परस्त्री कारणे विगूतो, राम सीताप्रति वनवान हुओ, पांडव कौरव विरोधवाधिओ, कर्णराजाइ आपणे[1] जिह्वा[2] वोडो वाव्यो, विक्रमादीत्य काग मास खाधो तोही अजरामर न हूओ, नल राजा परघरि सूयार-पणो करे, हरचन्द चडाल ने घरि पाणी भरे, परमराम आपणी माय तणो शिर कमल छेदे, माघ जेवडो विद्वास पगसूझि भूखि मूऊ, गांगेय जेहवो सुभट पुत्र ने वरा से पडें, सगर चक्रवर्ति साठसहस्र बेटा तणो दुख देखे, वासुदेव वलदेव द्वारिकानो दाव उदेखे, भरतेश्वर वाहुवलि संग्राम (स) आप माहि करे, मृत्यु पग हेठल वसि संसार माहि सहुयइ इंद्रयाल दीने, तेह कारण शास्वती कीर्ति उपजाववी, जगत मांहि प्रसिद्ध लेवी, इत्यादि जाणवी । (पू०)

(६) दोष सब में (२)

ससारे नैव कर्त्तव्यः केनाप्यत्र महोदयः ।
येनो विधिर्न कस्यापि सहते शास्वत सुख ॥
विष्णु दशावतारि तणइ झडडि भागउ, ऐश्वर नागउ ।
ब्रह्मा पाचमा मस्तक तउ चूकउ ।
चंद्र कोचरउ, शुक्र काणउ ।
शनैश्वर कूवडउ, आदित्य संतापक ।

१–आधणे २–जिह्वा

सूर्य सारथि पागुलउइ, मंगल विक्रउ, समुद्र खारउ।
रावण परस्त्री कारणिय विगूतउ।
राम सीता प्रति वनवास हूउ।
पाडव कौरव विरोध वाधिउ।
करणि राइं आपणी जिह्वा घोडउ वाघउ।
विक्रमादित्य काग मास खाधउ, तुही अजरामर न हूयउ।
नल राजा परायइ घरि सूयार पणउ करइ।
हरिश्चद्र चाडालनइ घरि पाणि भरइ।
फरूसराम आपणी माइ तणु शिरः कमलच्छेदइ।
[1] माघ जेवडउ विद्वास पग सूझी भूख मूवउ।
नागार्जुन रस सिद्धि पूठि घाठउ।
गागेय जेवडइ सुभट पुत्र नइं वरासइ पडइ।
सगर चक्रवर्ति जेवडउ साठि सहस्र वेटां तणउं दुख देखइ।
भरतेश्वर बाहुबलि आप माहि सग्राम करइ।
वासुदेव वलदेव द्वारिका तणउ दाघ ऊवेखइ।
मृत्यु पग हेठि वसइ, संसार माहि सहूयइ इद्रजाल दीसइ।
तीह कारणी शाश्वती कीर्ति ऊपार्जवी, जगत्रय माहि प्रसिद्धि लेवी॥

(७) अनुसार (१)

संतोष सारु सुख, सत्य सारु वचनु
प्रत्यय सारु लेख, आज्ञा सारु राजु
विनय सारु शिष्य, पुत्र सारु कलत्रु
दान सारु विभवु, दया सारु धर्म। (-पु अ.)

(८) अन्योन्याश्रित (२)

जेहवो राजा तहवी नीत, भीत सारूचीत।
रोग तेहवी नीत, कुल सारु रीत, मन केडे प्रीत॥
बाप तेहवो वेटो, वड तेहवो टेटो॥
घडो तेहवी ठीकरी, मा तेहवी दीकरी॥
[1]जाल जेहवा मछ, व्याधि तेहवा पथ्य॥

---

[1] जल जेहवो ठाम।

धन तेहवा व्यय, सैन्य तेहवो जय, चोर तेहवो भय ॥
कठ तेहवो राग, कर्मानुसारु भाग ॥
व्यापार तेहवो लाग, बालण तेहवो आग ॥
सग तेहवो रंग, अकल सारु ढंग ॥
डेरा सारू तग, सरीर सारु[1] ढंग ॥
आहार तेहवो डकार[2], अन्याय तेहवो मार ॥
विनय तेहवो कार, कर्म प्रमाणें आचार ॥

इत्यादि । ५.

(९) परिमाणानुसार (३)

जाति मान समाचार,[3] विवेक मानि विचार ।
घर मानि प्राहुणउ, क्रयाणा मानि आध्नु ।[4]
खाडा मानि पडियार, धनुष मानि पणच ।
सयर[5] मानि छाया, पग मानि पाणही ।
आँखि मानि भरणु, जाख मानि बलि ।
भिराडी मानि पूडा, गुण मानि तिम माणुस पूजा ॥ रज जे.

(१०) परिमाणानुसार (४)

खाडा मानि पडियारु, धनुष मानि पडच ।
सयर मानि छाया, पग मानि पाणही ।
आख मानि भरणु, रूख मानि फलु ।
जाख मानि बलि, भराडि मानि दीवेलु ।
घर सारइ प्राहुणउ, जाति मानु समाचारु ॥ (पु. अ.)

(११) परिमाणानुसार (५)

सकल कल्याण वल्लि पुष्करावर्त्त मेघ जिन धर्म ।
जीणइं मानि दया, तीणइ मानिइं धर्म ।
जीणइं मानि कर्म, तीणइं मानि फलियइं[6] ।
उपक्रमा जिसिया कुल, तीणइं मानि वचन ।
जिसी भीति, तिसीउ चित्राम ।

---

१ प्रमाणे । २ उद्गार । ३–आचार । ४–ग्राम सारु सिहियो । ५–सरीर । ६ फलिइ ।

जिसी आकृति तिसिया गुण
जीणइ मानिइं वय, तीणइं मानिइं बुद्धि।
जिसिउ भाव, तिसी सिद्धि।
जिसीथा[1] जल, तिसिया[2] कमल।
जिसीउ आहार, तिसियां वल।
जिसिया वृक्ष, ससालियइ[3] तिसिया फल[4]।
जिसी अंतकालि मति, तिसी गति।
जीणइं मानि दान, तीणइं मानि कीर्त्ति। ६१। जो०

(१२) अन्योन्याश्रय (६)

जिसोवास,	तिसो अभ्यास॥
जिसी सीख,	तिसी मति॥
जिसो आहार,	तिसी डकार॥
जिसो वावीइ,	तिसो लुणीइं॥
जिसो कमावीइं	तिसो पामीइ॥
जिसो दीजे	तिसो फल लीज॥
जेहवी करनी	तेहवी पार उतरणी

इत्यादिक जाणवी। (पू.)

(१३) अन्योन्याश्रय (७)

जिसिउ वास, तिसिउ अभ्यास।
जिसी दीख, तिसी सीख।
जिसिउ आहार, तिसिउ उद्गार।
जिसिउ वावीयइ तिसिउ लूणीयइ।
जिसिउ कमाईइ तिसिउ प्रामीयइ फलु।
जिसिउ दीजइ, तिसिउ लीजइ॥ २६॥ जो०

(१४) अन्योन्याश्रय (८)

जिसउ वासु, तिसउ अभ्यासु।
जिसी दीख, तिसी सीख।
जिसउ आहारु, तिसउ उद्गारु।
जिसउं वावियइ, तिसउ लूणियइ।

---
१ जिसा २ तिसा ३ सेसालिइ ४ फजल

जिसं थवियइ, तिस खवियइ ।
जिसउ दीजइ, तिसु लाभइ
जिस कमाईय, तिस अमाई ॥ (पु. अ.)

(१५) ये इनको जानते हैं (१)

मनु जाणइ पाप, माता जाणइ बाप ।
गारुडी जाणइ साप, वाणिउ जाणइ माप ।
आसदउ[1] जाणई घोडा, कडीउ जाणइ रोढा ।
सोनार जागइ सोना कडा, कंदोइ जाणइ वडा ।
हंस जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर ।
मुख जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा ॥ २७ ॥ जो+

(१६) ये इनको जानते हैं (२)

मन जाणइ पाप, मा जाणइ बाप ॥
हंस जाणइखीर, मच्छ जाणइ नीर ॥
मुँह जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा ॥
पग जाणइ पागी, राग जाणइ रागी ॥
दाव जाणइ दासी, कायर जाणइ नासी ॥
नारद जाणइ हासी, डोकरउ जाणइ खासी ॥
गारुडी जाणइ मन्त्र, कापडो जाणइ जन्त्र ॥
जाचक जाणइ लीयउ, दाता जाणे दीयउ ॥
वडउ जाणइ कीयउ, छोरू जाणइ हीयउ ॥
चोर जाणे पात्र, ओझा जाणइ छात्र ॥
जगम जाणे जात्र, पुण्यवन्त जाणे पात्र ॥
करसण जाणइ जाट, सोनार जाणइ घाट ॥
कवित्त जाणइ भाट, खरादी जाणइ खाट ॥
तम्बोली जाणइ पाननी चोली, स्त्री जाणइ पोलो ॥
कूड जाणे कोली, मयेण जाणइ बोली ॥
माया जाणे गोली, आइर जाणे गेली ॥
वाणियउ जाणइ लोखो, दूषण जाणइ दोषो ॥
मोची जाणे जूती, कपट जाणइ दूती ॥

(१) असवार + पेट जोणे उपु ।

सकुन जाणइ सिद्धि, पुण्य जाणइ रिद्धि ।।
सराफ जाणे परखी, वस्तु जाणे निरखी ।।
दलाल जाणे साट, तिम 'धीर' गुरु जाणइ धर्म नी वाट।
इति जाति वाक्यानि । कु०

(१७) ये इनको जानते हैं (३)

हंस जाणइ खीरु, मच्छु जाणइ नीरु ।
आसंदउ जाणइ घोडा, महिरालु जाणइ महु मोडा ।
कदोई जाणइ वडा, सोनारु जाणइ कडा ।
गारुडिउ जाणइ सापु, मनु जाणइ आपु, मा जाणइ बापु ।
महु जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा । (पु० अ०)

(१८) इनसे यह नहीं हो सकता

(१)

पगुर्यथा बहु योजनाटवी लंघयितु (न शक्नोति) ।
वामन स्ताल फलानि लातु न शक्नोति ।
यथा कुब्जः प्राध्वरी[१] भवितु[२] न शक्नोति ।
वात भग्न शरीरश्च विषम किरणानि दातु न शक्नोति ।
विद्यारहित तश्चाकाशे गंतु न श० अंधः पुस्तक वाचयित्तु न श० ।
बधिरः पर्यालोच कर्त्तु न शक्नोति ।
तथानिर्भाग्यापि धर्म कर्त्तु न शक्नोति ।
(१५४ जो०)

(१९) अशक्यता

(२)

जडोप्यहं गुरु प्रसादाद्वक्तु शक्नोमि,
वामन आम्र फलानि गृहीतु कथ शक्नोति ।

---

१. साध्वरी । २. भावितु ।

अंधश्चित्रशालिं चित्रयितुं कथं शक्नोति ।
बधिरो वाणी निनादं श्रोतुं कथं शक्नोति ।
पगुस्तीर्थाणि अवगाहयितु कथं शक्नोति ।
पाषाणः सौकुमार्ये स्थातु कथं शक्नोति ।
निंबो माधुर्ये स्थातुं कथं शक्नोति ।
काको हस संसदि स्थातु कथं शक्नोति ।
क्रमेलक करि वरेषु स्थातु कथ शक्नोति ।
एव मुर्खोपि पंडितत्त्वे स्थातु कथं शक्नोति ।

(३१ जो०)

(२०) स्वाभाविक

सत्पुरुष परोपकार किसिउ सीखवीयइ ।
सालि किसिउं खाडीयइ, रूपि किसिउं माडीयइ ।
हीर किसीउं जडीयइ, मोती किसिउं छडीयइ ।
अमृत किसीउं कढीयइ, सारश्वत किसीउं पढीयइ ।
शख किसीउं धवलीयइ, दूध किसीउ गलीयइ ।

(३० जो०)

(२१) ऐसा प्रयत्न व्यर्थ है

सरस्वती किम पाढियइ, अमृतु किम कढियइ ।
माणिकु किम घडियइ, मोती किम छडियइ ।
निर्गुण किम वदियइ, सुगुण किम निंदियइ, वाउ किम बाधियइ ।
हरिण तणा नेत्र किम आजियइ, कुर्कट तणा चरण किम रंजियइ ।
कल्पद्रुम किम रोपियइ, साखु किम धवलियइ ।
सुरतरु किम वालियइ, ऐरावणु किम दामियइ ।
चिन्तामणि किम पामियइ, कामधेनु किम वाहियइ ।
हिंग किम वघारियइ, वेदु किम सस्कारियइ ।
रूपिणि किम माडियइ, सालि किम छडियइ ।

हारु किम शृंगारियइ, लक्ष्मी किम निवारियइ ।
स्वर्ण किम उजालियइ, हीरउ किम पखालियइ । पु० अ०

(२२) असभव प्रायः

वामणो आवें पोंहचे, मूर्ख काइं सोचे, अधक भींति चित्रे, धूर्त्त कोइ न छित्रे । वहिरो वीण सांभले, जूआरी वचन पालें । अंधलो अख्यर वाचे, आडि जलमा छूडे[1] पागुलो, पाघरो हींडे, तो कृपण दान आलें । इत्यादिक जाणवो ॥ ५

(२३) असभव

यदि मेघ धाराणा सख्या भवति ।
यदि भूतले रेणुका सख्या भवति ।
यदि सुमुद्र मत्स्य सख्या भवति ।
यदि मेरुगिरि सुवर्ण सख्या भवति ।
ततः अमुक सख्या भवति ॥ ८२ ॥ जै.

प्रतिज्ञा वर्णक (२४) प्रतिज्ञा अन्यथा नहीं होती

कदाचित् समुद्र मर्यादा चलइ । कदाचित् वाचस्पति वचन खलइ ।
कदाचित् शिला तलि कमल विकसइ ।
कदाचित् महीमडल पाताल जाई ।
अथवा प्रतिपन्न अन्यथा न थाइ ॥ ७ ॥ पु.

(२५) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (१)

यदि समुद्रस्य तृष्णस्याचदा तां कः स्फोटयति ?
यदि भूमिः[1] कम्पते तदा कः स्तभयति ?
यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा कः उपचार ?
यदि नभ स्फुटति तदा की हश रेंहण ?
चौरेण राजा गृह्यते तदा कस्यापि को रक्षकः ?
यदि हिमाचलः शीतेन कम्पते तदा किमावरणं ?
यदि सरस्वती सन्देहं न भंजयति तदा को अन्यः ?

---

१ चूट ।

यदि वृहस्पतिर्मतिहीनो भवति तदा को मति[1] दास्यति ?
यदि चन्द्रादगार वृष्टि र्भवति तदा को रक्षकः ?
यदि वाटिका चिर्भटाना भक्षति तदा को रक्षकः ? । ८४ जै.

(२६) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (२)

जो राजा चोरी करे तो बाजौ कुण राखें
जो सत्यव्रत खोटु भाखें तो बीजो कुण न भाखें ।
जो चन्द्रमा शीतल न होइ तो बीजो कुण शीतल होइ ।
जो सूर्य अंधकार न निवारे तो बीजो कुण निवारे
यदि सारदा संदेह न भाजै तौ बीजो कुण भाजै
जो वृहस्पति मतिहीन तो बीजो कुण मति देस्ये
जो शेषनाग धरती मूकइ तो बीजो कु ण धारस्ये
जो समुद्र मर्यादा मेले तो बीजो कुण राखें
जो आकाश पडे तो बाजो कुण थमे ॥
जो सज्जन उपकार रहित तो बीजो कुण उपकार करें ॥
जो लक्ष्मी भंडार तोडस्ये तो बीजो कुण भरस्यै
इत्यादिक जाणवौ ॥ पु० ॥

(२७) यदि ऐसा हो तो कोई उपाय नहीं (३)

यदि राजा चोरी करोति तदा को रक्षकः ।
समुद्रस्य तृष्णा कः स्फोटयति ।
यदि हिमाचलः शीतेन म्रियते तदा किं दग प्रवरणं ।
यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा किं दगुपचारः ।
यदि सरस्वती संदेह न भजति तदा को भजति ।
यदि लक्ष्मी भांडागार द्रव्यं सात्रोट तदा कः पूरयिष्यति ।

१—पृथ्वी २—इस 'पु०' प्रति में यह पाठ अधिक है—

यदि लक्ष्मी भंडागारे द्रव्य सत्रुट तदा क पूरयिष्यति । यदि सत्पुरुष उचित रहित तदा क शिक्षा दास्यति ॥

यदि बृहस्पतिर्मतिहीनस्तदा को मति दास्यति।
यदि पृथ्वी कंपते तदा क. स्तभः।
यदि नभः स्फुटति तदा की दग् रेहरा।
यदि पुत्रो भक्ति न विधास्यति तदा को विधास्यति।
यदि शिष्यो विनय न करिष्यति तदा कः कर्त्ता।
यदि सत्पुरुष उपकार रहितस्तदा कः शिष्या (त्ता) दास्यति ।।३४।। जो.

(२८) इनकी त्रुटि इनसे पूरी नहीं हो सकती

द्राक्षा तणी[१] आकाक्षा, किसिउ महूडे फीटइ।
शर्करानी श्रद्धा किं गुलि पूजइ।
अमृत काजि किं काजी पीजइ।
आंबा तणउ डोहलउ कि आलीए पूजइ।
कस्तूरी वान[२] किं काजलि कीजइ।
इन्द्र नीलमणि काजि[३] कि काचु लीजइ।
वल्लभ माणुस तणो उमाहउं किसिइ अनेरइ पूजइ।
(११६ जो०)

(२६) अंत (सीमा)

कलशांत प्रासाद, गजान्त लक्ष्मी, ध्वजांत धर्म।
नरकांत राज्य, गोरसांत भोज्य।
धघनांत व्यापार, हारांत[१] शृङ्गार।
व्यलीकांत, स्नेह, कलहांत गेह।
क्षय रोगान्त देह, शरत्कालांत मेह ।।२३।। जो.०

---

(१) नी २ नू काज ३ नइ

(पु० प्रति) १—हीरात

"वियोगात स्नेह" इत्यादि जाणनो।

प्रत्यतइ मे पाठ अधिक मिलता है।

अंत सीम (३०) अंत (२)

कल शान्त प्रासादु, राज सभान्त वादु ।
प्रवासान्त स्नेह, नामान्त केवली ।
स्वर्णान्तु शृङ्गार आन्त गुणितु,
नर्कान्त पठितु पदान्त दुर्जन स्नेह,
गजान्त लक्ष्मी, नायकान्त युद्ध,
हट्टान्त व्यवहार कसवटात स्वर्ण ॥१०१॥ जै०

(३१) गुण प्रधानता

समुद्रच्चद्र इव कृमिकुला दुकूल मिव ।
उपलात्सुवर्णमिव, गो रोम तो दुर्वावित्[1] ।
पंकात्ताम रसमिव, गोमया दिंदीवृरमिव ।
काष्ठ कोटरात् वह्निरिव, नाग फणादिव मणिः ।
गो पित्ततो रोचनावत्, चद्रकांतादमृतवत् ।
मृगात्कसतूरी केव, द्राक्षाया इव माधुर्य ।
शर्करात इव पित्तोपशमः, चंदनादिव शैत्यं ।
मंजिष्ठाया इव रागः, मेघादिव विद्युत् ।
तथा सर्वोपि जनो गुणैरेव ख्यातिमान भवति ननतु कुले ।
शील प्रधानं न कुल प्रधान,
कुलेन किं शील विवर्जितेन,
बहवो नरा[2] नीच कुलेषु जाता,
स्वर्ग गती शीलमुपास्य धीरा ॥ १ ॥
गौरवं लभते लोके नीच जातोपि सद्‌गुणैः ।
सौरभ्यात्कस्य नाभीष्टा कस्तूरी मृग नाभिजा ॥ ६२ ॥ जो०

(३२) संग से वृद्धि (१)

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते । इंदु दर्शनने समुद्र । शृंगारेण रागः । विनयेनगुणाः । दानेनकीर्तिः । उद्यमेन श्रीः । सत्येन धर्मः । पालनेन उद्यानं । अभ्यासेन विद्या ।

---

१. दुर्वा, दूर्वा २. बहुवोन न+चदनादि वाशैत्यं ।

न्यायेन राज्य । उचितेन महत्त्वं । औदार्येण प्रभुत्व । क्षमया तपः । पूर्ववायुनाः जलदः । वृष्टिभिर्धान्यानि । घृताहुत्या वह्निः । भोजनेन शरीर । वर्षाकालेन नदी । लोभेन लोभः । ताडनेन कर्णौ । पुत्रदर्शनेन हर्ष । मित्रदर्शनेनाह्लाद । जिन दर्शनेन पुण्यवर्द्धते । सर्वत्र संबधः ।

दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते । तृणै वैश्वानरः । नीचसगेन दुःशीलता । उपेक्षया रिपुः । कण्डूयनेन कण्डूः । असंतोषेण तृष्णा । व्यसनेन विषयाः । निंदया पापं । प्रवासेन राजा । विरहेण रात्रि । शोकेन दुख । ज्वरो घृतेन । सर्वत्र संबंध ।

(३३) संग से वृद्धि (२)

सुवचने प्रीति वाधे, दुर्वचनें कलहो वाधे ।
नीच दर्शनें कुशीलता वाधे, वेरी करी दुष्टता वाधे ।
अपथ्ये रोग वाधे, व्यसनें विषय वाधे ।
न्याइ राज्य वाधे, विनयें गुण वाधे ।
दाने करी कीर्ति वाधे, उदार्यें प्रभुत्व वाधे ।
क्षमाइं तप वाधे, निर्दयें पाप वाधे ।
घृते ताव वाधे, तिम सत्यकरी विश्वास वाधे ।
इत्यादिक सगथी वाधवुं जाणवु ।

उद्यमें लक्ष्मी, सत्येकरीधर्म, वनमालाइकरी वन, शृंगारें राग वाधें, भोजने करी शरीर, व्यापारे धन वाधे, जल पूरे नदी वाधे, लाभे लोभ वाधे, घृते वह्नि वाधे इत्यादि जाणवो ।

(३४) संग से वृद्धि (३)

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते, दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते ।
नीच दर्शनेन कुशीलता, उपेक्षया अरि कुटुंब ।
अपथ्येन रोगोवर्द्धते, कण्डूयनेन कण्डूवर्द्धते ।
असतोषेन तृष्णा, व्यसनैर्विषयाः, निंदया पाप ।
घृतेन ज्वरोवर्द्धते, सत्समाचारेण विश्वासो वर्द्धते ।
अभ्यासेन विद्या, न्यायेन राज्य ।
विनयेन गुणाः, दानेन कीर्त्ति ।

औचित्येन महत्त्व, औदार्येण प्रभुत्व ।
क्षमया तपो वर्द्धते, उद्यमेन श्री वर्द्धते ।
सत्येन धर्मो वर्द्धते, पालनेनोद्यानं वर्द्धते ।
चन्द्र दर्शनेन समुद्रो वर्द्धते, शृंगारेण रागो वर्द्धते ।
पूर्व वायुना जलदो वर्द्धते, वृष्टि भिर्धान्यानि ।
घृताहुत्या वह्नि वर्द्धते, भोजनेन शरीर ।
जल पूरेण नदी, लाभेन लोभो वर्द्धते । (३६ जो०)

(३५) विनाश (१)

तप क्रोधे विणसे, सनेह विरहे विणसे ।
व्यवहार अविश्वासे विणसे, गर्वइ गुण नासे ।
धान्य अवरसणे नासे, रूप दूर्भाग्ये नासे ।
भोजन तेले नासे, सरीर अयत्ने नासे ।
तिम धर्म प्रमादे नासे, इत्यादिक जाणवा ॥ पू० ॥

(३६) विनाश (२)

तप क्रोधेन विनश्यति, स्नेहो विरहेण विनश्यति ।
व्यवहारो अविश्वासेन विनश्यति, गुणा गर्वेण विनश्यति ।
कुल स्त्री अरक्षणेन विनश्यति, धान्यं अवर्षणेन विनश्यति ।
रूप दुर्भाग्येन विनश्यति, भोजनं तैलेन विनश्यति ।
शरीरं अयत्नेन विनश्यति, धर्मस्तथा प्रमादेन विनश्यति । ३७। जो०

(३७) किससे किसका विनाश—३ इणां विना इणांरो विनाश

अनभ्यासेन विद्या नश्यति, प्रमादेन द्रव्य नश्यति ।
दुर्वचनेन मैत्री नश्यति, लोभेन विवेको नश्यति ।
अनौचित्येन महत्वं नश्यति, अन्यायेन कीर्त्तिर्नश्यति ।
कुसंगेन धर्मो नश्यति, आलायेन कुलस्त्रीत्वं नश्यति ।
अनायकेन सैन्यं नश्यति । ३२ जो०

(३८) विनाश—४

जिमि विलवइ विणसइ काज, कुप्रधानइ विणसइ राज ।
अणबोल्या विणसइ व्याज, कसतूरी विणसइ प्याज ।
पडखि विणसइ दान कट विण विणसइ गान ।
लूअइ विणसइ पान, लूण विण विणसइ धान ।
कुमरणइ विणसइ अवसानु, व्याधइ विणसइ सुखान ।
पिशुनइ विणसइ राज सनमान, कूसगत विणसइ संतान
दवानल विणसइ उद्यान, आर्त्तइ विणसइ ध्यान ।
कुपडिनइ विणसइ छात्र, त्वग्नि विणसइ गात्र ।
वृद्धइ विणसइ प्रसाद, सिंदूरइ विणसइ साद ।
वेगइ विणसइ नेत्र, तीडइ विणसइ सेत्र ।
विषप्रयोगि विणसइ रसवती, पाक चमडोये विणसइ कणक वाक ।
कुव्यसनइ विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसाअइ विणसइ सद्धर्म ।
इति विनास वाक्यानि । कु०

(३९) इनके विना ये नहीं (१)

गुरु विना वाट नहीं, द्रव्य विना हाट नहीं ।।
सूतार विना खाट नहीं, सगा विना त्राट नहीं ।।
काष्ठ विना पाट नहीं, घात विना काट नहीं ।।
कुंभार विना माट नहीं, सोनार विना घाट नहीं ।।
माया विना ठाट नहीं, बाजा विना नाट नहीं ।।
जव विना वाट नहीं, सोग विना उचाट नहीं ।।
स्त्री विना पुत्र नहीं, रू विना सूत्र नहीं ।।
ग्राम विना सीम नहीं, मन विना नीम नहीं ।।
धन विना नर नहीं, मा विना पीहर नहीं ।।
दान विना जस नहीं इक्षु विना रस नहीं ।।
आकश विना मेह नहीं, बांधव विना स्नेह नहीं ।।
दरसन विना सिद्धि नहीं, पुण्य विना रिद्धि नहीं ।।
झाड विना साखा नहीं, रोग विना राखा नहीं ।।
सील विना धर्म नहीं, पाप विना कर्म नहीं ।

सूर्य विना तेज नहीं, परीणि विना हेज नहीं ।।
भणया विना मर्म नहीं, कुल विना सर्म[२] नहीं ।।
तिम दया विना धर्म नहीं ।

(४०) इनके विना ये नहीं (२)

पुण्य विना सुख नहि, अग्नि विना धूमो नही ।
वीज विना अंकुरोद्गमो न, सूर्य विना दिवसो न ।
सुपुत्र विना कुलं न, गुरुपदेश विना विद्या न ।
भाव सिद्धि विना धर्मो न, धन विना प्रभुत्वं न ।
दान विना कीर्त्ति न, भोजन विना तृप्ति न ।
वीतरागं विना मुक्ति न, साहस विना सिद्धि न ।
जल विना पावित्र्यं न, उद्यम विना धनं न ।
कुलागना विना गृहं न, वृष्टिर्विना सुभिक्षं नही ।
धर्म्मेण विणा जइ चिंतियाइ, ।। (६५ जो०)

(४१) थोड़े के लिए अधिक विनाश मत कर

काच खड कारणि म नीगमि चिंतामणि
वाटी कारणि अरहट्ट म वीकणि
अंकार[३] कारिणि कल्पवृक्ष म धारि
कागिणी कारणि कोटि म हारि
कीलिका[४] कारणि देवकुल म चालि
विषय सुख कारिणि मानुषउ[५] जन्म म हारि+ ।। पु. अ.

(४२) अल्प के लिए बहुत का नाश (२)

अल्प के लिये बहुत का नाश
जुको जिन धर्म लही प्रमाद करइ ।
ते जाणे ठीकरी कारणि अमृत कु म फोडइ,
निष्कारण आजन्म तणउ स्नेह त्रोडइ ।

---

१ सर्म २ गर्व । ३ अ कार वदि ४ खीली ५ मानखड
+"कोचिकूवदि ऋद्धि च इउ दासत्तण अहिलसइ
मुद्द चिंतारयण, कायमणि कोवगि ग्हेर ।।
उक्त पाठ एक अन्य प्रति में अधिक मिलता है ।

तेम० कामधेनु अलीढी[1] मेल्हइ,
चिंतामणि रत्न आवंतउं पाय पेखइ।
कल्पद्रुम आपणा घर तउ उन्मूलइ,
प्रवहण मेल्ही आपस पउं समुद्र माहि बोळइ।
ते सतु० सोना तणइ कारणि पित्तल तोलइ,
अमृत तणी आस लगइ विस घोलइ। ७। जो.

(४३) थोड़े के लिए अधिक विनाश (३)

ठीकिरि कारणु कोइ काम कुंभु फोड़इ, निष्कारण[2] कोइ आत्म स्नेह तोडइ
कामधेनु कोइ ढीली मेल्हइ, चिन्तामणि कोइ हाथी पेल्हइ
कल्पद्रुम कोइ उन्मूलि नाखइ[3] लक्ष्मी आवती न कोइ राखइ
जिन धर्म लही कोइ प्रमाद सेवइ[4]। पु. अ.

(४४) अति (१)

निरमलन ते नीठवानइ, अतिघणु मार ते धीठवानइ॥
अतिघणुं नेह ते त्रुटिवानइ, अतिछणुं विलोइवु ते फूटिवानइ॥
अति घणु खाइवु टिवानइ, अतिघणुं ढील ते छूटिवानइ॥ (सू)
अतिघणु तानिवुं त्रुटिवानइ, खड भडइ चोर ते फाटिवानइ॥
अतिघणुं गरथ ते खाटिवानइ, अति बुरी बातते दाटिवानइ॥
इति वचनानि॥ कु.

(४५) अति (२)

अति ताणिउ त्रुटइ, अति भरिउ फूटइ।
अति लइउ वाडि फडइ, अति माथिउं काल कूट हुइ।
अति चाविउं कूचा थाइ।

(४६) करने में असमर्थ

छीतरि छासि[5] केतलउं पाणिउ खमइ[6]
पातलि छाया केतलउ आतप[7] गमइ।
कातरु केतलु रणांगणि जूझइ।
निरुक्खरु केतलु कहिउं बूझइ।

१–अलाढी २ निष्कारणि, ३ लाखइ ४ राचइ ५. छिद्रीच्छासी, छीदरी ६ सहइ
७ नीगमइ।

कृपणि केतलु दानु दीजइ ।
अपरोषि केतलु तपु कीजइ ।
आदि केतलु तूरु वाजइ ।
पाछिलउ मेहु केतिलउ गाजइ ।
तिणि प्रकारि कारिमउ नेहु केतलउ छाजइ (पु० अ०)

(४७) करने में असमर्थ २

छीदरी छासि वि पाणी न खमंइ ।
पातली छाया केतलउ आतप गमइं ।
आढकइं केतउ वाजइ, कृपण पुरूषि केतउं दीजइ ।
गर्दभ केतउं वूझइ, कातर केतउं झूझइ ।
वाझि गाइ केतउं दूझइ, समुद्रपाणी केतउ पीजइ ।
दुर्जन केतउ वचनि लीजइ, पापी घणे उंपदेशे तिम न भीजइ ।
स्वभावोनोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा ।
संतप्तान्यपि तोयानि पुनर्गच्छन्ति शीतताम् ॥ १-१ जे०
स्वभाव अपरिवर्तन दुग्ध धौतोपि काकः किं हसायते । सुपुष्टो अश्वा किं सिंहायते । सुष्टु अचरित्तोपि खलः किम श्वायते । सुघटितोपि काचः कि वैडूर्य मणि लीला वहति । इक्षु रसैः सिक्तोपि निंवः किं द्राक्षा फलानि प्रसते । सम्यग् उत्तेजितापि । री री किं सुवर्णच्छाया विभर्ति । सु सस्कृता अपि यवाः किं शालि लीला मा कालयंति । सुपूजितोपि खलः किं सज्जनायते । जलपूर्णोपि पल्वलः किं समुद्रायते ॥ ॥ छु० पु० ॥

(४८) बराबरी कैसे करेगा

चद्रूप चरित्रोपि दुर्जन एव, दुग्धधौतोपि काकः किं हंसायते ।
सुपुष्टोपि श्वायते, इक्षुरस सिक्तोपिनिंवः किमुद्राक्षयते ।
सुष्टु उपचरि तोपि खरः किमश्व लीलां विभर्त्ति ।
सु श्रृंगारिनो पि मयुः किमु गज साम्यं लभते ।
सुष्टु उत्तजितोपि री री सुवर्णच्छायां विभर्त्ति ।
गंगाजल स्नापितोपि मार्जार किमु भगवच्छुचिर्भवति ।
सुधौतमपि सुराभाडं किं पवित्रतामियर्त्ति । ४० । जो०

(५०) अधिकस्य सार्थकत्वम्

यदि शक्तवो बहव स्ततः किं समुद्रे प्रक्षेपणीया।
यदि तैल बहु ततः किं पर्वता लेपणीया।
यदि बीज घन[1] ततः किं ऊषरे वपनीय[2]।
यदि सुवर्णं बहु ततः किं गवा शृंखला कार्या।
यदि चन्दन बहु ततः कपाटं कार्यं[3]।
यदि दुग्ध बहु ततः किं सर्पाय देयं[4]।
यदि घनानि रत्नानि ततः किं कउद्दापनीया[5]। उ०

(५१) अधिक होने पर भी व्यर्थ खोने को नहीं होता

सत्पुरुष घणी हुई लक्ष्मी।
सुपात्र इ हीज माहि वावरइ, किंतु न जिहा तिहा सर्वथापि न नाखइ।
जउ किमइ घणा सातू, तउ किसउ समुद्र माहि घातिवा।
जउ घणउं तेल, तउ किसउं पर्वत चोपडवा।
जउ घणउ बीज, तउ किसउं ऊखरि वाविवउं।
जइ घणइ सुवर्ण, तउ किसउ साकल करावबी।
जउ घणउं दुग्ध, तउ किसउ सर्प पाइवउ।
जउ घणा गजेन्द्र, तउ किसउ भार वाहविवउ ॥११ जो०

(५२) विनाश करके विचार करना

प्रथमं शिरच्छित्वा पश्चादग चुंबनं।
प्रथमं गृह प्रज्वाल्य तस्यैव गृहस्य कुशल वार्ता पृच्छनं।
पर प्राण हरण पश्चादनुशोचनं।
पदभ्या मीनान्मारयति मुखे वेद वचनं ब्रूते। सू०
यथा स्वयं समुद्रे जलानि स्वय मेरकल्पद्रुमोद्गमः।
जले पावित्र्यं लक्ष्म्याः सौभाग्यं[6] तथा स्वयं पुण्यवंता सर्वांगे सदयः।
१०३ जो०

---

१ बहु। २ क्षेप्य। ३. युग्म। ४ स्पेक्षेपणीय। ५. काकोड्डायेनेन।
+यदि गजा बहवस्तदा किं इंधनाहरेण प्रयोज्या ॥छा॥ एह दान समस्त प्रधान ॥पु०॥ पु० प्रति में उक्त पाठ अधिक मिलता है।
६. इसके बाद। स्वयक कुमेरणा स्वयं कपूरे सौभाग्यं।

(५३) अंतर

मिथ्यात्व सम्यकत्व जिम अंतर
सज्जन दुर्जन जिम अतर
सुख दुख ने जिम अंतर
पुण्य पापने तिम अंतर,
छासि दूध ने जिम अंतर,
कपूर लवण ने जिम अतर
करतूरी कज्जल जिम अतर
कुकुं केसर जिम अंतर
सुवर्ण पीतल जिम अतर
गज उंटनें अंतर
आंब नींब ने जिम अतर,
कइर कल्पद्रुम ने जिम अन्तर,
समुद्र कूप ने जिम अंतर,
खीर कांजिने जिम अतर
कथिर रुपाने जिम अंतर
तिम परस्पर अंतर जाणवो ॥ पू०

(५४) महदन्तर (२)

मिथ्यात्व सम्यक्त्वयोर्महदंतरं, सुजम दुर्जनयोर्मह० ।
सुखदु:खयोर्महदन्तर, पुण्य पापयोर्महदंतरं ।
छाया तपयोर्मह०, कर्पूर लवणयोर्मह० ।
कस्तूरिका अंजनयोर्मह०, कुंकम केसरयोर्मह० ।
सुवर्ण पित्तलयोर्मह०, गजोष्ट्रयोर्मह० ।
आम्र निंबयोर्मह०, करीर कल्पद्रुमयोर्मह० ।
सूर्य खद्योतयोर्मह०, समुद्र कूपयोर्मह० ।
क्षीर काजिकयोर्मह०, रूपक टंकक सुवर्णयोर्मह० । २० । जो०

(५५) अंतर (३)

जेवउ अंतरु मोक्ष नइ ससारु, कृपण नइं उदारु, ।
शोकु नइ उच्छव, शालि नइं कोद्रव ।
सम्मान नइ परिभव, मेरु नइ सरिसव ।

साचउ नइं कूड़उ, समुद्र नइ कूअउ ।
लाख नइ रूपउ, राम नइ रावण ।
राणी नइ दासि, आछण नइ छासि ।
स्वर्ण नइ पीतलु, स्वर्ग नइ भूतलु ।
आदित्य नइं खजूयउ, राय नइ राकु ।
नक्षत्र नइ असशाकु, आतप नइ छाया ।
तेवडउ अतरु स्वभाव नइ माया ॥ ८७ ॥ जै०

आंतरा वर्णक

किहा मेरु, किहा सर्षप । किहा राम, किहां रावण ।
किहा नूपुर, किहा दामण । किहा सीह, किहा सिआल ।
किहा सुवर्ण, किहा इंगाल । किहा कर्पूर, किहा कर्पास ।
किहा सामी, किहा दास । किहा ग्राम, किहां रुउ । किहां सागर, किहा कुउ ।
किहा सामो, किहा सालि । किहा मुगदालि, किहा वल्लदालि ।
किहा सुपात्रदान, किहा मनः प्रधान ॥ छ ॥ पु०
जेवडउ अंतर ग्राम नइ रुआ, जेवडउ अंतर समुद्र नइ कुआ ।
जेवडउ अंतर राम रावण, जेवडा अंतर लाडू लवण ।
जेवडा अतर साकर खाड, जेवडा अंतर खडी खांड ।
जेवडा अंतर सीआल नइ सीह, जेवडा अतर गुल खल ।
जेवडा अतर पर्वत स्थल, जेवडा अतर सुवर्ण लोह ।
जेवडा अंतर तरुण वृद्ध, जेवडा अंतर अकिंचन समृद्ध ।
जेवडा अतर पडित मूर्ख, जेवडा अतर प्रसाद पीडहर ।
जेवड़ा अंतर पागड़ पाघ, जेवडउ अतर हरिण नइं वाघ ॥ छ ॥
किहा मेरु लक्ष योजन प्रमाण, किहा परमाणु ।
किहां क्षीर सागर, किहा लवण सागर । किहा काला गुरु किहा हीरा गुरु ।
किहा कल्पतरु, किहा अत्र तरु । किहा ताम्रपर्णी नदी प्रदेश,
किहा मरु देश । किहां उच्चैःश्रवा तुरंगम सार, किहा टार ।
किहा मुक्ताफल, किहां शुक्तिका शकल ॥ छ ॥ पु०

(५७) अंतर (५)

जेवडो अतर मेरु अने सरसिव ।
जेवडो माननें अपमान । जे० लोह अनें कचन ॥
जे० रामनें रावण । जे० गर्दभनें ऐरावण ।
जे० हाथिनें ऊंट । जे० सीहनें सीयाल ।

जे० गाइनें नोलीयो ।
जे० आंब[1] नें नींबोलियो ।
जे० राणीनें दासी, जे० दूधनें छासि,
जे० [2]गोल नें खल, जे० गरुड नें घूअड[3]
जे० सुसील नें फूअड, जे० गाय नें छाली
जे० बहिन नें साली
जे० दीवाली नें होली, जे० वहू अने गोली ।
जे० हंस नें काग, जे अलसीया नें नाग ।
जे० वृद्ध नें बाल, जे० मल्लाखाडा नें पोसाल ।
जेहवो अंतर जीवनें काया, जे० मारि नें ।
जे० रत्न नै काकरै, जे० भिखारी नैं राजा
जे० धर्म नइ अधर्म, जे० शिव नै बैन ।
दयातेहवोअंतरजाणवो पू०.

(५८) अंतर (६)

जेवडउ अंतर मेरु अनइ सरसव ।
जेवडउ अंतर मान अनइ परिभव ।

जेवड़उ अंतर लोह अनइ कंचन, जेवडउ अंतर राम अनइ रावण ।
जेवड़उ अंतर भइंसा अनइं एरावण ।
जेवडउ अंतर हाथि अनइ ऊंट,
जेवडउ अंतर पाघरसी अनइ खूंट ।
जेवडउ अंतर सींह अनइ सीआल,
जेवडउ अंतर गोल अनइ विआल ।
जेवडउ अंतर राणी अनइ दासी, जेवड़उ अंतर दुध नइ छासि ।
जेवडउ अंतर लूण अनइ कपूर, जेवडउ अंतर खजुआ नइ सूर ।
जेवड़उ अंतर पर्वत्त नइ स्थल, जेवडउ अंतर गुल नइ खल ।
जेवड़उ अंतर गरुड़ अनइ घूअड़, जेवड़उ अंतर फूटरसी नइ फूहडि ।
जेवडउ अंतर गाअ अने छाली, जेवडउ अंतर वहिन नइ साली ।
जेवड़उ अंतर दीवासा नइ दीवाली, जेवड़उ अंतर पुण्यवंत नइ हाली ।
जेवड़उ अंतर हंस नइ काग, जेवडउ अंतर अलसिया[4] नइ नाग ।
जेवडउ अंतर वृद्ध नइ बाल, जेवडउ अंतर मल्लाखाडा नइ पोसाल ।
जेवड़उ अंतर जीव नइ काया, जेवडउ अंतर मारि नइं दया ।

(१६७ नो०)

---

[1] नोकलि पेलीवाट २. लोकमा ३. आवे नांव । ४ अलसला ।

(५८) अन्तरा (७)

जेवड अंतर मोक्षनइ ससार, कृपणनइ उदार ॥
शोक नइ उच्छव, शालिनइ कोद्रव ॥
सन्सानिनइ परभव, मेरुनइ सरसव ॥
साचिनइ कूड, तेजन तुरी ने धूड ॥
रामनइ रावण, सुमत्रनइ कामण ॥
रावणनइ दासि, दूधनइ छासि ॥
स्वर्णनइ पीतल, स्वर्ग नइ भूतल ॥
रायनइ राक, मसकनइ वांक ॥
नक्षत्रनइ शशाक, तोलउनइ टाक ॥
आतपनइ छाया, लुभावीनइ माया ॥
आदित्यनइ षजूअउ, वइरागीनउ जूअउ ॥
लाषनइ रूअउ, समुद्रनइ कूअउ ॥
एवडउ अंतर हूअउ ॥

इति अंतरावर्णन ॥ कु०

(६०) परीक्षा

दान दुर्भिक्षे परीक्षते, सुवर्णं कषपट्टे परीक्षते ।
पौरुष रणे, वृषभ धौरेयत्व पके ।
वाग्मिता पर सभाया, परीष साहसं दुर्दशायां परीक्षते ।
कुमित्रं आपदि प०, सन्मित्र व्यसनावस्थाया प० ।
पुत्रत्व वृद्धत्वे प०, भार्या सपत्नी समागमे निर्द्धनत्वे च परीक्षते ।
विनयोच्चये शिष्यः परी०, वाववत्व पृथक् भावे परी० ।
तपस्वित्व क्रोधे परी०, ज्ञान निरहकार त्वे परी०
तथा धर्मोपि निर्दंभत्वे प० ।
यतः—तद्भोजन यन्मुनिदत्त शेष सा प्राज्ञता या न करोति पाप ।
तत्सौहृद यत्क्रियते परोक्षेदंभैर्विनायः क्रियते सधर्मः ॥ १८ । जो०

(६१) सहज वैर (१)

सहज वैरं, जल वैश्वानरयोः ।
देव दैत्ययोः, आखु[1] मार्जारयोः ।

---

१. सारमेय

सिंह गजयोः, गो व्याघ्रयोः
काक घूकयोः पंडित मुर्खयोः ।
सुजन दुर्जनयोः, विप्र वाचंयमयोः ।
सर्प नकुलयोः, महिप तुरगयोः ॥ ३३ । जो० +

(६२) सहज वैर (२)

जलनें अगनि प्रीति, देव दैत्य नें प्रीति ।
मुषक मार्जार ने प्रीति, सिंह गजने प्रीति, गो व्याघ्रने प्रीति
पंडित मूर्खनें प्रीति सजन दुर्जनने प्रीति ॥
सर्प नोलनें प्रीति, सौक सौकनें प्रीति ।
महिप तुरंगने प्रीति ॥
इत्यादिक अमेल जाणवो । पू०

(६३) ॥ गुण के साथ दोष भी रहता है ॥

जिहा गुरुआ[1] तिहा गाजणउ ।
जिहा कुलीन तिहां खापणउं ।
जिहां भाणउ[2] तिहा भउ[3] ।
जिहा झूझ तिहा खउ ।
जिहा चोरी तिहा टोरी ।
जिहा चडणां, तिहा पडण ।
जिहा जन्म तिहां मरणु
जिहां रूलण तिहा भरण ।
जिहां रंग तिहां विरग ।
जिहा संयोग, तिहा वियोग ।
जिहा लाहउ तिहा छेहउ ।
जिहां रूसणउ, तिहा तूसणउं ॥ २८ । जो० +

+ 'पतिव्रता स्वैरण्यो.' पाठ पु० प्रति में अधिक है

१. गुरुत्व । २ भाग्यौति । ३. भय ।

+ जिस वास तिस्यु अभ्यास । जिसी दीख तिसी सीख । जिस्यु आहार तिस्यू ढकार । जिस्यु वावीइ तिस्यु लूणीइ । जिस्यु पुण्य पाप कीजइ तिस्यू भोगवीइ । यह पाठ पु० प्रति मे अधिक है ।

जत्र तत्र तां खोलानइ खान, जा जीमइजासक जान ता० भट्टारक भगवान ।
जां जी० तां गीत नइं गान, जा जी० ता तान नइ मान ।
जां जी० तां विवाहनइ जांन, जा जी० तो फोफल नइ पान ।
जा जी० ता । धर्म्म नइ ध्यान, जा जी० ता तपनइं उपधान ।
जां जी० ता, दरनइ मान ।
जा जी० ता लगिसरवाकान, जा जी० ता लगि मुहडइ वांन ।
जां पेट न पडइ रोटिया, ता सवे गल्ला खोटिया । ततः ।

(६५) काम कोई करे फल अन्य को मिले

दंताश्चर्वंति उपकारो रसनायाः ।
क्रमेलको भारं वहति उपकारः पुण्यवतां ।
खरश्चंदन वहति भोगश्च भोगिनामेव ।
लिखनं लेखकस्य फलमागम वेदिना ।
मृदगो घन घातान् सहते फल तु श्रोतृणां ।
युद्धयते सेवकाः पर जय. स्वामिन एव ।
वृक्षा फलति उपकारस्तु पाथाना ।
वर्षंति वारिदाः फल तु कर्षकाणा ।
कदर्यो पात्र वित्ताना भोगो भाग्यवताभवेत ।
दंता दलंति कष्ठेन[1] जिहवा गिलती लीलाया ॥ ६६ जी०

(६६) संसार

इस ससारि कवण एक आपदि नही आवी
बलि जेवडउ दानवु बाधउ
नलि जेवडउ राजा विहलिउ
पाडव जेवडा वनवासु हूयउ
वलदेव जेवडउ भाई विछोहु
रावण जेवडउ मृत्यु
माघ जेवडउ पडित भूख पाय सूआ
हनुमत एक कछोटड़ी
अनइ ससारि कोई सुखियउ नत्थि
शुक्र काणउ, सनीछरउ पागलउ

१. कष्टेन

चंद्रमा क्षयउ, समुद्र वडवानलि दह्यउ
रोहिणी गिरितणा कंद खणिया
कसं कीजइ कहा जाइयइ
आकास निरालवु, पातालि प्रवेश नहीं
मृत्युलोक असोच, वन सभय
समुद्र खारउ, इसउ जाणिउ धर्म कीजइ (पु आ०)

(६७) संसार के दो छोर

एगमा धवल मगल, बीजागमा कलह कदल।
एक गमा शोक, वीजी गमा विव्वोक।
एक गमा आनद, वीजा गमा आक्रद।
एक गमा कुतहलना[1] आरंभ, वीजा गमा झूझना[2] सरंभ।
एक गमा सस्नेह कोमलालाप वीजा गमा वियोग विप्रलाप।
एक गमा अद्भुत शृंगार, वी० सर्वस्वापहार।
एक गमा मादल ना धोंकार, वी० शोकना हाहाकार।
एक० शकना[3] ओंकार, वीजा० रोग तथा विकार।
एक० विद्वास नी गोष्ठी, वी० मद्यपना कल कल।
एक० वीणा तथा निनाद, वी० दुःख तनु विषाद।
एक० अद्वितीय रूप, वी० विभत्स कदर्य विरूप[4]।
एवं विध संसार, दुःख तणउ भंडार।
सर्वथापि असार जाणिवउ ।। १४ । जो०

(६८) ससार स्वरूप (२)

एक गामि धवलमंगल, वीजे गामे कलह कदल।
एक गामे आनन्द, वीजे गामे आक्रन्द।
एक गामे विचित्र क्रीडारंभ, वीजेगामे समरसरंभ।
एक गामे आलाप संलाप, वीजे गामे खावाना कलाप।
एक गामे मोटाहार, वीजे गामे रहिवाना उत्पाट।
एक गामे नवनवा शृंगार, वीजे गामे शोकना भडार।
एक गामे मादलना धोंकार, वीजे गामे रोवाना हाहाकार।
एक गामे शखना ऊकार, वीजे गामे रोवाना रोंकार।

---

१. विचित्र क्रियारभ। २ समर। ३. सरणना। ४. कुरूप।

एक गामे भलो आहार, बीजे गामे पाणीना विकार ।
एक गामे भला स्वरूप, बीजे गामे दीसें माहाकुरूप ।
एक गामे विविधना सुख, बीजे गामे अनतना दुख ।
एक गामे उत्तमनी शोभा, बीजे गामे नीचनी कुशोभा ।
एक गामे भलो बाजार, बीजे गामे दुःखना भंडार ।
एक गामि दीसे झलामल बीजे गामे महा हलाहल ।
एक गामे मोटा महल, बीजे गामे झुपडा माहि (पणि) खलभल ।[1]
इति संसार असार, महादुखदातार इत्यादिक जाणवा । पू०

(६६) शरीर

शरीरु बाहिरि कुंकुम कस्तूरिका वासियइ,
अभ्यतरि अशुचि रसि विणासीचइ ।
सरीरु बाहिरि[2] पहिरइ सुवरण[3] घडिउ,
अभ्यतंरि अस्थि खडे जडिउ ।
सरीरु बाहिरु श्रीखंडि गोलामि अभ्यगियइ,
अभ्यतरि रुधिर रसि रगियउ ।
सरीरु बाहिरि पाट्ट वस्त्र पहिराविइ,
आभ्यंतरु मामि पिण्डि भावियइ ।
मुख लीजइं सर्व सारु आहारु,
महानीसइ खाटउ उद्गारु ।
नासिका सुगंध गध प्रतिसरइ,
महापुणा सूगावणउ श्लेष्म नीसरइ ।
गानि साभलियइ मधुर गीत पटलु,
महा नीसरइ तउ पकु समानु मलु ।
लोचनि लगाड़िय स्निध कज्जलु,
महा नीसरइ पीहे सहितु जलु ।
कुडि खड़हडेवा मणी[4], आयुष्क तूटणा मणी[5] ।

पाठान्तर—१. इम २. बाह्य ३ सोनउ ४ ढामणी ५ त्रूटण

हंस तउ ऊडरा मएउ, इसउ असारु,
सरीर संयोग ईय ऊपरि ईमहि लोक व्यामोह करइ । † पु० अ०

(७०) अर्थ

सविहु परि समर्थ, अर्थ लगी महत्त्व । अर्थ नउ प्रभुत्त्व ।
जेह हुइं द्रव्य, तउ सविहु हुइ संसेव्य ।
द्रव्य लगी अणहूंता गुण, द्रव्य तउ मगलाइ जाइ अवगुण ।
द्रव्य लगी पूजइं आस, सहु कोई द्रव्य नु दासु ।
द्रव्याभ्वना विता करइं लोकु, द्रव्याद्य तउ वसइ वेगलउ शोकु ।
द्रव्य तउ उपरोधीइं वाका, द्रव्य नउ घणी बोलइ फांकां ।
सहू को सासहइ, अदत्तु हूतउ प्रतिष्ठा लहइ ।
इस्युद्रव्य ॥ ३२ ॥ जै०

(७१) द्रव्य की अशाश्वता

द्रव्य ऊपार्जिउ कुणहि नणउ शाश्वतउ न हुई ।
कुणहि नउ द्रव्य उपार्जिउ चोर हरइ [१] ।
कुणहि नउ द्रव्य राउलि उपगरइ [२] ।
कुण० द्रव्य अग्नि उपद्रवइ ।
कुण० समुद्रमाहि द्रवइ ।
कुणहिनउ नट विट फेडइ ।
कुणहि० खूंट खरड झगडइ त्रोडइ ।
कुण० द्रव्यि वाट पडइ कुण० भुहिं सडइ ।
कुणहइनउं रोलि जाइ, कुण ० वाणउत्र खाइ ।
कुणहइनउं साझइ [३] त्रूटइ, कुण० द्रव्य गुणि [४] फूटइ ।
इसी परिद्रव्य ऊपार्जिउं शाश्वततउ कुणहिनउं न हुइं ॥ ८२ ॥ जो०

(७२) धनोपार्जन रक्षा

वड़ कष्टि धनुऊपार्जियइ
कन्नणु हल खेड़ि, सयर तणउ ठाउ फेडी धनु ऊपार्जइ

---

† इद शरीर कस्तूरी कर्पूर प्रभृतीन्यपि
दूप यत्येच पाथोद पयान्मूत्रट भूरि च ॥
१ उपगरइ २ उपहरिहि ३ साझइ ४. गुणे, गूणि

कवणु हाट तणउ पासउ मांडी आपणपउ धर्महूतउ[१] खाडिउ धन ऊपार्जइ
कवणु सीय[२] तापु वाउ सहिउ देसांतर रहिउ[३] धनु ऊपार्जइ
कवणु समुद्र माहि थाइ ऊपरि तिरीइउ धनु ऊपार्जइ
कवणु पर घरि काम करिउ छाण पूंजउ ऊधरी धनु ऊपार्जइ
कवणु आठु पाउ सचिउ आपणउ पेटुवंचिउ धनु ऊपार्जइ
आपुणि जइ सुपात्रि न वेचइ तउ अप्रमाणु
नाथ धन शास्वतु, कवणहइ उपार्जियउतं चोर हरइ
कवणहइ राणे उपगरइ
कवणहइ अग्नि उपद्रव करइ
कवणहइ विटु० नाटु०विद्रवइ
कवणहइ झगड़इ जाइ
कवणहइ वाणतु खाइ

(७३) अथ लक्ष्मी चचलत्वं

जिसउ पिप्पलु तणउ पत्र[४], जिसउ हाथीया[५] तणउ कर्णु[६] ।
जिसी बिहुं प्रहर तणी छाया, जिसी रावण तणी माया ।
जिसउ संध्या तणउ रागु, जिसउ दुर्जन तणु विरागु ।
जिसउ तरुणी तणउ कटाक्ष विक्षेपु, जिसउ संग्रामि[७] कातर तणउ आक्षेपु[८]
जिसउ वीज तणउ झलकार[९],
जिसुं इंद्रियाली तणउ इंद्रियालु, तिसउ विभवु आलमालु ॥

(७४) राजा के चंचलत्व की उपमा (२)

"अथ राजानें धर्म चचल" सारिषा
-जेहवो पीपलनोंपान, जिम कुंजरनो कान ।
जिम असतीनु मान, जिम अदातानुं दान ।
जेहवो अकंठीयानो कांन ।

---

१. सयर २ शीतवात ३ भमी
‡ अधिकपाठ—कुणहू परायइ घरि दाम कर्म करी छाण पूजेउ महतरि धरी द्रव्य ऊ०
कुणहू भूख त्रस सही मार्ग माहि रही द्रव्य ऊ०
कु० कूड कपट करी पापि आपणउ पिंड भरी द्रव्य ऊ०
कुणहू परायउ रण भाजी आपणउं पुण्य गांजी द्रव्य ऊ०
कुणहू भीरी भमाड़ी आपणउ सपरू विनडी द्रव्य ऊ०
४ पात, पर्ण ५. हस्ती ६. कान कर्ण ७. रण ८. विक्षेप ९. अलकलउ ।

जिसो सध्यानो राग, जिमो भ्रमरीनो पाग ।
जिसो माकडनो वइराग ।
जिसो विजलीनो स्यात्कार, जिमो पाइणिनोपान ।
जिसो पाणीनो टवको[1] जिसो लवा लीनी जीभनो लटको ।
जिसो खावानो गलको, जिसो पांणीनो खलको,
जिसो कागनो डोलो, जिसो समुद्रनो कल्लोल
तिसो राजा चचल जाणवो ॥ पू०

(७५) थोड़े समय के लिये—(३)

जिसिउ संध्या तणउ राग, पाणी तणउ माग ।
जि० इंद्रधनुष, जि० वातोद्धूत तूल पटल ।
जि० वाताहृ ताभ्र पटल ।
जि० का पुरुष ना बोल, जि० पोला जागी ढोल ।
जि० नदी तणउ वेगु, रात्रि पत्नीया नउ संयोगु ।
जि० हाथिया तणउ कान, ठाकुर नउ (रान) मान ।
जि० छोरडानउ दान जि० कंठहीन गान ।
जि० काला नी सान ।
जि० रानि रोइउ, दृष्टि वधनउ जोइउ ।
जि० सउणानउ राज, अण बाधिउ छाज ।
जि० पानी पाज, जिसिउ निरभाग्यनउ काज ।
जि० सुईनो धाडि, जवासानी वाडि ।
एणइ परि कुमाणसनी लक्ष्मी ।
अश्व तरीणा गर्भो दुर्जन मैत्री नियोगिनां लक्ष्मी ।
स्थूलत्व स्वयथुभवविना विकारेण न भवंति ॥ १०० जो०

अस्थायी व चंचल (७६)

नायका कटाक्ष विक्षेपवत् । विद्युल्लता विलासवत् ।
संध्या आडंबरवत् । वातां दोलित् कूलवत् । पवन प्रेखोलित ध्वजाग्रवत् ।
सज्जन कोपवत् । दुर्ज्जन मैत्रीवत् । वेश्या स्नेहवत् ।
गिरि नदी वेगवत् । गजकर्णवत् । शरत्काल मेघवत् । इंद्रचापवत ।
कादिशिक नयन मेखोन्मेखवत । हरिदा रागवत् । इंद्रजालवत् ।

---

१. ठबको

स्त्रीजन मानसवत् । वायु वेगवत् । मर्कट चेष्टितवत् ।
प्राणी गण जीवितवत्, कुशाग्र जल बिंदुवत् ।।छ।। पु०

(७७) क्षणिक चंचल

आभातणी छांह, कुपुरुप तणी वांह । आसाढ तणउ तूर, नदीतणउ पूर ।
राय तणउं प्रासाद, मर्कट तणउ विषाद ।
इन्द्रजालनउं पेखणउ रूप तणउ उठीगणउं ।
हरिद्रा तणउ रंग, दासी तणउं सग ।
आंबातणउ मउर, सीयाला तणउं प्रहर ।
गोढडा तणी वाट, पोइणा तणीसाट ।
पीपल नउं पान, रायउ धान ।
बडपण तणउं आयुं, ढोकुया तणउ पायउ, निगथ तणउं साटउं[1] ।
दीवानउ[2] तेज, मित्रनउ[3] हेज ।
कारटानउ भाग जमाई नउ लाग ।
मूर्खनउ पढ़िउ, जल कोसनउ मढ़िउ ।
उभां खरउ मोर, खासणउ चोर ।
ऊखरली खाट चद्रूउ, एजाणे पूरउ विगोउ ।
संध्यातणउ मेह, स्त्री तणउ नेह, तिसइ[4] लाभइ छेह ।

यतः

अग्नि[1] रायः[2] स्त्रियो[3] मूर्खाः[4] सर्पराज[5] कुलानि च[6] ।
नित्य यत्नेन सेव्यानि सद्यः प्राणि हाणि पट् । १८ जो०

(७८) चंचल (२)

अभ्रच्छाया वच्चंचल, दुर्जन प्रीति वच्चचल, तृणाग्नि वच्चचल,
स्थलजल वच्चंचल, वेश्या राग वच्चचल ।
कामिनी नयन विभ्रमवत् , विद्युल्लतावत् ।
संध्यासमय रागवत् , वाता दोलित पताका वत् ।
समुद्र कल्लोलवत् , सज्जन कोपवत् ।
गिरि नदी वेगवत् , करि कर्ण वेगवत् ।
शरत्काल मेघ इव, अभाग्यवता विभव इव ।
द्यूतकारालंकार वत् , पतंग रंगवत् ।

१ साट २ दीवाली ने ३ मात्रेई ४ तिमइ

चञ्चल वित्तं अतएव सुपोत्रे नियोज्यं । यतः---

उत्तम पत्त साहू मज्झिम पत्तं च सावया भणिया ।
अविरय सम्म दिठी जहन्न पत्त मुणेयव्वं ॥ १ ॥
व्याजेस्या द्विगुणं वित्त व्यवसाये चतुर्गुणं ।
क्षेत्रे शत गुणं प्रोक्तं, पात्रेनंत गुण पुनः ॥ २ ॥ ६२ जो० ।

(७६) चंचल वाक्य

जेहवउ चंचल कुजर नउ कान, पीपल नउ पान ।
सध्यानउ वान, दुहागणनउ मान ॥
विपहर नी छाया, रावणनी माया ॥
गोदतीनो वाट माटीनउ घाट ॥
रावनउ भ्रुउ, राकनउ भउ ॥
बादलनी छाह, कापुरुपनी बाह ॥
आढनउ तूर, पर्वताश्रिनदीनउ पूर ॥
वैद्यनउ पंडीगणउ, सूपडा नउ ठीगणउ ॥
इन्द्रजाल नउ पेषणउ, स्वाननउ धीवणउ ॥
छालीनउ ऊभ, स्त्रीनउ गूझ ॥
दासीनउ स्नेह, ऊन्हालू मेह ॥
ठारनउ त्रेह, धूलिनी वेह वेक्रीय देह, ॥
जेहवउ चचल बीजलीनउ झबकउ ॥ मधुबिंदुआ नउ टबकउ,
मन्त्रेईनउ हेज, जेहवौ खजूआ नउ तेज ।
पाणीतणौ तरंग, पतंगनउ रंग ॥
माकडनउ विषाद, रायनउ प्रसाद ॥
जिसी चंचल स्त्रीनीजाति, उन्हालू राति ॥
त्रिणानी आगि, दुर्जननउ राग ॥
जिसउ चंचल मन जिसउ चंचल परेवन ।
जेहवउ चंचल तुरंगम, तेहवउ चंचल घोर संसारनउ सगम ।

इति चंचल वाक्यानि ।

(८०) मन

मन[1] चपल चचल, देवताए पुण धरी न सकीयइं ।
क्षणि हिं जायइ सागरि, क्ष०[2] आगरि ।
क्षणहिं नदी-परि-सरि[3] क्ष० सरोवरि ।
क्षणहिं नगरि, क्षणहिंभ्रगरि[4] ।
क्षणहिं अंबरि, क्ष० भूधरि ।
क्षणहि पातालि[5], क्ष० कुद्दालि ।
क्षणहि भूतलि[6], क्ष० कुतूहलि[7] कुंभकार चक्रवत् [8] ।
मन एव मनुष्याणां कारण बंध मोक्षयोः ।
बंधस्तु विषया सगे मुक्तिर्निर्विषय मनः ॥ ८६ ॥ जो.

(८१) ससुराल की स्थिति

वच्छे सासुरा तणी इसी स्थिति नाणिवी ।
सुसरउ ऊवेषइ, जेठ नीचउ देखइ[9] ।
वर[10] पुण लडइ[11], देवर नडइ ।
जेठानी कुसइ, देअरानी हसइ ।
नणद नर-नरावइ, सासु काम करावइ । +

(८२) विशिष्ट पदार्थ

(१)

लीला तउ महेश्वर तणी, सृष्टि तउ ब्रह्मा तणी ।
प्रज्ञा तउ बृहस्पति तणी, प्रतिज्ञा तउ राम तणी ।
त्याग तउ पाधि पति तणउ, पवनवेग तउ हनुमत तणउ ।
मान तउ दुर्योधन तणउ , तेज तउ सूर्य तणउं ।
परिमल तउ पारिजात तणउ , निर्मलता तउ गंगा तणी ।
विवेकता तु नारायण तणी, बल तउ मुद्रिका वीर तणउ ।
सम्यक्त्व तउ श्रेणिक तणउ, ऋद्धि परिहारू तउ श्री शातिनाथ तणउ ।
अभय दानु तउ श्री शातिनाथ तणउ, शील तउ श्री स्थूलिभद्र तणउ ।

---

१. मनु दइवि २. क्षणिजाइ ३. द्वीपान्तरि ४ मशाटि ५. कुहिली ६. पातालोदरि ७. भूतलाभ्यतरि ८. तथा चक्र तणी परिफिरतउ अछइ ९. अवद्धेठइ १०. वरदतु ११. भिडइ + सुख कहाछइ (अधिक पाठ)

अलोभता वेर स्वामि तणी, प्रति बोधता जंबू स्वामि तणी ।
तपु तउ दृढ प्रहारि तणउ ।
अल्प देशना प्रतिबोधु तउचिलाती पुत्र तणउ, क्षमा गयसुकुमाल तणी ।
अति भोगता शालिभद्र तणी, अभिग्रह प्रतिपालना वंकचूल तणी ।
महा अर्थु तउ उघ पत तणउ, चउवीस जिणालय तउ अष्टापद तणउ ।
सिद्धि क्षेत्र तउ विमल गिरि तणउ, शास्त्र विचारणा हरिभद्र तणी ।
देव भक्ति प्रभावती तणी, द्यूत-व्यसन नल तणउ ।
मद्य व्यसन यादव तणउ, सत्य वचन कालिकाचार्य तणउं ।
अनुमोदना मृग तणी भावना इलाती पुत्र तणी ।
जैन प्रभावना विष्णु लती तणी, नदी वर्णना गगा तणी ।
स्नेह तउ लक्ष्मण तणउ, निस्नेहता नेमिनाथ तणी ।
जैन भक्ति राय कुमारपाल तणी, नगरी वर्णना लका तणी ।
राज वर्णना मलती तणी, श्री पुरुष वर्णना श्रीविष्णु तणी ।
राज वर्णना श्री राम तणी, काव्य वर्णना माघ पंडित तणी ।
त्रिंब निर्मलता कुमार विहार तणी, शीलु राजिमती तणउ ।
लब्धि श्री गौतम स्वामी तणी, दानु धन सार्थवाह तणउ ।
स्थिति ऋषभदेव तणी, शीलु सुदर्शन तणउ ।
शीलु सुनदा तणउ, पुण्य चंदन बाला तणउ ।
धर्म दया तणउं, गणधरता पुंडरीक तणी ।
बलु बाहुबलि तणउ, चक्रवर्त्ती पदवी भरतेश्वर तणी ।
बुद्धि अभय कुमार तणी, एवं विध नामा निसीम ॥९८॥ मु०

(८३) विशिष्ट पदार्थ (२)

(२)

साठीधान, पाटणी पान ।
आहेडीउ सणाहु, हथियार धनुहु ।
अगरिउ लाकड़ुं, ...।
सोरठी गाय, मलउसी जाइ ।
कस्मीरउं केसर, मरहठूं वेसर ।
पूर्व दिसिउ भाट, शवन तणउ पाट ।
मेघाडंबर छत्र, सिंघल उरउं पत्र ।

आवू तणउ देवड़ो, पाटण तणो सेवडो।
उजेणी तणु ढोर, अजयमेरु तणो मोर।
वाणारसीउ धूर्त्त, काश्यप गोत्र।
चंडाउलउ ठिगु, मालवीउ वगु।
नान्हा बोलो लाड उत्तरापंथउ चाड।
छत्रीस नाणा, त्रिणिसइ साठि क्रियाणा।

(स० २)

(३)

माणिक दडउ हस्ती, खुरसाणिउ घोड़उ।
मरुस्थली नउ ऊँट, दंडाहि नउ वलद।
भीमसेन नउ कपूर, जागडउं कुंकुम।
काकतुंडउ अगरु, दस[1] वधउ धूप।
सिंहलउ दीवउ हार, वावर कुलनी गनवडि।
गाजणी गोजी, वाणारसी काची।
खेडावहा चाउल[2], मालविउ माडउ।
पाडवसिंउं खाडउ, गूजरउ लोटउ।
आबूउ रोटउ, अवूउ[3] दही।
एउ वस्तुना आकरु। १५८। (स. १) (१५८ जो०)

(८५) विशेषताएँ (४)

प्रथम पिण्ड पाणी रौ, रूपौ तौ जावर रो, दरसण तौ परमेसर रो, ताड[4] मानसरोवर रो, हस्ती तो कजली वनरों, पदमनी सिंहलद्वीप री, चतुराई गुजरात[5] री, वासौ तौ हिन्दुस्थान रौ, स्वाद तो जीभ रो, मतो तो पंचो रो, खेती तो वाड री, घीणो तो भैंसरो +, देणो तो माथा रो, गालतो माता री, चूडौ दाँत रौ, विसवास गरो हथियार डाग रो, आदर माया रो, गढ लकारो, वाणी व्याकरण री ×, तिलक केसर रो, भगतवच्छल रो, वाजो नीसान रो, हटवाडो कटक रो, चोहटा भीड दिल्ली री, युद्ध जरासध रो, वाण अरजुन रो, गदा तो भीम री*,

१ दस। २ चउल। ३ आवूउ।

४ थाट। ५. ग्वालेर + हाट कोट को (विशेष) × कवित्त पिंगल को।

• मरणो महा पुरुष को, सभा इद्र की, ग्वालनद को, निद्रा कुंभकरण की, भेष वद्री को, सेव भगवत की (विशेष)।

* गाहड़ छत्री को, कूख कुता की, यौवन भानुमता को। मृग मडोवर को, ऊंट जालोर को।

ककण केदार रो, घोडी पाणी पथरी, पुरष पजात्र रो, माडा मालवारा, मेहतो मेवाड रा, राजा तो भोज; राणी तो दैमती, ढाल तो गैडारी, बरछी ऊमट री, कटारी सिकरोदावाट री, रूप तो कामदेव रो, तेज सूरज रो, अमृत चंद्रमा रो, ऋद्धि सिद्धि गणेश री, वड पिराग रो, चावल[1] कचरी बागड़ री, लूण[2] सैंधवरो, दया मारु खडरी, सहिर तो लाहौर, दरवाजा अहमदाबाद रा, छाली परबत राजरी, भैंस वडाणा री, बलद इडवी जात रो[3], वेटो तो कलवी[4] रो, धात तो कचन री, पुण्य परव रो, सत सीता रो, हूकडाइ जाट री, झगडो गूजर रो, चोरी थोरी वागरी मीणा री, बुद्धि तो मुगल महाजन री सदासुबुद्धि बतीरी, कुबुद्धि ब्राह्मण री, साचो हीयो धोबी गाडरी रो, भाजणो कायर रो, चोट गोली री, देवल आबु रो, पान मघीया रो, वाव सोलीर रा, वाग नवलखो, तमाखू सूरत री, दिन तो पुण्याइ रो, वार तो राजा रामचदरो। कौ०

(८६) अपने वर्ग में विशिष्ट पदार्थ

देव मध्यि इन्द्रः, तार मध्यि चन्द्रः।
पाखिया माहि हंस, जाति माहि चौलुक्य वंशः।
देश मध्यि मगध देशः, दर्शन मध्यि जैन वेसु।
तिर्यंच माहि सिंघु, धान्य माहि व्रीहि।
रागु माहि पंचम रागु, वाणी माहि तर्क वागु।
तेजस्वी माहि सहस्र किरणु, समुद्र माहि संयभू रमणु।
राय मध्यि श्री रामु, हाथिया माहि ऐरावणु।
घस्त्र माहि नेत्रु, काव माहि वेत्रु।

---

१. चोखा। २ वडाग। ३ काकरेची। ४ उलवी को।

पुन विशेष—

मेघ वद्री को। सेव भगवत की। गृदवडा वडाणारा। मसीत शकर की। माडणी राणपुर की। पीठ दिल्ली की। ऊचाइ मेरू पर्वत की। व्रत सील को। पर्व पजूसण को। पुहप चपा को। लिखियो विधना को। फल नालेर को। फूल कमल को। न्याय रामचद्र को। रूप कदर्प को। तेज सूरज को। दान कर्ण को। पर दुख कातर राजा विक्रम। नीर गगा को। जटा शकर की। सीत उत्तर खड को। राव भुगली की। राग केदारो। मेह भाद्रवा को। धर्म माहे धर्म दया। सेना चक्रवर्ती री। तीरथ सेत्रूंजो। बल तीर्थंकर री। सुख तो सतोष रो। बुद्धि अभय कुमाररी। रिद्धि शालि भद्र की। लबधि गोतम स्वामी री। केकन्नारो सौभाग्य। शास्त्र माहि सिद्धान्त। वाजित्र माहि भभान्त। (स. ४)

कला माहि गीतु, धातु माहि पीतु ।
सुगध माहि कस्तूरी, मृतिका माहि तूरी ।
नगरी माहि काती, पुष्प माहि जाती ।
रितु माहि हेमन्तु, तीर्थ माहि शत्रुजय ।
पर्वत माहि मेरु, वृक्ष माहि कल्पवृक्ष ।
रत्न माहि चिन्तामणि, नदी माहि गगा ।
तिमि धर्म माहि जिन धर्म्म ॥ ८५ ॥ पु०

(८७) श्रेष्ठतर

जिम पर्वत मध्य वर्णियइ मेरु,
तुरगम मध्य पंच वल्लहउ किसोरु ।
हाथिया मध्य ऐरावणु, दाणव मध्य रावणु ।
पुष्प मध्य कमलु, पाषाण मध्य स्फटिकोपलु ।
तिम अमुक मध्य अमुक । (पु० अ०)

(८७) गुण में विशिष्ट पदार्थ

न्याये रामः
सधाया चाणिक्यः
माने रावणः सुयोधने
सौर्य्ये राम सिंहौ ।
साहसे विक्रमादित्य जीमूत वाहनो ।
महसि मार्त्तण्डः
धीरत्वे रामः
शक्तौ कार्तिकेयः ।
विद्याया भारती,
वाचालुताया वृहस्पतिः
दाने कर्णः
मंगलदाने कल्पद्रुम कामधेनु ।
चिन्तामणि घटाट
···राव वज्रकुमारः जीमूतवाहनः
वाग्या वाल्मीकिः
कलासु चन्द्रः

सत्ये हरिश्चन्द्रः युधिष्ठिरः
भक्तौ लक्ष्मणः
स्थैर्ये मेरुः
विवेके बृहस्पतिः
कीर्त्तौ……
……या इन्द्रः
सौहार्दे सुग्रीवः
गांभीर्येऽब्धिः
सौभाग्ये कामः
दयायां युधिष्ठिरः
आज्ञाया लकेश्वरः
लावण्ये समुद्रः
उद्यमे रामः
गतौ राजहंसः वृषभश्च
स्वरे पिक वीणा।
केके वंश मधुकराः।
रूपे जयन्तः
अनल कूबरा
विनेय पुरुष नकुलाश्च ॥ १०२ ॥ (मु०)

(८८) अनुपमेय पदार्थ

(१)

गंगा समउ जल नहीं,
बाघन समउ हेज नहीं।
रवि समउं तेज नहीं।
अथवा—
मेघ समउं जल नहीं,
बाहु समउं बल नहीं।
अन्न समान हेज नहीं,
अग्नि समान तेज नहीं। ॥ ३५ ॥ स० १

(६१) भला क्या ?

सरसती समरुं सामणी, वाणी देह विगत्त ।
समरुं गणपति सुमति, वा समरुं सिव सगत्ति ।
सक्ति गुरु की भली, भगती मेरी भली ।
आण फेरी भली, अब वेरी भली ।
लूव लागी भली, रंग रागी भली ।
अंत भागी भली, जोति लागी भली ।
उक्त उठी भली, आई तूठी भली ।
मोहर बूठी भली, भरी मूठी भली ।
आस पूगी भली, मंग ऊगी भली ।
लाल लूंगी भली, रात चदरणी भली ।
पाग खागी भली, केसर रंगी भली ।
अग अंगी भली, चतुर चंगी भली ।
लाडी जाडी भली, भैंस पाडी भली ।
खेत वाड़ी भली, पंथ गाडी भली ।
घरा मेडी भली, तोरण तोडी भली ।
चचल चेडी भली, गंग नदी भली ।
मोत मोड़ी भली, ममता थोड़ी भली ।
जोवन जोड़ी भली, कछा घोडी भली ।
लोह लाठी भली, जरा नाठी भली ।
कर्म काठी भली, भ्रम माठो भली ।
बीज चमकी भली, सीत चमकी भली ।
घंट रणकी भली, तत भणकी भली ।
जूया वाजी भली, वहु लाजी भली ।
ऊनी भाजी भली, प्रीसी माजी भली ।
नोवत वाजी भली, जीत वाजी भली ।
रांणी राजी भली, देह साजो भली ।
कोया कीधी भली, नींद लीधी भली ।
रिद्ध सिद्ध लाधी भली, दवट दीधी भली ।
प्रीत वाधी भली, मोम साधी भली ।
रसवती ताजी भली, खीर खाधी भली ।

ऊची ताणी भली जुगत जाणी भली
मौन माणी भली ब्रह्मवाणी भली
अती तारहणी भली कीरत कैहणी भली
भोजन चासणी भली भरी वासणी भली
साख पाकी भली घात ताकी भली
बोल वाकी भली किरण मिलकी भली
मुड ललकी भली छाह ललकी भली
चूड खलकी भली जलेबी फीकी भली
धार घी की भली निरमल कीकी भली
चंदण टीकी भली कोयल बोली भली
गाठ खोली भली नली वसत तोली भली
जनस मोली भली दलि दीठी भली
गोठ मीठी भली मर्दन पीठी भली
नफर चीठी भली भाख फाटी भली
पहिल परणी भली घरे घरणी भली
धर्म करणी भली पुन्य तरणी भली
देव गुरु मांन्या भला गुण छानी भली
जोध जुवानी भली पाय पानी भली
ब्रह्म जनोई भली धोती धोई भली
जोति जोई भली सहरि सीरोही भली
चोरी राते भली झूठी वातें भली
पात न्याते भली नाची नोते भउ हाडी डोई हाथे भली
पाघ माथे भली वैर वाथे भली
माला मनकी भली सेव सिव की भली
धाख धन की भली सूरत अनकी भली
गरढां वडाई भली चदन आडांई भली
कड़ाही चढ़ाई भली वापडे लडाई भली
भवानी मेटी भली फिकर मेटी भली
कमर पेटी भली बाल वेरी भली
वहू मोटी भली तरवार सातरी भली
बरछी मोटी भली छूरी वहणी भली,
धेणु दूझती भली । (पुण्यविजयजी द्वारा प्रेषित २ पत्रों से)

(६२) भला क्या (२)

अमल खारा भला, खड्ग धारा भला ।
हेत मा रा भला, घात पारा भला ।
हाथ वहिता भला, माल खरचता भला ।
दान मान सूं भला, काथा पान सू भला ।
खेत नीचा भला, घर ऊँचा भला ।
राणी पाणी पातला भला, अमल जोर का भला ।
नीसाण घोर का भला, बुध ज्ञान सूं भला ।
चित्र मोर का भला, हीया चोर का भला ।
बोल बाप का भला, बैसणा खाट का भला ।
मरद पतंग का भला, तीर तीखा भला ।
पहिरण पटकूल का भला, युद्ध वीर का भला ।
घोडा कुमेद भला, कपडा सफेद भला ।
रंग राता भला, दुरजन जाता भला ।
हस्ती माता भला, पुत्र पोता का भला ।
त्रिया ताजणा भला, ज्ञान प्रकाशता भला ।
चेला विनयवंत भला । (कौ०)

(६३) द्विगुणित विशिष्ट

(१)

एक हरि अनै पाखरयो[1], एक सर्प अनै पंखालो ।
एक इष्ट अनै वैद्योपदिष्ट, एक औषध अनै मिष्ट ।
एक सोनू अनै सुगंध[2], एक गुण अनै गोविंद ।
एक खीर अनै साकर कपूर, एक घेवर अनै घीस्या भरपूर ।
एक चंपक माला अनै माथे चडी एक मुद्रिका अनै हीरे जडी ।
एक सालि नै प्रोसी सुवर्ण थाल ॥

(स० ३)

(६४) द्विगुणित विशिष्ट

एकु हरि, आयउ घरि ।
एकु इष्ट, द्वितियो वैद्योपदिष्टु ।

२ आप्रविउ घरि २. सुरटउ । एक सीह अनै पाखरिउ (विशेष) (स० १)

एकु सीहु, पाखर लीहु ।
एकु आगइ धण माकणी, पगि त्राधी काकणी ।
एकु ऊमाही, अनइ मोर हीलव्यउं ।
एकु खीरान्नु, अनइ सर्करा सपर्कु ।
एकु मधु अनइद्राखा खेपु, एकु प्रेयसी अनइ गुणवंती ।
एकु विद्वांसु अनइ विनीतु, ए वस्तु किहा लाभइ ॥ ६७ ॥ (मु०)

(६५) द्विगुणित शोभा (३)

हरि, अनइं आवो घरि । एक इष्ट अनइं वैद्योपदिष्ट ।
एक सुवर्ण अनइं सुगध । अेक सीह अनइ पाखरिउ ।
अेक घृत परिपूर्ण अनइ निक्षिप्त शर्करा चूर्ण ।
एक शालि दालि परिसी सुवर्ण थालि ।
अेक रूपवत अनइं कामदेव सदृश लहकत ।
अेक ऋद्धि कलित अनइं दान करी अस्खलित ।
अेक योद्धार अनइं शस्त्रे अजित ।
अेक वसत नइ घरि आविउ कत ।
अेक यौवन भर अनइं चच्चरि घर ।

(स० २)

(६६) निकृष्ट पदार्थ (१)

वृषभ मारीकणउ, ठाकर चूकणउ, हाथिउ नासणउ ।
तुरगम काढणउ, मृत्यु रूसणउ, स्त्रीजनु बोलणउ ।
दूरि वर्जेवउ । (पू० अ०)

(६७) निकृष्ट पदार्थ (२)

आछी छासि केतलउएकु पाणी खमइ, पातली छाया केतुएकु आतप गमइ ।
कातर केतउं एकु रणागण जूझइ, निरक्षर केतुएकु कहिउं बूझइ ।
कृपणि केतउं दानु दीजइ, अपराधि केतउएकु तपु कीजइ ।
आदि केतउएकु तरु वाजइ, कारिमउ नेहु केतलउ एकु छाजइ ।

(९८) सार्थक पदार्थ

ते द्रव्य साचउ जे सुपात्रि वेचियइ[1], ते काव्य जे सभा पढियइं ।
ते आभरण जे हीरे जडियइ, ते सोनउ जे कसवटइ नीवडइ ।
ते वैद्य जे व्याधि फेडइA ते आमात्य जे बुद्धिबलि लक्ष्मी जोडइ ।
तेउ धर्म जिह्वा पर न संतापियइ, ते सयर[2] जे रोगि न व्यापियइ ।
ते शास्त्र जे जीवदया वर्तावइ, ते राज्य जे अन्याय निवर्त्तावइ ।
ते कापड जे धोइउ सूझइ[3], ते कार्य जे बुद्धि सारु[4] ।
ते बुद्धि जे पहिलउ ऊपजइ, ते तुरंगम जे वेगि पूजइ ।
ते सुभट जे संग्रामि भूझइ, ते धेनु जे सर्वदा दूझइ ।
ते उत्तम जे धर्म बूझइ । ८१ ।(स० १)

(९९) ऐ किण काम रा

गोदता नी वाट, माटी नउ घाट ।
मद्य नउं पडिवउं, आहेडी ना उद्यम धर्म नउ ।
रात्र नउ ग्रउ, मान नु भउ । ऊफाणउ
आभा नी छाह, कुपुरुष नी बाह ।
आदनउ तूरउ, पर्वताश्रित नदी नूं पूर ।
वेद्य नउं पडीगणउं, सूपडानउ ओंठीगणउं ।
छाली नउ भूझ स्त्री स्यउ गूझ ।
दासि नुं स्नेह, उन्हालु मेहु ।
तृणानि आगि, एतला स्युं लागि ॥ २२ ॥ मु०

(१००) एता किसी काम का नहीं (२)

उन्हाला नौ मेह; दासी नौ नेह
रोगी नो देह; स्त्री विण गेह
पर[5] घरनी छासि, कठ विहूणो रास[6]
अवसर बिना भास; कुकुल नो दास
फूसनी आग, जमाई नो भाग

---

१. वावदि २ शरीर ३ सूझइ ४ मीठें ।
A सुवैद्य जे अष्टोत्तर शत व्याधि फेडइ
सुराजा जु प्रजा पालइ (विशेष) (पु० अ०)
५ पिराया, ६ बिना,

काचो ताग; पाणी नो साग
दीवा[3] नो तेज, दुर्जन नो हेज
उधारा नो व्यापार; राड नो सिणगार
पखैया नो प्यार, एता किसी काम का नहीं। (कौ०) +

(१०१) द्विगुणित निकृष्ट (१)

वरसइ मेघ नइ राति अंधारी। कउही रात्र अनइ माहि कंसारी।
यवनी रोटी अनइ कागइ वोटी। ....
आगइ काली अनइ मसी लाई। डाकिणी नइं राउल वाई।
उखरडी खाट नइ डाभि वणी। सासू जूठी नइ नणंद घणी।
पालि चीखल नइ कड़ि कीकली।........।
वडपण नइ फोफल घूंट। अतिसार नइ आसणि ऊंट।
दुख अनइ डाकिणी खाधउ। वानर नइ वीछी खाधउ।
आगणइ कुउ नइ कुटुंब आधलू।.........।
साप नइ पखालउ, कादव नइ कंटालउ।
काणी नइ रीसाली, बाडी नइ विरुआ बोली।
सरड़ी नइ श्लेष्मली। ....।

(स० २)

(१०२) द्विगुणित निकृष्ट

एक विदेश गमनं, अन्यत्तत्रापि दारिद्र्यं।
एकं सेवा वृत्ति दुष्करा अन्य तत्रापि पिशुन समागमः।

---

३ दिवाली।
+ एक अन्य प्रति में निम्नाकिन पाठ और अधिक मिलता है।
ठहीनो पडगनो; सुपटानो ऊटिगणो
ढीकुआनो पायो, पडपणनो जायो
पागलानो धायो, गहिलानो गायो
कागल नो कटायो,
कारटानो भाग, वैश्यानो राग
पर त्रियाप्यार, खड़ी नो सिंगणगार
एहवा अधूरानो सगत कीजै, धर्म विना एतलावाना सोभै नहीं॥ (स० ३)

एकं दूरारण्ये गंतव्य तत्रापि शवलं नहिं ।
एक पान पात्र भगे द्वितीयोमकारणमुपद्रवः ।
एकं कुभोजनं अन्यतुः प्रथम कवले मक्षकापातः ।
एकं कुथिताख्धा, अंतर्गता च कसारिका ।
एक यवानो रोटिका अन्यत्काक भक्षिता च ।
एक पकुला रथ्या, द्वि. कध्या कु सुता ।
एकं भोजनस्य असंपति, द्वितीयं प्राघूर्णक बाहुल्य ।
एक दुःख अन्यत् शाकिनी ग्रस्त ।
एक कुग्रामवासोऽन्यल्लाभोपिन ।
एकं कन्या बहुत्व दुर्मुखी च भार्या ।
एकं उच्छिष्ट अन्यद्भूक्तं दुग्धस्योपरिस्फोटक ।
तथा एकं मिथ्यात्वं, अन्यन्मौख्यं ॥ ६४ ॥ (स० १)

(१०३) अच्छा दिखने पर भी बुरा

मृष्टमपि यथा क्षार, विषं मधुरमपि प्राणहरं ।
यथा कल्याण्यपि अकल्याणकारिणी ।
भद्राप्यभद्रा, यथा मंगलोप्य मंगलयो वारः ।
यथा केतुरपि कल्याण सेतूः । यथा अमृतवाल्यपि गुडूची ।७५। जो०

(१०४) निरर्थक (१)

कुपुरुषे उपकारो निरर्थकः ।
शुष्क नदी तरणमिव, वालुका चर्वणमिव ।
मृत खंडनमिव, भस्मनिहुतमिव ।
आकाश कुट्टनमिव, तुष खडनमिव ।
जल विलोडनमिव, उर्षर वर्षणमिव ।
शुष्क काष्ठ सेचनमिव, यम निमत्रणमिव ।
द्यूत कटकोपार्जनमिव ॥ २२ ॥ (स० १)

(१०५) निरर्थक (२)

कुपात्रस्य विद्या वृथा, कुशिष्याय व्रतं वृथा ।
धनाढ्ये दानं वृथा, भुक्तस्य भोजनं वृथा ।
चर्वितस्य चर्वणं वृथा, पिष्टस्य पेषणं वृथा ।

मथितस्य मथन वृथा, अचिंतित श्रुत वृथा ।
ऊखरे वारित वृथा, समुद्रे वृष्टिर्वृथा ।
मुनीनामाभरणं वृथा, बधिरस्याग्ने वीणा वादनं वृथा ।
अंधस्याग्रे प्रेक्षणक वृथा, अभव्याया जैन धर्मो वृथा ॥ ३६ ॥ (स० १)

(१०६) निरर्थक (३)

कुपुरुष ने उपकार कर्यो निरर्थक जाणवो
सुकी नदी नायाजनी परिं, वेलु चावनानी परिं ।
मृतकना शृंगारनीपरिं, अगनिहोमवानीपरिं ।
भस्ममि नाखवानीपरिं, भस्म आकाश कुहन परि ॥
तुस खाडवानो परिं, पाणी विलोवानी परिं ॥
[1]ऊखरना वरसवानीपरिं, शुक काठ नासीवानी परिं ।
जूअटानाधननी परिं, कुपात्रनीं विद्यानोपरि । इत्यादिक जाणवो ॥ (सू० ३)

(१०७) विहीन

किसो आरति विहूणो काम ?
किसो प्रेम विहूणो मान, किसी जाचक विहूणी जान ।
किसी हूँकार विण वात, किसो छयल विहूणो साथ ।
किसो बल विहूणो बाण, किसो तरवर विण पान ।
किसी वादल विण वीज, किसी पोहच विण खीज ।
किसो विगर दीठा कहणो, किसो कागद विहूणो लहणो ।
किसी त्रीया परतीत, किसो कंठ विहूणो गीत ।
किसी निर्लज्ज नारी, किसो अवसाण चूको हथियार ।
किसी लूगडा विण चूंप, किसो वागा विण खूंप ।
किसो उन्मान विण आघो, किसो सघण विण वागो ।
किसी चद विहूणी राति, किसी अमल विहूणी आथ ।
किसो छंडारो घर वासो, किसो नुखता विण हासो ।
किसो अतीत विण चोरो, किसो गर्त विण पोहरो ।
किसी पूंजी विण लाभ, किसो समभ्या पखे जाव ।
किसो पूत पखे घर, किसो संपत्ति पखे नर ।
किसो तीय पखे जन, किसो भाव पखे भोजन ।
सत्य शष्ट भविजन कहैं, कहा जीव्यो जिन नाम विण । (स० ४)

---

१. उपरना ।

(१०८) चूका (१)

एहवो पद्य पढ्यो दीसै ।
उचपेटा ग्राहणीऊ माकड[1], जिम डाल चूको वानर
जिम घाव चूको सुभट, जिम दाव चूको जूवारी ।
जिम विद्या चूको विद्याधर, जिम फाल चूको दादरि ।
जिम ठाम[2] चूको भडारी ।
यूथभ्रष्ट चूको हरिण, चार जिम अरुण अशरण ।
राज्य चूको राजवी, पद[3] चूको पदवी
लाज चूकी नारि, भीख चूको भीखारि ॥
इत्यादिक पद्य[4] पढ्यो जाणवो । (सं. ३)

(१०९) चूका (२)

जिसउ घाय चूकउ भड्ड हुइ, जिसु डाल चूकओ वानरु हुइ,
जिसउ विद्या चूकउ विद्याधरु हुइ, जिसउ ठाम चूकउ भडारिउ ।
जिसउ दाइ चूकउ जूआरी, जिसउ जूथ परिभृष्ट हरिणु ।
तिसउ विच्छाइ वदनु ।

(११०) कौन किससे शोभा पाता है ? (१)

रजनी[5] चद्रेण शोभते । नभः सूर्येण ।
प्रसादो देवेन । पुष्प भ्रमरेण । युवती यौवनेन । वल्ली कुसुमेन ।
कुलं पुरुषेण[6] । मुख तावूलेन । नेत्रं कज्जलेन । कुल-वधुः शीलेन ।
प्रेक्षणीक गीतेन । मुख नासिकया । मयूरः केकया । राजा छत्रेण ।
नगर दुर्गेण । कानन कल्पवृक्षेण । योगी ध्यानेन ।
धनी दानेन । यती निर्ममत्वेन । सूरः सत्वेन । गजो मदेन ।
तुरगमो जवेन । सरो राजहसेन । मस्तक मवतसेनेति ॥छ॥
सिंहेन वन, वनेन सिंह । मुख नासिकया, नासिका मुखेन ।
कमल जलाशयेन, जलाशयो कमलेन । सुवर्णं रत्नेन, सुवर्णेन रत्न ।
अमात्येन राज्य । राज्येनामात्याः । नंदनेन मेरुः, मेरुणा नंदन ।
सुपुत्रेण कुल, कुलेन सुपुत्र । दिनेन भानु, भानुना दिन ।

---

१. कमाकड २. वाम ३. पदस्थ, ४ कष्ट । ५. निशा ६. सत्पुत्रेण

शशाकेन निशा, निशाया शशाकः । नयेन राजाः, राजा नयः ।
व्यसनेन मूर्खता, मूर्खतया व्यसनं । मदेन नारी, नार्या मदः ।
नदी जलेन, नद्या जलं । परिमलेन पुष्पं, पुष्पेन परिमलः ।
नादेन वीणा, वीणया नादः । दंतैर्मुखं, मुखेन दताः ।
विद्युता मेघः, मेघेन विद्युत । तोरणेन मडपः, मंडपेन तोरणं ।
हारेण हृदय, हृदयेन हारः ॥ (म. २)

निर्दन्त करटी हयो गत जवश्चद्र विना शर्वरी
निर्गंध कुसुम सरोवर गत छाया विहीनस्तरु
रुप निर्लवण सुतो गत गणश्चारित्रहीनो यतिः
निर्देव भुवन न राजति तथा धर्मं विना पौरुष ॥१॥
(पाठ पु० प्रति में अधिक मिलता है ।) (पु०)

(१११) कौन किससे शोभा पाता है ? (२)

कुलवहु ते सीले शोभे, रजनी चद्रमाइ शोभे ।
आकाश सूर्यइ करी शोभे, वन चदने शोभे ॥
कुल सुपुत्रे शोभे, कटक राजाइं शोभे ॥
प्रधान राजाइ शोभे, राजा प्रधाने शोभे ॥
ध्वजा देवेले शोभे, देवल ध्वजाइं सोभे ॥
स्त्री भर्त्तारइ शोभे, भर्त्तार स्त्रीइं करी शोभे ॥
तिम परस्पर शोभा जाणवी ॥ (स. ३)

वेल फूले सोभैं, मुख तंबोलैं सोभैं ।
मोह कम वोले सोभे, सीह वनें सोभैं ।
मुख नासिकाइं सोभैं, तिम मनुष्य धर्मइ शोभे ॥
कमल जले शोभे, जल कमले शोभे,
सुवर्ण रत्ने शोभे, रत्न सुवर्ण शोभे ।

(११२) किससे कौन शोभा पाता है ? (३)

जिम प्रासाद सोभे ध्वजधारी, जिम हृदय सोभे हारी ।
जिम ग्रह सोभे उत्तम नारी, जिम मस्तक सोहे केस प्रागभारी[१] ।

---

१ प्राप्तारि

जिम कर्ण[1] सोहै स्वर्णालंकारी, जिम सरीर सोहै शील श्रृंगारी ।
जिम सरोवर सोहै कमलि, जिम पुष्प सोहै परिमलि ।
जिम नेत्र सोहै युगलि, जिम रात्रि सोहै चंद्रमडलि ।
जिम विवाह सोहै कूरे, जिम उत्सव सोहै तूरे ।
नदी सोभै पूरि, तिम सम्यक्त्व सोहै भावना भूरि ।
इति भावना वर्णनम् । (स. ५)

(११३) कौन किससे शोभित होता है ? (४)

घर ओपइ घरणि, गगन ओपइ तरणि ।
वृक्ष ओपइ पल्लवि, ताम्बूल ओपइ चूर्णलवि ।
वस्त्र ओपइ रंगि, मउड ओपइ मस्तक सगि ।
माणुस ओपइ श्रृंगारि, व्यजन ओपइ वघारि ।
राजा ओपइ भंडारि, हाथिउ ओपइ मदवारि । ३१ (स १)

(११४) कौन शोभा नहीं पाते (१)

शस्त्रहीनो यथा सूरो न शोभते ।
मत्र हीनो मंत्री । धुरा हीना गंत्री ।
प्राकार हीन नगरं । स्वामी हीन बलं ।
दत हीनो गज । कलाहीन पुमान् ।
तपो हीनः मुनिः । तेजो हीनो मणिः ।
बाण हीन धनुः । धारा हीन कृपाण।
वेद हीनो विप्रः । कपिशीर्ष हीनो वप्रः ।
गंध हीनं कुसुमं । नयन हीन वदन ।
लवण हीनी रसवती । चैतन्य हीनं वपुः । (स. २)

(११५) कौन शोभा नहीं पाते (२)

बुद्धि हीन मुख्य नायकु, अति निष्ठुर वणिकु ।
खासणउ चोरु, कलापु हीन मोरु ।
आलसउ कुमारउ, अध अनइ भरालउ ।
दुर्विनीत शिष्यकुलु, ध्वज रहितु देवकुलु ।
घृतु रहितु भोजनु, स्नेह हीन स्वजन ।
तेज रहित आरीसउ, गृहस्थ त्रोडउ ।

---

१. कान सोभे ।

महिला कानि छूटी, ध्वज अतरालि तूटी ।
भाग्य हीन मुक्ति, क्षमा रहित मुक्ति ।
एतली वस्तु शोभा न पामई ॥६६॥ (मु.)

(११६) कौन शोभा नहीं पाते (३)

मद हीनो हस्ती न शोभते, कुल स्त्री निर्लज्जा न शोभते ।
नीति विकलो राजा न शोभते, कृपण धनाढ्यो न शोभते ।
रूप रहितः स्त्रीजनो न शोभते, आकृति रहिता सरस्वती न शोभते ।
लवण रहिता रसवती न शोभते क्षमा रहितो मुनि न शोभते ।
शर्करा रहितो मोदको न शोभते, कण्ठ रहित गान न शोभते ।
छदो रहितो भट्टः न शोभते, विवेक रहित मन न शोभते ।
निर्धर्म पुर न शाभते, निर्विद्या विप्रः न शोभते ।
निर्नायकं सैन्य न शोभते, निफलो वृक्षः न शोभते ।
निर्वृष्टिर्मेघः न शोभने, तपो रहितो मुनि. न शोभते ।
प्रेम रहितः सगमः न शोभते, निर्नासिकं मुख न शोभते ।
निर्वस्त्र शृगार. न शोभते, निः स्वर्णोऽलंकार न शोभते ।
ताम्बूल रहितो भोग. न शोभने, रूप सिद्धिः प्रयोगः न शोभते ।
निःकंकणो बाहुदण्ड. न शोभते, प्रत्यचा रहितः कोदण्ड न शोभते ॥

(११७) कौन शोभा नहीं पाते (४)

मद रहित हाथी, चोख रहित साथी ।
लज्जा रहित कुलवधू, जल रहित सिधू ॥
बुद्धि रहित नायक, चूकण्ड पायक ॥
खासण्ड चोर, कला रहित मोर ॥
आलखूक मारड, पाणी रहित गारड ॥
खान (स्थान) भ्रष्ट गमार, तेज रहित ण्यार ॥
आकृति रहित सरसती, लवण रहित रसवती ॥
रूप रहित छवि, छद रहित कवि ॥
गंभीरता रहित धुनि, क्षमा रहित मुनि ॥

जल रहित चूटी, ध्वज विचाला त्रूटी ॥
घृत रहित भोजन, संज्ञा रहित मन ॥
तेल रहित मज्जन, स्नेह रहित सज्जन ॥
मनुष्य रहित घर, विनान रहित वर ॥
चतुराई रहित कला, पुरुप रहित महिला ॥
कण्ठ रहित गान, सोहाग विण मान ॥
आभरण रहित कान, वर विना जान ॥
वृक्ष विना पान, जलवर्षा रहित धान ॥
वला रहित छान, कलावत रहित तान ॥
भाग रहित भागवान, पात्र रहित दान ॥
वेग रहित घोडउ, गृहस्थ माथइ मोडउ ॥
पाठरउ छेलउ, दुर्विनीत चेलउ ।
तेज रहित आरीसउ, नेह जिसउ दारीसउ ॥
प्रसाद रहित छाजा, नीसाण रहित वाजा ॥
घृत रहित खाजा, प्रताप रहित राजा ॥
पासा रहित सारी, पुत्र रहित नारी ॥
क्रिया रहित जती, सत्व रहित सती ॥
धन रहित गेही, तिम श्रीजिन धर्म रहित देही ॥

॥ इति रहित वर्णनम् ॥ कु०

(११८) अनावश्यक (१)

मुनिराभरणेन किं करोति, मर्कटो नालिकेरेण किं करोति ।
काको रत्नमालया[1] किं करोति, मत्स्यादको जलच्छादन केन किं करोति ।
वानरी हारवल्या[2] कि करोति, विधवा स्त्री ककणेन कि करोति ।
वणिग खड्गेन किं करोति, दिगंबरः पट्टकूलेन[3] किं करोति ।
असती शीलेन किं करोति, व्याधा जीवदयया कि करोति ।
तथा निर्भाग्य जीवः सदुपदेशेन किं करोति ॥ १७ स. १

(११९) अनावश्यक (२)

शुद्ध ऋषीश्वर आभरण ने स्यु करे, मर्कट नालेर ने स्यु करें ।

---

१ रत्नेन २ मुक्ताफलेन ३ दुकूलेन

काक रतन नें स्युं करे, वानरो हार नें स्युं करें ।
असती शील ने स्युं करें, वणिकाकूराज्य ने स्युं करें ।
नपुसक स्त्री ने स्युं करें, दिगम्बर पटकूल नै स्यूं करै ।
जीव आजीव नैं स्यूं करै, अधर्मी धर्म ने स्यूं करै ।
साजन दुर्जन ने स्यूं करैं(दुर्जन सज्जन नइ स्यूं करइ)+

+ "मूर्खः पुस्तकेन । पापी सुकृतेन । अंधा अजनेन । षढोदयितया । दुर्जन उपकारेण । वको मानस सरसा । सालूरः कमलेन । ग्रामीण पडित गोष्ठया । रजकः त्पनक ग्रामेण, मक्षिका यक्ष कर्दमेन । कापुरुषः संग्रामेण । पणांगना निर्धनेन । पतित कुचा हारेण । गतवयाः श्रृगारेणेति (पु०)
उक्त पाठ पु० प्रति में अधिक मिलता है ।

सभा शृंगार

विभाग १०

भोजनादि वर्णन

(मंगल, वर्धापन, उत्सव, विवाह, भोजन, वस्त्रालंकारादि)

(१) मांगलिक

दधि, दूर्वा, कुसम, अक्षत, चदन, नंदितरु[1], सिद्धार्थ,
गोरोचना, कुंकुम, पूर्णकलस, गृंहलिय, तोरण, चमर, जवाग।
अहिव तणउ मगलुचारु, घट्ट प्रदीप मणिमाला, प्रवाल,
वदरवाल ए द्रव्य मगलीक।
देवपूजन गुरुवंदन प्रमुख भाव मगलीक।

(पु०)

(२) वर्द्धापनकं

नगर तणा प्रधान नर तेडावइ, महोत्सव करावइ।
स्वर्णमय दीप ज्वाल्या, घर तणा कूट अजूआल्या।
स्वर्णमय मूसल ऊभ्या, सुवर्ण कलश स्थाप्या।
घर धवल्या, भित्ति भाग कउल्या, तिलिया तोरण बाध्या।
प्रसादि वैजयन्ती झलकावी, गोति मेल्हावी, अमारि करावी।
सर्वत्र मंगलाचारु दीजइ, तूर वाजइ।
अक्षत पात्र साचरइ, तंबोल वापरइ।
अर्थ व्ययना साभल नहीं, इसउ वधामणउ हूसही ॥ ७७ ॥ (जै०)

(३) महोत्सव देखने की उत्कंठा

तेण महोत्सवि समय बालिका—
हार त्रूटते, वेणीदंड छूटते।
नेऊरि फूटते, पटउल फाटते।
घट जुअल विणसते, अनेकि आभरणि खिसते।
मुक्तालकारि पडते, स्वेद विंदु चडते।
जोवा तणइ कारणि चालिउ। (८६ जो०)

४ पुत्र जन्म महोत्सव

राउ करावइ, दणइपाक निरोक हूउ।
सर्वत्र मार्ग वोर वालिया, गोमय पाणी सींचिया।
मञ्चोन्मञ्च बाधा, वानरवालि बाधी।
हट्ट शोभा सर्वत्र रची, सिद्धार्थ स्वस्तिक भरिया, पूर्ण कलश स्थाप्या।

---

[1] बीजपूर [2] जुअल दीप। १३८ जो० मे नदितूरु और घट्ट के बाद ये अधिक हैं।

पाखलि सालणा तणी पालि, माहि सुगध घृत तणी नालि ।
त्रिहु पहुर तणइ कालि, परीसइ आखडिआलि नारि । (६६ जो)

१० श्रेष्ठ भोजन

जेहि दूलेसरा चोखा तणउ पीठु
खीघरउली खाड तणउ टलु
पारिहेटि महिसि तणउ दूधु
एल तज तमालपत्र करिउ चमचमा
काचइ कपूरि करि मगमगाय मान इसा वरसोला
जहि आस्वाद खास तणउं उच्छेद नहीं
श्लेष्म तणउ प्रकोप नही
रस तणउ विकारु नहीं
आसा नीरोग निर्दोष
अमृत घटित, देव निर्मित । (पु. अ.)

११ रसवती वर्णन

ऊपलइ मालि, प्रसन्नइ कालि ।
भला मडप नीपाया, पोइणि ने पाने छाया ।
केसर कुकुम ना छडा दीधा, मोती ना चुक पूर्या,
ऊपरि पंच वर्णा चंद्रूआ बाधा, अनेक रूपि आछी परीयछि ना रग साध्या।
फूल ना पगर भरया, अगर ना गध संचरया ।
प्रधान गादी चाउरि चा कलाणा, बइसणहारा अइठा पातला ।
सारूआ घाट, मेल्हाव्या आगलि पाट ।
ऊची आडणी, झलकती कूंडली
ऊपरि मेल्हाव्या सुविशाल थाल ।
वाटा वाटली सुवर्णमइ कचोली ।
रूपा नी सीप ढूकी, इसी घाति मूकी ।
जीमणहार किसा—
छत्रीस लक्षणोपेत
अलिकुल कज्जल श्यामल केश पाश
चन्द्रार्ध भाल-स्थल ।
कामदेव कोदण्डाकृति भ्रूभग ।
विकसित कमल दल समान लोचन

सरल तरल नाशा वंश
हिंडोला समान कान ।
प्रवाल सम कान्ति अधरोष्ठ ।
दाडिम नी कुली जिसा दात
पूर्णिमा चन्द्र सदृश वदन कमल
शंख नी परि त्रिरेखाकित कण्ठ कदल
समांसल स्कंध प्रदेश
प्रथुल वक्षस्थल ।
कूप समान नाभि
आनाभि कुद्ध पाताल कटि यत्र
कदला स्तंभापमान जंघा युगल
सुकुमाल कर कमल
क्रमोन्नत चरण
लाडता लोडता लडसडता रूपवत,
प्रवीण जाण, सौभाग्यवत ।
गुणवत, विनयवत ।
लीला विलास, पुण्योल्लास ।
इन्द्रसमान दीठा, इसा पुरुष आरोगिवा वइठा ।

प्रधान स्त्री परीसणहार आवी—

हंस जिम चालती, मयगल जिम माल्हती ।
वाक्र जोयती, जन आल्हादती ।
आवडी आली, अति सुविशाली ।
सुवर्णमय कुण्ड हाथि धरती, चिन्ता हरती ।
सुगंध वासित पाणी, ढाक्या आणी ।।हाथि धोयण दीधा—
शृंगाल नइड मालि, परीसिवा लागी उजमालि ।

फलहुलि किसी परीसिइ छइ ?

अखड अखोड
मनोज्ञ वायम
विविध देश ना बदाम

जमली चूर्ण रगावलि दीजइ, सुवर्णमय हल मूसल ऊभवीजइ।
घट जूअल बाधीयइ, समग्र मार्ग सोधियइं।
रत्नमय प्रदीप बालियइ, गोतिह रातउ बदि तणा वृद टालियइं।
कर्पूर कुकुमि चदन रसि मार्ग सीचियइ, अर्थी लोक सर्वथापि न वंचियइं।
जिन भवनि पूजा प्रभावना करावियइ, नव नवा पुस्तक भरावियइं।
लोक अकर कीजइ, आखे भरिया स्थाल लीजइं।
लोक तणा वृंद मिलइं।........... .. ..
वाजित्र तणा सहस्त्र वाजइ, कलकलि करी आकाश मंडल गाजइं॥
६४ (जो.)

५ धात्री

१ क्षीर धात्री, २ मजन धात्री, ३ मडन धात्री
४ क्रीडा धात्री, ५ उत्सग धात्री, ॥पच धात्री॥छ॥
१२८ जो.)

६ पुत्र पालन

जिम हेडाऊ तुरगम संभालइ[1]।
जिम वणिक-पुत्र[2] हथेली नउ फोडउ सु सालइ[3]।
जिम तबोली पान चालइ[4]।
जिम रथी रथ नइ चालइ।
जिम मुक्ताफल रहइ थालइ।
जिम साधु प्राणी ने हालइ।
जिम पखिया रहइ मालइ।
तिम माता पुत्र नइ पालइ॥ (कु)

७ बालक्रीड़ा

हिवइ ते रह्या (?) महादुख थया॥
घरनैं विषै एहवा चयन करवा लागौ॥
किवारइ पाणीना घडा ढोलै, किवारैं धइसे मानै बोलै॥
दहीनी गोलि धोलै, किवारइ तरितो माखण छासि माहि बोलै॥
माता साकडानै भालि आणै, किवारे छियोनो काचुयो ताणइं॥
किवारइ जातो साप साहइ, किवारइं आगीनइं हाथि वाहैं।

---

१. पालइ २ वणिउ ३ समालइ ४ समालइ (जै)
जै प्रति में प्रथम की तीन पंक्तिओं के बाद की चार पंक्तिया नहीं है।

किवारइं हसिनइ मा सामो जोवइ, किवारइ रूसणो माडिनइं रोवइं ॥
किवारइ सूतो उटाणता आलस मोडइ, किवारइ रीसाणै उत्तेवड फोडें ॥(मो०)
इत्यादि वालक्रीडा वर्णनम् ॥

८ विवाह समय

लग्न ऊपरि विहउ पखा हर मारि कूटि साम हियइ
मूडसए आखे उडद केलवीयइ
मूडसए गोहू केलवीयइ
मूडसए चोखा केलवीयइ
मूडसए मूग केलवीयइ
घड सइ घृत विसाहियइ
कोडिया सइ कापडा
चोला भरा पान, झउला भरिया फोफल,
गोरस तणा द्रह, वडा तणा उकरुड
खाना तणा खला, गडि बहत्तरि वहिल
चउरासी सुखासण, विंसुत्तरुसउ भडार गाडा
सातसइ सेजवाली, चउदसइं वाहण, पाचसइ साढि,
तेजी, वेसर, नीलडा, हरियडा, पायल लोक संख्या नही, सरसी
कोठी । जगऊपरणि माल्हणि सर्व गिलि प्रमुख अनेक सरसी कडाही
वाहण तणी धोरणि- सेजवाली तणइ सेतु ब्रधि सीकिरि तणइ अडमड
घोडा तणइ थाटि, पायक तणइ पहटि, चक्रवर्त्ति जिव चालियउ ।
नेउर तणइ ऊकारि, घाघर वालि तणइ घर्घरारवि
पच-शब्द तणइ निर्घोषि, लोक तणइ हलबोलि
कानि पडिय कोई न सामलियइ ॥ (पु. अ.)

९ भोजन

अनेक जाति तणी फलहलि ।
जिम मोटा छाजा, तिम खाजा ।
जिम महद्भूत गाङ्ग, तिम लाङ्ग ।
विविध वाणी तणउ पक्वान्न, त्रि आगुली कलम शालि ।
मुगनी दालि, परीसी सुवर्णमय स्थालि ।

चारु चारउली
खारकि ना खड ।
कसमिसि द्राख
आदनी खजूर
वीत्राला वरसोला
हीरालग साकर
नालेयर तणी चीरी बुरहडी
सरस सकोमल सेलडी तणा बुटका
तेह तणी कातली, दाडिम नी कुली
करणा, जत्रीर, बीजुरा, चुरडी
नारिंग तणी फाडि, सहकार तणी कातली

किस्युं ते सहकारु—

वनस्पति राउ, कन्दर्प देवतानु भाउ ।
रस तणी ऋद्धि, मीडिम तणी अवधि
साकर दूधि नीपायउ, काइलि ने समूहि छायु ।
वुडि घोरु, पथिक जनवधू चित्त चोरु ।
तेह आत्रा तणी कातली निवृति परायण, नीकोल्या रायण
खाडिस्यउ ओल्या, घी स्युं मिल्या ।
कूंकणा केलां, गात्रि वाका, भेला पाका
इसा केला नी कातली—
स्वास स्यूं जाइ, घणाइ उदरि समाइ ।
एव विध फुलहली परीसी, परीसणहारि सजगीसी ।
अतिहीं असमान,

हिव पकवान आणइ ते केहवा ?
मालपुडा, खाजा, तुरत कीधा ताजा ।
सदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रसाद ना छाजा ।
पछइ प्रीस्या लाड्डू, जाणे नान्हा गाड्डू ।
कुण कुण ते नाम, जीमता मन रहइ काम (न ठाम) ।
मोतिया लाड्डू, दालीया लाड्डू ।
सेविया लाड्डू, कीटी रा लाड्डू ।

नादउलि रा लाड्डू, तिल ना लाडू ।
त्रिगइ ना लाड्डू, मगरीआ लाड्डू, झगरिआ लाड्डू, सिंह केसरिया लाड्डू ।
वली बीजा आण्या पकवान, जीमता वाधइ मुख नउ वान ।
(आ) ग्या पकवान
सतपुडा खाजा
सुकोमल सुहाली
फगफगती फीणी
दूधवना
देहींथरा
घृत मय घारी
पडसूधी नी साकुली
मुरकी माडी
मनोहर मोदक
सु तलया सेवत्रा
साकर सहित घेउर
तिली तिलवटि
चासद्र चूरिया
पचधार लपनश्री
पछइ आवी पडसूधी नी पोली, खाड घृत झबोली ।
रत्नु सालि, मह्रा सालि ।
कमल सालि सुगध सालि ।
सुद्ध सालि, कोमोदकी सालि ।
कूंकणी सालि, तिलवासी सालि ।
जीराउलि सालि, सुवर्ण सालि ।
राय भोग सालि, गुरडा सालि ।

एवं विधि सालि ना कुरुड—
अणीआलउ, सरहरउ, फरफरउ ।
सरसु, सुकोमलु, ऊजलउ, वि आगुलउ ।
दूबलउ, पेटि वइसइ, फूटी नीसरइ ।
इस्यइ पीरस्यइउ
तुष रहित मुडोरा मूग नी पहिति,

तत्काल तापितु घृतु
सुगंध सुवर्ण्य
परिघल मनि परीस्यू, जिमणहार नू मन ऊलस्यूं

क्रिस्याएकु शाक—

कोरां वडा । राईता वडा, हलहूआ वडा ।
घारी, घारडी, वडी, पापडी । ईडरी, पटोडरी ।
पूरण पलेव खाटा, भरथा वाटा ।
वालहुलि, तिहूरा, काचरी, कोकला ।
डोडी, रामडाडी, कयर, सागरी, भली भार्जा, मरीनी माजरी ।
प्रधान पीपरि, वेणकडा आउलिया, निपुण नीलूआ ।

एवं विध मालणा परीस्या—

पहिलुं फलिहलि प्रीसइ, सगला रा मन हीसइ ।
पाका आंबा नी कातली, ते बूरा खाड मुं भरी अनइ वली पातली ।
पाका केला, ते वली खाड नूं काधा भेला ।
सखरा करणा, ते वली पीला वरणा ।
नीलइ नारगी, रगइ दीसइती सुरगी ।
नीकोली रायणी, प्रीसी भाइणी ।
दाडिम नी कली, खाता पूजइ रली ।
··· ··जानइ ·····, खाता पूजइ कोड ।
द्राख नइ विदाम, कोइ कागदी स्याम ।
सलेमी खारक नइ खजूर, ते प्रीस्या भरपूर ।
नालेर नी गरी, मालवी गुल सू भरी ।
नीबू घाटा नइ प्रीसीया, एहवा तो केथे न दीठीया ।
चारोली नइ पिसता, लोक जीमइ हसता ।
वली सेलडी नइ सटाफल, ते पिण प्रीस्या परिघल । (११-१२ जै०)

१२ रसवती वर्णन (२)

ऊपले मालि, सुवर्णमइ स्थालि, प्रसन्नइ कालि ।
वारू मडप नीपाउ । पोणिने पाने छाइउ ॥
कूकूना छावडा (छडा), मोती ना चउक ।
तेह माहि सारूयार घाट, मेल्हाव्या पाट ।

नदीया ममान नीझरण ।

गगा समान नीर । सीता समी (मई) न भार्या, लक्ष्मण सुमु न वीर ॥१॥

बील १ आहेडा २ आमला ३ चउथा (साचा) गुरु वयणा ।

पहिला हुइ कमाइला पछइ हुइ गुलीया ॥ २ ॥

चाउरि चातुला । चूडिया प्रमुख नाना विध आसन्न ढूका ।

चउरस चउकी वट । ऊची आडणी । जाल कोशीसा कुडली ना प्रयोग पूग हुआ ।

तदवर आट । वाटा । वाटी । कचोला कचोल वटी । सीप । सूनवटी । ढूकी ।

तदनतर । लडहीय लडसडतीय लीलावतीय सुवर्णमई करवइ । वरवीय । खलकतइ, चूडइ । झलकतइ कंकणि । ढलकतइ हाथि । सीतलि गधोदकि । हस्तोदकि दीधा ।

तदनतर । ऊरतेइ मालि । प्रमन्नइ कालि । सुवर्णमइ स्थालि । मोटइ झमालि । आवी ऊजमालि । परीसइ फलहुलि-अखोल खड । मनोन्यवायम । चारुली । साकरलिंगा । वेकस्या वरसोला । होयालग साकरना चूरि । कोलबी नालिकेरनी पुडहडी । छोहारी खारिक । नालिकी । पिछानी खारिना कुट-कडा । किसमिस द्राख । कचोले मधु फडद खजूर । हरमजा मधुर । माकड उटी पामिरव समान । मरस फणस सेलडी ना कुटकडा । दाडिम नी कुली तरुणा । करणा । जबीर । बीजपूरक । नीघणी । चडउडी फरग नारगी फालि । अति गुलि भावि । सूरीइ रगि मधुकलश अबानी कातली । परीसइ पातली । किसउजु आवउ । वनस्पती राउ । कदर्प्प देव सहाउ । इसा मधुकलम अबानी फालि । नीकोल्या रायणा, निवृत्ति परायण । खाडइ लुल्या । घीय मिल्या । अनइ कूकणा केला । सोनेला । राजेला । मूछेला । नारि सिवेला । तीह कदली फल बीट थका गल्या । लीला लीलावती नाश्वत् उटल्या । इसी कूकणा तणी कातली । आटि शोभइ तीहनी परीसणहारि । शामागि नारि, संपन्न शृगारि । कठाभरण हारि । जिसी रभा नइ वश । देव कन्या नइ असि । इसी फलहुलि । परत्री परत्री परीसइ । जइ जइ लीला विलसइ । तदनंतर सस पडा खाजा, खाडीं किसा ति पाजा । जिसा प्रासाद तणा छाजा । तदनतर । भल भला लाडू जिसा रसवती लक्ष्मी अमीना गाडू । घृतमइ पाकि तल्या । साकर सिउ मिल्या । मरिचिना चम-त्कारि । अत्यन्त सुकुमार । कपूर परिमल सार । स्थल बहुलाकार । महो-ज्वल । इस । सेवईया लाडू । मोती लाडू । दल लाडू । वाजणा लाडू । अमृत दल । खड भल खंड । प्रभृति मोदक मूक्या । जे से मुहि मिलइ ।

घणउ किसउ एवं विध अमृत घट मोदक शोभइ । अनत मुसमसती मुर्की । शिव शिवती सुहाली । फगफगा फीणा-दुग्ध वर्ण दहीथरा । घृत वर्ण धारी । सुकुमाल साकली । अखड माडी । सतल्या सेवैंञ्या प्रभृति पकवान्न परीस्या, खाड माडा । पूरण माडा । मोकला माडा । कुरकुरा माडा । पत्र वेलीना माडा । खादउ चूरिमू । सुदलित सुललित लापसी । वरनारि पगीसइ पातली । तदनतर शालि । महाशालि । कलम श्यालि । तिलवासी शालि । राजन्यक शालि । साटिया प्रमुख मेन ईप्सित । अखड शालिना चोखा । दूवलीइ खाड्या । वलिष्टइ छड्या । नखूतीइ वीण्या । अलवेसरि आण्या । समर्तीइ सोह्या भगवतीइ समारिउ । ऊन्हउ तीन्हु । सरसरउ । भरहरउ । अणीआलउ । सकोमला । ऊजलउ । जिसिउ केवडउ । ऊडेली जेवडउ । दूवलइ पेटि पिसइ । फूटी नीसरइ । घृतमइ पहति नइ संयोगि । मन नइ ऊलटी । मंडोअरा मूंगनी दालि । वमुद्या नी कालि । फोंतिरे छाडि । हत्थीहत्थीइ खाडि । त्रिछट् कीवी । घण पाणी इसीनी । वानि पीअली । परसामि सीयली । जिमता स्वादिष्ट । परीसणहारि अभीष्ट । सद्य-ताविउ घीय नामिउ । मजिष्ठा वर्ण । अवधारइ कर्ण । सरहरी धार । प्रीणइ जीमणहार । सोभागीउ । नाशा पटु पेउ । साख्यातु अमृतु । एव विध घृत । अनंतर वडा । घणइ तेलि सीना । हाथि तउ वलइ । मुहिं पड्या गलइ । स्वर्गथ्या देवता टलवलइ । इसा अनेक पार वड्या । आदा वडा । मोतीया वडा । काजीया वडा । सुतल्या वडा । सालीया वडा । दालीया वडा । खाड वडा । कुहाडिया वडा प्रभृति । परीस्या । तदनतर मुग नी वडी । उडद वडी । छमकावी वड़ी । पलेह वडी । सउंतली वडी । राव वडी । माहि आदानु वीरु । छमकावी डोडी । टलटलता टींडूरा । चम चमता चीभड़ा । भली वालुहलि । कलकलता कोसभा । सुड़हडती सागरी । सडसड़ता डोडिका । छमछमती भाजी । रुडा राइत्ता । चिहुवानी पलेह । कडूआ । कसाइला । तीखा । मुधरा । जिसी पाडोसणि तणी जीभ । इस्या कडुआ । जिसु दगर तणउ उपदेश इस्या कसाइला । जिसी सुकि नी जीभ इस्या तीखा । जिसउ माता नु चित्त इस्या मधुरा । कउठ कउठ वडी कइरवदा । अवाहुलि । सूरण । पूरण । माडमी । ईढडा । प्रभृति शाक मूक्या । तदनतर वारू साल्योदन तणा करवा । कपूर तणउ वास । एलची नउ उल्हास । भोज्य लक्ष्मी नउ निवास । माहि दही तणउ प्रयोग । जीणइ हुइ जीमणहारि रइ अभयोग । इसु करवउ । अमृत मय घोल । क्षीर समुद्र कल्लोल । प्रीणइ मुखकमल । तदनतर-अथाणा । महमहती मिरी मजरी आम्रे अक आदउ प्रधान पीपलि आखी आत्री । तदनंतर पाणी । तदनतर पान

नागर खंडा, कपूरा वेलीया। आधी गामा चेयउला मागुरा वीटि साकडा। अलनसा जाल मनोहर पान वारूया जांगर खाडी व पूरवट्टरि वटिका प्रमुख मुख वास दीधा। अनेक वृध वारू पट्टकूल तेह टिवराणा इति भला। वस्त्र दीधा। एव विध स्वजन परजन संतोख्या॥ रसवती सपूर्णा॥

(पत्राक १२ वॉ, संग्रह मे १७ वीं लिखित)

१२ रसवती वर्णनम् (३)

नागोदक शीतल, थाल नइ धोवण दीधा जल।
पछइ नीली फलहलि परीसी, ते किसी किसी।
आवा, राइण, केला, खरवूजा, फूट मतीरा,
दाडिम, दाख, वीजोरा मीठा खाटा, खाटा मीठा नींवुया।
सेलडी जवीरा, डागरा, फणस, अन्ननास, सेव,
मधुरा कालींगडा, नारिंगी, नीला नालेर, खारिक,
खजूर, खरसूया, अखोड, वाइम, विदाम, वेदाणा,
पिस्ता, किटा, कमल काकडी, सींघोडा, चारोली, चारवी,
जूना करणा, मीठा कमरक, साख पका आंबा,
के छोली, के मउली, के घोली, के कातली करी
खाड घृत संयुक्त, बूरा तणा पूर।
कर्पूर वासित वरसोला, वेकरीया वरसोला।
खाडइ भेल्या, घीयइ मिल्या, कूंकणीया केला।
सोनेला, राजेला, हाथेला, तेहनी पातली कातली।
तेहनी परीसणहारि, श्यामाग नारि।
सपूर्ण श्रृगारि, कठाभरण हारि।
जाणइ रभा नइ वंशि, देव कन्या रइ असि। इसी नारि परीसइ।
पकवान तणी जाति—
सतपुडा खाजा, सर्व साजा।
जिसा प्रसाद ना छाजा, ते जिमता लागइ ताजा।
तदनतरि लाडू आवइ—
मोती लाडू, दाल लाडू, सेवइया लाडू, चारोलिया लाडू,
झगरीया लाडू, सिंह केसरिया लाडू।
नादहल, इ द्ररसा, दहिवड़ा दहिवडी, फीनी, सोट, सु हाली, सेव, भुगदी,

प्रमोदक, सोधक, मोदक, गलगलता घेउर, उन्दउ कसारु, तल्या गूंद; दधिवर्ण दहीथरा ।
पडनूधीनी साकुली, दीठइ जीभ थाइ आकुली ।
परीसणहारी नहीं वाउली।
माडी, मुरकी, जलेबी, मगद बरनारि, श्यामा, मृगमद धारि, मुख पद्म दलाकारि, ऐहवी जे चतुर नारि, ते नाना विध पकवान परीसइ ।
हिवइ मांडा आवइ—खाड माडा, मोकला माडा, गूद माडा, आछा माडा, आकासिया माडा, कपूरिया माडा ।
चरिमउ, गलिउ चरिमउ, साकारिउ चरिमउ
पाखलि मूकिउ, आंबिल वाणी,
द्राखवाणी, साकर वाणी, खाडवाणी । तदनतरि सालि

(१) सुगध सालि	(२) सुवर्ण सालि,	(३) कुयारी सालि
(४) चद्रणि सालि	(५) श्वेत शालि	(६ रक्त शालि
(७) नील शालि	(८) पीत शालि	(९) महाशालि
(१०) शुद्ध शालि	(११) कौमुदी शालि	(१२) कलम शालि
(१३) कुंकणी शालि	(१४) तिलवासी शालि	(१५) जीरा शालि
(१६) कुद शालि	(१७) रामभोग शालि	(१८) मरुडा शालि
(१९) देवजीर शालि	(२०) धूममोगर शालि	(२१) केतकी शालि
(२२) नीलोत्री शालि	(२३) साठी चोखा	(२४) मूजी चोखा
(२५) अखड चोखा ।		

इसी सालि नउ कूर—

अणियालउ, सुहुयालउ, सुरहउ, सुगन्ध, फरहरउ, दूबलियइ खाडियउ, सबलियइ छडिउ, हलवइ हाथइ सोहयउ, नखवती वीणिउ, फूटर सणि स्त्रीयइ धोयउ, हितुई स्त्रीयइ ओराव्यउ, चतुर स्त्रीयइ ओसाव्यु, सरस, सुकोमल, उजलउ, त्रि अंगुल उस्यउ कूर परीस्यउ ।
मडोवरा मूग तणी, त्रिछडी दालि, माधुर्य्य तणी पालि, वानि पीयली, परिणाम सीयली । इयी दालि परोमी ।
सद्य ततपित, परमामृत, मजिष्ठा वर्ण, वघारइ कर्ण, सरहरी धार, बेडी वार, प्रीणीयइ जीमणहार, सौभाग्य अजेय, नासापुट पेय, साक्षात् अमृत समान । एहवउ घी परीस्यउ । पट सुधीनी आछी पोली, खाड घृत सु बोली । त्रिटु पोलीए एक कवल थाइ, फूकनी मारी फलसा लगि जाई ।

हिवइ सालणा आवइ। ते किसा ?
डोडी, टीङ्करा, टींडरा, चीभडा, वच्चीडा, कोहला, कारेला, कर्म्मटा, कर्पटा, कालीगडा, करणा, केला, ककोडा, गिलका, गोल्हा, खेलरा, सेलरा, सरघूनी फली, आमला, आयरिया, आविली, घीसोडा, मतीरा, तोरीया, त्रुसडी, डागरा, खरबूजा, वृताक, मोगरी, नीबूया, जीङ्या, वालहालि, कउठ, कोठीमडा, चउलाहली, मरिच नीली, पीपरि नीली, नीलूया चिणा, चटलेवउ, बथुउ, सोया, सरिसव, अजमउ, मेथी, कयरफूल, चीलिरी भाजी, सागरी, काचरी, आमलेटी, आंवहलि, कयर, भोरटा, पेठा, दूधीना, पटींडरी, चोली, काचरी, वलिनी, फोग, फोगडी, बाउलीया।
वड़ां आवइ, वणइ तेलि सीना, घणइ-घोलि भीना, मरिचना चमत्कार, अत्यन्त सुकुमार, हस्तिपद प्रमाण, हाथ तइ उछलइ, मुँह पड्या गलइ, स्वर्ग थी देव देवी टलवलइ। आदा बडा, डोडीया वडा, काजी वडा, घोलवडा, मिरिपाली वडी, छमकाली वडी, तली वडी, कूर वडी, पेठावडी, रूडा राईतां।
हिवइ पलेव–सूंठिया पलेव, हलदिया पलेव, मरचिया पलेव, पीपलीया पलेव।
वारू खाड पीस पीपलिया तीमण, समरिचीया तीमण, सलवणा तीमण, सचोपडा खाटा बघार बहुल, तदनतरि परिसीयइ घणा। वारू वघारिया, दही तणा घोल, तिणि भर्या कचोल। सघरा दही, शाल्योदन तणा कटन। कपूर तणउ वास, भोज्य लक्ष्मी तणउ निवास। सीधव जीरा तणउ प्रतिवास। एहवा करबा परीस्या। अमृतमय घोल, खीर समुद्र तणा कल्लोल। अत्यत धवल, प्रीणियइ मुख कमल। एव विध रसवती।
उपरात चलू नइ काजि–केवडीया काथ वाणी, पाडल वासित पाणी, कपूर वासित पाणी, चदन वासित पाणी, सुगन्ध पाणी, एलची पाणी, चपक वास्या पाणी। हिम जिम सीतल जइ करी मुख हस्त पवित्र कीधा।
तदनतरि, सुरभि अबीर, गुलाल, केसर छाटणा कीधा।
हिवइ पान जाति–नागर खडा, अडागरा, मागल उरा, चेउली, कपूरीया, आधीगमा, टोडारा, ग्वालेरा, तेह तणा बीडा।
कपूर, लवगी, एलची, मृगमद, सोपारी, जाइफल, जावत्री, खड्खडी, सखचूर्ण, मोतीरउ चूर्ण, केवडीउ काथ, तेह सहित बीडा मुख वासि दीधां, जाची जवाधी महमहइ, अगर तेल सहित गधराज गहगहइ। शीतल वाय नइ कानि वारू वींजणा।

तदनतरि । सुगन्ध पच वर्ण पुष्प पगर फूल । जाइ, जूही, कुद, मुचकुंद, केतकी, केवडा, चपक, मोगर, मालती, जासूल । कमलादिक बहुविध फूल दीपइ ।

तदनतरि बहु विध वस्त्रे करी पहिरावणी, अत्र वस्त्र नामानि अष्टम पदे पंचम कथाया लिखितानि वाच्यानि ।

१४ भोजन वर्णन (रसवती) (४)

माड्यउ उत्तंग तोरण माडउ, तुरत नउ कस्यउ नवउ ।
ते कहवउ ? ऊचउ दल-वादल तबू जेहवउ ।
तेहनइ तलइ आगणउ, तेतउ नील रत्न तणउ ।
तिहाँ सखरा माड्या आसण, तउ बइसवा नी सी विमासण ?
आगइ मू की सोना नी आडणी, ते कहउ किम जाइ छाडणी ?
ऊपरि धरया स्वर्णमय थाल, अत्यन्त घणु विसाल ।
विचिमइ चउसट्ठि वाटकी, नव-नव घाटकी ।
थालइ गगोदक धोवण दीधा, तिणसु कर पवित्र कीधा ।

परीसणहारी

सिगली पाति बइठी, तितलइ परीसणहारी परीसिवा पइठी ।
ते केहवी ? रूपइं रभा जेहवी ।
सोल श्रृंगार सज्या, बीजा सर्व काम तज्या ।
रूप नी रूडी, हाथे खलकइ सोना नी चूडी ।
लघु.... .ला, मन कीधा मोकला ।
चित्त नी उदार, अतिहि दातार ।
पहिरया गलि नवसर हार, मुख पद्म दलाकार ।
अपछरा नइ अणुहार,.. ..   ।
.. सर दिहइ मिलइ तेहने उसास,   .   .   ।
सर्व दूषण रहित, सीलादिक गुण सहित ।
धसमसती आवी, सहु नइ अति भावी ।
पहिली फलदलि परीसइ, सिगला ना हीया हीसइ ।
पाका आवारी कातली, निपुण पणइ कीधी पातली ।
के छोली के मोली, के बूरा घृत सू घोली ॥
अलवेली...... परीसइ सहेली, नेह गहेली ॥

भोज्य पदार्थ

वली पाका केला, घृत सुखंड सु कीया भेला ॥
वर सोला, वेकिरीया वरसोला ॥
कूकणीया केला, सोमेला वेला ॥
जूना करणा, पीला वरणा ॥
नीला नारगी, रगई दीसता सुरगी ॥
रूडी राइणि, परीसइ भाइणि ॥
दाडिम नी कली, खाता पूजइ मनरली ॥
... ..जिमता.... .द्राख नइ विदाम के कागदी के स्याम ।
सलेमी नइ खजूर, ते परीसइ भरपूर ।
चारउली नइ पिस्ता, लोक जिमइ हस्ता ॥
गलवी गुलनु भरी, आगे लइ धरी ॥
सखरा सदा फल परिस्या परखल ॥
काबिली खरबूजा अडर देसाई दूजा ।
मीठा उ . छू खाटा नइ मीठा, ते पुरीसता दीठा ॥
हिव परिसइ पकवान नी जाति, भरिर आणीये पराति ॥

नेहनी परीसणहार, स्यामावतार ॥
कठाभरणहार, देवकन्या नइ असि ॥
इमी नारि परीसइ पकवान, जिमता वाधइ मुखवान ॥
सतपुडा खाजा, चतुर नारि कीया ताजा ।
सदलानइ साजा, जेह ॥
जिमता लागइ ताजा, मोहीअइ राउत राजा ॥

लाडू वर्णन

पछइ परीस्या लाडू, जाणे नान्हा गाडू ॥
जिण दीठा न रहइ मन ठाम, हिव सुणउ तेहना नाम,
केसरिया वेसरिया,.... .... ॥
सेविया, सु ठिया, मोतिया, मगदिया ।
मूगिया, कीटिया, कसेलेया, मेथिया ॥
किसमिसीया, तेलिया ॥
त्रिगडूआ, भगरिया ।
हल, परीसी परिघल ॥

वली पकवान आणइ, तेहना नाम वखाणइ ॥
सुहाली नइ सेव, परीसी रुडी टेव ॥
वलि परीस्या फीणा, अत्यत भीणा ॥
सक्कर ... , नही का खोट ॥
ठमकते नेउर, परीसइ घेउर ।
तलिया गूंद, जाणे अमृत ना बूंद ॥
भरि २ आणइ तवाक, सखग गूदपाक ॥
पडसूधी नइ साकली, जिमता नइ थायइ आकुलि,
वली गुलगुला, स्वादइ भला ॥
दही वडा, गूद वडा ॥
माडा नइ मुरकी, ऊपग ल्यइ भम्मार्कनी मुरकी ॥
ऊन्हा कसार, ... ॥

सूंखडी

परीसइ मोहन भोग, वृद्धा नइ जोग ॥
परीसइ चूरिमा, जिमता वाधइ ऊरिमा ।
दधिवर्ण दहीथरा, जिमता ।
खुरमा नइ खीर, जिमता वाधी भीर ।
पेटा नइ पेडा, गुंदवडे कीया निवेडा ॥
मइगल ज्यु माल्हती, चिहुं दिसइ चालती ।
हंसगति हालती, मानीना गर्व गालती ॥
स्यामा मृगमदधार, मुखपद्म दलाकार ॥
सकल सहेली परिवार, एहवी चतुर नार ॥
अगिताकार, पकवान परीसइ सुविचार ॥
हिव माडा आणइ, भलइ टाणइ ॥
कवीसर वखाणइ, जेहवा एक जाणइ ॥

मांडा वर्णन

खाड माडा, मोकला माडा,
गुल माडा, गूड माडा,
आसिया माडा, कपूरीया माडा ॥

पाणी वर्णन

विचइ पावइ पाणी, भारी भरि २ आणी ॥
आंबिल वाणी, द्राख वाणी ।

खांड वाणी, साकर वाणी ।
एलची वाणी, कपूरवासित पाणी ॥
करती भाकभमाल, हिवइ परीसइ साल ॥
नवनवी भाति, पिण कहु कितरीक तेहनी जाति॥

शालि वर्णन

सुगध शालि, कुकु शालि ।
कलमली शालि, तिलचासी शालि ॥
जीरा शालि, कुद शालि ।
राय भोग शालि, गुरुडा शालि ॥
देवजीर शालि, धूम मोगरा शालि ।
केतकी सालि, नीलउत्री सालि ॥
चद्र शालि, स्वेत शालि ॥
पीत शालि, सद शालि ॥
नील शालि, भद्दा शालि ॥
शुद्ध शालि, कौमुदी शालि ॥
साठी चोखा, मुंजी चोखा, अखड चोखा ॥

शालिकूर

इसी शालि कूर, आणीयइ भरपूर ॥
अणीयालउ, सूआलउ, सुरहउ, फरहउ ।
सुगध, परीसइ मुध ॥
दूबली स्त्री खडयउ, सबलीये छडयउ ॥
हलवे हाथे सोहयउ, जा लगें मन मोह्युउ ॥
नखवती वीणीया, सुघड स्त्रीये चीणीया ।
फूटरी सी स्त्री धोया, हिनूई आयइ जोया ॥
भली भॉति ऊराया, राधता जब कस आया ।
तब चतुर स्त्री उतारी, भलइ वस्त्र सुं भारी ॥
सरस सुकोमल उज्जलउ, वि उगलउ ॥
एहवउ कूर, परीसइ भरपूर ॥

हिव परीसइ दाल, सोहइ स्वर्णनइ थाल ॥
मडोवरा मूंगतणी त्रिछडी दालि, माधुर्य तणी पालि ॥
नानि पीली, परिणाम सीली ॥

दाल नाम

सुणज्यो सहू ते दालिनी जाति, बहू काबिली चणानी दालि ॥
तूअरनी दालि, मसूर नी दालि, उडद नी दालि॥
झालर नी दालि, मटर नी दालि ॥
भली त्रिफाड दली, एहवी दालि परीसी वली ॥
हिव ऊपरा परीसइ घी, सहू कहइ जी जी ।
साझ ना जमाव्या, परभातिना ताव्या ॥
सद्य तपित, परमामृत ॥
मनिष्ठा वर्ण, वधारइ कर्ण ॥
सरहरी धार, वडी वार ॥
अत्यंत सुखकार, आणीयइ जीमणहार ॥
सौभाग्य अजेय, नासापुट पेय ॥
साक्षात अमृत समान, जिम्या वाधइ देह नउ वान ॥
सुरहउ प्रतिवास, तावीयउ खास ॥
हिव परीसी आछी पोली, झाझा घृत सुं झकोली,—
त्रिहु पोलीए एक कवल थाइ, फूकरी मारी फलसा लगिजाइ ॥

सालणा

हिव सालणा परीसइ, सहूना हीया हीसइ ॥
कवण २ सालणा, हिव तेहनी चालणा ॥
नीली छमकाई डोडी, जिमइ होडाहोडी,
पटीरडी वडी, सेलरा खेलरा ।
सरगूनी फली, मूगफली, चउलफली, ग्वारफली
केला, करेला, कोहला, आमला ॥
नारगी, बगा, टीडसा, पर्पटा, कर्पटा ॥
करणा, वरणा, नीलवणा,—
खाटा सालणा, मीठा सालणा
तल्या, गल्या, चीमडा, कालिंगडा ॥
भुरडा, तूसडा, पटीरडा, कोठीवडा ॥
मतीरा, खीरा ॥ खरबूजा, तरबूजा, करमदा, घरमदा ॥
मिघोडा, ककोडा । मोगरी, सागरी ॥
वृताक, नीलाशाक । निंबू, जबू ॥

तुरी, सखहारी, सनूरी ॥
चाउलिया, आयरिया ॥
दूधिया, सभोलिया ॥ आवहल, वालहल ॥

अथाणा

नवनवा अथाणा, जिणइ जिमता रीझइ राउ राणा,
सालणा ॥ कदमूल, अनइ कपर फूल ॥
नीला कयर, परीसइ बयर ॥
चणा काविली, अनइ आविली ॥
मागइ घेठा, तिवारइ परीसइ पेठा ॥
रूडा राईतां, मन भाईता ॥
पीपरि पीली, मरिच नीली ॥
काकडी, वली धावडी ॥
कउठ, छमक्या मडठ ॥
काचर, मुठकाचर ॥ कोचला ।
. काचरी, ऊभ काचरी ॥
परीसिवा जोग, केवत्यउ फोग ॥
वधारया, धू पघारया ॥
अनेक छमकाया, सालणा ल्याया ॥

भाजी

झाझा घी सु साजी, स्यु करइ भाजी,
जिणा जिमता म थायइ राजी ॥
मरसवनी, सोवानी, मूलानी वथुवानी ॥
चणानी, मेथीनी, तेजारानी, चडलेवानी ॥

वड़ी

हिव आवइ वडी, एवडी पेठा वडी, आदा वडी ॥
मरिच वडी, छमका वडी, घोला वडी, पापड वडी ॥
काट वडी, दधि वडी, सिरावडी ।

वड़ा (दालिया)

हिव ल्यावइ, दालिया, वस्या हीया ।
ते एहवा, घणु वखाणीये जेहवा ॥
घणइ तेलइ सीना, घणइ घोलइ भीना ।

मरिच ना चमत्कार, अत्यत सुकमार ।
·· ···, ··· तल्या सुवाण ॥
··· दही·· दही, मउला दही ।
हाथ लीधी ऊछलइ, मुहडइ घाल्या गलइ ॥
सर्गना देव देवी टलवलइ, देखता डाढ गलइ ॥
आदा वडा, काजी वडा, घोलवडा,
मूगिदाल वडा, मउठि दालि वडा ॥
उडद दालि वडा, डोडीया वडा ॥

पलेव

हिवइ आवइ पलेव, जिमता टेव ॥
चोखानी पलेव, पीपलिया पलेव ।
हलदीया पलेव, सूठिया पलेव,
मिरचीया पलेव ॥
वारू वघार्या घोल, परीसियइ भरि कचोल ॥
सीधा जीरा तणउ प्रतिवास, भोज्य लक्ष्मी···॥
प्रीणियइ मुखकमल,· · · · ·
जाणे क्षीरसमुद्र ना कल्लोल, एहवा अमृतमय घोल ॥

दही

हिव परीसइ दही, तउ जिम्या सही ॥
गाइ ना दही, भइस ना दही, लिगार मइला नहीं ॥
कर्पूर तणउ वास, एहवा परीसइ दही खास ॥
वीजणे वाउ घालइ, गरमी सहूनी टालइ ॥
इम भोजनरीति अप · · ।

पाणी

चलू काजि पाणी अणावइ, झारी भरि २ ल्यावइ ॥
हिम जिम सीतल, अतिहि निर्मल ॥
कर्पूर वासित पाणी, पाडल वासित पाणी ॥
केवडीया पाणी, चंदन वासित पाणी ॥
एलची वासित पाणी, सुगध पाणी ॥
एहवा जल दीधा, तिणसु मुख हस्त पवित्र कीधा ॥

तंबोल

तदनतर दीजई तबोल, सुरभनइ बहु मोल ॥
टोडेरा, ग्वालेरा, अजमेरा, नागर खडा, मागल,
कपूरिया, मागही, इत्यादि पान नी जाति कही ॥
वाकडी सोपारी फाल, पिवल सोपारी फाल ॥
कर्पूर वासित, केसरादि सोभित ॥
मृगमद गटिगल, जावत्री नइ जाइफल ॥
खडचूर्ण, मोती चूर्ण ॥
केवडा काथ, इत्यादिक तबोल द्यइ सहू नइ हाथ ॥
कास्मीरी केसर ना छाटणा कीधा, इम लाछि ना लाहा लीधा ॥
अगर तेल सहित गध राज गहगइ, जा चीज वाधि गहमहइ ॥
ऊछाल्या अबीर नइ गुलाल, भला तिलक कीधा भाल ॥
हरख्या बाल नइ गोपाल , हिव सुणउ ...।
मुख आभा उली, मिहर कुली, कलमली, सिणली ।
अर्कतूल, पट्टकूल, बहुमूल, कपूरधूल ॥
रत्न कबल, मारु कवल, गगाजल .. .॥
. . धूनउ जूनउ टयाई जोडी, किणही न विखोडी ॥
सिधू दोटी, महीन नइ मोटी ॥
गउडीयउ, चउडीयउ ।
गगोदक, सोवक, खीरोदक ।
दुरंगी, सुरगी ।
सो नार गामी, धरणा गामी,
थानेसरी, अधउतरी वडवरी अउधी ।
अमृती, बुलबुल चुस्मा बहुभती ॥
कपूर वाटी, मोछुण खसखासी ।
कोरी, बोरी, साडउ, ठेपाडउ ।
खासउ नइ खेस, पूरवी सुविसेस ॥
नवनवी पाथडी, पचवर्ण कास्मीरी पामडी, टूकडी,
चरणा नइ चूनडी ॥
पर्लिग पोस, सतोस, सूफ सकलात, विलाइती विख्यात ॥
भइरु खान जाई, नीलक नइ दरीआई ॥

देश परदेस ना सालू, बंधरा नइ रगालू ॥
मालदही, माचा पिरा सही ॥
मजीटी ढोटी, पलाली मोटी ॥
करता भकभमाला, लाहोरी वाला ॥
मुलतान सलहटी, पटणी पटी ॥
हज्जारी नरमा, काविली दुरमा
सूसी नइ सेला, गर्म सूत्र वीणी भेला ॥
कसबी चीरा, झलकइ जाणे हीरा ।
छींट अनेक भाति धरी, रंगइ खरी ॥
श्रीसाफ, श्रीवाफ, कथीया जरवाफ ॥
वास्ता, तास्ता ।
कुरता, रंग मइ नहीं का खता ॥
दुगजा, तिगजा । अदूष्य, देवदूष्य ॥
चीनांशुक, पट्टांशुक । सिरबंध, तनुबंध,
कमरबंध ॥ इकतारा, दुतारा ।
हीरागर, वइरागर फूलफगर, टसर, खसर ॥
चादर, वादर । अंबर, पीताम्बर ॥
नारीकुंजर, मसजर । सारझार, रउकार, दाडिमसार,
चउतार । वस्त्र पहिरावणी इत्यादिक सुविचार ॥
लइ मानुष अउतार, इम करइ भोजनाविकार,
ते धार लहइ सुजस अपार ॥
इति भोजन विधि वर्णनम् ॥(कु.)

१५ घृत

सद्य तायिउ, धारइ नामिउं ।
मंजिष्ठ वर्ण, वधारइ कर्ण ।
सरहरी धार, प्रीणइ जीमणहार ।
सौरभ्य अमेयु, नासा पुट पेउ ।
साक्षात अमृत, इस्युं घृत ॥

१६ धान्य (१)

साल, माल, गोहूँ, जव, ज्वारि, तूर, चणा, चंवला, वटला, मूग, मोठ,

माष, मसूर, मासो, मणची, वरटी, चाठडो, समलाईया, कागणी, कोदरी, कूरी, कुलथ, वेकरियो इत्यादि धान । (वि.)

१७ धान्य (२)

जव, गेहूँ, साल, व्रिही, कोदरी, मूग, मोट, चिणा, चौला, उडद, कागडी तिल, मसूर, तूर, अलस, कुलथ, तूअर, क्वार, (ग्वार) मक्की, माल, वरटी, वाजरी, मणची, सही, रायमल, वटला, काछाण, राल धान्य नामा ॥
इति सभाश्रृंगार सपूर्ण । स. १७६२ वर्षे फाल्गुन सुद सप्तम्या तिथौ भृगुवारे गणिमहिमाविजयेन लिपि कृताद श्रीरस्तु ॥
श्लोक ग्रथाग्रथ ७५६ एभि ग्रथ सख्या जायते ॥

(मोतीचदजी सग्रह प्रति)

१८ लाडू (१)

कंसार ना लाडू, कसमसिया लाडू, कसेला ना लाडू,
मोतीआ[1] लाडू, कीटीना लाडू, केना[3] लाडू,
मगदीआ लाडू, मोतीआ लाडू, मेथी ना लाडू,
मूग ना लाडू, मेदा ना लाडू, चोखा नू लाडू,
सिंह केसरिया लाडू, ओषधीया[4] लाडू, अडदीया लाडू,
आसध[5] ना लाडू, तिलना लाडू, त्रिगडू ना लाडू,
लाखण साही लाडू, धाणी ना लाडू, कुली ना लाडू,
कूलरिया लाडू—एहवी विविध प्रकार ना लाडू ।

१९ मोदक (२)

॥ तदनतर ॥ शुद्ध रवानइ दलवाडइ केलव्या । घृत वर्ण पाकि तल्या । शर्करा पाकि बाध्या । मरी एलची ना चमत्कार ।
काचां कपूर ने वासे वास्या । स्थूल वाटला महोज्वल ।
इसा सेवईआ लाडू । दल लाडू । बीत्रा लाडू । मोतिआ लाडू
वाजण लाडू । नाद हल । अमृत हल । खल खड । भल खड ।
प्रमुख मोदक मुक्या ।
जाणिइ किरि भोज्य लक्ष्मी तणा क्रीडा-कदुक हुइ जिस्या ।
अथवा सुकृत द्रुम तणा परिणाम मनोहर फल हुइ जिस्या ।

---

१ मोतीचूर ना लाडू । २ कीटिया लाडू । ३ कणक ना लाडू ।
४ रखदीया लाडू । ५. आसधिया लाडू ।

परीसणहारि तणा पयोहर सपूर्ण हुइ जिस्या ।
अमृत घट हुइ इस्या मोदक शोभइ ॥

२० सुंखडी (१)

पुडी, पैंडा, पापडी, पात, पापड, खाजा, खाडकतेली, खाडखुरमा, दहीथरा, दमीदो, दोठा, गूदगणी, गाठिया, सकरपारा, सु हाली, गूदवडा, गूंदगणा, गूजा, गुलपानडी, गलेफी, मुरकी, मोतीचूर, सोढ, साकली, सेव, सेवगाठिया, साबूणी, सीरो, साकरिया चणा, हेसमी, घेवर, फीणी, जलेबी, पतासा, कल्याणसाई, बादरसाई, तल्या, ताया, कुल्या, करकरा, मोला, मीठा, गल्या, गलेफ्या, चीगटा, चूचूता, भरया, भरभराया, एहवी सु खडी ।

२१ सूंखड़ी नाम (२)

पूड़ी, पेड़ा, पापड़, पापडी, खाजा, खाड, खुरमा, दहीथरा, दमीदो, दोठा, गुपचप, गुदगणी, गाठिया, गुद वडा, गुजा, गुल, गलेफी, मुरकी, मोतीचूर, सोठ,साकली, सेव, सकरपारा, सुहाली, सीरो, साकरीया चणा, हेसमी, घेवर, फीणी, जलेबी, पतासी, कल्याणसाही, तल्या, तावा, कुला, करकरा, मोला, मीठा, गल्या, गलेक्या, चूचूता, भर्या, भरभर्या एहवो स्वाद ।

२२ सूंखडी (३)

॥ सूखडी वक ॥ उपलिइ मालि । सुवर्णमय स्थालि । प्रशस्ति कालि । छोहारि, खारिक । वेकटा । वरसोला । हीरागल । साकर । किसमिसि दाख, दीपशाखा । खजूर । सरंग । नारग । तरुण करुण । सरस पनरु । सारस इकार । अमृत निर्यास । अजास । सूनेला । राजेला । नारसखेला । केला तणी कातली । बीजोरा तणी चडउडी । नालीयर नी खड़हडी । दाडिम नी कुली । वारू चारुली । घड्या सीधोंडा । मनगमी वायमी । इक्षु दड । अखोड़ खंड । निउंजा । जंबीर । मुखा स्वादन प्रभृति स्वादइ नी पन्न फलहुलि ॥ (पु०)

२३ सालिजाति (१)

सुगध साल, सुवर्ण साल, कुकणी साल, देवराजी साल,
रायभोग साल, सुद्ध साल, कमोद साल, कमल साल ।
रामुकी साल, धोली साल, राती साल, पीली साल,
जीरा साल, राम केलि साल, पुनासी चोखा, अखड चोखा ।
राजोर चोखा, साठी चोखा, ढूंढणिया चोखा, रायपाल चोखा ।
सुखदासी चोखा, सोनल साल, गरडी चोखा, एहवा चोखा ।

२४ सालि नाम (२)

सुगध, सुवर्ण, कुकणी, देवजीरी, राजोरा, जीरा, रायभोग, पाथरिया, साठी, कमोद, कमोल, धोली, पीली, राती, काली, इत्यादि सालि ।

(कौ०)

२५ शालि (३)

॥ तदनतर ॥ रक्त शालि । महाशालि । सुवर्ण शालि । सुगध शालि । तिलवासी शाली । राजान्न शालि । साठिश्रा प्रभृति । सुमनीप्सित ।

अखड शालितणा चोखा । दूबली खाडिश्रा । वाली छडसा । निपूती वीणिउ । अलवेसरि आणीउ । सुमनि सोहिउ । फूटरीइ धोयउ । वीहती चालिउ । तरुणी हईइ पग देई उसायउ । भक्ति समारिउ ॥

२६ तंदुल (४)

कापिउ दातु जिम ऊमिलवा,
वयरागरउ हीरउ जिम झलकता ।
वडी खाडिया, वाली छडिया
आटि पाटि वीणिया, सख कुदावदात
सुगंध, अंगुलप्रमाण, सुरभि, कलमसालितणा अखड तदुल (पु. अ.)

२७ कूर (५)

उन्हउ । तीन्हउ । सरहरउ । भरहरउ । अणीआलु । सुहालउ । सरस सोहामणउ । ऊजलो जिस्यो केवडउ । ऊडेरी जेवडउ । वूबलइ पेटिं पइसतु फूटी नीसरइ इस्यु कूर । घृत पहित तणइ संयोगइं । मन तणी रगि ।

२८ दालनाम (१)

मूंग नी, मसूर नी, चवलानी, वटलानी, उडद नी, मोठ नी, तूअर नी, इत्यादि ।
फीणी मडोरा मग तणी दालि ।
फोतरे छाडि, हलूइ हाथि ऊखलइ खाडी ।
त्रिछडकी, घखइ पाणी सीधी ।
वानइ पीली, नेत्र सीली ।
जीमता स्वादिष्ट, परीसणहारि अभीष्ट ।
परीसि दालि ॥ (पु)

२६—व्यंजन (१)

वडा, सालेवडां, सांगरि, मिरि, माजरी ।
वालहलि, अवहलि, पूरण, सूरण, इंडरी वडी
पापड, ककोडा, घीसोडा, कारेलां, चींभड़ा, कोठीभडा,
आदा, करमदां । प्रमुख व्यंजन ।

(१४२ जे०)

३०—व्यंजन (२)

पुष्पागरु, नीलागरु
गजवडि, तुरगवड़ि
हसवड़ि, राजवडि
सोवन, पारेवा
मेघवना, पटहीर
संझारावा सोनछला, प्रमुख चीभडी
कोटीमडी घूसेड़ा
आदा करमदा, प्रमुख व्यंजन ॥ पु अ.

३१—साक नाम (३)

सागरी, मोगरी, चोराली, चोला, खेलरा, काकड़ी, मतीरा, टींडसा, कोहला, कालिंगडां, काचरी, कोचला, सरवूवो, आरीया, तोरीया आंवली, आंबोल, आल, आमला, करमदा, कैर, कंकोडा, करेला, फोग, चीलडी, पातोड, सीरावडी, वड़ी, भुजिया, चींव, परवल, किदूरी प्रमुख ॥ (कौ)

३२—साक सालणा (४)

सागरी, मोगरी, चोलेरी, चोला,[१] चिणा, छोला[२], सेलरा, सरथूड[३], सिरंजणो, आरीआ, तुरीआ आंबिली, आला, आवोल, आमला, उलिया. टिंडूरा, टिंडसा, कोहलां, कालिंगड़ा, काचरी, कोचला, काकड़ी, काजी, केला करमदां, कइर[४], कक्कोडा, कारेलां, रात्रवडी, वडी, वटला, वैंगण, पातोडी, परवल, वालोळ, फोगफली, मूंग[५], मतीरां, मेथी, गलकां[६], भुजिआ, प्रमुख, अनेक जाति—

---

१ चन्ना । २ छोना । ३ सरगूड, सरथूओ । ४ कैर । ५ मूगी । ६ गलीया ।

खाग, खाटा, मोथळा, मीठा, कडुआ, कसायला, तीखा, तमतमा, मधुरा, मिरचीला, फोलालां, रायता[1], धुगारयां, वघारयां, तलरा, अथाणो आंबिलीयाला काचा, पाकां, सूकां, नीलां, ऊन्हा, टाढां, वोहल्यां, छू द्या, सेक्या, कास्या, कलकलता, सलसलता, चूचूता, छोल्या—एहवा सर्व साक नी जाति ।

३३—वड़ा (५)

॥ एवं विध वड़ा ॥ मेथीआं वडा । कांजिआ वड़ा । हस्तिपद वडा । मालीआ । टालिआ । सु तल्यां पापडी । मुगवडी । उड़द वडी । छमकावी वडी । पलेह वडी । सूतली वडी । आखामिरी । फूलवघार नइ । वासि वास्या पूरण । वघारीइ घरी । मिरी भरी खांडमी ।

३४—शाक (६)

अनेक वानी पलेव । छमकावी डोडी । टल टलतां टींडूरां । कलअलता कोसूभा । सुड-सुडती सींग । डुसडुसतां डोढिकां । छमछमती भाजी । रूडा रायता । चमचमा चीभडां ।

पत्रमय । पुष्प मय । फल मय । मूल मय । त्वचा मय ।

वात हर । पित्तहर । श्लेष्म हर । रोचक । दीपक । आप्यायको । कामुक । तिक्त । कटु । कषाय । आम्ला । मधुर । जारक । अनेक गुण मय शाक परीस्या ।

३५—अथाणा

आला, काचा, पाका, सूका, नील्हा, उन्हा, सेक्या, वास्यां, कलकलता, सलसलता, वलवलता, चूचूता इत्यादि

३६—भाजी

तांदळजा नी भाजी, पोचीआ नी भाजी,
चील नी भाजी, चिणानी भाजी,
पुंआडीया[2] नी भाजी, वाथला[3] नी भाजी,
राईनी भाजी, सरसव नी भाजी,
अफीम नी भाजी, मेथी नी भाजी,
सूआ नी भाजी, रजायण[4] नी भाजी।
मूळा नी भाजी, चंदलेई नी भाजी,
लालरी नी भाजी, एहवी भाजी।

---

१. राईता २ पु आण नी भाजी ३. बथुआ नी भाजी ४. रायणी नी भाजी

३७—घोल

॥ अनंतरु ॥ प्रवणोत्वर्णा रसाल नाना वाटला । पाणीनां ।

कचोला मूक्यां ॥

तदनंतर ॥ प्रधान । वारूगल्या घोल । सुगंधि निष्पन्न । सुवासिवासित । इस्या घोल परीस्या ॥

ते किस्या ? दही सूं कढिकढ्यां । सु जाढि जाम्यां । सुहत्थि हत्थ सपन । लव्रथंव थव्र कपड़िअ । तंदहि अंवह न सभरइ ।

कडुआ । कसायला । तीखा । मधुरा ।

जिसी पडोसणि नी जीभ तिस्या कडुआ । जिस्यू गुरु तणो उपदेश, तिस्य कसाइला । जिसी सोकिनी जीभ, तिस्या तीखा। जिस्यु मान उचित, तिस्या मधुरा ।

त्रिहु वानी नी छासि-घणदे । जगदे । पंचधर ।

लापसी । खाड़ माडा । पूरण माडा । दाडिमीआ मांडा । कुरु कुरु माडा । पत्र महा प्रधान । एलची पाटला । सीकरी वास वासित । सुगध सीतल । महा मनोहर । एहवा पांखी ॥

३८—पक्वान्न (१)

केला, वरसोला
खर्जूर, बीजपूर
आंविली, दाडिमकुली, चारउली
इक्षुदंड, द्राक्षाखड
मोदक, गुडमोदक
इसा पक्वान्न ॥

३९—पक्वान्न (२)

पापडी, चुडहडी, काकरिया, सलवलिया, कंसार, घृतपूर, सुहाली, सेव, साकुली तातपुड़ी, खंडमोदक, गुडमोदक, दोहठा, दही वडी, माडी मरकी, सिंह केसर, पंच धार लपनश्री । एव विध पकान ॥ छ ॥

१९९ जो

४०—पक्वान्न (३)

खंडोतली, सुहाली, सेव, गणा, मोदक, माडी, मुरकी, फीणी, पापडी, साकुची, सांकुली, खीरि, खाडु, घृतु, लचलची लापसी, सालिदालि । घृत नालि, व्यजन पालि ।

१ मोर

पलेह, पानक । माधुर, चुरासी सालण । चउसठि खांटो । वीस तेल ना छमकाविया । दाधी, भूगी । इडरी वड्क । पापड शालि पापड । कुर । दधि, दुग्ध । घोलडाहि ॥ ६२ ॥ जै.

४१—पक्वान्न (४)

॥ तदनंतर ॥ सतपुट जिस्यां हुइ छाजां, इस्यां हुइ खाजां । मसमसी मरकी । शशि विशद सुहाली । फगफगां फीणां । दुग्धवर्ण दही वडा । घृत वर्ण घारी । सुकुमाल । सुंहाली । अखंड मांडी । शर्करा निचित साकुचीस्यउं तल्यां सेवत्तां । वारु दही वडी । मागलकीआं । प्रमुख पक्वान्न परीस्या ॥

४२—पाक

चारोली पाक, चाखी पाक, अखोडपाक, बदामपाक, केसरपाक, करमदा पाक, निमजापाक, पिस्तापाक, केलापाक, कोहलापाक, केरी पाक, किसमिसपाक, कोंचपाक, गूंदपाक, गोखरूपाक, गुलाबपाक, अफीमपाक, आंबापाक, आमलीपाक, आसंभपाक, एलचीपाक, सुठपाक, सेलडीपाक, विजयापाक, सीघोडापाक, सोपारीपाक, दूधपाक, दहीपाक, दहीथडापाक, द्राखपाक, विरहालीपाक, पिपरीपाक, तनमनीपाक, त्रिगड्डूपाक, भिलामापाक, लसणपाक, हरडेपाक, मुसलीपाक, नालेरपाक, विजोरापाक, जावत्रीपाक, जायफलपाक, बडबोरपाक, खारिकपाक, खलखलापाक, खुरमापाक, हींगलूपाक, लविंगपाक, लींबूपाक, महुडापाक, मिरीपाक, चणापाक, फूलपाक, फीणीपाक, शतपाक, सहस्रपाक, लक्षपाक, कोटिका पाक, कनकबीजपाक इत्यादि जातना पाक ॥

४३—पांणी (१)

सुगध केवडाना, काथाना, कपूरना, पाडलना, चदनना, एलचीना, वालाना गुलाबना, पालर पानी, गंगोदक, शुद्धपाणी इत्यादि (को.)

४४—पांणी (२)

सुगध पाणी, केवडा पाणी, काथा पाणी,
कपूर पांणी, पाडलना पांणी,

चंदनना पांणी, एलचीना पांणी,
वालाना पांणी, गुलाबना पांणी,
पालर पांणी, वाकल पांणी, गंगोदक पांणी,
एहवा पाणीनी अनेक जाति ॥

४५—मेवा (१)

नालिकेर, सहकार । जाबू, बीजपुर ।
नारिंग, करणां, कपित्थ, द्राखा, खजूर ।
खारिक, अखोड़ ।
वायम, दाडिम ।
राजादन, वारुकलिका ।
कदलीफल, पूगीफल ।
प्रभृति फलुहलि ॥ ६१ ॥ जै०

४६—मेवा (२)

केलां वरसोलां, खज्जूर, बीजपूर, आंबिली, दाडिमकुली, चारउली, इक्षु-दड, द्राखाखंड, आंबा, रायण अखोड, वाइम, निमज्या जरगोजां ॥छ॥ इसां भक्ष्य ॥१४३॥ (जै०)

४७—मेवा (३)

अखोड, अंगूर, किसमिस, छुकेला, केलां, कमरख, अनार, अखरोट, आलु, अजीर, बदाम, बिही, बिजोरा, बरसोला, खजूर, खलहला, खारिक, खरबुजा, खिरणी, फालसा, नारंगी, निमजा, पीस्ता, सेव, सहतूत, सफ़लजल, सदाफल, श्रीफल, सोपारी, सिंघोडा, सरदा, चारोली, चारुची, तूत, तरबूज, द्राख, फणस, फाल, जरदालु एहवो मेवो ॥

४८—मेवा नाम (४)

खारक, खोपरा, किसमिस द्राख, विदाम, पिसता, निवजा, केला, कमरख, अगूर, अनार, अखरोट, आलू, अंजीर, चीहि, विजोरा, वरसोला, खजूर, खलहल, खरबूजा, खिरणी, नारंगी, सेव, सहतूत, श्रीफल, सोपारी, सिंघोड़ा, सरदा, चारोली, फणस, जरदारू एहवा मेवा (कौ०)

४९—मुखवास (१)

विचित्र पत्र । अतिस्थूल पूगीफल । परत्र प्रतिकूल सौगधिक । तांबूल, कपूर वास वासित मिति भद्रम् ॥ (पु०)

५०—मुखवास (२)

पान, काथो, चूनो, सोपारी, लवंग, डोडा, एलची, जायफल, जायपत्री, तज, तमालपत्र, खेखडी, खइरसार, कपूर, केसर, चिणकबाब, कस्तूरी इत्यादि मुखवास।

५१—भोग्य

तेल, तबोल, चूआचंदन, कपूर, केसर, कस्तूरी, कसबोही, मर्दन, उद्वर्तन, न्हावा, धोवो, सोहवा, सिणगारवा, पालवा-पोसवा, पहिरवा, ओढवा, खावा, पीवा, इत्यादि भोग्य।

५२—सुगंध वस्तु

केसर, मूकड, चूऊ, चदन, अबीर, जवाद, गुलाल, मोगरेल, चापेल, जाचेल, केवडेल, करणेल, कपूर, कस्तूरी, अतर इत्यादि सुगंध वस्तु।

५३—सुगंध तेल

केवडिओ तेल, कल्पकरण तेल, कुष्टकालानल तेल, कनकबीज तेल, करज तेल, मरसीओ तेल, ओषधीउ तेल, अर्धांग तेल, निगुडीओ तेल, निबोली-तेल, धूपेल तेल, विषगर्भ तेल, वाघेल तेल, भींडीनु तेल, भीलामा तेल, पातालयन्त्र तेल, मालकांगणी तेल, डोलीओ तेल, तिलनुं तेल, टोपरेल तेल, करड तेल, मतावरी तेल, चांनली तेल, चांपेल तेल, दाणेल तेल, अलसिड तेल, एरंडीओ तेल, इत्यादिक तेल।

५४—वस्त्र (१)

चीनाशुक, पटाशुक।
गोजीनर्म, नीलनेत्र।
सचोप, पाटणीपट, पटहीर, विलचलिया।
मुगवन, माडलिया।
वइराग, रहीराग।
लादर, मेघाडंबर।
नेत्रपट्ट, धौतपट्ट, राजपट्ट।
गजवड, हंसवड।
वोरियावडि, सुवर्णवडि।
कपूरिया, चउकडिया।

पोतिया, वक्रकोटा ।
राजवटा, महिवड़ा, नागवटा । प्रमुखाणि ॥ ६३ ॥ जै०

५५—वस्त्र (२)

वस्त्र—एहवा भला वस्त्र पहिर्या ते केहवा छैः !—सालू, सेलां, सीरीसाप, सिणीया, सुर्सी, सलहेत्ती, (सण), सूप सकलात, चौरसा, चीर, चुनडी, चीणी, मीठा, मलमल, छींट, सिंदूरी, मखमल, महिमुदी, पांमडी, पटका, पछेडी, पाढ, पीतांमर, पटोला, पांचपदा, पट्ट, अराण, अतलस, अधोत्तर, एलाचा, खासा, खेस, खारा, भैरव, बाहदरी, बिदामी, दरिआई, दो तारा, घरमा प्रमुख अनेक वस्त्र सोभइ छइ ।

५६—वस्त्र (३)

देव दूष्य । देवाग । चीनाशुक । पट्टांशुक । पट्ट दुकूल । नील नेत्र । पाट्टत्र । पट्ट हीर । पट्ट साउली । पंचराईआ । नर्म खर्व फूल पगर । जादर । नेत्र पट्ट । धौत पट्ट । राजपट्ट । गजवडि । सुवर्ण वडि । हंस वडि । काल पडि । सूहचिआं । कपूरिआ । इत्यादि वस्त्राणि ॥ छ ॥ पु०

५७—वस्त्र (४)

वस्त्रनाम :—

सालू, सेला, सिरीसाप, सणीया, सूसी, सलेती, सूप, सिकलात, चोरसा, चीर चूनड़ी, चीणी, सिन्दूरी, छींट, मींठा, मलमल, मुखमल, मिसरु महमुंदी, पामड़ी, पटका, पछेडी, पाट पीतंबर, पटोला, पट्ट, अटाण, अतलस, अधोतर, इलायचा, खासा, घिलू, बाफता, अदरस, भैरव, डोरिया, खेस, खाखा, बहादरी, बिदामी, दरीयाई, दोतारा, चोतारा, कथीपा, मसंजर, झिलमिल, अवरंगजेबी, कीमखाप, चकला, सीरसकर, थिरमा, काला, पीला, धोला, नीला, राता, पंचवर्णा अनेक वस्त्र पहिर्या छइ ॥ ४ ॥ कौ

५८—परिधापनिकोपयोगी वस्त्र वर्णन (५)

अदूष्य	देवदूष्य	रत्नकम्बल	खीरोदक
तनुबंध	शिरबंध	कमरबंध	कंठ
पीठ	पइठाणी	अटाण	नर्म्म
खर्म्म	यज	प्रताप	जादर
साउला	चउरसा	उलवेला	मेघाडंबर

दाडिमसार	हीरागर	वइरागर	फूलपगर
चीर	कथीपा	सानबाफ	नरबाफ
कमखाब	अघोतरी	तनसुख	मनसुख
गगाजल	खानजाई	अमृती	चीनाशुक
पट्टांशुक	गजवेडि	सुवर्णवेड़ी	हसवेडि
नीलवेडि	कालवेडि	नीलनेत्र	मूगवन्ना
सचोप	पाटणी	पटा	पाट्ट
पटंबर	पट्टकूल	पीतांबर	नारीकुंजर
वालाचूनडी	घाट	कमखा	दरीयाखानी
चूलिया	मटली	नाटी	अतलस
दरीयाई	लाहि	नाट्यटा	धौतवटा
चक्रवटा	चारसा	हंसलीया	पोपटिया
पोपतिया	भइरविया	चापानेरिया	खाडकी
आसाउली	कोची	सालू	भइरव
बास्ता	सिरीसाप	श्रीबाप	टूकडी
खइरावाटी	सम्माणा	थानेसरी	घरणगामी
सोनारगामी	खासा, भूना	टहीकोड	दुगनउ
दु तारउ	चउ तार	चुपटा	गउडीया
टसरिया	पूरिया	सिखीया	मिणीया
एरडी, चाप	चारोलिया	चलवलिया	प्रवालिया
गजिउ	कपूरधूलि	अर्कतूल	पाम्हडी
खेस	रोंकार	धटी	मुहमूटी
कसबी	चीरा	मुकमल	नीलक
तास्ता	दुरंगा	मसज्जर	चीनी
सूसी	टोटी	साडी	सेलउ
खासर	खरवास	सूप	सकलात
लोवड़ी	कंबल	लोलिवा	भोटकवल
नेपाली	काश्मीरी	मावा	कोरी
बोरी	सेत्रुंजी	गिलम	त्रापड
खरडी	पाटी	वोरीया	कमलवन्ना (१२०) (सू०)

५९—स्त्री वस्त्र

चोलीवरणा, कसवी, कसीदा, कमखा, कुसूंबल, पटोली पटोला, पीतांबर, घाट, साडी, सणाली, अमरी, वाइल, जूई, राता, पीला, घोला, काला इत्यादि स्त्री ना वस्त्र।

६०—आभरणानि (१)

हार, अर्द्धहार।
त्रिसर, चतुःसर।
पटसर, अष्टसर।
नवसर, अढारसर।
एकावलि, कनकावलि।
मुक्तावलि, विज्ञावलि।
प्रवरावलि, सूर्यावलि, नक्षत्रावलि।
कटीसूत्र, रसनासूत्र। मुकट।
पट्ट, शिखर चूडामणि कुंडल कटक।
कंकण, अंगद।
मुद्रानदक, दशमुद्रक।
अगुलीयक, हस्तागुल कडंब।
कर्णापलिका, संकलिका।
पादका, ग्रैवेयका।
प्रभृति आभरण ॥६४॥ (जै०)

६१—आभरण (२)

हार, अर्द्धहार, प्रालंब, प्रलंब, मुकुट, कटक, कंकण।
केयूर, वाहरां, पीडला, टोडरा, नूपुर, कुंडल।
एकावली, कणकावली, मुक्तावली, सूर्यावलि, चंद्रावली, नक्षत्रावली, सौभाग्यावली, श्रोणीसूत्र, काची कलाप, चूडामणि, अंगुष्टक, अगुलीयक, मुद्रिका, नवग्रहा। बहुरखां, वलय, वालला, नगोदर, नागुला, खीटला, छत्रीटियां, घडि, मोतीसरी ॥ ६८। (जो.)

६२—आभरण (३)

आभरण
हार, अर्द्धहार, प्रलंब, प्रालंब, एकावलि, मुक्तावलि कनकावलि, रत्नावलि, सूर्यावलि, चन्द्रावलि, झलक, तिलक प्रमुख आभरण ॥ (पु० अ०)

६३—आभरण (४)

अणवट, अगूठी, वीछीया, पोलरी; कड़ी, कांबी, कांकण, कटिमेखला, झाझर, बाजूबंध, बहिरखा, पूची, छाप, वींटी, हार, अर्द्ध हार, दुलड़ी, चौकी, माला, मोरड़ी, घड़ी, चीरु, साकली, तेहड़, जिहडा, पाइल, मोतसिरी, सीसफूल, तलो, नवरंग, नवग्रही, बोर, अकोटा, झाल, खवगाली, खीटली, पानडी, नकफूली, नकवेसर, सिंघो, थूघरी, राखडी, सहेली।

टीकी, काजल, कूंकू, हींगलू इत्यादि ॥ (कौ.)

६४—पुरुष अलंकार, स्त्री आभरण (५)

तदनंतरि पुरुष अलंकार पहिरावइ तन्नामानि। १ हार २ अर्द्ध हार ३ त्रिसर ४ चतु.सर ५ अष्टसर ६ नवसर ७ आरसर ८ एकावलि ९ मुक्तावलि १० अजावलि ११ नक्षत्रावलि १२ टकावलि १३ प्ररावलि १४ झूंबणा १५ पदकड़ी १६ माला १७ कुतरी १८ वाली १९ वेढ़ला २० तुगल २१ मोरला २२ कडी २३ गठोडा २४ कर्णपूर २५ कुंडल २६ पइ २७ मुकुट २८ चूडामणि २९ छोर ३० वाजूबन्द ३१ वहिरखा ३२ पेसदस्नी ३३ गिजाई ३४ नवग्रहु ३५ हथसाकला ३६ दसांगुलिक ३७ मुद्रा ३८ अंगुलिमुद्रा ३९ वेढ ४० वींठी ४१ वेलिउ ४२ नवघरी ४३ छाप ४४ कडली ४५ कटिमेखला ४६ कन्दोरा ४७ कडी इत्यादि।

स्त्री आभरण—१ राखडी २ वेणी ३ सहेलडी ४ झाबउ ५ सइथउ ६ टीलउ ७ चांदलऊ ८ चाक ९ शीशफूल १० फूली ११ मोरिला १२ पनडी १३ अरहट्ट १४ नकवेसर १५ काटउ १६ नकफूली १७ कुंडल १८ घडि १९ वींटला २० अकउटा २१ नागला २२ तांडक २३ वाली २४ हारादिक २५ नींबोली २६ मादलीया २७ हांस २८ चीड २९ दुलडी ३० सांकली ३१ वालियां वालमी ३२ चूडो ३३ कांकण ३४ काकणी ३५ वहिरखा ३६ प्रहुंचीया ३७ हथवालडा ३८ काचूवा ३९ कटिमेखला ४० झांझर ४१ नेउर ४२ कडला ४३ त्रेघडि ४४ घूवरी ४५ घूघरा ४६ पाउलि ४७ कानी ४८ वींछीया ४९ मुद्रा इत्यादि स्त्रीजनाभरणा नामानि। (सू.)

६५—धातु नाम—

मृगाक, धातवर्द्धन, वग, वंगेश्वर, पारद, अभ्रख, ताम्र, तावेश्वर, तेजानो, रूप रसरस, रमांग, अमलगोली, विजया, पुडी, लोहचूरण, लोहसार।

पंचर, पंचरत्तिरस, छमाखिक्य, रसपाचक, रसरुप औषध, वेषध, इत्यादि धातु नाम, (वि०)

६६—चाँदी का कटोरा

उघसियं नीवसिय पोतासियं चोख चमुखं
ऊजलं नीमल जसं पूनिम तणउ चन्द्र मंडलु
तिसिउ रुपा नउं कचोलउ । (पु० अ०)

६७ रत्न (१)

पद्मराग	पुष्पराग	मकरतमणि	कर्केतन
वज्र	वैडूर्य	चन्द्रकांत	सूर्यकांत
जलकांत	नील	महानील	इंद्रनील
रागकर	विभवकर	ज्वरहर	रोगहर
शूलहर	विषहर	हरिन्मणी	चूनी
लोहिताक्ष	मसारी	नल	हंसगर्भ
विद्रुम	अक	अजनरिष्ट	मुक्ताफल
अहिमणि	चिंतामणि ।		

इति रत्न जाति नामानि ॥ (१२४ नो०)

६८ रत्न [२]

इंद्रनील । महानील । पद्मराग । पुष्प राग । लोहिताक्ष । कर्केतन । मरासगल्ल । पुलक । कौस्तुभ । सश्रीक । रत्नाकर । श्रीपति । देवानंद । पुष्टिकर । ज्योतिकर । गुणमालि । सोगधिक । कर्कोटक । हस-गर्भ । अक । वरिष्ट । शिवप्रिय । सौभाग्य कर । विषहर । अजन । पुलक । अरिष्ट । अमालि । तिकर । सूरल । शत्रुहर । जल निलय । पटक । सुभग । चद्रकाति । सूर्यकाति । वैडूर्य । सूर्यमणि । चद्रप्रभ । सागर प्रभ । भद्रंकर । प्रभंकर । भद्रंकर । अशोक । प्रभा नाथ । इत्यादि रत्न ॥ छ ॥ (पु०)

६९ रत्न [३]

नील, महानील, चन्द्रकांति, सूर्यकान्ति, वज्र, वैडूर्य, कर्केतन, ज्योतीरस, सौगधिक, प्रमुख अशेष, रत्न विशेष । (पु० अ०)

७० रत्न [४]

चिंतामणी, वैडूर्य, सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, जलकांत, कर्केतन, नील सासग, लोहिताक्ष, मसारगल, हसगर्भ, पुलक, प्रवाला, सौगंधिक, सुभग, स्फटिक

ज्योतिर्मय, तरुप, अंजण, अंजण पुलक, अंकमणी, मणिरिष्ट, मरकत इत्यादि जाति ना रत्न। (वि०)

७१—रत्न (५)

अश्वरत्न, गजरत्न, पुरुषरत्न, स्त्री रत्न।

पद्मराग, पुष्पराग, माणिक, गुरुडोद्धवोद्वार, मरकतरत्न, कर्केतन, वज्र, वैडूर्य, चंद्रकांत, सूर्यकांत, शिवकात, चद्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाथ, अशोक, वीत अशोक, अपराजित, गगोदक, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलग, सौगंधिक, सुभग, सौभाग्यकर, विषहर, धृतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अंजन, ज्योतिरस, शुभ्ररुचि, स्थूलमणि, गोमूत्र, गोमेद, लसणिया, नीला, तृणचर, वज्रधर, षटकोण, कणी, चापडी, पीरोजा, प्रवाल, मौक्तिक प्रमुख रत्ने करी हाट भर्या दीसै छइ॥ (पू०)

७२ रतनमाला

आद श्रीनारायणजी।

देवां वडो तो देव	१	राजारिख तो विश्वामित्र	१६
वडा वडी तो प्रथमी	२	काल तो महाकाल	२०
वं (बहु) रतना तो विसंधुरा	३	गुणवंत तों गुणेस	२१
देवता तो विश्वनाथ	४	जखराव तो कुमेर (कुवेर)	२२
देवी तो पार्वती	५	गधर बीना तो तुवर	२३
त्रवध कामनी तो गंगा	६	पंखराव तो गुरड	२४
दईत दलण तो कृष्ण जी	७	नगरी तो अमरावती	२५
खेत तो आदखेत	८	पुहप तो पारजातग	२६
महाखेत तो वाणारसी	९	व्रख (वृक्ष) तो कल्पवृक्ष	२७
पछम खेत तो प्रभात	१०	हस्ती तो ऐरापति	२८
मुकत खेत तो गया जी	११	तुरंगम तो उच्चास	२९
सिव खेत तो श्रीधान	१२	भडारी तो धनादि	३०
आद खेत तो पोह्कर	१३	पुरष तो पुरुषोतम	३१
तीर्थराव (तीर्थराज) तो प्राग (प्रयाग)	१४	आरंभ तो राम	३२
व्याकरण तो पु न्यान	१५	परतंग्या पुरण तो परसराम	३३
वेद वत तो ब्रह्माजी	१६	अप्रोहित तो सूक्र	३४
ब्रह्मारिख तो दुरवासा	१७	अहंकारी तो रत्णो रावण	३५
कलहप्रिय तो नारद	१८	माण तो दुर्जोधन	३६

धमखधारी तो अरजन	३७	महाथनख तो चाणनुर	६८
अदष्टांत तो भीवसेन	३८	कृष्णभक्त तो पेह्लाद	६६
खत्री तो दशरथ	३६	सहासीक तो विक्रमादीत	७०
आरोहित तो भंगदत्त	४०	सत तो हरचंद	७१
निरवाहण तो कुंभकरन	४१	जोगणी तो हरसधी	७२
सुधापत तो इन्द्रजी	४२	सिध तो आदनाथ	७३
स्याम भगत तो करण	४३	जती तो गोरख	७४
वंथ (वीधु) भगत तो लखमणजी	४४	सती तो कम्मारी	७५
मत्रभगत तो सदावछ	४५	तसकर तो खापरो चोर	७६
भरतार भगती तो दामोवती	४६	भाषा तो सन्क्रत	७७
जुग तो सतजुग	४७	पख तो पितर पख्य	७८
चक्रवंत तो मानघाता	४८	परवत तो देवालक	७६
वास वसतो तो जीव	४६	वार तो आदीत	८०
सुरता तो मनतत	५०	तिथ तो अमावस	८१
अरथ तो जागवड	५१	व्रत तो एकादशी	८२
होमदेव तो होतासण	५२	तरण तो कसप	८३
विप्रदेवता तो ब्राह्मण	५३	जोतकी तो तोखड	८४
पुत्रवंती तो सावत्री	५४	उग्रग्रह तो राह	८५
पापहरणी तो गावत्री	५५	समरथीक तो मेघमाला	८६
गिगनाधपत तो आदीत	५६	अतरत तो जीव	८७
सोम सीतल तो चंद्रमा	५७	मास तो कारितक	८८
विद्याणीक तो वेद	५८	रुत तो वसंत	८६
वेदायन तो सदापत	५६	सुरत तो मगरधज	६०
चवाल तो नेत्रह	६०	प्रीत तो मद प्रीत	६१
क्रम दुलभ तो स्रीचिरत	६१	वसतर तो सपेत	६२
धूरत तो माल चक्रवंत	६२	अत चचल तो वानरो	६३
फणदा तो सेस	६३	वेगो आवै तो मन	६४
परवत तो मेर	६४	रुपवती तो न्यासका	६५
दातार तो दधीच	६५	चख तो अंतर ज्या	६६
मीच तो हसवत	६६	परमला तो कस्तूरी	६७
गोत्ररिषी तो कासिप	६७	उदगारता तो कपूर	६८

श्रृंगार तो तंबोल	६६	साच तो राजा जुधिष्ठिर	१२०
चंता तो राजचता	१००	दरसणाग तो भाटराजा	१२१
वेध तो राजवेध	१०१	चतरग तो चारण	१२२
राजा तो भोजराज	१०२	माली प्रिया तो माधव	१२३
राव तो परूर राव	१०३	उड़ण तो नंदणवण	१२४
दुख तो दलद्री	१०४	दान तो अन्नदान	१२५
आगारी तो कपा	१०५	भिख्या तो किण भीखा	१२६
विनासकारी तो पाप	१०६	सीख तो गुररी सीख	१२७
सत तो संतोष	१०७	अखई तो आकास	१२८
ग्यान तो मोख	१०८	अनत तो ऊतरपथ	१२६
सती तो सीता	१०६	खड तो भरत खड	१३०
नदी तो गगा	११०	जुंली तो लंका	१३१
उछह तो पुत्रवती	१११	अतरथ तो भरमन सेव	१३२
प्रभावती तो गोदवती	११२	श्रेष्ठ फल तो अन्न	१३३
रतन तो माणक	११३	ओखद तो अमृत	१३४
समद तो खार समद	११४	कूड तो कपलामोचन	१३५
पुत्र तो भागीरथ	११५	कठण तो भैरव	१३६
रथ तो नदीघोष	११६	राग तो भैरुराग	१३७
वेस्या तो कामसेना	११७	कवि तो माघो	१३८
विभोगी तो नछराज	११८	कवि तो कालदास	१३६
सतपत तो आचारज	११६	नक्षत्र तो अभीच	१४०

(अनूप संस्कृत लाइब्रेरी प्रति से)

७३—शैया

मलय चंदन छटा छोटित भूमितल ।
ददह्य मान काला गुरु ।
कर्पूर पारी मघमघायमान ।
पुष्प शय्य निरुपमान स्वर्ग लोक विमान समान ।
उभय पार्श्वोपधान शोभित, मध्यभाग गभीर ।
गगा पुलिन समान, अत्यंत सुकुमाल शयनीय । (१५७ जे०)

७४—भवन (१)

प्रधानाहार वस्त्रालंकारैः वात्सल्य वर्णन

श्री युद्धिष्ठिर राजा श्री चंद्रप्रभ प्रसाद प्रतिष्ठोपरि साहम्मी वात्सल्य करइ ।

ते केह्वइ कि भवनि ?
उत्तु ग तोरण मंडप । रत्नमय भूमि । स्वर्ग मय आसन ।
वैडूर्य्य रत्नमय आडणी, न जाइ किणही बै छाडणी ।
माणिक्य मय स्थाल, अति विशाल ।
चउसट्ठि वाट्ठली, समइ आवर्त्तइ वली ।

७५—घर नी ओपमा

मोटा घर, गया न लागइ कर । वित्त ना डोकर, घणा धानना भर । चिहु खूणे वासइ अगर, सेज फूलनी पगर । मोटा डागला, तिहा जड्या प्रवाला । मोटीसाला, सोना रूपानी टकसाला । मोटा किवाड, तिहा केलिना झाड़ । जीमइ प्राहुणानी ओल, घूमइ विलोवणा झलझोल, सूहव नारी करइ रंगरोल । साधु नइ दीजै दान, घणा पकवान, उन्हा धान, रूडै वान, दया पालै, दुखिया ना दुख टालइ । भिख्यारी नइ दीजइ अन्न, तोल न पाम्यो धन्न । जाता आवता आदर करइएहवा साहूकार ना घर धन सहित छइ ।

७६—साहूकार रो घर

मोटा घर, गयां न लागै कर ।
बइठां न को डर, घणा धान नो भर ।
चिहू खूणै वासै अगर, सेझै फूल ना पगर ।
मोटा आला, तिहा जडित प्रवाला ।
मोटी साल, तिहा खेले बाल ।
घरे घणा सोना ना थाल, जीमे साल नै दाल ।
सुरही घी नी नाल, तोरण मोत्या री माल ।
...., सोना रूपा नी टकसाल ।
मोटा कमाड, तिहा केलां ना झाड़ ।
जीमे प्राहुणा नी ओल, घूमै विलोवणा नी झमझोल ।
सुहव नारी करें रगरोल, ...।
साध नै दीजै दान, घणा पकवान ।
ऊन्हा धान, रुडै वान ।
दया पाळै, दुखिया ना दुख टाळै ।
भिखारी नै दीजै अन्न, तो भलै पाम्यो धन्न ।
जाता आवतां आदर करै, पुन्य तणा पोता भरै ॥
एहवा साहूकार ना घर

परिशिष्ट

परिशिष्ट (१)

सभाशृंगारादि वर्णन संग्रह

रत्नकोष

सर्वशास्त्र मयं रम्य, सर्वज्ञान प्रकाशक
स्वल्प ग्रन्थ सुबोधार्थं, रत्नकोश समभ्यसेत् १
तत्रे शब्न सूत्राणा द्वाराणा संग्रहो यथा—
वाक् विशेषण विज्ञानं रत्नकोशे समाभेत् २
त त्र द्वार शत प्रोक्त, नीति शास्त्र विशारदे.
तदहं सप्रवक्ष्यामि, बुधाना हित काम्यया ३
रम्याणि भुवनान्याहुः विश्वेत्रीणि यथा क्रमम्
मनुजाना महाश्रेष्ठ, भुवन देव नागयोः ४
त्रिविध लोकस्थान. कथ्यमानं तु श्रूयते
दान च मान सस्थानं, देव स्थान निगद्यने ५
त्रिविधा भूमिरित्युक्ता उच्चनीच प्रदेशगा
समास्तुभूमि विज्ञेया, मुनिभिः परिकीर्त्तिता ६
त्रिविधा पुरुषा लोके, उत्तमा मध्यमास्तथा
अधमा जग विख्याता, ससारे ससरतिते ७
यथा चिता वयः प्रक्ता, पदार्थाश्च त्रयस्तथा
धातु रूपाश्च जीवाश्च तृतीयो मूल सज्ञकः ८
धर्मार्थ काम मोक्षेषु पुरुषार्थो नरोत्तमः
चतुर्थाय प्रधोनाय पुरुषः पुरुषोत्तमः ६

रत्नकोश

अथातो वस्तु विज्ञान रत्नकोश व्याख्यास्यामः—

सर्व शास्त्र मय रम्य सर्वज्ञान प्रकाशकं ।
स्वल्प ग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोश समभ्यसेत् ॥ १ ॥

तत्र शतेन सूत्राणां संग्रहो यथा–

१ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि
२ त्रिविध लोक सस्थानं
३ त्रिविधा भूमिः
४ त्रिविधा पुरुपाः
५ त्रय पदार्था.
६ चत्वार पुरुषाणामर्था.[१]
७ षट्त्रिंशद्राज वंशा
८ सप्तांग राज्य
९ षण्णवतिराजगुणाः
१० षट्त्रिंशद्राज पात्राणि
११ षट्त्रिंशद्राज विनोदा
१२ अष्टादशविधं स्थान
१३ चतस्रो राजविद्या
१४ चतस्रो राजनीतयः
१५ सप्तविंशति[२] शास्त्राणि
१६ षट्त्रिंशत् दंडायुधानि
१७ द्विपचाशत् तत्त्वानि
१८ द्विसप्तति कला
१९ चतुराशीति विज्ञानानि
२० चतुराशीति देशा
२१ द्वात्रिंशल्लक्षण स्थानानि
२२ चतुर्विंशति विग्रह
२३ अष्टोत्तरशत मगलानि
२४ त्रिविध दानं
२५ पचविध यश
२६ सप्तविधा कीर्ति
२७ नव रसा
२८ एकोनपचाशद्भाव
२९ चत्वारो अभिनया
३० चतस्रो वृत्तय
३१ चत्वारो नायका
३२ चत्वारो महानायका
३३ द्वात्रिंशद्गुण नायका
३४ त्रिविधा महानायिका
३५ अष्टौ नायिका
३६ द्वात्रिंशद्गुण नायिका
३७ त्रिविध[३] सौख्यं
३८ चत्वारि सौख्य कारणानि
३९ नवविधो गधोपयोग[४]
४० दश[५]विध शौचं
४१ द्विविध.[६] कामः
४२ दश कामावस्था
४३ विंशति रक्तस्त्रीणा लक्षणानि
४४ एकविंशति विरक्तस्त्रीणा लक्षणानि
४५ द्वाविंशतिर्कामिनीना विकारेंगितानि
४६ चतुर्विंशति असतीनां लक्षणानि
४७ षोडश दुष्टस्त्रीणा अपलक्षणानि
४८ अष्टोस्त्रीणां अभिसारिकाणि[७]
४९ अष्टौनार्यो अगम्या
५० अष्टविधो मूर्ख
५१ चतुर्विंशति विध नागरिक वर्त्तनम्
५२ त्रिविध[८] (त्रिविध[८]) रूपं
५३ त्रिविधं स्वरूप
५४ द्वादश विध प्रमोदोपचार
५५ पचविधः परिचयः
५६ दशपुरुषाः स्त्रीणा अनिष्टा भवति
५७ दशभिः कारणै स्त्रियो विरज्यते
५८ त्रिभिः कामिन्यः सबध्यते

---

१. पुरुषार्था २ सप्तदश ३ द्विविध ४. पात्रोपभोग ५ द्वि ६ त्रिविध ७ अविश्वास ८ द्विविध।

५९ सप्तविध कामुकाना क्रीडारभः
६० अष्टविध विदग्धानां सुरतं
६१ नवविधं सुरतावसानं
६२ नव शयन गुणा.
६३ दशविध पार्थिवाना प्रमोद
६४ चतुर्विधः प्रबोधः
६५ चतुर्विधा बुद्धि
६६ अष्टौ बुद्धिगुणाः
६७ चतुर्विधं गन्धर्वं
६८ त्रिविध गीतं
६९ षट्त्रिंशद् गीतगुणा
७० चतुर्विध वाद्य
७१ षोडशधा नृत्योपचार
७२ षोडशविध वाक्यम्
७३ दशविध वक्तृत्व
७४ षट्विध भाषा लक्षणं
७५ पंचविध पांडित्यम्
७६ चतुर्विंशतिविधं वाद लक्षणं
७७ षट दर्शनानि
७८ अष्टविधं माहेश्वरं
७९ दशविध ब्राह्मयम्
८० चतुर्विधं सांख्यं
८१ सप्तविध जैनम्
८२ दश[१]विध बोद्ध
८३ चतुर्विध चार्वाकं
८४ चतुर्विंशति विधं विचारकत्वम्
८५ दशविध गुरुत्व
८६ पञ्च चरितं
८७ पंचविध पार्थिवानां पालनं
८८ सप्तविधं उत्तमत्वं
८९ नवविधा शक्तिः
९० सप्तविधा भुक्ति

९१ अष्टविध अभिमान लक्षण
९२ चतुर्विधं वात्सल्यं
९३ पंच विधो महोत्सव
९४ सप्त विधा प्राप्तिः
९५ चतुर्विंशति विधं शौर्यं
९६ दशविधं बलं
९७ दशविध संग्रह
९८ पञ्च विध प्रभुत्व
९९ अष्ट विधो जय
१०० अष्ट विधो भोग
१०१ षोडश शृगारा
१०२ षडविध परिच्छेद
१०३ चतुर्दश विद्यानाम
१०४ चतुर्विधा गति

अन्य प्रतियों मे इस प्रकार नाम और मिले है—

१ षोडश विध नाट्यम्
२ चतुर्विध परिच्छेद
३ पञ्चविध अप्रभुत्वम्
४ चतुर्विधा प्रीति
५ षडविधा भोज्यरसा.
६ नवविधा भक्ति
७ पंचविधा प्रतापः
८ द्विविध चातुर्यम्
९ त्रिविधं वीरत्वम्
१० द्विविध कृपा
११ द्वात्रिंशत् नायका
१२ नवविधो गात्रोपभोग
१३ दशविध प्रासाद
१४ चतुर्विंशति प्रमोद
१५ चतुर्विधं नाट्यम्

---

१ चतुर्विध।

१६ षोडश विध परिचय
१७ त्रिभि कारणै स्त्रीणाम विज्ञंते
१८ नवविध काव्यम्
१९ सप्त विधा भक्ति
२० द्विविधा भुक्ति
२१ एकविधा मुक्ति
२२ दशविध यशः
२३ पंचविध परिच्छेद
२४ पंचविधा गति
२५ पंचविध विप्रत्वं
२६ अष्टादश मित्रस्थानं
२७ द्वात्रिंशद उत्तम गुण नायका
२८ द्वादश विध वक्तृत्वम्
२९ अष्टविधा भक्ति
३० सप्तविधं गृह
३१ अष्टौलब्धः
३२ अष्टादश विधं पुराण
३३ सप्त विधः कामिनीनां सुरतारभ
३४ अष्टविधं सुरतावस्थानां
३५ चतुर्विधत्वम् वाचाकित्वम्

इति सूत्राणां संग्रहः

वस्तु-विज्ञानं रत्न-कोशे समारभेत् ।

१ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि—सुर-भुवनं, मानव भवनं, नाग-भवनं
२ त्रिविध संस्थानम—देवसंस्थानं, दानवसंस्थानं, मानवमस्थानं
३ त्रिविधा भूमि—उच्च प्रदेश, निम्न प्रदेश, सम प्रदेश
४ त्रिविधाः पुरुषाः—उत्तम, मध्यम, अधम
५ त्रय-पदार्थाः—धातु पदार्थ, जीव-पदार्थ, मूल-पदार्थ
६ चत्वारः पुरुषाणामर्थाः—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
७ षट्त्रिंशद्र जवंशा—१ ब्रह्मवंश[1], २ सोमवंश, ३ यादववंश, ४ कदम्बवंश, ५ इक्ष्वाकुवंश, ६ बाह्वीकवंश, ७ चोलुक्यवंश, ८ छंदिकवंश, ९ चाहुवानवंश, १० सैंधववंश, ११ डामीवंश, १२ चापोत्कटवंश, १३ पडिहार[2], १४ लड्डुक, १५ राष्ट्रकूट, १६ शक, १७ करटपाल[3], १८ कोटपाल, १९ चंडिल्ल[4], २० गोहिल, २१ गुहिलपुत्र, २२ मौरिक, २३ मोरी, २४ मंकुया[5] २५ धान्यपाल, २६ राजपाल, २७ अनंग[6], २८ निकुंभ, २९ दाडिम[7], ३० कलिछुर, ३१ दधिमुख, ३२ हूण, ३३ हरितट, ३४ डोड, ३५ पमार, ३६ शिव, (सिल्लार, लुलु, पौलिक, कलरव)
८ सप्तांग राज्यं—१ स्वामी, २ अमात्य, ३ जनपद[10], ४ भाण्डागार, ५ दुर्ग[11], ६ बल, ७ मित्र[12]

---

१. सूर्यवंश २ प्रतिहार, ३. करट ४ लदेल ५ मकियाण ६. अनक ७. दाभिम ८ दधीचि ९ हरिमोरंभ १० देश ११ सेन्या १२ मन्त्र

९ षरणवति राजगुणाः—१ विद्या, २ विनय, ३ विवेक, ४ विस्तार, ५ सदाचार, ६ सत्य, ७ शौच, ८ सम्मानं, ९ संस्थानं, १० समाधान ११ सौख्य १२ सौजन्यं, १३ सौभाग्य, १४ रूपं, १५ स्वरूपं, १६ सयोग[१३], १७ वियोग, १८ विभाग, १९ सांगत्यं, २० संपूर्णश्च, २१ सोमत्व[१४], २२ सकलत्व, २३ सजलत्व, २४ प्रसन्नत्व, २५ प्रभुत्व, २६ प्राजलित्व, २७ पालकत्व, २८ पाडित्य, २९ प्रणयित्व, ३० प्रमाण, ३१ शरण, ३२ प्रमोद, ३३ प्रसाद, ३४ प्रताप, ३५ प्रारम्भ, ३६ प्रभाव, ३७ परिच्छेद, ३८ संग्रह, ३९ सदाग्रह, ४० निग्रह, ४१ विग्रह, ४२ अनुग्रह, ४३ तुष्टि, ४४ पुष्टि, ४५ प्रीति, ४६ प्राप्ति, ४७ प्रशसा, ४८ प्रतिष्ठा, ४९ प्रतिज्ञा, ५० स्थैर्य, ५१ धैर्य, ५२ शौर्य, ५३ चातुर्य, ५४ गांभीर्य, ५५ बुद्धि, ५६ बल, ५७ अधीक्ष[१५], ५८ विरोध, ५९ विषय, ६० विशेष, ६१ विनोद, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ काति, ६५, कीर्ति, ६६ विस्फूर्ति[१६], ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ महोत्सव, ७० मंत्र, ७१ रसिकत्व, ७२ भावकत्व, ७३ गुरुत्व, ७४ स्मृति, ७५ भुक्ति, ७६ युक्ति[१७], ७७ आसक्ति, ७८ अनुक्रम, ७९ अनुराग, ८० अभिमान, ८१ दान, ८२ कारुण्य, ८३ दर्शन, ८४ स्पर्शन, ८५ रसन, ८६ श्रवण, ८७ घ्राण, ८८ मर्याद, ८९ मडन, ९० उदात्त, ९१ उदय, ९२ उत्साह, ९३ उत्तम गुणाः, ९४ दाक्षिण्य, ९५ सत्व, ९६ वश ॥१॥

१० षट्त्रिंशद्राज पात्राणि—धर्मपात्र, अर्थपात्र, कामपात्र, विनोदपात्र, १ विलास पात्र, २, विद्यापात्र, ३ विज्ञानपात्र, ४ क्रीडापात्र, ५ हास्यपात्र, ६ शृङ्गार-पात्र, ७ वीरपात्र, ८ देवपात्र, ९ दानवपात्र, १० कर्मपात्र, ११ मन्त्रिपात्र १२ संधिपात्र, १३ महत्तम पात्र, १४ अमात्य पात्र, १५ अध्यक्ष पात्र, १६ सेना पात्र, १७ सेनापाल पात्र, १८ प्रधान पूजा पात्र, १९ मान्यपात्र, २० राजमान्य, २१ पदस्थ पात्र, २२ देवीपात्र, २३ कुलपुत्रिका पात्री, २४ पुनर्भूपात्र, २५ वेश्यापात्र, २६ प्रतिसारका पात्र, २७ दासीपात्र, २८ देशपात्र, २९ गुणपात्राणि, ३० दर्शन, ३१ सत्य, ३२ राजमंत्री, ३३ आधान, ३४ नगर, ३५ पुण्य, ३६, कुलपति ।

११ षट्त्रिंश राज विनोदा—१ दर्शन विनोद, २, गीत विनोद, ३ नृत्यविनोद, ४ वाजित्र विनोद, ५ वृत्त, ६ पात्र, ७ लेख्य, ८ वक्तृत्व, ९ कवित्त्व, १० वाद विनोद, ११ युद्ध विनोद, १२ नियुद्ध, १३ गज, १४ तुरंग,

---

१३. स्वयोग १४ सौम्यत्व १५ अध्यक्ष १६ स्फूर्ति १७ मुक्ति ।

१५ पत्ति, १६ खेटक, १७ द्यूत, १८ जल १६ यत्र, २० महोत्सव, २१ पत्र, २२ फल, २३ पुष्प, २४ कला, २५ कथा, २६ प्रहेलिका, २७ पदार्थकरण २८ तत्व २६ बल, ३० चित्र, ३१ सूत्र विनोद ३२ श्रवण विनोद, ३३ कृत्रिम विनोद, ३४ पठित, ३५ प्रकृति, ३६ खलित्व, ३७ शास्त्र, ३८ बुद्धि, अक्षर, गगन, मत्र, कमल, काया, पाठित, केश क्रीडा ।

१२ अष्टादशविधं स्थानं–१ मल्लस्थान, २ आस स्थान, ३ हितस्थान, ४ स्निग्धस्थान, ५ मत्रि, ६ महत्वत्तम, ७ अमात्य, ८ बुद्धि सुख, ६ अभय सुख, १० आरामिक, ११ आम्नायिक, १२ देशी पुरुष, १३ धर्म पुरुष, १४ धन पुरुष, १५ काम पुरुष, १६ राजपुरुष, १७ विज्ञान, १८ विनोद पात्राणि च, शाबोदन्त, शासनक, संग्रामिक, ज्ञान पुरुप ।

१३ चतुस्रो राजविद्या—१ आन्वीक्षिकी, २ त्रयी, ३ वार्ता, ४ दण्डनीति ।

१४ चतस्रो राजनीतयः १ साम २ दान ३ भेद ४ दंड ।

१५ सप्तविंशति शास्त्राणि—१ शब्द शास्त्र, २ छंद शास्त्र, ३ अलंकार शास्त्र, ४ काव्य शास्त्र, ५ कथा शास्त्र, ६ नाट्य शास्त्र, ७ नाटक शास्त्र, ८ निघण्टु शास्त्र, ६ धर्म १० अर्थ ११ काम १२ मोक्ष १३ तर्क १४ गणित १५ गान्धर्व १६ मत्र १७ वैद्यक १८ वास्तु १६ विज्ञान २० विनोद २१ कृत्य २२ कला २३ कल्प शिक्षा २४ लक्षण, २५ बुद्धिशास्त्र, २६ वादविद्या, २७ मंत्र, पुराण सिद्धान्त शास्त्राणि ॥

१६ षट्त्रिंशत् दण्डायुधानि—१ चक्र, २ धनुष, ३ खड्ग, ४ तोमर, ५ कुन्त, ६ त्रिशूल, ७ शक्ति, ८ पाश, ६ अंकुश, १० मुग्दर, ११ मक्षिका, १२ भल्ल, १३ भिंडिमाल, १४ मुषढि, १५ लुष्टि, १६ तुरिका[1], १७ पट्ट, १८ गुरज, १६ गदा, २० परशु, २१ पट्टिसु, २२ कुष्टिकरण २३, कपन, २४ हल, २५ मूशल, २६ हुलिका, २७ पत्र, २८ कर्त्तरि, २६ कोठाल, ३० तरवारि, ३१ दुग्फोट, ३२ गोफणि, ३३ डाह, ३४ डचूस[2], ३५ लुठि । ३६ दण्ड शास्त्राणि, वज्र, छुरिका, यष्टि, शंकु, मुष्टि, यष्टि, करपात्र, कुद्दाल, असनि, सारग ।

१७ द्विपचाशत् तत्त्वानि—१ पृथ्वी तत्व, २ अपतत्व, ३ तेजतत्व, ४ वायुतत्व, ५ आकाश तत्व, ६ शब्द, ७ स्पर्श, ८ रस, ६ रूप, १० गन्ध, ११ रसन, १२, स्पर्शन, १३ घ्राण, १४ चक्षु, १५ श्रोत्र, १६ त्वक् १७, पाणि,

---

१, तीरिका २, बुम्नुन

१८ पाद, १९ गुद, २० उपस्थ, २१ मन, २२ बुद्धि, २३ अहंकार प्रकृति, २५ पुरुष, २६ बिन्दु, २७ रक्त, २८ मांस, २९ मेद, ३० अस्थि, ३१ मज्जा, ३२ शुक्र, ३३ वात, ३४ पित्त, ३५ कफ, ३६ मल, ३७ काम, ३८ क्रोध, ३९ लोभ, ४० मोह, ४१ भय, ४२ मात्सर्य, ४३ राग[3], ४४ नयक[4], ४५ विद्या, ४६ शुद्ध विद्या, ४७ माया, ४८ ज्योति, ४९ नाद, ५० शक्ति, ५१ ईश्वर ५२ भक्ति, काल, दान, कला, परमयुक्ति ॥

१८ द्विसप्तति कला—१ गीत कला, २ नृत्यकला, ३ वाद्य, ४ बुद्धि ५ शौच, ६ मंत्र, ७ विचार, ८ वाद, ९ वास्तु, १० नैपथ्य, ११ विनोद, १२ विलास १३ नीति, १४ शकुन, १५ चित्र संयोग १६ हस्त लाघव, १७ कुसुम, १८ इन्द्रजाल, १९ सूचीकर्म, २० स्नेह पात्र, २१ आहार, २२ सौभाग्य, २३ प्रयोग, २४ गंध, २५ वस्तु पात्र, २६ रत्न, २७ वैद्य, २८ देश भाषित, २९ विजय, ३० वाणिज्य, ३१ आयुध, ३२ युद्ध, ३३ नियुद्ध, ३४ समयवर्त्तन, ३५ हस्ति, ३६ तुरग, ३७ पक्षि, ३८ पुरुष, ३९ नारी भूमिलेप, ४० काष्ठ शिल्प, ४१ वृक्ष, ४२ छद्म, ४३ उत्तर, ४४ शस्त्र, शास्त्र, ४५ गणित, ४६ पठित, ४७ लिखित, ४८ वक्तृत्व, ४९ कथा, ५० च्यवन, ५१ व्याकरण, ५२ नाटक, ५३ अलंकार, ५४ दर्शन, ५५ अध्यात्म, ५६ धातु, ५७ धर्म, ५८ अर्थ, ५९ काम, ६० द्यूत, ६१ शरीर कलाश्चेति, ६२ कवित्व, ६३ वचन, ६४ छंद, ६५ ध्यान, ६५ दान, ६६ सौख्य, ६७ क्रीडा, ६८ सूत्र ६९ विनय. ७० पान, ७१ वर्ण, ७२ सैन्य, भिक्षा, प्रत्युत्तर, सत्व ।

१९ चतुरशीति विज्ञानानि—१ हेतु विज्ञान, २ तत्त्व विज्ञान, ३ मोहन, ४ कर्म, ५ धर्म, ६ मर्म, ७ शख, ८ दंत, ९ काच, १० गुटिका, ११ योग, १२ रसायन, १३ वचन, १३ कवित्त्व, १५ नैपथ्य, १६ मंत्र, १७ मर्द्दन, १८ पत्रक, १९ वृष्टिक, २० लेप कर्म, २१ सूत्र, २२ चित्र, २२ रंग, २४ सूची कर्म, २५ शकुन, २६ छद्म, २७ नैर्मल्य, २८ गंध, २९ युक्ति, ३० आसन, ३१ शील, ३२ काष्ठ, ३३ कर्म्म, ३४ कुंभ, ३५ लोह, ३६ यंत्र, ३७ वंश, ३८ नख, ३९ तृण, ४० प्रासाद, ४१ धातु, ४२ विभूषण, ४३ स्वरोदय, ४४ द्यूत, ४५ अध्यात्म, ४६, अग्नि जल विद्वेषण, ४७ उच्चाटन, ४८ स्तंभन, ४९ वशीकरण, ५० हस्ति शिक्षा, ५१ अश्व, ५२ पक्षि. ५३ स्त्री काम ५४ रत्न, ५५ वस्त्राकार, ५६ पाशुपाल्य, ५७

---

३ रोग ४ नियति

क्षाप, ५८ वाणिज्य, ५९ लक्षण, ६० काल, ६१ शास्त्र, ६२ शस्त्र-४, ६३ आयुधकार, ६४ नियुद्धकार, ६५ आलेख्य, ६६ कुतूहल, ६७ केश, ६८ पुष्प, ६९ इन्द्रजाल, ७० पान विधि, ७१ अशन, ७२ विनोद, ७३ सौजन्य, ७४ सौभाग्य, ७५ गीत, ७६ विनय, ७७ नीति, ७८ आयुर्वेद, ७९ व्यापार, ८० धारणा ८१ लक्ष्मी, देव, दान, वृद्धि, इति विज्ञानानि, ज्योतिष, वैद्यक, मन्त्र, दर्शन, मस्तक, वृष्टि, लाभ, विनिश्च, नाटक, वैशिष्य, काव्य, वाद्य, कालकृत, सामुद्रिक । इति विज्ञानानि ॥

२० चतुरशीतिदेशा—१ पूर्व देश, २ अगदेश, ३ वंग देश, ४ गौड़ देश, ५ कान्यकुब्ज, ६ कलिंग, ७ गौड़, ८ बंगाल, ९ कुरंग, १० राढ़वारप्री, ११ वामुन, १२ नरयूपार, १३ अंतर्वेद, १४ मगध, १५ मत्स्य, १६ कुरु, १७ डाहल, १८ कामरु, १९ उड्र, २० पञ्चाल, २१ सोमेश्वर २२ जालंधर, २३ गोर-पाद, २४ पश्चिम, २५ स्थल, २६ चालंभ, २७ सौराष्ट्र, २८ कुंकरण, २९ लाट ३० श्रीमाल, ३० अर्बुद, ३१ मेदपाट, ३२ मरु, ३३ कच्छ, ३४ मालव, ३५ अवन्ती, ३६ पारियात्र, ३७ संयोग, ३८ ताम्रलिप्त, ३९ त्रिगत, ४० सोरटक, ४१ सौवीर, ४२ चीणककाण, ४३ उत्तरापथ, ४४ गुर्जर, ४५ सिन्धु, ४६ केकाण, ४७ नेपाल, ४८ (भोट) रथ, ४९ ताजिक, ५० बर्बर, ५१ दास, ५२ कीर, ५३ काश्मीर, ५४ वज्जल, ५५ हिमालय, ५६ लोहपुर, ५६ भीराष्ट्र, ५७ दक्षिणापथ, ५८ मलय, ५९ शीघल, ६० पांड्य, ६१ कौशल, ६२ आन्ध्र, ६३ विन्ध्य, ६४ द्रविड, ६५ श्रीपर्वत, ६६ वैदर्भा, ६७ त्रिगट, ६८ ओर-लाजी, ६९ तापीतट, ७० महाराष्ट्र, ७१ आभीर, ७२ नार्मट, ७३ कामाद्र, ७४ कड्ड, ७५ पापाणक, ७६ चौड, ७७ आगास्य, ७८ वरेन्द्र, ७९ गंगा-पार, ८० सौसग, ८१ काता, ८२ तिलंग, ८३ मलबार, ८४ पारकर, द्वीपदेशाश्चेति ॥

२१ द्वात्रिंशल्लक्षण स्थानानि—१ स्वर्ग लक्षण, २ मृत्यु, ३ पाताल, ४ तत्व, ५ विद्या, ६ विज्ञान, ७ ज्ञान, ८ वास्तु, ९ विनोद, १०, वाद, ११ कला, १२ कल्प, १३ गीत, १४ वाद्य, १५ धर्म, १६ अर्थ, १७ काम, १८ मोक्ष, १९ देश, २० काल, २१ पात्र २२ पुरुष, २३ स्त्री २४ गज, २५ तुरग, २६ पत्ति, २७ रत्न, २८ सदव्यापार, २९ सत्व, ३० वस्तु, लक्षणानि ।

२२ चतुर्विंशति विध गृहं—१ प्रासाद, २ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृहकोश, ६ कोष्ठागार, ७ पानीय स्थान, ८ शौच गृह, ९ माल्यगृह, १० मठस्थान, ११ सत्रागार, १२ शृंगार, १३ गृह, १३ धर्मस्थान, १४ विनोद स्थान, १५

मंदिर, १६ हस्तिशाला, १७ वासभवन, १८ मडप, १६ महानस, २० भोजन-शाला, २१ अग्रासन, २२ अर्थस्थान, २३ राजागणच ॥

२३ अष्टोत्तरशत मंगलानि—१ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ महेश्वर, ४ स्कंद, ५ आदित्य, ६ लोकपाल, ५ अग्नि, ६ अमरसागर, ७ नदी, ८ पर्वत, ६ गगन, १० ग्रह, ११ गण, १२ गंधर्व्व, १३ चद्र, १४ विनायक, १५ ज्योतिष, १६ धर्म शास्त्र, १७ द्विज, १८ वर, १६ वेद, २० पद्म, १२ प्रदीप, २२ कौस्तुभ, २३ काचन, २४ रूप्य, २५ ताम्र, २६ घृत, २७ मधु, २८ मद्य, २६ सिद्धान्न, ३० चन्दन, ३१ सितवस्त्र, ३२ वेश्या, ३३ गोरोचन, ३४ मृतिका, ३५ गोमय, ३६ शास्त्र, ३७ अजन, ३८ औषध, ३६ अक्षत, ४० रत्नमणि, ४१ मोदक, ४२ शंख, ४३ प्रियगु, ४४ जव, ४५ श्वेत पुष्प, ४६ सर्षप, ४७ दधि, ४८ आम्र, ४६ उदम्बर, ५० छत्र, ५१ हस्ति, ५२ बीजपूरक, ५३ मुंक्ताफल, ५४ दूर्वा, ५५ खजरीट, ५६ वृषभ, ५७ ध्वज, ५८ हस, ५६ कन्या, ६० दर्प्पण, ६१ मत्स्य, ६२ तुरंगम, ६३ गीत, ६४ वीणा, ६५ ध्वनि, ६६ सिंघ, ६७ मेघ, ६८ स्वस्ति, ६६ तोरण, ७० कुम्भ, ७१ चामर, ७२ गौ, ७३ सवत्सा, ७४ आर्द्र मास, ७५ स्त्री, ७६ सपुत्र, ७७ वाहन, ७८ प्रदान, ७६ विद्या, ८० पानीय, ८१ पुष्टि, ८२ तुष्टि, ८३ प्रसाद, ८४ उल्लोच, ८५ पूर्णपात्र, ८६ आर्द्रशाखा, ८७ प्रियवाक्य, ८८ श्रीवृक्ष, ८६ तालवृंत, ६० पूजानिधि, ६१ नर, ६२ सहस्र ६३ गौरी, ६४ गगा, ६५ सरस्वती, ६६ नर्मदा, ६७ यमुना, ६८ कमला, ६६ सिद्ध पीठ, १०० कीर्त्ति । इति मगलानि ।

२४—त्रिविधंदानं—१ अभयदान, २, उपकारदान, ३ द्रव्यदान ।

२५—पंचविधंयश—१ ज्ञानयश, २ प्रतापयश, ३ सदाचार यश, ४ पराक्रमयश, ५ वर्णनयश ।

२६—सप्तविधा कीर्त्ति—१ दान, २ शौर्य ३ पुण्य, ४ वर्तन, ५ विज्ञान, ६ काव्य ७ वक्तृत्व ।

२७—नव रसाः—१ शृगार, २ हास्य, ३ करुण, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत, ६ शातरस ।

२८—एकोनपंचाशद्भाव—रति, हास्य, उत्साह, विस्मय, क्रोध, शोक, जुगुप्सा, भय, स्तंभ, स्वेद, भंग, व्रीडा, चपलता, हर्षता, जडता, मतिमूढी, आवेग, विषाद, औत्सुक्य, गर्व, अपस्मार, निद्रा, सुप्त, विबोध, अमर्ष, उन्माद, उग्रता, व्याधि, वितर्क, त्रास, स्वरभेद, रोमाच, वेपथु, वैवर्ण्य,

अश्रु, प्रलाप, निर्वेद, ग्लानि, शंका, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, अवहित्थ, विदाघ, मरणांतं । इति भाव ।

२९—चत्वारो अभिनया—वाचिक १ आंगिक २ आहार्य ३ सात्विक ४

३०—चतस्रो वृत्तयः—सात्वती, भारती, कैशकी, आरभटी २८

३१—चत्वारो नायका—अनुकूल, दक्षिण, शठ, धृष्ट

३२—चत्वारो महानायका—धीरशांत धीरउद्धत, धीरोदात्त, धीरललित

३३—द्वात्रिंशद्गुण नायका—कुलीन, शीलवान, वयस्थ, शौचवान्, स्वतंत्र, सावयव, प्रीतिमान्, प्रियवद, सुभग, मन्त्रवान्, कीर्तिमान्, त्यागी, विवेकी, श्रृंगारी, अभिमानी, श्लाघ्यवान्, सुमुज्वल वेष, शयान, सकल कला कुशल, सत्यावसह, सुगंध सुवृत मत्र, क्लेश सह, भाषा पंडित, उत्तम, सत्यधर्मिष्ट, महोत्साही, गुणग्राही, क्षमी, परि भावुक ।

३४—त्रिविधा महानायिका—स्वकीया, परकीया, पण्यांगना ।

३५—अष्टौ नायिका—विरहोत्कंठिता, खंडिता, कलहांतरिता, विप्रलब्धा, प्रोषित-भर्तृका, अभिसारिका, स्वाधीन पतिका ।

३६—द्वात्रिंशत् गुण नायिका—सुरूपा, सुवेषा, सुभगा, सुरतप्रवीणा, सुसत्वा, वेषश्रिता, विनीता, भोगिनी, विचक्षणा, प्रिय भाषिणी, प्रसन्नमुखी, पीनस्तनी, चारुलोचना, रसिका, लज्जान्विता, लक्षणयुक्ता, वास्यज्ञा, गीतज्ञा, नृत्यज्ञा, वाद्यज्ञा, सुप्रमाणशरीरा, सुगंधप्रिया, नीतिमानिनी, चतुरा, मधुरा, स्नेहवती, विमर्षवती, सद्वृत्तमत्रा, सत्यवती, प्रज्ञावती, चैतन्या शीलवती, गुणान्विता ।

३७—त्रिविध सौख्य – शारीरिक, वाचिक, मानसिक ।

३८—चत्वारि सौख्य कारणानि—योगाभ्यास कारणं, अभिमान कारणं, सप्रत्यय-कारणं, विषय कारण ।

३९—नव विधो गंधोपयोग—तैलाधिवासः, जलाधिवासः, वस्त्राधिवासः, मुखाधि-वास, उद्वर्त्तनाधिवासः, विलेपनाधिवासः, स्नानाधिवास, धूपनाधिवास, भोजनाधिवास. ।

४०—दश विध शौचं—जलशौचं, मृतिकाशौच, गंध, स्मश्रु, संस्कार, पवित्र वाक्य, प्राणिदयाशौचं, अर्थशौचं, आचार शौचं ,स्नान शौच ।

४१—द्विविधः काम.—स्वाभाविक, कृत्रिम ।

४२—दश कामावस्था—अभिलाष, चिंता, स्मृति, गुणकीर्त्तन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मरण ।

४३—विंशति रक्त-स्त्रीणा लक्षणानि—पूर्वं भाषते, दर्शनात् प्रसन्ना भवति समागमे तुष्यति, सभाषिता हृष्यति, गुणान् सखीजने कथयति, दोषान् छादयति, सन्मुखीशेते, पश्चात् स्वपिति, पूर्वमुत्तिष्ठति, मित्राणि पूजयति, अमित्राणि द्वेष्टि, प्रोषिते दुर्मनाभवति, स्वधन ददाति, प्रथममालिंगयति, पूर्वं चुम्बनं करोति, मम दुख मुखावलोकिनी, सदा विनीता, स्नेहवती, संभोगार्थिनी, हितार्थिनी ।

४४—एकविंशति विरक्त स्त्रीणा लक्षणानि—चुम्बिता विमुख करोति, मुख परिमार्जयति, निष्ठीवति, प्रथम शेते, पश्चादुत्तिष्ठति, परान्मुखी शेते, वाक्य नावमन्यते, मित्राणि द्वेष्टि, अमित्राणि पूजयति, सदा गर्विता भवति, उक्ता कुप्यति, गमने तुष्यति, दु.कृत स्मरते. सुकृत विस्मरयति, दत्तं न मन्यते, दोषान् प्रकटी करोति, गुणान् छादयति सन्मुख न पश्यति, दुखिते सुखिता भवति, विप्रिय वदति, सभोगे सुख न वाञ्छति ।

४५—द्वाविंशति कामिनीना विकारेंगितानि—सानुराग निरीक्षण, श्रवण सयमन, अगुलीस्फोटन, मुद्रिका कर्षण, नूपरोत्कर्षण, गुताग दर्शन, सख्यासह हसन, भूषणोद्घाटन, कर्णमोटनं, कर्ण कण्डूयन, केश प्रक्षरणं, पुष्प सयमन, नख विलेपन, वाससज्जन, परिधान सयमन, निश्वासोद्गसन मुख विजृंभिण, बाल चुम्बन, प्रिय भाषण, अतिक्रान्त प्रेक्षणं, परोच्चैनाम ग्रहणं, गुणव्यावर्णनम् ।

४६—चतुर्विंशति असतीना लक्षणानि—द्वार देशे शायिनी, पश्चादवलोकिनी, पुंश्चली सखी, भोगिनी, गोष्ठिप्रिया, राजमार्गाश्रिता, पति द्वेषिणी, पति रहिता, हीनाग भार्या, वन्ध्या, मृतापत्या, बहु देवरालिपिनी, बहु देवतार्चना, विनोदकारिणी, भोगार्थिनी, अति मानिनी, कृत्रिम लज्जान्विता, परप्रीतिरता, वृद्ध भार्या, सतत हास्या प्रोषित भर्तृका, लोभान्विता, बहुभाषिणी, क्रीडानष्टचर्या ।

४७—षोडश दुष्ट-स्त्रीणा अपलक्षणानि—पिंगाक्षी, कूप गल्ला, लम्बोष्ठी खरालापी, ऊर्द्ध केशी, दीर्घ ललाटी, सहितभ्रू, पुष्पितनखी, प्रविरल दशना, अतिदीर्घा, अतीव वामनी, अतीव स्थूला, अतीव गौरा, अतीव कृष्णा, अतीव कृशा, प्रलम्बोदरी ।

४८—अष्टौ स्त्रीणां अभिसारिकाणि—भर्त्तु स्वैरिता, पुरुषार्थिनी, प्रणतगोष्ठी निरंकुशा, विदेशवासी, पुश्चली, पतिरीर्ष्यादोप ।

४९—अष्टौ नार्यो अगम्या—स्वगोत्रजा, राजपत्नी, मित्रपत्नी, वर्णाधिका, अस्पृशा, पूजिता, कुमारी, गुरुपत्नी ।

५०—अष्टविधो मूर्ख—निर्लज्ज, शठ, क्लीव, निघृण, व्यसनी, अतिलोभी, गर्वित, निष्ठुर।

५१—चतुर्विंशति-विधं नागरिक वर्त्तनम्—नगरे सस्थान, असन्नोदक भवनं, प्रच्छन्न महानस, गुप्तकार्य चिकित्सा स्थानं, निकटे नेपथ्यमंडप, विभक्त वास भवन, नेपथ्योपकार प्राचुर्यं, गृहोपकरण बाहुल्य, शय्यासन रम्यत्वं, वाञ्छित परिजन, पार्श्वे प्रविशान स्थानं, मध्ये स्थान पीठ, प्रभाते व्यायाम विधानं, मध्यान्हे भोजन विधान, नित्यमेव विद्याभ्यासनं। कुलोचित विधिना वर्त्तन। प्रदोपे गीतादि विनोद विधानं, निशाया स्वदारा सुरतं, कदाचित् गोष्ठी रम्यत्वं, कदाचित् पात्र प्रेक्षणं, कदाचित् विद्या नवनव गमनम्, सदैव ऋतु समुचितो भोग।

५२—त्रिविधं रूपं—सम्पूर्ण लक्षणावयवं, असंपूर्ण लक्षणावयवं, निर्लक्षणं।

५३—त्रिविधं स्वरूप—मुग्ध स्वभाव, मुखर, चतुर।

५४—द्वादश विध प्रमोदोपचार—रूपस्विनीना रम्योपचारेण, भीरूणामास्वासनेन, चपलाना गाम्भीर्येण, पडिताना सत्येन, प्रजावतां कलाभिः, शृङ्गारिणा सुवेषतया, विनोदशीलाना क्रीडनेन, हीन सत्वाना कारुण्येन, शठ स्वभावानां शाठ्येन, निर्विकल्पाना सुकुमार प्रयोगेन, वालाना भक्ष्य प्रदानेन, धूर्ताना शाठ्येन।

५५—पञ्चविधः परिचय—प्रसिद्धि ख्यापन, दर्शनेनावर्जनम्, सभाष माधुर्यं, वांछितोपचार प्रयुंजन, विकारसूचनं।

५६—दश पुरुषाः स्त्रीणां अनिष्टा भवंति—कुरूप, निर्लज्ज, अभिमानी, असंवद्ध प्रलापी, संकुचितशायी, निष्ठुर, कृपण, शौचहीन, मूर्ख, क्रोधी।

५७—दशभिः कारणैस्त्रियो विरज्यन्ते—अज्ञानता, अभिमान विलेपता, निष्ठुरता, दरिद्रता, अति प्रवसता, क्रूर व्यसनता, भोगहीनता, अति प्रसंगता, सौभाग्यहीनता, अनौचित्यता।

५८—त्रिभि: कामिन्यः रावध्यन्ते—अर्थतः, कामतः, सुकुमारोपचारतः।

५९—सप्तविध कामुकाना क्रीडारम्भ—क्रीडा पात्राणि, भोजनाद्युपचार, विलेपनानि, धूपनानि, ताम्बूलादिना, पुष्पादिमाल्यानि, हास्यादि मर्माणि।

६० अष्टविध विदग्धाना सुरतं—आलिंगनं, चुम्बन, धावनं, केश धारणं, रग संवेशन, शरीरादि कूजनं, नख स्पर्शन, कुट्टनं॥

६१—नवविधं सुरतावसानं—वस्त्रादि नयमन. पार्श्वे आचमनं, ताम्बूलादि

ग्रहणं, फलादि भक्षण, पान भोज्यादि विधान, क्रीडा पात्र प्रवेश, सुभाषित जल्पं, सानुराग प्रेक्षणं, मनोवाछित विनोदः ।

६२—नव शयन गुणाः—अनग्नशायी, मृदु गात्रशायी, प्रसारित गात्रशायी, सोम्यावयव, अनुशयन, नात्यर्थान प्रात, अशब्द सन्मुखः ।

६३—दशविध पार्थिवानां प्रमोद—

ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैर निग्रहे ।
शौर्य्ये धर्मे सुखे शौचे, प्रमोदो दशधा मतः ॥

६४—चतुर्विधः प्रबोध—शास्त्र प्रबोध, प्रज्ञा प्रबोध, तत्त्वनिश्चय प्रबोध, स्वभाव प्रबोधः ।

६५—चतुर्विधा बुद्धि—स्वभावजाता, श्रुतोत्पादिता, कर्मजाता, पारिणामिकी ।

६६—अष्टौ बुद्धिगुणा—

शुश्रुषा श्रवणं चैव, ग्रहण धारणं तथा ।
ऊहापोहो च विज्ञानं, तत्वज्ञानञ्च धी गुणाः ॥

६७—चतुर्विध गंधर्वं अवधान गतं, स्वरगतं, पद गतं, तालगत ।

६८—त्रिविध गीतं—महागीत, अनुगीतं, अपगीतं ।

६९—षट्त्रिंशद् गीत गुणाः—सुस्वरं, सुताल, सुपदं, शुद्ध ललित, सुबंधं, सुप्रमेय, सुराग, सुरसं, सम सदार्थं, सुग्रह, श्लिष्ट, क्रमस्थं, सुमयक सुवर्णं, सुव्यक्त, संपूर्णं, सालंकार, सुभाषाढ्या, सुगधस्थं, व्युत्पन्नं मधुरं, स्फुटं, सुग्रभ पसन्नं, अग्राम्यं, कवित्कंपितं, समजात रौद्र गीतं, ओजः सगतं, दशन स्थितं, सुखस्थापक, हतसंविलषित, मध्यं प्रमाणं ।

७०—चतुर्विधं वाद्यं—ततं, वितत, घन, शुषिरं ।

७१—षोडशधा नृत्योपचार कारस्मानि—कंपितं १ समं २, आयतं ३ रौद्रं ४ संगतं ५, प्रसन्नं ६. हसुतृप्ति ७, द्रुतं ८, मध्यं ९, विलंवितं १०, गुरुत्वं ११, प्राजलित्वं १२, सुप्रमाणं १३, कर शुद्धं १४, निर्दोष १५ चेति ॥ मुखस्थापनं १६ ।

७२—षोडशविध वाक्य—समय, प्रतिभा, अभ्यास, विद्या, जाति, गीति, रीति, वृत्ति वात्सल्यं, पाचक, छंद, अलकार, गुण, दोष, रसभाक, अभिनय ।

७३—दशविधं वक्तृत्वं—परिभावितं, सत्यं, मधुरं, सार्थकं, परिस्फुटं, परिमित, मनोहरं, विचित्र, प्रसन्नं, भावानुगतं ।

७४—षटत्रिंश भाषा लक्षणं—संस्कृतं, प्राकृतं, अपभ्रंशं, पैशाचिकं, मागध, सौरसेनं ।

७५—पंचविधं पाण्डित्यं-वक्तृत्व, कवित्व, वादित्वं, आगमिकत्व, सारस्वत प्रमाणं।

७६—चतुर्विंशति विधं वादलक्षणं-उत्पत्ति, सभापति, सत्यवादि, प्रतिवादि, पक्ष, प्रतिपक्ष, प्रमाण, प्रमेय, प्रश्न, प्रत्युत्तर, दूषण, भूषण, अर्थान्तर, उपन्यास, अनुवाद, आदेश, निर्वाह, निर्णय, निश्चय, स्थान, समता, निग्रह, जय, अजय।

७७—षट दर्शनानि-माहेश्वर, ब्राह्म, सांख्यं, बौद्ध, जैन, चार्वाकम्।

७८—अष्टविध माहेश्वर-नैयायिक, वैशेषिक, शिवधर्म, शैव, कलामुख पाशुपत, महाव्रैहैतिक, मुक्ति पर्यंत।

७९—दशविधं ब्राह्म-लक्षण, प्रमाण, संस्कार, कर्म, वर्त्तन, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, यति, ब्रह्म पर्यन्त।

८०—चतुर्विध सांख्य—तत्व, प्रमाण, प्रकार, प्रभेद, प्रमोदपर्यन्त, सर्वारम्भपर्यन्त।

८१—सप्त विधं जैन-सर्वज्ञ धर्म, तत्वार्थ, प्रमाण, प्रतिमा, प्रभेद, सिद्धिपर्यन्त।

८२—दश विध बौद्धं-आयासिकम, पर्वद, पारिगत, विहार, प्रमाण, सूत्रांतिक, वैभाविक, योगाचार, माध्यमिक, मोक्षपर्यन्त।

८३—चतुर्विध चार्वाकं-तत्वार्थ, प्रमाण, प्रभेद, प्रमोद पर्यन्त।

८४—चतुर्विंशति विधं विचारकत्व-विद्या, विनोद, विज्ञान, कला, कवित्व वक्तृत्व, गीत, वाद्य, नृत्य, देश, काल, पात्र, प्रमेय, पर्याय, जय, रस, भाव अभिनय, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकवाद, विचार पर्यन्त।

८५—दशविधं गुरुत्वं—

वंशे ज्ञाने पक्षे सत्वे शौर्ये दाने बले जये।
संताने सद्गुणे चेति गुरुत्व दशधा मत॥

८६—पंच चरितं-गान चरित, मान चरितं, दान चरित, वीरविलास चरितं, धर्मारंभ चरितं।

८७—पंचविध पार्थिवाना पालनं-राज्यपालनं, प्रजापालन, भूमिपालनं, धर्म-पालन, शरीर पालन।

८८—सप्तविध उत्तमत्व-वय, कुल, रूप, शील, पद, ज्ञान, प्रयोग पर्यंतचेति।

८९—नवविधाशक्ति-धर्मशक्ति, दानशक्ति, मंत्रशक्ति, ज्ञानशक्ति, अर्थशक्ति कामशक्ति, युद्धशक्ति, व्यायामशक्ति, भोजनशक्ति।

९०—सप्तविधा भुक्ति-शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, अभिमान, देश।

९१—अष्टविध अभिमान लक्षण-ज्ञाने, धर्मे, अर्थे, कामे, बले।
शत्रुघाते, समारंभे स्थितं च।

९२—चतुर्विध वात्सल्यं–देवानां सद्‌गुरूणा च, मत्राणा वल्लभे जने।
स्नेहेन मानसश्च, तद्वात्सल्यंचतुर्विधं ॥

९३—पंचविधो महोत्सवः–१ ज्ञान महोत्सव, २ अर्थ महोत्सव, ३ काम महोत्सव, ४ धर्म महोत्सव, ५ मोक्षमहोत्सव।

९४—सप्त विधा प्राप्ति–ज्ञाने धर्मे वले कामे विज्ञाने पात्र सग्रहे।
महार्थे भूभुजां नित्यं, प्राप्तिः सप्तविधा मता ॥

९५—चतुर्विंशति-विध शौर्य्य—शब्द शौर्य, प्रतापशौर्य, दान, स्थान, उदय, तेज, सग्राम, प्रतिपन्न, जय, मान, ज्ञान, साहस, शरणागत, परिवोध, प्रमोद, उद्यम, अर्थ, आचार, वल, कीर्त्ति, लक्षण, गुण, ज्ञान मान।

९६—दशविध वल—वाक्काय बुद्धि-मन्त्रैश्च, स्थान सैन्य सुहृज्जनै।
निद्राहारैर्, दयाश्चेति, राजा दशविधो जयः ॥

९७—दशविध सग्रहः—ज्ञाने पात्रे गुणे सौर पत्नीयोगे वाल धर्मे जये गुणेषु श्रुत सग्रहः ॥

९८—पचविध प्रभुत्व—कुल प्रभुत्व, दान ज्ञान प्रभुत्व, प्रभुत्वं, स्थान प्रभुत्वं, अभय प्रभुत्वं। इति श्रीरत्नकोश सूत्रशत व्याखयान समाप्त ॥ पं० सुखनिधानमुनिनालेखि

९९—अष्टविधोजय—१ शत्रुजय, २ मानजय, ३ वादजय, ४ आहारजय, कर्म-जय, ६ क्रोधजय, ७ भूमिजय, ८ यानजय।

बृहत्ज्ञान भडार की प्रति में अधिक—

१००—अष्टविधोभोग—सुगंध वनिता वस्त्र गीत ताबूल भोजन।
आभरण मंदिरं चैव अष्टौ भोगा प्रकीर्त्तिता ॥

१०१–षोडश शृंगारा—आदौ मज्जन चारुचीर तिलक नेत्रांजन कुंडल।
नासामौक्तिक पुष्पमाल कुंडल, शृंगार कृनूपुरं।
अगे चंदनलेप कचुकमणी क्षुद्रावली घटिका।
तावूलं करकंकणं चतुरता शृंगारका. षोडश ॥

१०२–षडविधपरिच्छेद—आकार्य परिच्छेद, पाप, दुख, कर्म्म, भुक्ति, लोभ।

१०३–चतुर्दश विद्या नाम—नाट, वेद, पवित, गणित, गुणित, व्याख्यान, ग्यान, ध्यान, शस्त्र, शास्त्र, कामिनिनां चरित्र, भेषज, चाढीस, सर्व चरित्र, सर्व विद्याना।

१०४ चतुर्विधा गति—नरग गति, तिर्यंच गति, देव गति, मनुष्य गति।

पाठ भेद की टिप्पणियाँ १

अविरिक्त नाम तथा पाठान्तर—पृ० ७-(चुतुर्विंशति देशा) (२०)

काशी, कर्णाट, गोला, साड्वल, लाम, पुंड्र, उद्दड, विहार, उड्डीस लोहित, जालंधर, मरुस्थल, मारू, सपादलक्ष, टक, महाभोज, चीण, महाचीण, तुरुष्क, नायक, वरदेव, संख, सहज, चित्रकूट, दक्षिण, चौड्ड, तिलंग, द्रविड़ ।

पृ. ८ (२१) द्वात्रिंश लक्षणानि—अतिरिक्त नाम तथा पाठान्तर

तनु, वैद्य, नृत्य, रूप, जोतिर् , सर्प, वृष ।

पृ ८, चतुर्विंशति विध गृह— (२२)

सौध, क्रीडास्थान ।

पृ. ६ अष्टोतर शत मंगलानि— (२३)

जिन, रुद्र, बुध, तीर्थ, देवपुराण, तांबूल, शौचन, पठस्थान, तिलक, वेद, अश्वत्थ, उन्मत्तफल, वेणु, स्वस्तिक, तोमर, चापा, स्तुति, गोष्टान बुद्धि, सिद्धि, विद्रुम, कुसुम, किंकिणी, आभरण, अलकतक, कुकुम सिन्धु, रिद्धि, सिद्धि, प्राति ।

पृ. ६. स २४—

२ उचित दान, भक्तिदान

पृ. ६. सं. २५—

१ वन रंजन

पृ. ६ सं २६ —

१ वृद्धजनकार्त्ति, वर्णकीर्ति, शौर्यकीर्त्ति,

पृ. ६ सं २७ –

कंग, दौर्म्मन, स्यक्ता, धृति, विलक्षणता, विरक्ति, अनुरक्ति त्रास, प्रत्रासिक ।

पृ. १० सं ३०—

(१) सात्वती ।

पृ. १० सं. ३३—

सतुष्ट, क्रीडावान, सत्यप्रिय, सुजन, सुगंधर्व, महोत्तम, सुरात्र, संग्राही ।

पृ. १०. सं. ३५—

१ वासक सय्या, विवाहोत्कंठिता

पृ १०. स ३६—

सुनेत्रा, स्वच्छाशया, सुखाशया, भोगिनी, विचक्षणा, पठितज्ञा, कृतज्ञा, सुगंधस्नासा, शोभावती, विनयवती, गूढार्थमंत्रा।

पृ १०. स. ३७—

द्विविधिं सौख्य—आंगिकं, मानसिकं।

पृ. १० स. ३८

विषयकारणं, मुक्तिकारण।

पृ ११ सं ३६.

नव वियोगात्रोपभोग—

सुगध, अधिवास, सुखासन, सुवस्त्र, अलकार।

पृ. १०. सं० ४०—

अथ द्विविधिम् शौचम्—

श्मश्रु शौचम्, मृतिका शौचम्।

पृ १० सं० ४२—

उत्कठा, ऊर्ध्वप्रलाप, उन्मत्त।

पृ. ११ स० ४४—

४४—अर्थनिरापेक्षणो, दर्शने प्रसन्नानभवति, तिर्यकमुख कुरुते, अर्थं न भावयते।

४५—स्वकामजल्पन, अग्रावलोकनं, सदाप्रसन्नता, मुद्रीकर्षणं, हृदयोत्कर्षणं केश-रचनं, पुष्पारोपण, विलासपठनं, बालालिंगनम्, विरोच्चेनाम कीर्तन।

४६—पति कलहकारिणी, जनसाकुलस्थायिनी, त्यक्तलजा, वृद्धभार्या, चंचला, रात्रीभ्रमणशीला, कृत्रिम तपा, पाखंड लज्जाकारिणी।

४७—घर्घरालवापा, स्थूलोदरा, मिलित भ्रू।

४८—अविश्वासकारणानि—दीर्घगोष्टी, अविवेका, विवस्त्रा अतिदुष्टा, अतिकोपना।

४९—रजस्वला। प्रव्राजिका।

पृ १२ सं० ५०—

५०—अप्रस्तावज्ञ, अन्यात्पंथ, कुव्यसनी, स्वार्थवशा, स्वमर्मप्रकाशक, लोक व्यवहार अनभिज्ञ, कुपठित, कुबुद्धि अकलाज्ञ।

५१—दोष प्रच्छादनं, सुवेशता, परचित्तज्ञावृत्ति, परिग्रहगमन परा, उदारता, शुद्धाशय, सतोषता मित्रवर्गता, पार्श्ववास, भवन-सस्थानं, प्रभुविधापना, प्रदोषात्धर्म, गोत्राभिधानं, निशायासुरतोपचार।

५१— द्विविधं रूप —सिन्दूरवर्ण लक्षण, वयः संस्थाना ।
५३—सदभाव ।
५४—स्वस्वरूपेण, राज्ञामुपचारेण, भीरूणा रक्षणेन, पण्डिताना काव्येन, दीनानाम कारुण्येन, पण्डिताना वक्रोक्त्या, मानीना नम्रत्वेन, महात्माना धर्मेण ।
५५—तिथि प्रत्याख्यापन, अनुरागपोषण, रतोत्पादनम्, वाञ्छित विनोदः ।
५६—कृतघ्न, अतिमानी, शौचहीन, सुरतानभिज्ञ ।
५७ —सरोगता, अतिमानी, अविलोकता, अतिमगता, अतिरक्तता ।
५८—त्रिभिः कारणैः स्त्रियो रज्यते—छन्दानुवर्तनेन, सुरताप्र गल्भेन, सौभाग्येन ।
५९—पापेन ।
६०—भगानिव्यसन, सकणिच ।
६१—इक्षुरसादि भक्षण, गीनकाभरणं, मग्रहृदय ।
६२—अनेकशयानी, पार्श्वशायी, निश्चलाङ्गशायी ।
६३—वैणिजये, वृद्धो ।
६४—शृङ्गाराणि काम प्रबोध, योगिनां ज्ञान, बालानां शान्त, महात्मानाच निर्णय प्रबोध ।
६५—उत्पातिका ।
६६—अवधारण, निरीक्षण ।
६७—स्वगीत, तालगीत । (चतुर्विधगीत)
६८—त्रिविध गांधर्व—तार, मद्र, मध्य ।
६९—
७०—आनद्धं ।
७१—षोडशधारणमुपचारम्—सुधृति ।
७२—प्रतिज्ञा, अविद्या, सुविद्या, ध्वनिलक्षण, सरस ।
७३—
७५—शास्त्रसंस्कार, प्रौढता ।
७६—प्रतिपत्ति, सम्भ्र, प्रभेद, उत्तर, अतीत, अत्यन्त, अनुलाद, अभेद, विस्मय, निग्रहस्थान, पराजय, जयपात्र ।
७८—ब्रह्मचर्य ।
७९—मोह, यश, सुल, भिक्षु ।
८०—दशविंशति तत्त्व ज्ञानानि, पात्र लिनतं, शिवाराधन, प्राति पुरुष सम्बधनम् ।
८१—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, बंध, मोक्ष, निर्जरा ।
८२—त्रिविधं बौद्धं—

८३—गोरववसतान, वक्रोलि, फौलाल, ब्रह्मज्ञानी ।

८४—गुणप्रकृति, सदभाव ।

८५—ऐश्वर्य ।

८७—पंचविधं पार्थिवाना पालनं । परिवार पालनं, अर्थपालनं,

८८—प्रियालापं, अर्थभाषणं, स्वपरार्थकः, अविकथनम्, परदारवर्जनं, कृतज्ञता, परलोक चिंता ।

६०—आहार भुक्ति, शृंगार भुक्ति, द्रव्य, काम, परिवार, प्रभुत्व ।

६१—अष्टविध अपमान लक्षणं—१ शुद्ध परगुण-श्लाघा-विमुख, २ आत्म-बहुमानी, ३ असूया, ४ पर निंदा, ५ परविनय विकल ६ कठोर भाषी, आत्म प्रशंसाप्रिय ।

६२—मित्राणां, मातृपितृणां, प्रतिस्नेहन, मानसशय, वात्सल्यं ।

६४—दान, भोमेविज्ञाने । सर्वज्ञत्वे, नरेन्द्रत्वे ।

६५—शास्त्र, उदात्त, कुल, विवेक, उद्भट, विद्या, सौभाग्य, वास, दान, तप, वाद, बुद्धि, वाक, मान, सत्य ।

६६—धैर्य, बुद्धि, अवधारण, अभ्यास, शरीर, दैव, मत्र, साहस, दातृ, परिवार ।

६७—शास्त्र, धर्म, सत्पुरुष, धन, स्त्री, चतुष्पद, वाहन, कला, पात्र, सुभाषित, उत्तम संग्रह ।

६८—नागरिक प्रभुत्वं, डिम्भ, इंद्रिय, दर्शन, मानप्रभुत्व ।

परिशिष्ट (२)

सभा-शृंगारादि वर्णन-संग्रह

यावन-परिपाट्यनुकृत्या

राजरीति-निरूपण नाम शतकम्

हजूर के अहल खिदमत कारखाने परगनाती ओधादार के लक्षण

गोपीवल्लभ पादाब्जं द्वंद्वमाधाय चेतसि ।
वच्मि राजविधिं म्लेच्छपरिभाषानुकल्पितम् ॥ १ ॥
क्वचिद्वृद्धे क्वचित्कोशात्क्वचित्स्वानुभवात् पुन.
नाम लक्षण सस्थेयमधिकाराधिकारिणाम् ॥ २ ॥
आज्ञा भवेद्यदायत्ता हस्तलेखश्च भूपतेः
जानीहि त प्रतिनिधिं राज्य सर्वस्वधूर्वह ॥ ३ ॥

वकील मुतलक नायब मुसाहिब

आय-द्वाराधिकारा. स्युर्यदायत्ता महीभुज.
अमात्यं मंत्रिणं विधि प्रधानं सचिवत्वत ॥ ४ ॥

वजीर प्रधान दीवान

भटानामग्रयायित्वं वेतन-ह्रास वृद्धय
परिवृत्तिश्च यत्तंत्रा सेनापतिममुं विदुः ॥ ५ ॥ =बकसी
कार्यापेक्षाणि वस्तूनि शालाकृत्यानि भूपतेः
यदायत्तानि सर्वाणि शालापतिममुं विदु. ॥ ६ ॥

मीरसामान खानसामान कोठारी

संदेश-कर्म यः कुर्याद्राज' प्रतिनृपेषु वै
भर्त्रिष्ट-साधनोद्युक्तं तं दूत विबुधा विदुः ॥ ७ ॥

एलची वकील

पत्राणि प्रति-पत्राणि लिखेद्योहि नृपाज्ञया
सुलेखकं विजानीयाद्राज मंत्र-निकेतनम् ॥ ८ ॥ =मुनशी

नृपे निवेद्य वृत्तानां निष्कारण-निवेदकः
वैत्रिवर्गस्य योध्यक्ष स विज्ञापक इष्यते ॥ ६ ॥ =अरजवेगी
यदधीनानि कर्माणि पुण्य-हेतूनि भूपते.
दानाध्यक्षं विजानीयाच्छांति-कर्म पुरोधसं ॥१०॥ =सदर
योवरोधस्य कृत्यानि गुह्यादीनि विचेष्टते
महत्तर विजानीयात्त प्रतीत जितेन्द्रियम् ॥ ११ ॥ =नाजिर
अग्नि-यंत्राणि सर्वाणि तन्नियुक्ता भटादय.
यदायत्ता भवेयुः सोनलाध्यक्ष प्रकीर्त्तितः ॥१२॥
=मीर आतस तोपखाने का दारोगा

नदी सरस्तडागादिष्वपारोधश्च मोचनम्
नावादीना च यत्तत्र जलाध्यक्ष प्रकीर्त्तितः ॥१३॥
दुर्ग-मन्दिर-वाप्यादि-सस्कृतौ निर्मतौ च य.
नियुक्तो वास्तुकः सोयं शिल्पशास्त्रविशारदः ॥१४॥ =मीर इमारत्
अनाथ वा सनाथं वा गृहाद्य यन्नियोगतः
गृह्यते दीयते चापि स आयतनिकः स्मृतः ॥१५॥ =नजूल का दरोगा
आराम वाटिकादीना संस्कारं यः प्रवर्त्तयेत्
उद्यानपालो विज्ञेयः स मालाकार-नायकः ॥१६॥ =बागात का दारोगा
खड्ग-खेटासि-तूणीरश्चापि कुतादित चराः
मगलानि च सर्वाणि शस्त्राध्यक्ष-नियोगतः ॥१७॥ = कोरवेगी,
= सिलाहखाने का दारोगा

जल-स्थल-प्रचाराणा मृगया प्राणधारिणा
यत्-तत्रा तन्नियुक्ताश्च वैतंसिक इति स्मृतः ॥१८॥
= करावल वेगी, शिकारखाने का दारोगा

विहगानां विचित्राणां मृगया प्राणधारिणा ।
यत्तत्रा तन्नियुक्ताश्च विहगाध्यक्ष इष्यते ॥१६॥ = कोशवेगी
यदधीनानि वित्तानि श्रीगृहेषु महीभुजः
भाण्डागारिणमनं तु निधिपालमवैहि वा ॥२०॥ = खजानची, भडारी
चारानीतौ प्रवृत्तियस्तदध्यक्षो निवेदयत्
प्रवृत्ति-वादुको-राशि प्रत्यनीकादि-सम्भवां ॥२१॥ = हरकारों का दरोगा
जनानां यो विवाद, प्रपन्नाना नृपान्तिकं
विवेचयेत्सुनीतिज्ञो न्यायाध्यक्षः प्रकीर्त्तित. ॥२२॥ =अदालत का दरोगा

चौर-जारादि दुष्कृत्यकारिणां निग्रहे परः
पुररक्षा-समादिष्ट. स वै नगर-गौतिकः ॥२३॥ = कोटवाल
पुरस्योपांत सीमानं रक्षयेद्योहि विघ्नतः
सीमा-रक्षकमेनं तु प्रवदति विपश्चितः ॥२४॥ = फौजदार
आचार-व्यवहारेषु प्रायश्चित्तेषु यो जनान्
प्रवर्त्तयेन्मान्यतमो धर्माध्यक्ष प्रकीर्त्तित. ॥२५॥ = काजी
धर्माध्यक्ष-वचः श्रुत्वा श्रुति-स्मृति निरूपित
देशकालोचित दंडमादिशेत्स प्रवर्त्तक· ॥२६॥ = मुफती
यो हि कूट-तुला-मान-सुरा-द्यूत-पण्यांगना.
वहिर्दश्याः निराकुर्यात्तीति दश्वा स कीर्त्यते ॥२७॥ = मुहतसिब
दुर्गाणामति-दुर्गाणां भवनाना च भूपतेः
रक्षा-विधि-समादिष्टो दुर्गपाल. प्रकीर्त्तितः ॥२८॥ = किलादार
स्कंधावार-निवेशं वा पण्य-श्रेणी निवेशनं
चमूना चापि निर्याण कुर्यात्स स्कंध-याचिक ॥ २९ ॥ = मीरमंजिल
स्थाने याने च राजोये जनान् सीम्नि नियोजयेत्
सोयं पथकराध्यक्षः कथ्यते नीति-कौविदैः ॥३०॥ = मीरतुजक
भटादीना गणो यस्य साहचार्ये नियुज्यते
राज्ञा स्वाथवृत्तिस्तं ब्रवीमो गण-नायकम् ॥३१॥ = रिसालेदार
चतुर्विधं वलं यस्य स्वाधीनं दंडनायक
इत्यादयो हि वहवो मध्य-पर्षद्-गता- जना· ॥३२॥ = अमीरठाकुर
पीठ-मर्दा अंग-रक्षाः किंकराश्चेटकास्तथा
विदूषका अमी अते वासिनोभ्यंतराश्रयाः ॥३३॥
वेत्र-शस्त्र-भृतो ये च शाला सु परिचारका
वाह्याधिकारिणो ये च ते वाह्यस्थाः प्रकीर्त्तिता ॥३४॥

अथ शाला-भेदाः

मचा संस्तरणाद्य च यत्र तत्परिचारकाः
शय्यागारं विनिर्दिष्ट राजरीति-विशारदैः ॥३५॥=सुखसेजखाना १
अभ्यंगनोद्वर्तनानि सचरोपस्करं जलं
यत्र तन्मजन-गृहं राजरीतिज्ञ-भाषया ॥३६॥=गुसलखाना, हम्माम २
इष्टदेव-प्रतिकृतिः पूजा भाडानि मालिकाः

विष्टराद्यं यत्रास्ते तद्देवायतनं विदुः ॥३७॥=तसवीहखाना ३
नाना ग्रन्थ समं पृष्ठैर्वेष्टनैर्बंधनैर्गुणै
पीटैः फलक कर्त्तर्या ध्रियते पुस्तकालये ॥३८॥=कितावखाना ४
देव-भूपादि चित्राणि रेखा-वर्ण-कृतानि वा
ध्रियते शिल्पिनश्चैपा चित्रागारं तदुच्यते ॥३९॥=तसबीरखाना ५ .
श्रोषध्यो विविधा यत्रावलेहाद्याश्च पुष्टये
भैषज्य-गृहमाख्यातं सभिषक्परिचारक ॥४०॥ =दवाईखाना ६
मृद्वी दाडिम-खर्जूर-नारंगाम्र-फलाढय.
संचीयंते च यत्नेन फलागारे नियोगिभिः ॥४१॥=मेवाखाना ७
खातकोष्टक पल्यादौ ध्रयते धान्य-राशय·
कोष्ठागार तदेवोक्त राजनीति-विशारदै. ॥४२॥=अंबार कोठार जखीरा ८
धान्य पण्येन्धनाद्य तु यथापेक्ष प्रगृह्यते
यतौ महौषधी शाला बहुस्थानेपु कल्पिता ॥४३॥=मोदीखाना ६
धात्वादि-मय-भाडानि पाक-येग्यानुयन्तवै
ध्रियंते कुप्यशाला सा रक्षकैमाजिकै सह ॥४४॥=रिकावखाना १०
निर्मायते च भाडानि सस्कृते च शिल्पिभि.
काम्यागारं तु तत्प्रोक्तं राजरीति-विशारदैः ॥४५॥ =ठठेरखाना ११
पेय लेह्यं चोष्य खाद्यमन्न गोरमः
व्यजन पिशित त्रेधा सस्क्रियेत महानसे ॥४६॥=बबर्चीखाना, रसौड़ा १२
हिम जल विविध तद्भाण्ड धातु मृन्मयं
कहारकै रक्षकैश्च सगृह्येत पयोगृहे ॥४७॥=आबदारखाना, पाणेरो १३
पत्र पूग लवगैला कर्पूराद्यास्य-शुद्धये
रक्ष्यते तन्नियोगामैस्ताबूल-गृहमीरितं ॥४८॥ = तंबोल खाना १४
दीन दुर्बल रंकार्च-भिक्षु पग्वधरोगिषु ।
दीयते कृपया भक्त स प्रतिश्रय ईरितः ॥४९॥=बिलगोरखाना १५
यत्र वस्त्रादि मूल्यानि निर्णीयते नियोगिभिः
मूल्यकारैश्च विक्रेता क्रयशाला प्रकीर्त्तिता ॥५०॥=इवतियाखाना १६
यत्र वस्त्राणि च्छिद्यते सीव्यते चापि शिल्पिभिः
सीवनागारमेतत्तु सूचीधर-समन्वितं ॥५१॥=किरकिराफखाना १७
रेखाकित-प्रगुणित धौतं रक्त च धूपितम्
वास सुगधित सज्ज नेपथ्यागार इष्यते ॥५२॥=तोशकखाना, कपडदारा १८

पाटीरागुरु-काश्मीर कस्तूरी प्रभृतीनि वै
निस्यदाश्च प्रसूताना सुगंधागार ईरिता ॥५३॥ =खुशबोईखाना, सोधेखाना १६
वर्णा नाना-विधायत्र चित्र-मुद्राश्च शिल्पिनः
संस्कारार्थं च वस्त्रादेर वर्णागार तदिष्यते ॥ ५४ ॥ = रंगखाना २०
हिरण्य घटना यत्र जटना रत्न-निर्मिता
तत्कलाद-गृहं प्रोक्तं राजरीति-विशारदैः ॥ ५५ ॥=जरगरखाना २१
रत्नमुक्ता-मणि शिला-प्रवालस्फटिकादिकं
भिन्न युक्तं च धार्येत रत्नागार तदीरितं ॥ ५६ ॥=जवाहिरखाना २२
शस्त्राण्यस्त्राणि वा यत्र कवचावरणानि वा
भ्रियते स प्रहरण कोशः सुधीभिरीरितः ॥५७॥=कोरखाना, सिलहखाना २३
तूलिकास्तरणा चैवोपधानं शिविरादिकं
यत्र तत्रास्तर गृहं कथ्यते नीति-कोविदैः ॥ ५८ ॥=फराशखाना २४
हिरण्यानि सुवर्णानि धृतानि व्यापृतानि वा
आये व्यये प्रयुक्तानि श्रीगृहं तत्प्रकीर्त्तितं ॥५६॥=खजाना, भंडार २
सद्यो दानोपयोगीनि कर्षाणि किल भूपतेः
भ्रियंते दान कोशः स विज्ञेयो नीतिकोविदैः ॥ ६० ॥ = बिहला २६
मंदुरात्वश्वशाला स्यात् पलाणो पक्खरैः समं
शिक्षकैः शालिहोत्रज्ञैः पटकैर्धारकैर्युता ॥६१॥=अस्तबल, तबेला २७
गज-शाला तु चतुरं कुटी कुडादि शालिनी
यत्तृभिः पालकाप्यज्ञैः कशाकुंतादिमृद्गरणैः ॥६२॥=फीलखाना २८
सदानिन्युष्ट्र शाला च यान-शाला च कीर्त्तिता
पालकागारमेतत्तु यत्र स्याच्छिबिकादिक ॥६३॥
=गावखाना २६, शुतरखाना ३०, रथखाना ३१, पालकीखाना ३२
दारु-निर्माण-साध्यानि क्रियन्ते यत्र शिल्पिभिः
दारुकर्मालयं विद्धि तदावेशनमुच्यते ॥६४॥=खातिमबंदखाना ३३ ध
वसा-मदन-तूलानां वृत्तयो दीप वृष्टयः
स्थाली-पंजर पात्राद्यैरन्वितं दीपकालयं ॥६५॥= मै चिरागखाना ३४
एकद्वित्रि-चतु-पंच-दश-विंशति-शाखिकाः
अभ्यक्तावर-वृत्याढ्या यत्र-तज्ज्योतिरालयं ॥६६॥=मशालखाना ३५
आय-व्ययादि-लेखा. स्युर्मशीपात्राणि लेखिनी
लेखकाः बंधका यत्र लेखशाला प्रकीर्त्तिता ॥६७॥=दफतरखाना ३६

मृगाश्चित्रकाश्चापि लुलाया मृगया कृते
भवति मृगयागारं वैतंसिकगणैर्युतं ॥६८॥= शिकारखाना ३७
वज्र तुंडा लोह-तुंडाः श्येना उपरिचारिणः
धार्यंते मृगया-हेतोस्तद्धि शाकुनिकालय ॥६९॥=कोशखाना
इत्यादयो ह्यनेके स्युरागाराइह भूभुजा
शालात्वावश्यकी प्रोक्ता क्रीडार्थं मुपशालिकाः ॥७०॥=
उद्देशकः स्थापनिको लेखकोधिकृताश्रय
प्रतिशालामवश्यं स्युरपरे मूल्य कृन्मुखा ॥७१॥
नृपाज्ञतं दिशेत्कार्यं शाला परिजनेषु यः
उद्देशकः स तस्याग्रे लेखको यो लिखेत्स्वयम् ॥७२॥ =दारोगा, मुश्रिफ
सगृहीयात्स्थापनिकैः (तहवीलदार) मूल्यं कुर्यात् स मूल्यकृत् (मुकीम)
तौलिको रत्नमानानि (वजन कश) संपादनपरश्चरा ॥७३॥ =सरबराहकार
शालापतेरधीनाः स्युः सर्वशाला हि भूभृता
कौत्रिकापणमेतत्तु शाला नाम कस्मिृतम् ॥ ७४॥=कारखाना
श्रेणयः पुर-वास्तव्याः शालायत्ता महीभुजः
नियतैक-शिल्प-निरतास्ते भक्त भृति-वेतनैः ॥७५॥
कुर्यादनियता वृत्तिं श्रमसाध्यातु कर्मकृत्
काहारा भारवाहाश्च तृण-काष्ठ फलाहराः ॥७६॥
क्रय-विक्रय-वृत्तिर्यो व्यागरी कीर्त्यते जनैः ।
द्रव्यादान-निसर्गाभ्यां वृत्तिमान् व्यवहारिक· ॥७७॥
क्रय विक्रय-शीलानां मध्यस्थो मूल्य-साधक
गणिम धरिमं मेयं पारीक्ष्य पण्यमुच्यते ॥७८॥
सख्या ग्राह्यं तु गणिम नालिकेरादिक यथा ।
धरिमं तुलया देय कर्पूरैलादि कीर्त्यते ॥ ७९ ॥
हस्तागुलादिमानेन मेयं वस्त्रादिक भवेत् ।
तुरगादि पारीक्ष्यं तुला-मानादि तत्र न ॥ ८० ॥

अथ देश विभागस्तदधिपाश्च कथ्यन्ते

समुद्र गिरिपर्य्यन्त-चक्रीं चक्री तदीश्वरः
महास्तस्य विभागः स्याद्राष्ट्रं जनपद च तत् ॥८१॥=सूबा
तुरग - चमूचचद्राजधानी - समन्वितम्
राष्ट्रस्याप्यंशभूतं तन्मण्डलं मण्डलेशितुः ॥८२॥ =सिरकार

मडलाशस्तु प्रगण बहु-ग्रामोपवेष्टितम्
तस्याधिपः स्वल्प-बलो भवेत्सामत राडिति ॥८३॥ =परगना
कृषिक्षेत्र-युतं ग्रामः (मौजे) माकरो लवणादि-भू: (मादन)
वर्णैश्चतुर्भिः नगरं शैल-प्राकार-वेष्टितम् ॥८४॥ =बलदै
खेटं तु धूलि प्राकार पुरमुद्वासि-कर्बटम्
जल-स्थल-पथावाप्यं तद्द्रोणामुखमिष्यते ॥८५॥ =बंदर
परितः सार्थ-गव्यूत-ग्रामादि-परिवर्जितम्
मडबं कीर्त्यते सुज्ञैरगम्यं काननैर्घनैः ॥८६॥
विचित्रिं पण्यमागच्छेद्यत्र तत्पत्तन मतं
अध्वन्यहेतु-निर्माण सन्निवेशाख्यमुच्यते ॥८७॥
चौर्यादेर्वसति. पल्ली तापसाना किलाश्रम:
निगमो वणिजामेव ब्रह्मवासो द्विजन्मनां ॥८८॥
क्षुद्रग्रामं भवेद्ग्रामोंशिका द्वित्रिगृहं हि तत्
तृणाकीर्णोपान्त-भूमि: गोकुलं धेनु-तृप्तिकृत् ॥८९॥
शिल्पिन. कर्मकाराश्च, व्यापारी व्यवहारिण
चतुरंग-बलो राजा यत्र तद्द्रगमुच्यते ॥९०॥ =दयार
चक्री चक्राधिप. सम्राड्राष्ट्रपालः प्रकीर्त्तितः
मण्डलेशो महाराज सामतो विषयाधिप: ॥९१॥
ग्रामाणिकतिविद्यस्य वशेसौ भूमिक: स्मृतः
ग्रामणिर्ग्राम-मुख्य: स्याद् (चौधरी) रीतिज्ञो देश पण्डित ॥९२॥=कानूगो
राजवेतन-दानाशान् ग्रामार्ति दश वार्षिकीं
लिखित्वा धारयेद्यस्तु लेख-संग्राहको मत. ॥९३॥ =मजमूअेदार

॥ अथ प्रगणाधिकारिणः ॥

संपन्नां कृषिमालोक्य प्रजाया उचितां दशां
राज्याशस्य विनिश्चेता कथितो व्यावसायिक ॥९४॥ =अमीन
तेन व्यवसितं द्रव्यमादद्याद्यः प्रजा-जनात्
बलात्सौकर्य्ये वापि करोटीरक इष्यते ॥९५॥ =करोडो
निरुद्ध - वेतन - ग्राम - भोगमादाय भूपतौ
स साक्षिक प्रेषयेद्यो निरोधक इतीष्यते ॥९६॥ =कोतल करोडी
राज द्रव्य प्रजादत्तमाददीत परीक्ष्य य.
धनिके निक्षिपेद्यश्च कथितः प्रासधारकः ॥९७॥ =पोतैदार

तेनोपकल्पित द्रव्यं व्ययी कुर्याद्यथोचितम्
शेष नृपे प्रदिशुयाद्धनिकोसौ प्रकीर्त्तितः ॥६८॥ =खजानची
धनाध्यक्षो धन रक्षेत् (=खजाने का दारोगा) तल्लिखेद्धन–लेखकः
(खजाने का मुश्रिफ)

प्रवर्त्तको भटाना तु सेनानी समुदीरितः ॥६६॥ =बखशी
(वृत्ति – लेखको वृत्तं लिखेद् ग्रामाधिकारिणा । = वकायै निगार
छिद्रमर्माणि तेषा तु विलिखेद्गुप्त लेखकः ॥१००॥=खुफियौनवीश
शुल्काध्यक्षो (सायर का दारोगा) लेखकश्च (सायर का मुश्रिफ)
धनिको (तहवीलदार) मीत्रयो जना

शुल्काव्य-करमादद्याल्लिखेद्रक्षेत्पृथक् पृथक् ॥१०१॥
चौरादेः ग्राम गुप्त्यर्थं ग्रामागौप्तिक इष्यते । =कोटवाल
कृषि-गोप्ता कृषेर्मद्दतृन् वारये कर्षकादिकान् ॥१०२॥ =शहनै
सीमागौप्तिक आरक्षेद्दीर्घां प्रगण-भूमिकाम् =फौजदार
धर्माध्यक्षस्तु ग्रामात्त द्रव्य-लेखादि-साक्षिक ॥१०३॥ =काजी
राज्याश ग्रहणायुक्त भट लाभान् लिखेत्तु यः
आदेश-लेखकस्तेषा वेतनेषु च्छिन्नत्ति य. ॥१०४॥=इतलायकनवीस
इत्यादयोधिकारा स्युः प्रायशश्चक्रवर्त्तिनाम्
मपक्षैरनुसारेण त्वन्येषा विद्धि भूभुजाम् ॥१०५॥
एषा पद्धतिराख्याता राज-रीति-बुभुत्सया
गमीराद्राज-सेवाब्धेर्द्राण पाका च सिक्थवत् ॥१०६॥

इति यावन परिपाट्यनुकृत्या राजरीति-निरूपण नाम शतकं
समाप्तम् ॥ पं॰ मोतीचद्रकस्य

(प्रति—जैनभवन, कलकत्ता)

(२) छत्तीस कारखांना रा नाम पातशाही में ॥

१ तालबखांनो, जठे कागद रहे। २ दफतर खानो, जठे नवसदा रहै। ३ तंबोलदार खानो, जठे पान रहै। ४ अबदरखानो, जठे पाणी रहै। ५ जुदर खानो, जठे लाल हीरा रहै। ६ पीलखानो, जठे हाथी रहै। ७ फरासखानों, जठे तबू डेरा रहै। ८ तउसाखानो, जठे घोडा रहै। ६ सराबखानों, जठे दारू रहै। १० अबारतखानो, जठे मेहलाई रहै। ११ ईलम खांनो, जठे तोग झंडा रहै। १२ मवेशी खानो, जठे गोरू ढोर रहै। १३ आदिदासति खांनो, जठे सारी वस्तु रहै। १४ सराई महबत खांनो, जठे औरता रहै। १५ अत्राईस खानो, जहा सुघो अत्तर रहै। १६ नसटदार खानो, जहा न्हावण रा वासण रहै। १७ जमदार खांनो, जठे कपडो रहै। १८ सुत्र खानो, जठे ऊठ रहै। १६ सिलह-खानो, जठे टोप बगतर रहै। २० खोवात खानो, जठे दरजी रहै। २१ सीकारी खानो, जठे सिकारी रहै। २२ किसति खांनों, जठे नाव डुंडा रहै। २३ तबीब खानो, जठे वेदनाइता रहै। २४ दारुलहर खानों, जठे गनी रहै। २५ मुतलब खानो, जठे रसोई रहै। २६ खजानदार खानो, जठे रुपिया रहै। २७ रकेबदार खानो, जठे जीण लगाम रहै। २८ पायगा खानो, जठे घोडा रा चरवादार रहे। २६ सरम खानो, जठे रुसनाई होवे। ३० किताब खानो, जठे पोथी पाना रहै। ३१ मेवा खानों, जठे मेवा मिठाई रहै। ३२ गोदाम खानो, जठे गाडी बैली रहै। ३३ अबारत खानो, जठे धान सारा रहै। ३४ दरी खानो, जठे कचेड़ी भरीजे। ३५ महबूत खानो, जठे छोटा बंदीवान रहै। ३६ कारखानां रा नाम इति।

परिशिष्ट (३)
सभा शृंगारादि वर्णन संग्रहे

(१) देश नामानि

१ अंग देश
२ बंग देश
३ कलिंग देश
४ तिलग देश
५ राष्ट्र देश
६ लाट्ट देश
७ कर्णाट देश
८ मेदपाट देश
९ वैराट देश
१० गौरु देश
११ चौरु देश
१२ द्राविरु देश
१३ महाराष्ट्र देश
१४ सौराष्ट्र देश
१५ कास्मीर देश
१६ कीर देश
१७ महाकीर देश
१८ मगध देश
१९ सूरसेनु देश
२० कावेर देश
२१ कंबोज देश
२२ कमल देश
२३ उत्कल देश
२४ करहाट देश
२५ कुरु देश
२६ काण देश
२७ कच्छ देश
२८ कौसिक देश
२९ सक देश
३० चयानक देश
३१ कौसिक देश
३२ ....
३३ कारूत देश
३४ कायूत देश
३५ कछ देश
३६ महाकछ देश
३७ भोट देश
३८ महात्रोत्र देश
३९ कीटिक देश
४० कैकि देश
४१ कोल्लगिरि देश
४२ कामरूप देश
४३ कुक्कुण देश
४४ कुतल देश
४५ कनकूट देश
४६ करकंट देश
४७ केरल देश
४८ खश देश

४६ खर्घर देश
५० खेट देश
५१ विल्लर देश
५२ वेदि देश
५३ जालधर देश
५४ टेकण टक्क
५५ मोडियाग देश
५६ कहाल देश
५७ तुग देश
५८ लायक देश
५६ तोशक देश
६० दशार्ण देश
६१ दण्डक देश
६२ देशसभ देश
६३ नेपाल देश
६४ नर्तक देश
६५ पचाल देश
६६ पल्लक देश
६७ पूड देश
६८ पाडप देश
६६ प्रत्यग्र देश
७० अव्रुद देश
७१ वसु देश
७२ गंभीर देश
७३ महिष्मक देश
७४ महोदय देश
७५ मुरण्ड देश
७६ मुरल देश
७७ मरुस्थल देश
७८ मुग्दर देश
७६ मंगल देश
८० मल्लवर्त्त देश
८१ पवन देश
८२ आगम देश
८३ राटक देश
८४ ब्रह्मोत्तर श
८५ ब्रह्मावर्त्त देश
८६ ब्रह्मण देश
८७ वाहक देश
८८ विदेह देश
८६ वनवास देश
६० वनापुड्ढ देश
६१ वाल्हीक देश
६२ वल्लव देश
६३ अवन्ति देश
६४ वन्हि देश
६५ सिंहल देश
६६ सुहभ देश
६७ सूपर देश
६८ सुहड देश
६६ अस्मक देश
१०० हूण देश
१०१ हूर्मक देश
१०२ हूर्मज देश
१०३ हंस देश
१०४ हूहूक देश
१०५ हेरक देश
१०६ वीण देश
१०७ महावीण देश
१०८ भट्टीय देश
१०६ गोप्प देश
११० गाडक देश
१११ गुजरात देश

११२ पारसकुल देश
११३ शवालस देश
११४ कोरव देश
११५ शाकसरि देश
११६ कनउज देश
११७ आदन देश
११८ उचीविस देश
११९ नोलावर देश
१२० गगापार देश
१२१ सजाण देश
१२२ कनकगिरि देश
१२३ नवसारि देश
१२४ भात्रिरि देश

एव देश सख्या

(प्राप्त पाटोदी मंदिर जयपुर गुटका न० १८५)

(२) चतुरशोतिर्देशाः

गौड, कान्यकुब्ज, कोल्लाक, कलिंग, अग, वग, कुरग, आचाल्य (?) कामाख्या, ओड्र, पुड्र, उडीश, मालव, लोहित, पश्चिम, काछ, वालभ, सौराष्ट्र, कुकण, लाट, श्रीमाल, अर्बुद, मेदपाट, मरु वरेन्द्र, यमुना, गंगा तीर, अन्तर्वेदि, मागध, मध्य कुरु, डाहल, कामरूप, काची, अवनी, पापातक, किरात, सौवीर, ओसीर, वाकाण, उत्तरापथ, गूर्जर, सिंधु, केकाण, नेपाल, टक्क, तुरक, ताइकार, बर्बर, जर्जर, कीर, काश्मीर, हिमालय, लोह पुरुष, श्रीराष्ट्र, दक्षिणापथ, सिंघल, चौड, कौशल, पाड्र, अध्र, विंध्य, कर्णाट, द्रविड, श्रीपर्वत, विदर्भ, धाराउर, लाजो, तापी, महाराष्ट्र, आभीर, नर्मदा तट । दी (द्वी) पदेशाश्चेति । प० ६१ = हीरयाणी इत्यादि पङ्क । पत्तनादि द्वादशक । मातरादि चतुर्विंशति. । चड्डू इत्यादि षट्त्रिंशत । भालिज्जादि चत्वारिंशत । हर्षपुरादि द्विपञ्चाशत । श्रीनार प्रभृति षट्पञ्चाशत् । जंबूशर प्रभृति षष्टि० । प (व ?) डवाण प्रभृति षट्सप्तति: ॥ दर्भावती प्रभृति चतुरशीतिः । पेटलापद्र प्रभृति चतुरुत्तर शत । ष (ख) दिरालुका प्रभृति दशोत्तरशत । भोगपुर प्रभृति षोडशोत्तर शतं । धवलक्कक्क प्रभृति पंचशतानि । माहड वासाद्यं अधष्टिमशत । कौकण [प्रभृति] चतुर्दशाधिकानि चतुरदशशतानि । चद्रावती प्रभृति अष्टादशशतानि । द्वाविंशति शतानि मही तट । नव सहस्राणि सुराष्ट्रासु । एक विंशतिः सहस्राणि लाट देशः । सप्तति सहस्राणि गूर्जरो देशः । परितश्च । अहूट लक्षाणि ब्राह्मण पाटक । नव लक्षाणि डाहला । अष्टादश लक्षाणि द्वि नवत्यधिकानि मालवो देश । षट्त्रिंशल्लक्षाणि कन्यकुब्जः । अनतं उत्तरापथ दक्षिणापथ चेति ।

(काव्यशिक्षा—विनयचंद्र कृत । पाटण ग्र० सू० पृ० ४८)

त्रिशला शोकाधिकार

यदा कालि जगंन्नाथु माय-तणी अनुकपाकरी थिउ सलीन तनु।
यत्कारि दुक्खि पूरीवा लागुं राग्नी त्रिशला तणु मनु ॥ १
अहो ! आ किसिउ अकालि उत्पात,
हुसिइ किसिंउ वज्रपात ॥ २
अहो सखी ! माहरइ गर्भि पामिउ विलयु,
हुसिइ किसिंउ हिवडा जि विश्व प्रलय ॥ ३
हिव एउ माहरइ मस्तकि जे अछइ मउड,
एउ प्रत्यक्ष झउड ॥ ४
एउ हार, साक्षात संहार ॥ ५
बाहु वल्लरी तणां जे अछइ वलय
ते दुःख तणा दीसइ निलय ॥ ६
एउ अपूर्व पट्ट-दकूलु, ते देखतां संताप तणुं मूलु ॥ ७
एउ अछइ सवांगीण शृंगार ते देखतां संपूर्ण अंगार ॥ ८
दैव ! मइं किसिउ कीधउ, पाछिलइ भवि कुणइं तणा छोरू तु विछोह
कइ नीपजाविउ कुणइ संत रहइं वंच द्रोह
जेह कारण विफल हुइ छइहव मोह ॥ ९
मइ किसिउं कीधउं पापु
जेह कारण दैविइ पाडिउ एवउ संतापु ॥ १०
मइं जाणिउं हतूं हसिइ सुलखयण कमारु
थासिइ विश्व रइं आधार ॥ ११
जाणिउं हतूं पुत्र माडिसिइ आडउ, मेलसिइ पाडु (पत्र १ क) ॥ १२
जाणिउं हतूं आविसिइ जिवारइं माहरइ घरि
तिवारइं हूँ थासि पुत्रवंती नइ धुरि ॥ १३
माहरउ जायु थासिइ मोटउ राउ, देसि वयरी तणि मस्तकि पाउ ॥ १४
तउ पापी दैविइं भागी सवे आस, पडिउ सम-काल दुःख-तणउ पास ॥ १५
भागी सघलीइ रुली, संताप श्रेणी ऊछली
आस वेलि जई बली
माहरइ मनि सुख तणी वात जि टली ॥ १६
आसा तरुयर मुहुरीउ जाम फलेवा लग्ग
विहि कुंजरि उम्मूलीय एय कुसंधिइं भग्ग ॥ १७

कय सरोवर पाली, वघ तु मई जि टाळी, किसिउ दव पनाळी ॥ १८
जीवडा कोढि वाली, कप मनि दीधी गाळी, आल दीधउं शुद्ध बाळी
कइ लहीय विचालि, बाळ लीधउं ऊदाली ॥ १६
सखि ! न गमइ गायु, चिंत सोकिइ कषायुं
रुचइ नहि निवायुं, ताप दिइ फूल लायु
असुख सिइरि घायु, हीयडलइ डीव जायुं
किसिउ मइं कमायु, देवि जं इम नीपायु ॥ २०

[२]

इसिउ राज्ञी तणउं स्वरूप, सामलिउं सिद्धार्थ राइ विरूप ॥ २०
दासी ना वचन तु तत्काल ऊपनु मस्तकि चाटक
विसर्जिउ बित्रीस बद्ध नाटक ॥ २१
जे हूंता वड्डया, ते थया कड्डया ॥ २२
जे गीत गान (पत्र १ ख) करता गंधर्व
तेह तणा गरुत्रा गर्व ॥ २३
राज भवनि जीणइ रजीइ चीत
ते एकूं न सामलीइ गीत ॥ २४
जीणइ ऊपनइ मन रहइ चित्र
ते न वाजइ वाजित्र ॥ २५
जे हूता पंडित, ते थिया दुःख मंडित ॥ २६
जे राय रहइ अवस्य कृत्य, ते न दीसइ नर्तकी नृत्य ॥ २७
जेहे विद्यासे धूणीइ मस्तक, ते न वाचइं पुस्तक ॥ २८
जे सामळना थईइ हराण, ते न वाचीइ पुराण ॥ २६
जे जाणइ काव्य नु अवसर
तेहे कवीश्वरे मूकिउ महाकाव्य नु प्रसार ॥ ३०
जे सामळना फीटइ व्यथा, ते एकू न सामळइ कथा ॥ ३१
श्रीहणे बोले मोतीरिया दीजइ सुवर्ण मइ त्राट
ते कलिरव न करइ भाट ॥ ३२
जे हूंता चाचरीया, ते थया लासरीया ॥ ३३
जे लोक रईं करावइ जुहार, ते हूया निसचला प्रतिहार ॥ ३४

जेहे निरंतर जीभ वावरी, ते मौन करी रहिया टावरी ॥ ३५
जे करता नगर नी करणत्रार, ते बइसी रहिया तलार ॥ ३६
जेहे मनि ऊपजइ प्रमोद. ते एकू न दीसइ विनोद ॥ ३७
जे उलगइं आव्या राय, ते सवे दीसइ विच्छाय ॥ ३८
जे सभा बइसता राणा, ते सवे मनि उल्हाणा ॥ ३९
जे राज धुरधर प्रधान, ते दीसइ दुख तणा निधान ॥ ४०
ते तिहा बइठा छइ सेठि, ते जोइवा लागा नीची द्रेठि ॥ ४१
जे भला भंडारी, तेहनी मुख छाया (पत्र २ क) अधारी ॥ ४२
जे राय नइ अगरक्ख, ते थिया कुमक्ख ॥ ४३
आकाश छतइं सूरि, भेदीवा लागउ दुःखाधकार तणइ पूरि ॥ ४४

[३]

तउ अनाथ तणु नाथ, जोयइ जगन्नाथ ॥ ४५
ज्ञान तणी द्रिष्टिइं
देखइ राज भवनि सपूर्ण दुखोदधि तणी सृष्टि ॥ ४६
अरे ! आ शाति करता ऊठिउ वेताल ॥ ३७
पडिउं माहरउं साहमूं सताप तणउँ जाल
तु जगन्नाथि आगुलि तणइ स्तदि करी
माता तणी असमाधि हरी ॥ ४८
गिउ अनल्प, दु.ख तणउ सकल्प ॥ ४९
फीटी मन तणी आधि, ऊपनी समाधि ॥ ५०
वाजिवा ला [गा] मागलिक तणा मृदग
राज भवन माहि सपूर्ण आणंद ॥ ५१
(मुनि जिनविजयजी सग्रह, भारतीय विद्याभवन, बम्बई)